॥ अनुक्रमणिका ॥

घोड़ा घेड़ शब्दके १०८ नाम किताबके शेष पन्ना (पत्र) में ।



सबला दोष किणने कहीजे, जैसा निबला आदमीके उपर सबला बोझ आय पड़े सो उण आदमीका नाश हो जाता है, इण दृष्टांते साधु मुनीराज यह ईकिस बोल सने

पथ्या पथ्यके विषय किनावके शेनरे पन्नेमे ।



॥ श्री ॥

॥ शुद्धिपत्र ॥

हेडींग छोड़कर पक्ति (ओली) गिणीजें।



कीतनेक भूल उपयोगमें आई सो
अनुक्रमणिकामें जणायदि है सो
शुद्धिपत्रमे नहीं लिखी है।



पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
भ	१५	डफके	डफके
ट	१	उपना	उतना
ध	४	मुझाने	मुर्झाने
ल	१	सुघना	सूघना
व	६	काणोसे	कानोसे
श	२	मिश्च	मिश्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
ञ	१३	सम्यक्त	सम्यक्त
ञ	१७	च्यूं	ज्यु (ज्युं)
ई	७	घणे	घणो
ई	७ बाद हेडींगमें	छतीसा	छतीसी
डे	११	जाणो	जाण
धे	३	मास	मास
ने	४	आगे	आगो
फे	२	पानीमें	पाणीमें
बे	२	वीज	बीज
हे	१५	उपाड़ने	उपाडीने
ग्रे	१२	(विसोहीकरणेणं)	(विसोहीकरणेणं)
जु	४	मडिक्कमामि	पडिक्कमामि
डु	११	माटे	माटे
ढु	१५	नामधय	नामधेय
भु	३	गोचरादिकमे	गोचारादिकमें
८	७	बोले	दूजे बोले

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१२	३	कोध	क्रोध
१३	५	उडम	उद्यम
१४	४	१०८	१०६
१५	६	दीजे	कीजे
१६	६	दशमा	१२ मे
१६	७	बारमा देवलोक	नव नवग्रीवेक
१६	८	मुनि	५ अनुतर विमाण
२३	५	लीलड़में	लीलाड़में
२३	७	पराय	पराये
२४	१६	नोनो	नीचो
४०	१६-१७	कूड	काड
५४	७	भव्य जीवने,	भव्य जीवने
५८	१२	दुसरेने नेदावा,	दुसरो वेचावा (नेंदावा) समर्थ नहीं
६०	६	जाने	जाणे
६३	८	धम	धर्म

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६६	७	क्षत्रीने	वाणीयेरे (वैश्यरे)
६८	१	जवागी	जुत्रागी
६६	४	वीसरो	विपरो
७३	५	नारेलरो	नाचते भोपेरो
७३	१३	घर्म	धर्म
७५	२	ठवा	ठाव
७७	८	विघ्न	विघ्न
७७	११	उठा भी	उठाय
७६	१६	धातर्क	धातकी
८०	३	पुष्करार्थ	पुष्करार्द्ध
८०	५	"	,
८०	१०	शिष्यनी	नये दिक्षितरी
८२	८	दानवंत	दानवंत
८७	११	पुत्रक	पुत्रका
६०	५	अधक विश्नु	अधक विष्णु
६०	८	गजसूकुमारजी	जसु

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१८६	५	प्रशिनिय	प्रशंसनिय
१८८	७	सम्यत्वी	सम्यक्त्वी (समकति)
१८८	१०	सचेत	सचित
१६१	५	निरसट्ठ	निस्सरड
१६३	१५	सागनल्ल	सौगमल्ल
१६३	८	अक्रोस	आकाश
१०४	१३	सभाले	सभाले
१६६	१२	मल	जलमैल
१६६	१५	निपेध	निमीया
२०३	१३	सत्त	सत्तव
२०४	४	सत्य	सत्तव
२०४	५	पृथ्वीपांणी तेईमगी आगतमे २३	पृथ्वीपाणीरी आगनमे २३
२०४	७	द्रव्यथकी	द्रव्यमे
२०४	८	नेत्रथकी	नेत्रमें

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२०४	१०	कालथकी	कालमें
२०४	११	भावथकी	भावमें
२०४	११	पुन' द्रव्यथकी,	द्रव्यथकी
२०६	१४	यर्थात्	अर्थात्
२०७	६	विनयवानका	विनयवानकी
२०८	११	आवों	आवे
२१६	६	अद्दता दान थी	अदत्तादान थी
२१६	८	चक्षुर्धनिद्रय	चक्षुइन्द्रिय
२१७	४	भरण	मरण
२१७	१२	मनसमाधेणिया	मनसमाधारणीया
२१७	१४	कायसमाधरणिया	कायसमाधारणिया
२१८	१६	चितावना	चितवना
२२०	६	असाभ्कई	असभ्काई
२२०	१७	सपन्न	संपन्न
२२१	१४	चरित्रयुक्त	चारित्रयुक्त
२२८	८	प्रमाणसे	प्रणामसे

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२२६	१	वाघे	वाघे
२३०	१४	गीलाणकी	गीलाणीकी
२३५	४	हणो	हणे
२३५	८	घणा	घणा
२३६	५	हीते	होते
२४८	१६	शत्र	शत्रु
२५२	३	साघु	साधु
२५२	६	लकड	लकड
२५३	१	झाझ	जहाज (Steamer)
२५४	१	बीजने	निजेने
२५४	७	कुणनी	कुलनी
२५५	११	भरण	मरण
२५५	१४	लीघु	लीधु
२५६	१३	चड़ते	चढ़ते
२५८	७	रावे	राखकर
२५६	११	कपटपणो	कपटपणो

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२६२	३	जगृत	जागृत
२७०	४	चलीय	चलीये
२८२	५	वड	वडे
२८५	५	प्रघान	प्रधान
३१०		खोटा	खोटा
३१२	हेडींग	वाल	वोल
३७८	११	गुणआशि	गुणयाशिये



॥ श्रीगौतमाय नम ॥

सूचना ।

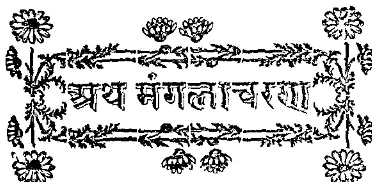
यह पुस्तक यत्नसे रक्खे । शुद्धिपत्रसे अशुद्धि निकालकर आदिसे अन्त तकवाचे।

इसका प्रथम भाग छपाहुवा वटगया है, त्यार नहीं है, कितनेक बोल प्रथम भागका इसमें छपा है ।

उघाड़े मूख तथा चिरागके चानणेमें नहीं वाचे, पद, अक्षर, ओछो, अ. आगो, पाछो, तथा कानो, मात, मिडी, ह्रस्व, दीर्घ, अशुद्ध, टूटी भाषामे लिख्यो हुयो विद्वान कृपाकर शुधार लेवें सग्रह-कर्ताकी यही नम्र विनती है ।

॥ श्री ॥

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥



नाभेया जितवासुपूज्य सुविधि श्रेयांसपद्म-
प्रभा[illegible] श्री शांतिशशी संभवार सुमती
न्नें नेमिशीतलं धर्मपार्श्व सुपार्श्व वीर विमला-
नतांस्तीथासुव्रत कुंथुमल्लयभिनन्दनौनुत जिना-
नेतांश्चतुर्विंशातिं ।



॥ दोहा ॥

आदि [illegible] अरिहंतजी, भवभंजन भगवन्त ।
केवल कमला धारजे, पायो भवजल अन्त ॥१॥



तास चरणमे शिर धरी, प्रणमु पर्म उल्लास ।
गुरु गिरवा ज्ञान निधि,सफल करो मम आस ॥२॥
कई ग्रंथ कई नीति मे, कई सूत्र अर्थमें जोय ।
कई सज्जनसे धारिया, बोल छत्तीस होय ॥३॥
स्थिर चित्त विवेकसे, वाचे तो फल होय ।
नहीं पूर्णता यहा की, दोष न दीजो कोय ॥४॥

॥ श्रीवीतरागाय नम ॥

॥ अथ मतीज्ञानके २८ भेद लिखते है ॥

(१) उत्पातीया बुद्धि—तत्काल बात उपजे (२) विनया बुद्धि—विनयसे आवे (३) कम्मया बुद्धि—काम करते २ सुधरे (४) प्रणामिया बुद्धि—वय प्रमाणे बुद्धि होवे यह चार बुद्धि—और श्रोतेन्द्रीकी अवग्रह सो शब्दको ग्रहण करना, श्रोतेन्द्रीकी इहा सो सुणे हुये शब्दका विचार श्रोतेन्द्रीकी अवाय सो सुणे शब्दका

निश्चय करना, श्रोतेन्द्रीकी धारणा सो बहुतकाल तक धार याद रखना जैसे १ श्रोतेन्द्री पर ४ बोल कहे ऐसे ही २ चक्षुइन्द्रीसे देखनेका, ३ घ्राणेन्द्रीसे सूघनेका, ४ रसेन्द्रीसे स्वाद लेनेका, ५ स्पर्श इन्द्रीसे स्पर्शका, ६ मनसे विचारका यो ६ पर चार २ बोल कहनेसे ६×४=२४ बोल हुवे, और ४ बुद्धि मिलकर मतीज्ञानके अठावीस भेद हुवे यह २८ मतिज्ञानके भेद है। इनमेसे ऐकेक के बारे २ भेद होते हैं, जैसे—अनेक जीव अनेक वाजितरोके शब्द सुनते है, उनमे मतिज्ञानकी क्षयोपशमतासे १ कोई एक वख्तमे बहुत शब्दोको ग्रहण करते हैं सो बहु, २ कोई थोडे शब्द ग्रहण करते हैं सो अबहु, ३ कोई भेद भाव सहित ग्रहण करे सो बहुविध, ४ कोई भेद भाव नहीं समझे या थोडा समझे सो अबहुविध, ५ कोई शीघ्र समझ जाय सो क्षिप्र, ६ कोई विलम्ब (देर) से समझे सो अक्षिप्र, ७

खुलाशा द्रव्यसे एक जीवआश्री आदि अन्त सहित पढने बेठा सा पूराकरे बहुत जीवआश्री आदि अन्त रहित बहुत पढे हे और पढेगे, २ क्षेत्रसे भरत ऐरवत आदि—अन्त सहित और महाविदेह आश्री आदि अन्तरहित, ३ कालसे उत्सर्पिणी उवसर्पिणी आश्री आदि अन्त सहित और नोउत्सर्पिणी उवसर्पिणी आश्री आदिअन्त रहित, ४ भावसे तीर्थंकर भाव प्रकाशे सा, आदि अन्त सहित और क्षयोपशम भाव आश्री आदि अन्त रहित, ११ गमिक श्रुत दृष्टिवाद १२ मा अग, १२ अग-मिक श्रुत आचारागादिक कालिक सूत्र, १३ अगप्रविठ सूत्र जिनभावित द्वादशागीवाणी, १४ अगवाहिर वारे अगके बाहिरके सूत्रके दो भेद—१ आवश्यक सामायिकादि छे और २ आवश्यक वितिरिक्त सो कालिक उत्कालिकादिक जानना, यह मनीश्रुत ज्ञानका आपशमें

खीरनीर जैसा सयोग है, इन दोनो ज्ञान विना कोई जीव नहीं है, सम्यक दृष्टिके ज्ञानको ज्ञान कहते है और मिथ्यादृष्टिके ज्ञानको अ-ज्ञान कहते हे, उत्कृष्ट मतीश्रुत ज्ञानवाले केवलीकी तरह सर्व द्रव्य-क्षेत्र-काल-भावकी वात जान सकते है, इसलिये श्रुतकेवली कहे हैं। जातिरमरण ज्ञान भी श्रुत ज्ञानके पेटमे है जातिस्मरणसे ६०० भव पिछले किये हुये जान सकते है। जो लगोलग सञ्ञीके किये हुये तो नर्कके जीव जातिस्मरण ज्ञानसे पूर्वभवकी वात जान सकते हे, परतु देख सकते नहीं हे; क्योकि यह परोक्ष ज्ञान है। महावेदनाके अनु-भवसे और परमाधामियोके कहनेसे जाति-स्मरण ज्ञान हो जाता है।

॥ अवधिज्ञानके ८ भेद ॥



१ भेद—दो तरह अवधी ज्ञान होते है, १

भव जन्मसे सो नारकी, देवता और तीर्थंकरको होवे, २ क्षयोपशम करणी करनेसे सो मनुष्य तिर्यंचका होवे, ३ विषय सातमी नरकवाले जघन्य आधा कोस उत्कृष्ट एक कोस, छठीवाले जघन्य एक कोस उत्कृष्ट १॥ कोस, पचमीवाले जघन्य देढ कोस उत्कृष्ट दो कोस, चोथीवाले जघन्य दो कोस उत्कृष्ट २॥ कोस, तीसरीवाले जघन्य २॥ कोस उत्कृष्ट तीन कोस, दूसरीवाले जघन्य ३ कोस उत्कृष्ट ३॥ कोस, और पहली-वाले जघन्य ३॥ कोस, उत्कृष्ट ४ कोस अवधी ज्ञानसे देखते है। असुरकुमारदेव जघन्य २५ योजन उत्कृष्ट असख्याते द्वीप समुद्र, बाकीके नवनीकायदेव और वाणव्यतरदेव जघन्य २५ योजन उत्कृष्ट सख्याते द्वीप समुद्र, ज्योतिषीदेव जघन्य उत्कृष्ट सख्याते द्वीप समुद्र, ऊपरके सब-देव ऊचा अपने २ देवलोककी धजातक देखे और तिरछा पहिले दूसरे देवलोकमे पल्यके

आयुष्य है वो त्रीछा असख्याते द्वीप समुद्र देखते हैं और सब असख्याता द्वीप समुद्र देखते हैं नीचे १-२ देवलोकवाले पहिली नर्क, ३-४ वाले दूसरी नर्क, ५-६ वाले तीसरी नर्क, ७-८ चौथी नर्क, ९-१०-११-१२ वाले पाचमी नर्क, नव ग्रीवकवाले छटी नर्क, चार अनुत्तर विमानवासी देव सातमी नर्क, सर्वार्थ सिद्ध विमानवासी संपूर्ण लोकमे कुछ कमी सन्नी तिर्यंच पचेंद्री जघन्य अगुलके असख्यातमे भाग उत्कृष्ट असख्याते द्वीप समुद्र सन्नी मनुष्य जघन्य अगुलके असख्यातमे भाग उत्कृष्ट सपूर्णलोक और लोक जैसे अलोकमे असख्याते खड देखे सठाण अवधि ज्ञानसे नर्कके जीव त्रिपाइके आकार देखे, भवनपती वाला टोपलेके आकार देखे, व्यतर पड़ा ढकके आकार, ज्योतिषी झालर घटाके आकार, बारह देवलोकके देव मृदगके आकार, ग्रैवेकके देव

फुलचंगेरीके आकार, अनुत्तर विमानके देव कुमारीके कंचुके कांचलीके आकार देखे, मनुष्य तिर्यंच जालीके आकारसे अनेक प्रकारसे देखे, ४ बाह्याभ्यतर नर्कके जीव और देवताके जीवको आभ्यतरिक ज्ञान तिर्यंच बाह्य प्रगट ज्ञान और मनुष्य बाह्य अभ्यतर दोनो होवे, ५ अणुगामी अणाणुगामी, अणुगामी उसे कहते है एक वस्तुसे दूसरी तीसरी यों सर्व अनुक्रमें देखे और सर्व ठिकाणे साथ रहै देख सके, अणाणुगामी जहा उपज्या तहा देखे दूसरे ठिकाणे न देख सके, नारकी देवताके अणुगामी अवधिज्ञान और मनुष्य तिर्यंचके अणुगामी अणाणुगामी दोनु, ६ देशसे सर्वसे नारकी देवता तिर्यंचको देशसे थोड़ा ज्ञान होय और मनुष्य को देशसे व सपूर्ण दोनो अवधि ज्ञान होय, ७ हाय मान वर्द्धमान अनुठीए हायमान उपजे पीछे कमी होता जाय, वृद्धिमान वृद्धि

ज्यादा होना जाय, अवस्थित उपजा उपना ही बना रहे, नारकी देवको अवस्थित और मनुष्य तिर्यचको तीन ही तरहका होता है, ८ पडवाइ, अपढ़वाइ, आकर चला जाय सो पढवाइ ज्ञान और आकर नहीं जाय सो अपढ़वाइ ज्ञान नर्क देवको अपढ़वाइ और मनुष्य तिर्यचको पढ़वाइ अपढाइ दोनो अवधि ज्ञान होते है।

मन पर्यव ज्ञानके दो भेद।



१ ऋजुमती और २ विपुलमती मनपर्यव ज्ञानी द्रव्यसे रूपी पदार्थ देखे क्षेत्रसे नीचे १ हजार योजन ऊचा नवसो योजन तिरछा, अढाइ द्वीप ऋजुमतीवाला अढाइ अंगुल कमी देखे तथा खुला खुला नहीं देखे, विपुल-मतीवाला अढाइ द्वीप पूरा देखे और खुला देखे कालसे पल्यके असख्यातमे भाग गये कालकी और आवते कालकी बात देखे, भावसे

फुलचंगेरीके आकार अनुत्तर विमानके देव कुमारीके कचुके काचलीके आकार देखे, मनुष्य तिर्यच जालीके आकारसे अनेक प्रकारसे देखे, ४ बाह्याभ्यतर नर्कके जीव और देवताके जीवको आभ्यतरिक ज्ञान तिर्यच बाह्य प्रगट ज्ञान और मनु य बाह्य अभ्यतर दोनो होवे, ५ अणुगामी अणाणुगामी, अणुगामी उसे कहते है एक वस्तुसे दूसरी तीसरी यो सर्व अनुक्रमे देखे और सर्व ठिकाणे साथ रहे देख सके, अणाणुगामी जहा उपज्या वहा देखे दूसरे ठिकाणे न देख सके नारकी देवताके अणुगामी अवधिज्ञान और मनुष्य तिर्यचके अणुगामी अणाणुगामी दोनु, ६ देशसे सर्वसे नारकी देवता तिर्यचको देशसे थोड़ा ज्ञान होय और मनुष्य को देशसे व सपूर्ण दोनो अवधि ज्ञान होय, ७ हाय मान वर्द्धमान अवुठीए हायमान उपजे पीछे कमी होता जाय, वृद्धि ं वृद्धि

असख्यातमे भाग क्षेत्र देखे वा अधिक भी होता है और मन पर्यवज्ञान एकही वस्तमें अढाई द्वीप देखे जितना ऊपजता है, ४ और अवधिज्ञानसे भी जो रूपी सुक्ष्म द्रव्य दृष्टि नही आवे वो मन पर्यववाले देख सकते हैं यह चार विशेषत्व है, यह देशसे नो इन्द्रि प्रत्यक्ष मतिज्ञानके भेद हुये ।

॥ ५ केवलज्ञान ॥



सर्व द्रव्य-क्षेत्र-काल-भावको जाने, अपड-वाइ सपूर्ण होता है। यह ऊपरके गुणयुक्त मनुष्य अवेदी अकषाइ तेरमे गुणठाणवर्त्तिको होता है। यह आये पिछे निश्चय मोक्ष जावे ।

इति ज्ञानभेद सपूर्णम् ।

सर्वसन्नीके मनकी वात जाणे, देखे, यह मन-पर्यव ज्ञान मनुष्य सन्नी कर्मभूमी सरयात वर्पके आयुष्यवाले पर्याप्ता समदृष्टी सजती अप्रमादी लब्धित्र त इतने गुणयुक्त होवे उन मनुष्यको उपजता है। दृष्टांत, जैसे—किसीने अपने मनमे घड़ा धारण किया तो ऋजुमतिवाले तो फक्त घड़ाही देखेगे और विपूल मतिवाले विशेष देख सकते हैं कि इसने मृत्तिका (मट्टी) या धातुका घडा घृत या दुग्धादि अर्थ धारण किया वगेरा, ऋजुमतिवाले पडिवाइ हो जाते है, अर्थात ज्ञान चला जाता है और विपुलमति मन पर्यव ज्ञान हुये बाद केवलज्ञान जरूर ही उत्पन्न होता हे, अवधी ज्ञानसे मन-पर्यवज्ञानके १ क्षेत्र थोडा है, परन्तु विशुद्धता निर्मलता अधिक हे, २ अवधिज्ञान चार ही गतीके जीवोको होता हे और मन पर्यवज्ञान फक्त मनुष्यगतिमें साधुको ही होता हे, ३ अवधिज्ञान तो अगुलके

असख्यातमे भाग चेत्र देखे वा अधिक भी होता है और मन पर्यवज्ञान एकही वख्तमें अढाई द्वीप देखे जितना ऊपजता है, ४ और अवधिज्ञानसे भी जो रूपी सुक्ष्म द्रव्य दृष्टि नही आवे वो मन पर्यववाले देख सकते हैं यह चार विशेपत्व है, यह देशसे नो इन्द्रि प्रत्यक्ष मतिज्ञानके भेद हुये ।

॥ ५ केवलज्ञान ॥



सर्व द्रव्य-चेत्र-काल-भावको जाने, अपडवाइ सपूर्ण होता है। यह ऊपरके गुणयुक्त मनुष्य अवेदी अकषाइ तेरमे गुणठाणवर्त्तिको होता है। यह आये पिछे निश्चय मोक्ष जावे ।

इति ज्ञानभेद संपूर्णम् ।

॥ अहिंसा परमो धर्म ॥

श्री धर्म परीक्षा सत्तेप हितकारण लिखिए छै ।



कोई भला शिष्य श्री गुरुने पुछ छै, श्री गुरु म्हारो वचन साभलो, जे ससार मध्ये जितना जाव छ ते सर्व जीवने धर्म एहवो शब्द घणु वाहलो लागे छे, हवे गुरु कहे एह वातनो शु अचरज तीहारे वले श्री गुरुने शिष्य पुछे हे स्वामी हु एटले माटे पुछु छु के जो सर्व जीव जेहवो धर्म छ तेहवो जानता नथी अने धर्म श द तो वाहलो घण लागे छै, तिहारे श्री गुरु उत्तर दहे छे के जे धर्म छे ते जीवनो स्वरुप छे, जीवरो निज लक्षण छे, ते माटे शब्द पण घणु वाहलो लागे छे, तेहनो दृष्टात देखाडे छे जिमके नागनो मत्र कहता नाग घणु खुसी थाय छै अने विपपण पाछु वाले छै ते नागना मत्र

मध्ये नागनो कुल नामो वखाणे छै ते माटे नागनु मन घणो खुसी थाय छै, तिम इण दृष्टांते जीव पण धर्म शब्द सांभलयां थी खुसी थाय छै, तिवारे फिर शिष्य बोल्योके हे स्वामी ससार मध्ये तो सहुलोग कहे छे के देहथी नीपजे ते धर्म छे अने श्री गुरुजी तमे तो जीवनो निज लक्षण ने धर्म कह्यो छे तेहनो प्रकाश करो, तिहारे श्री गुरु कहे जे जीवने चेतना छै ते जीवनो धर्म छे ते चेतना मध्ये गुण अनता छै ते मध्ये गुण तीन मुख्य छै तेहना नाम— ज्ञान गुण (१) दर्शन गुण (२) चारित्र गुण (३) ये तीन गुणने आददेइ अनंता गुण छे ते सर्व चेतना धर्म छे ते चेतना धर्म जीवने पासे छे ते जीव निगोद माहे गयां पण चेतना धर्म टले नही पण ते मध्ये एटलो विशेष छे के धर्म पोताने पासे छे पण विसर गयो छे, ने सभाल तो नथी, तेहनो दृष्टांत लिखिए छै—

जिम कोइ वालकने वाल अवस्था मध्ये तेने तेहना माता पिताए चिन्तामण रतन ते वालक ने गले वाध्यो ते (वालक) कालातर मोटो थयो तेने दालिद्र अवस्था आवी छै पण पाताने गले चिन्तामण रतन छै ते जाणतो नथी, तेहने कोई कहे तुझ पासे भली वस्तु छै ते माने नहीं स्यु माने नहीं के ते पुरुपने दालिद्र रेहण हार छै (अतराय तुटी नहीं) तिण वास्ते माने नहीं ज्यु जीव पण पोताने वहुल ससार ने उदय चे नना धर्म विसर गयो छे वीजो दृष्टात जे कोईके घरमें भुय (भवरे) माहे निधान छे पण ते जाणतो नथी तेहने कोई एक जाण पुरुप कहे के थारे घर मांहे निधान छै तेहनी दालिद्र दिसा मिटन हार छे ते कह्यो वचन मान्यो, निधान काढ्यो सतोप ऊपन्यो इम वहु दृष्टांते जीव जिन भाग्यो धर्म जाणे पोतानो धर्म पोताने पास छै चेतना

धर्म टले नहीं, तेवारे वले शिष्य बोल्यो हे स्वामी पोतानी वस्तु पोताने पासे छै विसारी गयो ते सुं कारण, तिहारे श्रीगुरू कहे छै जे अनादि कालनो जीव छै ते राग द्वेष रूप फेरीदीयोछै ते ऊपर दृष्टांत लिखिए छे, जिमके एक पाणीनो द्रह भरीयो छ ते पाणी मध्ये गुण घणा छै ते मध्ये गुण तीन मुख्य छै ते किसा गुण—(१) पहिलो निर्मलताइ (२) बीजो रस. मधुरताइ (३) तीजो शीतलताइ ए तीनो गुण आदि देइने पाणी मांहे गुण घणा छै ते पाणीरा द्रह मध्ये कालंतर किसी ही जोगवाइ करीने पाणी मांहे सेवाल ऊपनो ते पाणी मध्ये गुण तीन (३) निकमा थया शीतलताइ तेहवी नथी, रस मधुरताइ पण तेहवी नथी, अने वले निर्मलताइ तो पूरी गई ए दृष्टांते जीव नो स्वरूप जाणवो, जिम पाणी थी सेवाल ऊपनो छै तिणहीज पाणी अवस्था फेरी दिछै जिम

पुद्गलने निमित्त करी ते राग द्वेषरूप परिणाम ते जीवथीज ऊपना छै तेणेहीज जीवनो स्वरूप फेरी दियो छे ते जीव मध्ये अने पाणी ना दृष्टांत मध्ये एटलो विशेषछै के जीवने राग द्वेष प्रणाम अने पुद्गल नो निमत्त अनादि कालना लागा खाण सपन्न छै अने पाणी मध्ये सेवाल ऊपना कहे छै एहवो दृष्टात श्रीगुरुना मुख थकी साभलीने शिष्य खुश थयो।

॥ शुभ भवतु ॥

॥ सेव भते सेव भंत। तमेव सच्चम् ॥

॥ सम्यक्त का ५ लक्षण ॥

१ सम कहता—शत्रु, मित्र ऊपर सरीषा भाव रखे।

२ समवेग कहता—वैराग्य भाव रखे।

३ निरवेग कहता—आरभ परिग्रह से निवर्ते।

४ अनुकपा कहता—परजीवने दुखी देखने करूणा (अनुकपा) करे।

५ आसता कहता—जीवादिक द्रव्यना सुदम भाव सुणकर मु झावे नहीं श्रीजिन वचन ऊपर आसता रखे।

॥ विस्तार ॥

॥ अथ संवेग स्वरूप लिख्यते ॥

सम्यक्त सदा अन्त करणमे सवेग---वैराग्य भाव रखे।

श्लोक—शरीर मनसागंतु वेदना प्रभवाद्भवात्।
स्वप्नेद्रजालसंकल्पाद्भीति सवेगमुच्यते॥

अर्थात् संवेगी ऐसा विचारेकि "ससारमी दु खपडरय" यह ससार शारीरिक देह सबन्धी रोगादिक और मानसिक मन संवन्धि चिता इन दोनों दु खो करके प्रतिपूर्ण भरा है, किंचित

अर्थात—जगतवासी सर्व जीव सुखसे जीवितव्यके अभिलाषी है, दुःख प्राप्त होनेसे घबराते है और दुःख प्राप्त हुए उस दुःखमेंसे कोई छुड़ानेवाला मिल जाय तो वो हर्ष मानते हैं। इसलिये समदृष्टि प्राणी दुःखी जीवोंकी अनुकम्पा लाकर उनको उस दुःखसे अवश्य छुडावें यह अनुकम्पा ही धर्मका मूल है।

॥ दोहा ॥

दया धर्मका मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोडिये, जबलग घटमें प्राण॥

॥ अथ आसता स्वरूप लिख्यते ॥

श्री जिनेश्वरके मार्गपर या वचन पर पक्की आस्ता रखे, एक जिनेश्वरके मार्गको सच्चा जानना, दृढ़ श्रद्धा रखना, देवादिक कोई धर्मसे

चलाय मान करे तो चलायमान न होवे, श्ररणीकजी कामदेवजी की तरह दृढ़ता रखे, देहका विनाश होते भी धर्मको सुठाए जाने क्योंकि देहादिक अनत वख्त मिली है ।

॥ दोहा ॥

धन देकर तन राखियें, तन दे रखिये लाज ।
धन दे, तन दे, लाज दे, एक धर्मके काज ॥

परन्तु धर्म मिलना मुशकिल है इसीलिये शरीरसे ज्यादा धर्मका यत्न करना बोलते है ।

"श्रासता सुख सासता"

श्रास्तासे ही मंत्र जंत्र श्रौषध फलीभूत होते है, इस वख्त दान-धर्म-क्रिया-कष्ट करनेवाले बहुत हैं, परन्तु दृढ़ श्रासतावाले बहुत थोड़े है, जिससे ही महा प्रभाविक नवकार तथा क्रिया का प्रत्यक्ष फल किंचित दृष्टी श्राता है । बहुत धर्मीजन तो गोबरके खिले जैसे जिधर नमावे उधर नम जाते हैं श्रौर नरबदाके गोटे से

जिधर गुड़ावे उधर गुड़ जात हे ऐसे बहुत है, इस लिये धर्मी हाकर दु ख पाते हे। बहुत धर्मकर यथा तथा फल प्राप्त नहीं कर सकते हें; ऐसा जान समदृष्टी प्राणी यथा शक्ति करणी कर, परन्तु पूर्ण आसता रखकर पूर्ण फल लेवे। इति आसता स्वरूप ॥

॥ इन्द्रियोंके विषय स्वरूप लिख्यते ॥



॥ श्रोतेन्द्री ॥

१ श्रोतेंद्री—कानके तीन विषय, १ जीव शब्द जीव वाले सा, २ अजीव शब्द भींतादिक पड़नेसे शब्द होवे सो, ३ मिश्र शब्द वाजित्र वासरी प्रमुख अजीव, वजानेवाला जीव दानो मिलकर शब्द होवे सो मिश्र शब्द, इसके बारह विकार पहिले तीन विषय कही उसको दा गुणा करना शुभ-अशुभ जैसे पुण्यवान प्राणी बोले नो अच्छा लगे और पापी बोले तो

खोटा लगे यह जीव शब्द हुये, रुपये पड़े तो उसका शब्द अच्छा लगे, भीत पड़े तो उसका शब्द खोटा लगे ये अजीव शब्द हुये, उत्सवका वाजिन्त्र अच्छा लगे और मृत्युका और सग्राम का वाजिन्त्र खराब लगे यह मिश्र शब्द हुये, यो तीनके दो भेद करनेसे छव भेद हुये। इन छव पर कभी राग प्रेम और कभो द्वेष उत्पन्न होता है, अच्छे शब्द पर भी किसी समय द्वेष आ जाना है, जैसे लग्न होता है तब कहे कि "रामनाम सत्य है" तो खोटा लगे और कभी खोटा शब्द अच्छा लगना है जैसे सासरे में गालियो, यो छव के दो गुणे करनेसे श्रोतेन्द्रीके बारह विकार हुये। इस इन्द्रीके वशमें होकर मृग, सर्प इत्यादि पशु मारे जाते है, ऐसा जान कभी राग द्वेष उत्पन्न होवे ऐसा शब्द सुनना नहीं और कभी कानमे आय जाय तो उसपर राग द्वेष करना नहीं

राग द्वेष ही कर्मके बंधका मुख्य कारण है। इस भवमें या आगेके जन्ममें बहिरापणा या कानके अनेक रोग प्राप्त होते हैं और इसको वशमें करता है, वह श्रोतेन्द्रीकी निरोगता पाता है और अनुक्रमे मोक्षमे जाता है।

॥ चक्षुइन्द्री ॥



२ चक्षुइन्द्री—आंखकी पांच विषय १ काला, २ नीला, ३ लाल, ४ पीला, ५ श्वेत, इनके साठ विकार, पांच वर्णोकी वस्तुमें कितनी सचित (सजीव) कितनी अचित (निर्जीव) और कितनी मिश्र (सचित अचित दोनो भेली) होती है, यों ५ × ३ = १५ होये, यह १५ कभी शुभ होता है और कभी अशुभ होता है, यों १५ × २ = ३० हुये, इन तीस पर कभी राग और द्वेष पैदा होता है, यों ३० × २ = ६० चक्षु इन्द्रीके विकार हुये। इस इन्द्रीके

वशमें करनेसे निरोगीपणा पाकर अनुक्रमे मोक्ष प्राप्त होता है । यह रसेन्द्री वशमें करनेसे पांचही इन्द्री सहजमे वशमे हो जाती है। कहा है कि "एक धापी तो चार भूखि एक भूखि तो चार धापी" जो रसेन्द्री पेट भरा हुवे तो काणोसे राग रागिणी सुनने की, आंखोसे रूप देखनेकी, नाकसे सुगन्ध लेनेकी और शरीरसे भोग भोगनेकी इच्छा उत्पन्न होती है और जो रसेन्द्री भूखी होवे तो कुछ भी इच्छा होती नही है। उल्टा चार ही कामोका तिरष्कार होता है । शान्त आत्मा रहती है। इसलिये आत्मा वशमे करनेका एक यहही उपाय है कि वस्तु खानेका नियम रखना ।

॥ स्पर्शेन्द्री ॥



५ स्पर्शेन्द्री शरीर इसकी आठ विषय—१ हलका, २ भारी, ३ ठण्डा, ४ उष्ण (गरम) ५

राग पैदा होवे ऐसा सुगन्ध सुघना नहीं और दुर्गन्ध आजावे तो द्वेष करणा नहीं क्योंकि राग द्वेष करनेसे घ्राणेन्द्री की हीनता पाता है और वशमे करनेसे घ्राणेन्द्री निरागी पाकर अनुक्रमे मोक्ष पाता है।

॥ रसेन्द्री ॥



४ रसेन्द्री—जीभकी पाच विषय, १ खट्टा, २ मीठा, ३ तीखा, ४ कडुवा, ५ कसायला। इसका साठ विकार, यह पाच सचित, पाच अचित और ५ मिश्र यो तिन गुणे करनेसे १५ हुये, ये १५ शुभ और १५ अशुभ यो ३० हुये, यह ३० पर राग और ३० पर द्वेष यो साठ विकार हुये। इसके वशमे पड़कर मच्छी मारी जाती है। ऐसा जान कर किसी रस पर राग द्वेष करना नहीं, क्योंकि राग द्वेषसे रसेन्द्रीकी हीनता प्राप्त होती हे और

वशमें करनेसे निरोगीपणा पाकर अनुक्रमे मोक्ष प्राप्त होता है । यह रसेन्द्री वशमें करनेसे पाचही इन्द्री सहजमे वशमे हो जाती है। कहा है कि "एक धापी तो चार भूखि एक भूखि तो चार धापी" जो रसेन्द्री पेट भरा हुवे तो काणोसे राग रागिणी सुनने की, आंखोसे रूप देखनेकी, नाकसे सुगन्ध लेनेकी और शरीरसे भोग भोगनेकी इच्छा उत्पन्न होती है और जो रसेन्द्री भूखी होवे तो कुछ भी इच्छा होती नहीं है। उल्टा चार ही कामोका तिरष्कार होता है । शान्त आत्मा रहती है। इसलिये आत्मा वशमे करनेका एक यहही उपाय है कि वस्तु खानेका नियम रखना।

॥ स्पर्शेन्द्री ॥



५ स्पर्शेन्द्री शरीर इसकी आठ विषय—१ हल्का, २ भारी, ३ ठण्डा, ४ उष्ण (गरम) ५

राखीजे, ८ राजा डडेजिका, चारकी वस्तु मोल न लीजे, ६ राजाइडे लोकभटे एसा काम न कीजे, १० पराई वस्तु दिये विना न लीजे, चोरी लागे, ११ अनीतीसे धन भेलो न करीजे, १२ अकलसे काम नीकलता होय तो धन न खरचिजे, १३ गुरुके पास राज सभामें तथा मोटी सभामें झुठ न बोलीजे, १४ घर सारु दान दीजे, झूठी साख न भरीजे, १५ गुणवान पडितासु प्रीत राखीजे, जो बुद्धि वधे, १६ कीणरी जामनीमें न आईजे, १७ किसीका दिल दुखे एसा कडवा वचन न बोलीजे, १८ अजाणी वस्तु न खाइजे, नदी फलवत्, १६ विना आकब कीणोरी वातमे हुकारो न दीजे, २० घररी दुखरी वात चोवड़े किणहीने न कहीजे, २१ सूति गायने, सर्पने, नाहारने न जगाइजे, २२ आपरा मित्रने पूछकर काम कीजे, २३ विना पिछाणयां किणरोही साथ न कीजे,

२४ पांच आदमी मिलके कहवे सो मान लीजे, २५ चाकरसुं कपट दगो न कीजै, २६ वही खातामें, खत पत्रमे झूठो नामो न लिखीजे, २७ वड़ा मनुष्यने छोछो आखर न कहीजै, २८ घणो लोभ हाणि जाणीजै, २९ विद्यावतसुं, पडितसुं वाद न कीजे, ३० द्रव्य फजुल न खरचीजे, ३१ खर्च आमदानी रोज स्मभालीजे, ३२ भोजन तैयार हुवा पाछै जिमणरी जेज न कीजे, ३३ औषध खाइजे तो पथ्य राखीजे, छाने लीजे, ३४ मसकरीमें किणरी वस्तु न उठाइजे, ३५ तोला मापा घटता वढ़ता न राखीजै, ३६ नामो ठामो तैयार राखीजे, ३७ पुंजी सारु काम करीजे, ३८ भोजन वेला झगडो नहीं कीजे, ३९ माथे कर उधार न दीजै, ४० अण भावतो भोजन न कीजे, अजीर्ण होय, ४१ गलि विचे एकली लुगाईसु वात न कीजे, ४२ खाति लोहार

श्री कनै उभा न रहीज, ५ काइ लाल पालकीयां न पत्तीजें, ६ भलो चावै तिणरी सीख मानीजै, ७ वोल्या वध नहीं होय तिणरो सघ न कीजें, ८ परवश पड्या सील दृढ राखीजै, ९ सटल विटलसु प्रेम न कीजे, १० सज्जन मित्रने छेह न दीजे, ११ कुमती हिसा कारक संग न कीजे, १२ चुकाने वार वार न पूछीजै १३ उलटी बुद्धिवालेने वारवार सीख न दीजे, १४ घणोमान वधायो तोहीं विनो न छोडीजै, १५ सुखदुखमें पिण भली मर्यादा न छोडीजै, १६ आपणा गुण आपईज न वखाणीजें, १७ आपना औगुण पराये पर मत डालीजे १८ पूठ पाछे औगुण न बोलीजे, १९ सम्यक्त शील दृढ़ राखीजे, २० बुरीगारने न छेडीजे, २१ हीयारी वात जिणतिणनै न कहीजे, २२ रीस चढ़े तो क्षमा कीजे, २३ विण विच्यारा दाय आवै च्यू न बोलीजे, २४ धर्म आचार्यरे

हुकममें रहीजे, २५ पर उपगार भूलीजे नहीं, २६ निर्गुण देवगुरु धर्म सेवीजे नहीं, २७ गुणवत देवगुरु धर्म सेवीजे २८ निश्चय व्यवहारनां जांण हुइजे, २९ चतुर्विध सघरा निदकने दुर्लभ बोधी जाणीजे, ३० चतुर्विध सघने बखाणे ते सुलभ बोधी जाणीजे, ३१ आवशक उपयोग सहित कीजे, ३२ भणने गुणनेमें वाद न कीजे, ३३ सशय उपजे तो सदगुरुने पुछीजे, ३४ दोप आलोयने निशल हुईजे, ३५ गुरुके, बड़ाके सामो न बोलीजे, ३६ गुरुनो काज हित सुं कीजे, ३७ किसी की आतमा न दुखाइजे, ३८ धर्मरे ठिकाणे विकथा न कीजे, ३९ धर्मरे ठिकाणे भूठ न बोलीजे, ४० छव काय वंचे जठे धर्म जाणीजे, ४१ गुण उपजे तिणने भणाईजे, ४२ निर्गुण, सुगुणरी परीक्षा कीजे, ४३ कूड़ारी पख न खांचीजे, ४४ सत्यवादीरी प्रतीत आणीजे,

४५ कृतघ्नने अपुणग्राही जाणीजे, ४६ कपटीरो विश्वास न कीजे, ४७ पाप कर्मसे डरता रहीजे, ४८ किणही वस्तुरो गर्व न कीजे, ४६ धर्म कार्यपर तत्पर रहीजे, ५० अति लोभ तृष्णा न कीजे, ५१ किणहीसु डस राखने दुख न दीजे, ५२ पारकी चाड़ी न कीजे, ५३ पर उपकार करता ढील न कीजे, ५४ कड़वा, कठोर, निर्लज्ज न बोलीजे, ५५ मीठो अमृत, सत्य, निरवद्य बोलीजे, ५६ धर्मरी बात उगाड़े मुढे न कहीजे, ५७ अविनीतरी बुद्धि गुण नासती जाणीजे, ५८ विनेवतरी बुद्धि गुण वधती जाणीजे, ५६ पाच सुमती तिन गुप्ती चोखी पालाजे, ६० लीधा व्रत पच्चखाण में दोष न लगाइजे, ६१ घणे कारणे पिण अधीरा न हुइजे, ६२ रोग कष्ट पड़्या धर्म न छोड़ीजे, ६३ पाच इन्द्रीरी विपयरे वश न पड़ीजे, ६४ खाण भोग, कर्म

रोग जाणीजे, ६५ संसाररो सगपण काचो जाणीजे, ६६ धर्म रो सगपण साचो जाणीजे, ६७ पापडी, लोभी, कुगुरुरो संग न कीजे, ६८ निर्लोभी सदगुरुनी सगत कीजे, ६९ सात विसन न सेवीजे, ७० पाप अठारह पर हरीजे, ७१ कोई वांको वर्ते तो ही द्वेष न कीजे, ७२ खोटे हाण, खरे बरकत जाणीजे ७३ पापसुं दुखफल धर्मसुं सुखफल जाणीजे, ७४ गुरुसुं वांको वहै सो वड़ो अभाग्यो जाणीजे, ७५ गुरुसुं सन्मुख वहै तो वडो भाग्य खुल्या जाणीजे, ७६ सीख उधीमाने तो हीन पुण्यो जाणीजे, ७७ जो झूठ न बोले और सच बोले सो साहूकार कहीजे, ७८ घणी बोली हांसी करीने गुण न खोईजे, ७९ ओछो वचन न काढ़े ते गभीर आदमी जाणीजे, ८० ओछो वचन काढ़े ते हलको आदमी जाणीजे, ८१ न्याय पक्ष स्वीकार कीजे, अन्याय पक्षमें

कभी न जाईजे, ८२ सुदेव, सुगुरु धर्मकी विनय भगती कीजे, ८३ देव गुरु धर्मकी असातना न कीजे, ८४ पराइ स्त्री वडी हे, सो माता छोटी है, सा वेहन भाणजी सामान जानीजे, ८५ सपत, त्रिपत, सुख, दुख, मुढ, चतुर, कर्मोरा नाटक जाणीजे, ८६ आरम, परिग्रह, विपय कपाय थाड़ो अने घणो दुखरो कारण जाणीजे ।

इति छयासी बोल समाप्त ।

॥ श्रीरस्तु कल्याण मस्तु ॥

॥ अथ कर्म छतीसा लिख्यते ॥



परम निरजण परम गुरु परम पुरुष परधान । वदो परम समाधि गत भयभजण भगवान ।१। जिनवान करि सुगुरु शिप मनि आनि । किछुक जीव अरु कर्म्मको निरने कहु वखानि ।२। अगम अनत अलोक नभ तामे

लोक आकाश। सदा काल ताके उदर जीव अजीव निवाश ।३। जीव दरवकी द्वै दसा ससारी अरु सिद्ध । पांच विकल्प अजीवके अपे अनादि अकिद्ध ।४। गगन काल पुद्गल धरम अरु अधर्म अभिधान । अव किछु पुद्गल दरवको कहुं विशेष वखान ।५। धरम दृष्टी सो प्रगट है पुद्गगल दरब अनन। जड़ लच्छण निरजीव दलरूपी मूरनिवंत ।६। जो त्रिभुवन थिति देखिये थिर जगम आकार । सो पुद्गल करवानको है अनाद विस्तार ।७। अव पुद्गलके वीश गुण कहो प्रगट समझाय । गरभित और अनंत गुण अरु अनत परजाय ।८। श्याम, पीत उज्जल अरुन हरित मिश्र बहु भांति । विविध वरण जो देखिये सो पुद्गगलकी कांति ।९। आमल तिक्त कपाय कटुखार मधुर रस भोग । ए पुद्गलके पांच गुण घटमां नहिं सव लोग ।१०। तातो शिरो चीकनो रुखो नरम

कठोर। हरवो अरु भारी सहज आठ फरस गुण जोर ।११। जो सुगन्ध दुरगन्ध गुण सो पुद्गलको रूप । अब पुद्गल परजायकी महिमा कहो अनूप ।१२। सबदबध सूछिम सरल लव वक्र लघू थूल । विथरनि भेद निउदोत तम दुहुको पुद्गल मूल ।१३। छाया आकृति तेज दुति इत्यादिक बहु भेद । ए पुद्गल परजाय सब प्रगट हो हिउछेद ।१४। केइ शुभ केइ अशुभ रुचिर भयानक भेप । सहज सुभाउ निभाउ गति आरू सामान विशेष ।१५। गरभित पुदगल पिंडमें अलस अमूरति देव । फिरै सहज भव चक्रमें यह अनादिकी टेव ।१६। पुद्गलकी सगत करै पुद्गल ही सा प्रीति । पुद्गलको आपागनै यह भरमकी रीति ।१७। जेजे पुद्गलकी दशा ते निज माने हम्म । यही भरम निभाउसो बढ़े करमको ब श ।१८। ज्यो ज्यो कर्म्म विपाक

वसिवाने भ्रमकी मोज। त्योंत्यो निज संपति दूरे जरे परिग्रह फोज ।१६। ज्यो वानर मदिरा पीवै विछु डंकत गात। भूत लगे कौतु करै त्या भ्रमको उतपात ।२०। भ्रम ससैकी भूलसौ लखेन सहज सुकीऊ। करम रोग समझै नही यह ससारी जीऊ ।२१। करम रोगके द्वै चरण विषम दुहुकी चाल। कम्प परकिती लिये एक श्रेवी असराल ।२२। कम्प रोग है पापपद अकर रोगहै पुन्न। ज्ञान रूप है आतमा दुहु रोग सो सून्न ।२३। मूरख मिथ्या दृष्टि सो निरखै जगकी रोस। डरहि जीव सब पापसो करही पुण्यकी होस।२४। उपजे पाप विकारसो भयतापादिक रोग। चिन्ता खेद बृथा बढ़ै दुख माने सुख माने सब लोग ।२५। उपजे पुन्न विकारसो विषै रोग विस्तार। आरति रूढ वृथा वढ़े सुखमाने ससार।२६। दोउ रोग समान है मूढ़ न जाने रीति। कप रोगसे मय करे अकर रोगसो

प्रीति ।२७। भिन्न भिन्न लच्चण लखे प्रगट दुहु की भाति। एक लहै उदवेगता एक लहै उपशाति ।२८। कच पकी सीसकुच हैं वक्र तुरङ्गकी चाल। अन्धकारकी सासमें कप रोगके भाल।२९। घकर कूदसी उमग हेऊ कर घद की चाल। मकर चाटनीसी दिये अकर रोगके माल ।३०। सम उद्योत दोऊ प्रकृति पुद्गलकी परजाई। भेद ज्ञान विऊमूढ मूमि भटक भटक भरमाई ।३१। दुहु रोगको एक पद दुहु सों मोष न हो। विना सिक दुहुकी दशा विरला बूजे कोई ।३२। कोउ गिरी पहार चढ़ कोउ बूजे कूप। मारन दोहुको एक सोक सों कहिवे को द्वै रूप ।३३। मावबामि दुविधा धरे ताते लखे न एक। रूप न जाणे जलधिको कूपा कोसों भेप ।३४। माता दुहुकी वेदनी पिता दुहु को मोह। दुहु बेडी सो ए धधि कहवत्ती कचन लोह ।३५। जाति दुहुयी

एक है दोय इक है जो कोई। गहे आचरे सद है सुवल्लभ है सोई ।३६। जाके चित जैसी दशा ताको तैसी दृष्टी। पडित भव खडन करे मुड बधावे सृष्टी ।

॥ इति कर्म्म छतीसी समास ॥

॥ चाणक्य नीतिसार दोहावली ॥

शुभ तरुवर ज्यो एक ही,
फूल्यो फल्यो सुबास ।
सब वन आमोदित करे,
त्यो सपूत गुणरास । १ ।

जिस प्रकार फूला फला तथा सुगन्धित एक ही वृक्ष सब बनको सुगन्धित कर देता है, इसी प्रकार गुणोंसे युक्त एक भी सपूत लड़का पैदा होकर कुलकी शोभाको बढ़ा देता है। १।

जिन के सुत पण्डित नहीं,
नहीं भक्त निकलङ्क ।

अन्धकार कुल जानिये
जिमि निशि विना मयङ्क । २ ।

जिसका पुत्र न तो पण्डित है, न भक्ति करनेवाला है और न निष्कलङ्क (कलङ्क रहित) ही है, उसके कुलमें अन्धेरा ही जानना चाहिये जैसे चन्द्रमाके विना रात्रिमें अन्धेरा रहता है । २ ।

निशि दीपक शशि जानिये,
रवि दिन दीपक जान ।
तीन भुवन दीपक धरम,
कुल दीपक सुत मान । ३ ।

रात्रिका दीपक चन्द्रमा है, दिनका दीपक सूर्य है, तीनों लोकोंका दीपक धर्म है और कुलका दीपक सपूत लड़का है । ३ ।

एकहि अच्छर शिष्य को,
जो गुरु देत बताय ।
धरती पर वह द्रव्य नहिँ,
जिहिँ दै उऋण उतराय । ४ ।

गुरु कृपा करके चाहें एक ही अक्षर शिष्यको सिखावे तो भी उसके उपकारका बदला उतारनेके लिये कोई धन संसारमें नहीं है, अर्थात् गुरुके उपकारके बदलेमें शिष्य किसी भी वस्तुको देकर उऋण नहीं हो सकता है । ४ ।

पुस्तक पर आप हि पढ्यो,
गुरु समीप नहिँ जाय ।
सभा न शोभै जार सें,
ज्यो तिय गर्भ धराय । ५ ।

जिस पुरुषने गुरुके पास जाकर विद्याका अभ्यास नहीं किया, किंतु अपनी ही बुद्धिसे पुस्तक पर आप ही अभ्यास किया है, वह पुरुष सभा में शोभाको नहीं पा सक्ता है, जैसे—जार पुरुषसे उत्पन्न हुआ लडका शोभाको नहीं पाता है, क्योंकि जारसे गर्भ धारण की हुई स्त्री तथा उसका लडका अपनी जातिवालोंकी सभामें शोभा नहीं पाते हैं, क्योंकि—लज्जाके कारण बापका नाम नहीं बतला सक्ते हैं । ५ ।

वन में सुख सें हरिण जिमि,
तृण भोजन भल जान ।
देहु हमैं यह दीन वच,
भाषण नहिँ मन आन । ६ ।

जङ्गलमें जाकर हिरणके समान सुख पूर्वक घास खाना अच्छा है परन्तु दीनताके साथ किसी सूम (कंजूस) से यह कहना कि "हमको देओ" अच्छा नहीं है । ६ ।

नहीं मान जिस देश में,
वृत्ति न वान्धव होय ।

नहिँ विद्या प्रापति तहाँ,
वसिय न सज्जन कोय । ७ ।

जिस देशमें न तो मान हो, न जीविका हो न भाई बन्धु हों और न विद्याकी ही प्राप्ति हो उस देशमें सज्जनोंको कभी नहीं रहना चाहिये । ७ ।

पण्डित राजा अरु नदी,
वैद्यराज धनवान ।
पाच नहीं जिस देश में,
बसिये नाहिँ सुजान । ८ ।

सब विद्याओंका जाननेवाला पण्डित, राजा, नदी (कुआ आदि जलका स्थान), रोगोंको मिटानेवाला उत्तम वैद्य और धनवान ये पाच जिस देशमें न हो उसमें बुद्धिमान पुरुषको नहीं रहना चाहिये । ८ ।

भय लज्जा अरु लोकगति,
चतुराई दातार ।
जिसमें नहिँ ये पाच गुण,
संग न कीजे यार । ९ ।

हे मित्र ! जिस मनुष्यमें भय, लज्जा, लौकिक व्यवहार अर्थात् चालचलन, चतुराई और दानशीलता, ये पाच गुण न हों, उसकी संगति नहीं करनी चाहिये । ९ ।

[ओ]

काम भेज चाकर परख,
बन्धु दु:ख मे काम ।
मित्र परख आपद पड़े,
विभव छीन लख बाम ।१०।

कामकाज करनेके लिये भेजने पर नौकर चाकरोंकी परीक्षा हो जाती है, अपने पर दु:ख पड़ने पर भाइयोंकी परीक्षा हो जाती है, आपत्ति आने पर मित्रकी परीक्षा हो जाती है और पासमे धन न रहने पर स्त्रीकी परीक्षा हो जाती है । १० ।

पीछे काज नसावहीं,
मुख पर मीठी बात ।
परिहरु ऐसे मित्र को,
मुख पय विष घट जान ।११।

पीछे निन्दा करे और काम को बिगाड़ दे तथा सामने मीठी २ बातें बनावे, ऐसे मित्र का अन्दर विष भरे हुए तथा मुख पर दूध से भरे हुए घड़े के समान छोड़ देना चाहिये । ११ ।

रुप भयो यौवन भयो,
कुल हू में अनुकूल ।
विना विद्या शोभ नहीं
गन्धहीन ज्यों फूल ।१२।

नहिँ विद्या प्रापति तहाँ,
वसिय न सज्जन कोय । ७ ।

जिस देशमें न तो मान हो, न जीविका हो न भाई बन्धु हो और न विद्याका ही प्राप्ति हो, उस देशमें सज्जनोंको कभी नहीं रहना चाहिये । ७ ।

पण्डित राजा अरु नदी,
वैद्यराज धनवान ।
पाच नहीं जिस देश में,
बसिये नाहिँ सुजान । ८ ।

सब विद्याओंका जाननेवाला पण्डित, राजा, नदी (कुआँ आदि जलका स्थान), रोगोंको मिटानेवाला उत्तम वैद्य और धनवान ये पाच जिस देशमें न हो उसमें बुद्धिमान पुरुषको नहीं रहना चाहिये । ८ ।

भय लज्जा अरु लोकगति,
चतुराई दातार ।
जिसमें नहिँ ये पाच गुण,
सग न कीजे यार । ९ ।

हे मित्र! जिस मनुष्यमें भय, लज्जा, लौकिक व्यवहार अर्थात् चालचलन, चतुराई और दानशीलता, ये पांच गुण नहीं करनी चाहिये । ९ ।

मित्र दार सुत सुहृद हू,
निरधन को तज देत ।
पुनि धन लखि आश्रित हुवैं,
धन बान्धव करि देत ।१५।

जिस के पास धन नहीं है उस पुरुष को मित्र, स्त्री पुत्र और भाई बन्धु भी छोड़ देते हैं और धन हाने पर वे ही सब आकर इकट्ठे होकर उस के आश्रित हो जाते हैं इस से सिद्ध है कि— जगत् में धन ही सब को बान्धव बना देता है । १५ ।

नेत्र कुटिल जो नारि है,
कष्ट कलह से प्यार ।
वचन भड़कि उत्तर करै,
जरा वहै निरधार ।१६।

खराब नेत्रवाली, पापिनी कलह करने वाली और क्रोध में भर कर पोछा जवाब देने वाली जो स्त्री है—उसी को जरा अर्थात् बुढ़ापा समझना चाहिये किन्तु बुढ़ापे की अवस्था को बुढापा नहीं समझना चाहिये । १६ ।

जो नारी शुचि चातुर अरु,
स्वामी के अनुसार ।

रूप तथा यौवनवाला हो और बड़े कुल में उत्पन्न भी हुआ हो तथापि विद्यारहित पुरुष शोभा नहीं पाता है, जैसे—गन्ध से हीन होने से टेसू (कसूल) का फूल । १२ ।

कौन काल को मित्र हैं,
देश खरच क्या आय ।
को मैं मेरी शक्ति क्या,
नित उठि नर चित ध्याय ।१३।

यह कौन सा काल है कौन मेरा मित्र है, कौन सा देश है, मेरे आमदनी कितनी है और खर्च कितना है मैं कौन जाति का हूँ और क्या मेरी शक्ति है, इन बातों को मनुष्य को प्रतिदिन विचारते रहना चाहिये क्योंकि जो मनुष्य इन बातों को विचार कर चलेगा वह अपने जीवन में कभी दुःख नहीं पावेगा । १३ ।

तीन थान सन्तोष कर,
धन भोजन अरु दार ।
तीन सँतोष न कीजिये,
दान पठन तपचार ।१४।

मनुष्य को तीन स्थानों में सन्तोष रखना चाहिये—अपनी स्त्री में भोजन में और धन में, किन्तु तीन स्थानों में सन्तोष नहीं रखना चाहिये—सुपात्रों को दान देने में विद्याध्ययन करने में और तप करने में । १४ ।

मित्र दार सुत सुहृद हू,
निरधन को तज देत ।
पुनि धन लखि आश्रित हुवैं,
धन बान्धव करि देत ।१५।

जिस के पास धन नहीं है उस पुरुष को मित्र, स्त्री पुत्र और भाई बन्धु भी छोड़ देते हैं और धन होने पर वे ही सब आकर इकट्ठे होकर उस के आश्रित हो जाते हैं इस से सिद्ध है कि—जगत् में धन ही सब को बान्धव बना देता है । १५ ।

नेत्र कुटिल जो नारि है,
कष्ट कलह से प्यार ।
वचन भड़कि उत्तर करै,
जरा वहै निरधार ।१६।

खराब नेत्रवाली, पापिनी कलह करने वाली और क्रोध में भर कर पीछा जवाब देने वाली जो स्त्री है—उसी को जरा अर्थात् बुढ़ापा समझना चाहिये किन्तु बुढ़ापे की अवस्था को बुढ़ापा नहीं समझना चाहिये । १६ ।

जो नारी शुचि चतुर अरु,
स्वामी के अनुसार ।

नित्य मधुर बोले मरम,
लक्ष्मी सोइ निहार ।१७।

जो स्त्री पवित्र, चतुर, पति की आज्ञा में चलने वाली और नित्य रसाल मीठे वचन बोलने वाली है, वही लक्ष्मी है दूसरी कोई लक्ष्मी नहीं है । १७ ।

लिखी पढ़ी अरु धर्मरित,
पतिसेवा में लीन ।
अल्प सँतोषिनि यश सहित,
नारिहिं लक्ष्मी चीन ।१८।

विद्या पढ़ी हुई धर्म के तत्व को समझने वाली, पति की सेवा में तत्पर रहने वाली, जैसा अन्न वस्त्र मिल जाय उसी में सन्तोष रखने वाली तथा संसार में जिस का यश प्रसिद्ध हो, उसी स्त्री को लक्ष्मी जानना चाहिये, दूसरी को नहीं । १८ ।



॥ शुद्धि पत्र ॥



१०६ आहार रा दोष ।

१६ उदगमनरा —

१ आहार कम्मे कहता—समचे साधुरे अर्थ करे ते दोष ।

२ उदेसिय कहता---एक साधुरो नाम ले कर बनावे--ते दोष ।

३ पुईकम कहता---आधाकम्मी आहार १००० घरें आतरे ताइ लै ते दोष ।

१६ उत्पातरा —

११ कुफ तुह्ना सथिय ।

१० एपणारा —

४ पेंईए ।

६ मीसे कहता---मिश्र मोरण अत्यादि ।

७ अपरणीत कहता---शस्त्र प्रगम्यो नहीं होवे (थोड़े कालरो) तो नहीं लेवै लेवै तो दोष ।

८ डायवा कहता--- आधो, लुलो, लगड़ो अजीणा करतो वेहरावे ते दोप ।

६ लते कहता --तुरतरी जागा लिप्योड़ी होवे उपर कर उलघ (डाक) कर आहार ले ते दोप ।

१० छदे कहता--दुध, दही, रावरा छाटा पड़ता होवे तो लेवै नहीं लेवै तो दोप ।

५ आवशकरा ---

५ वो परिठावणीया कहना- परठण निमत ले तो दोप ।

२३ दशमी कालकरा --

१ दानठा कहता---कीरती री दान ।

१० उजाए (वहु अभोधम्म) अपसोय भनणीका ।

११ पडिकुट कुलग कहता --निपेद कुलरो

१२ अचित कुलग ।

१५ सुई चे (सुरा)

१०८ आहाररा दोष, साधुने कल्पे नहीं

यानें

अण कल्पनिक लेवें तो दोष ।

१६ दोष उत्पातरा ।



१ धाए कहता—धायरो काम करके आहार लेवे नहीं ।

२ दुए कहता—दूतीरो काम करके आहार लेवे नहीं ।

[illegible] निमित्त भाषण करके [illegible] हीं ।

६ तिगच्छे कहता—चिकित्सा अर्थात् वैद्यकी करके दवाई प्रमुख देयकर आहार लेवे नहीं ।

७ कोहे कहता—क्रोध करके आहार लेवे नहीं ।

८ माने कहत—मान करके आहार लेवे नहीं।

९ माए कहता—कपटाई करके आहार लेवे नहीं ।

१० लोभे कहता—लोभ करके आहार लेवे नहीं ।

११ संथिये कहता—पहिले या पीछे दातारके गुणके प्रसंशा करके आहार लेवे नहीं ।

१२ विद्या कहता—विद्या पढाय कर आहार लेवे नहीं ।

१३ मंत्र कहता- मंत्र जंत्रादिक करके आहार लेवे नहीं।

१४ चूर्ण कहता --चूर्ण गोली इत्यादि बताय कर आहार लेवे नहीं ।

१५ जोगे कहता-- वशीकरणादि करके आहार लेवे नहीं।

१६ मूलकरण दोष कहता—गर्भपातन आदि कर्म करके आहार लेवे नहीं।

---

१६ दोष उदगमनरा ।

दातारसुं लागे अर्थात् श्रावक लगावे ।

१ आहार कम्मे कहता---साधुरे अर्थ मात्र भेलायकर आहार वणावे ते आधा कर्मी दोष ।

२ उदेसिय कहता---सगलो आहार दर्शणी निमित्त बनायो हो तो उदेसिय दोष किंचित दामरे लागो भी लेणो कल्पे नहीं ।

३ सुजता आहार मांही आधा कर्म्मी अंश मात्र भी भेल करे तो दोष ।

४ मिसीजाय कहता---आपरे वास्ते तथा साधुरे वास्ते भेला राधे तो दोष ।

५ ठवणा कहता -साधु निमित्त थापणा राखे तो दोष ।

६ पाहुडियाए कहता---साधु अर्थे पावना आगा पाछा करने आहार देवे तो दोष ।

७ पाउरे कहता---अधारे माहि सुं उजास करके देवे तो दोष ।

८ कीय कहता---साधु निमित्त आहार तथा वस्त्र मोल लायकर देवे ता दोष ।

९ पामिचे कहता-- उधार लायकर देवे तो दोष ।

१० परियटे कहता---साधु निमित्त आपनी वस्तु दे कर बदलेमे दूजी वस्तु लायकर वेहरावे ता दाप ।

११ अभिहय कहता- -आपणी घरसे जो साधुके पास साम्हा जायके देवे तो दोष ।

१२ भिन्न कहता---लेपनादिक छांदो खोलके देवे तो दोष ।

१३ मालोहय कहता---ऊंचासे उतार कर देवे तो दोष ।

१४ अछिजे कहता---दूजेके पाससे खोसकर देवे तो दोष ।

१५ अणिसट्ठे य कहता---दोयके सीरकी वस्तु (एक दूसरेकी विना रजावंदी) देवे तो दोष ।

१६ अजोयरं कहता---आगाड़ी आधण मांहि साधु आया जाणो इधको ऊरी देवे तो दोष ।

---

१० दोष एषणारा ।

गृहस्थ तथा साधु दोनुं सुं लागे ।



शका पडजाय तो साधु आहार लेवे नहीं।

२ मग्वीए कहता---हाथरी रेखा तथा मूंछ रा वाल भीना हुवे तो आहार लेवे नहीं।

३ निखिते कहता---असुजती वस्तु ऊपर सुजती वस्तु हुवे तो आहार लेवे नहीं।

४ सुजती वस्तु ऊपर असुजती वस्तु हुवे तो आहार लेवे नहीं।

५ सायरे कहता---अप्रतीतकारी घरमे तथा अनेरा भाजनमे घालकर देवे तो आहार लेवे नहीं।

६ मीसे कहता---मिश्र चीज सुजती असुजती लेवे नही।

७ अपरणीने कहता---शस्त्र प्रणम्यो नहीं हुवे तो लेवे नहीं।

८ अधेसे आहार लेवे नहीं।

९ लते कहता—सुरत री जागा लिप्योड़ी हुवे तो वहां लेवे नहीं।

१० छंदे कहता—छींटा पड़ता हुवे तो लेवे नहीं।



दशमी कालमें आहारका २३ दोष ।



१ दानठा कहता—दानरे अर्थे किनो हुयो जैसे—डाकोत विगेरहके वास्ते किनो हुयो आहार लेवणो कल्पे नहीं ।

२ पुणयठा कहता—पुणयरे अर्थे किनो हुयो, दूकानमें धरमादे रो निकालो हुयो तथा मुवे रे लारे पुणय रो कियो हुयो कल्पे नहीं ।

३ वांणीमगठा कहता—रांक भिखारीरे अर्थे कीन्यो हुयो आहार लेनो कल्पे नही ।

४ समणठा—बावा, योगी, सन्यासीके अर्थे कियो लेनो कल्पे नहीं ।

५ नियाग कहता—नित्य प्रत्य एक घर रो आहार कल्पे नही ।

शका पड़जाय तो साधु आहार लेने नहीं।

२ मखीए कहता---हाथरी रेखा तथा मूंछ रा बाल भीना हुवे तो आहार लेवे नहीं।

३ निखित्ते कहता---असुजती वस्तु ऊपर सुजती वस्तु हुवे तो आहार लेवे नहीं।

४ सुजती वस्तु ऊपर असुजती वस्तु हुवे तो आहार लेवे नहीं।

५ सायरे कहता-- अप्रतीतकारी घरमें तथा अनेरा भाजनमें घालकर देवे तो आहार लेवे नहीं।

६ मीसें कहता---मिश्र चीज सुजती असुजती लेने नहीं।

७ अपरणीनें कहता---शस्त्र प्रणम्यो नहीं हुवे तो लेवे नहीं।

८ अधेसे आहार लेवे नहीं।

९ लने कहता—तुरत रीं जागा लिप्योड़ी हुवे तो वहा लेवे नहीं।

१० छंदे कहता—छींटा पड़ता हुवे तो लेवे नहीं।



दशमी कालमें आहारका २३ दोष ।



१ दानठा कहता—दानरे अर्थे किनो हुयो जैसे—डाकोत विगेरहके वास्ते किनो हुयो आहार लेवणो कल्पे नहीं ।

२ पुण्यठा कहता—पुण्यरे अर्थे किनो हुयो, दूकानमें धरमादे रो निकालो हुयो तथा मुंवे रे लारे पुण्य रो कियो हुयो कल्पे नहीं ।

३ वांणीमगठा कहता—रांक भिखारीरे अर्थे कीन्यो हुयो आहार लेनो कल्पे नही ।

४ समणठा—बावा, योगी, सन्यासीके अर्थे कियो लेनो कल्पे नहीं ।

५ नियाग कहता—नित्य प्रत्य एक घर रो आहार कल्पे नहीं ।

६ सम्भाएपिड कहता—सम्भातर रो आहर लेनो कल्पे नहीं।

७ रायपिड कहता—राजपिंड आहर न कल्पे, जैसे—राजारे विवाहरो भोजन, राजारे थाल रा भोजन।

८ किमछिये कहता—बताय बताय नामसे माग माग आहर लेवो तो दोप।

६ सगट (सगटिये) कहता—सचितरे सगटरो आहर लेवे तो दोप।

१० बहु उजाए (बहु अभोधम्म) कहता—थोडो खाणीमें आवे घणो नाखणीमें आवे ऐसो आहार लेवे ते दोप।

११ पडिकुट कुलग कहता—नीच कुल रे घर रो, जैसे-धोवी विगेरह अणाकल्पनिक घररो आहर लेवे तो दोप।

१२ मामग कहता—वर्ज्यो हुये घर रो आहर लेवे तो दोप, जैसे--कोई कहे म्हारे घर

मत आवो तो उस घर जाणो कल्पे
नहीं उसको वर्ज्यों घर जाणीजे।

१३ अचियत कहता—अप्रतीतकारी कुल रो
आहर लेवे तो दोष।

१४ पूव्वकम्मे, पच्छाकम्मे कहता—पहिला दोष
लगावे तथा पीछे दोष लगावे सो आहर
कल्पे नहीं, जैसे--आहर वेहराया पहले
आगा पाछा साधु आया जाणके करदे
तथा वेहराया पाछे फिर वणायले या
काचे पानीसु ठाव या हाथ धोवे तो दोष

१५ सुर (सुरा) कहता—नशे रो आहर तथा
कलाल (सूंडी) रे घर रो आहार लेवणो
कल्पे नहीं।

१६ अेलग कहता—बकरो घर आगे वैठो होवे
तो उल्लघ कर (डाककर) आहार
लेवणो कल्पे नहीं।

१७ दारगं कहता—बालक रमतो हुवे या आडो

३ मगाइकने—दोय कोस उपरांत अहार लेय जाय भोगे ता दोष।

४ पमाणाइकते—प्रमाणसु अधिक आहार लेवे तो दोष।

५ आउए—गृहस्थ आयने नेत जाय, नेतिया आहार लेवे तो दोष।

६ कतारभत—अटवीमे पो वगेरह होवे उठे चीणा वगेरह बँटता हुवे सो लेवे तो दोष।

७ दुभिखभत --दुकालके समय दानशाला कीनी होय वहा आहार लेवे तो दोष।

८ वद्दलीयाभत---वरसाद आया कोई दातार भिखारीने काई जागा आहार वांटतो होय वहां आहार धामे और लेवे तो दोष।

९ गिलाणभत---रोगी गिलाणीरे अर्थे कियो हुयो आहार लेवे तो दोष।

१० सजोयणा - सयोग मिलाय कर आहार लेवे तो दोष।

११ अंगारेय--- सराइ सराइ आहार लेवे तो दोष राग सहित लेवे तो चारित्रका कोयला हो जाय।

१२ धुमे---मस्तक (माथो) धुणी धुणी कुसराय कुसराय आहार भोगे तो दोष, द्वेष सहित आहार करे तो चारित्रको धुंवो होय।

श्री आवशकमें पांच दोष आहारका।

१ ऊघाड़ किवाड़ उघाड़नीया कहता—किवाड़ उघड़ाय कर आहार लेवे तो दोष।

२ मडी पाहुडीया—शेष निकाल कर रखा है वह शेष लेवे तो दोष।

३ बलीपाहुडीया----बल बाकुलादिक आहार लेवे तो दोष।

४ अदिठराए----देखनेमें ना आवे याने अग्र दीसतो आहार लेवे ता दोष।

५ परिठावणिया---नरम आहार आयां परठावे तो दोष तथा नाखे जैसो अन्न लेवे नहीं।

श्रीअचाग्ग सूत्रमें आहारारा ६ दोष।

१ नीयपिंड—नित्य आहार बेरणे सारू त्यार करे मापमें तौलमें बँटे यह आहार लेवे तो दोष।

२ सखडीयं कहता—न्यात जिमणवारमें सेर सारणी आदिकसे आहार लेणो कल्पे नहीं।

३ वाघाय (वागरणं) कहता—जानकरे अंतराय देके आहार लेणो कल्पे नहीं।

४ सघारवेगो कहता--गमता कथावार्त्ता कह कर रिंझाय कर आहार लेणो कल्पे नहीं।

५ फमेझवा वीएजवा कहता--फुंक देतां पखीसु ठारता ठारकर देता आहार लेणो कल्पे नहीं।

६ भुमालुहड कहता----भवरेंसें तथा भूमीमें नीची जागासे काढ़कर आहार देवे तो लेणो कल्पे नहीं।



श्री पर्शन व्याकरणरा ५ दोष।



१ रहग कहता---चुरमेरो त्याग है और लाडु बांधकर वेंहरावे तो लेणो कल्पे नहीं।

२ पज्जुजाय कहता---दहीरा त्याग होवे और

दातार है" ऐसो कह कर आहार लेणो कल्पे नहीं ।

२ अड़वीभत (अटवीभत) कहता---"ए ठाम में कांई, ए ठाममें काई" ऐसो पुछ पुछ आहार लेणो कल्पे नहीं या मजुरादिक रे भाते रो आहार लेणो कल्पे नहीं ।

३ पासठामतं कहता---ढीला पासथा क्रिया रहित ऐसेका आहार लेणो कल्पे नहीं ।

४ दुरगछा कुलग कहता—नखेध कुल लोग दुरगंछा करे ऐसे निंदनीक (ढेढ चमरादि) कुल रो आहार लेणो कल्पे नहीं ।

५ सभाए निसीए कहता—सिभातररो नेसराय रो तथा दलाली रो आहार लेणो कल्पे नहीं ।

६ अनोथीयाभते कहता—अतिथी रोटी

दहीमें चडुआ मिलाय कर देवे तो लेवे नहीं याने पर्याय पलटाय कर देवे तो लेवे नहीं।

३ सहयागय कहता—साधु आपरे हाथसुं औषध पाणी अलावे आहार लेवे तो दोष।

४ अनुत्तर बाहसमणठा कहता---भीतर सुं तीन बारना उपरांत को या अण दीसनो आहार लेवे तो दोष।

५ मोहरच कहता---चारन, भाटरी तरह बरदावली करके आहार लेवे तो दोष।

श्री नमीयत सूत्रमें आहाररा ६ दोष।

१ पुजासिय कहता---बहुनसे मनुष्योंमें से पुकार करके कहे कि "कोई यहां

दातार है" ऐसो कह कर आहार लेनो कल्पे नहीं।

२ अड़वीभत (अटवीभत) कहता---"ए ठाम में कांई, ए ठाममें कांई" ऐसो पुछ पुछ आहार लेणो कल्पे नहीं या मजुरादिक रे भाते रो आहार लेणो कल्पे नहीं।

३ पासठामत कहता---ढीला पासथा क्रिया रहित ऐसेका आहार लेणो कल्पे नहीं।

४ दुरगछा कुलग कहता—नखेध कुल लोग दुरगछा करे ऐसे निंदनीक (ढेढ चमरादि) कुल रो आहार लेणो कल्पे नहीं।

५ सभाए निसीए कहता—सिभ्मातररो नेसराय रो तथा दलाली रो आहार लेणो कल्पे नहीं।

६ अनोथीयाभते कहता—अतिथी रोटी

टुकड़ा माग कर लावे वह आहार लेणो कल्पे नहीं।

श्री उत्तराध्ययनजीमें आहाररा दोय दोष।

१ सनर्णपिड कहता---नातीला गोतीला रो समण्पिड दोष।

२ मकारण (अकारण) कहता---विनाकारण चीज मागकर लावे तो दोष।

श्री ठणागजीमें आहाररा दोय दोप।

१ पानणा कहता---पावणेरे अर्थ कियो पावणा जीम्या पहिला लेवे तो दोप तथा

पावणा आगा पाछा किया आहार लेवै तो दोष ।

२ मसारे कहता---अभक्ष मांस आहार इत्यादि लेणो कल्पे नहीं ।

श्री दशाश्रुतस्कंधमें आहाररा दोय दोष ।

१ पलअठा कहता---बालकरे अर्थे कियो हुयो आहार बालक जीम्या पहिला लेवे तो दोष ।

२ गोवणठा कहता---गर्भवती स्त्रीके अर्थे कियो गर्भवती स्त्री जीमण पहिला आहार लेवे तो दोष ।

[ने]

श्री वेदकल्पमे आहाररो एक दोष ।



१ प्रासिया -कहता---काल प्रमाण ऊपरको बासी आहार तथा अति स्निग्ध चीकना झरझरता आहार लेनो कल्पे नहीं ।

॥ इति शुभम् ॥

अधिको ओछो आगे पाछो लिख्यो होय तो मिच्छामि दुक्कड ।

नोट—धारया हुवा उपयोगमे रहा सो लिख दिया है । आगम प्रमाणे श्री गुरु पासे धार शुद्ध करीजो ।



अथ साधुको बावन अणाचार लिख्यते ।

(अण आचरण कहता आचरवा योग नहीं)



१ उदेशिक आहार भोगवे तो अणाचार, २ मोलरो लियो भोगवे तो अणाचार, ३ नित्य पिंड आहार भोगवे तो अणा० ४ साहमो लायो भोगवे तो अणाचार, ५ रात्रि भोजन करे तो अणाचार, ६ स्नान करे तो अणाचार, ७ गन्ध कपुरादिक भोगवे तो अणाचार, ८ फूलारी माला भोगवे तो अणाचार, ९ विजणासुं वायरो लेवे तो अणाचार, १० स्निग्ध-वासि राखे तो अणाचार, ११ गृहस्थीरा भाजन में जीमे तो अणाचार, १२ राजपिंड भोगवे तो अणा०, १३ सत्र्कार (दान साला) रो भोगवे तो अणा०, १४ मरदन करे तो अणा०, १५ दांत पखाले मसी लगावे तो अणाचार, १६

गृहस्थीरी साना पूछे तो अणा०, १७ काच-
पानीमें मूं टो देखे तो अणा०, १८ सत्र जादिक
रमत रमे तो अणा०, १९ जूवे रमे तो अणा०,
२० छत्र माथे धारे तो अणा०, २१ सावद्य
औषध तथा वैदगी करे ता अणा०, २२ पगरपी
मोजा आदि पहरे तो अणा०, २३ अग्नि
रो आरभ करे तो अणा०, २४ पलयग माचे
ढोलिये पर बैठे तो अणा०, २५ गृहस्थरे घरे
बैठे तो अणा०, २६ पिठी उगटणो करे तो
अणा०, २७ गृहस्थ कनेसु वयावच करावे तो
अणा०, २८ जात जणायने आहार भोगवे तो
अणा०, २९ मिश्र पाणी भोगवे तो अणा०,
३० गृहस्थरो सरणो बान्छे तो अणा०, ३१ मूलो
काचो भोगवे तो अणा०, ३२ आदो काचो
भोगवे तो अणा०, ३३ सेलड़ी रा खड भोगवे
तो अणा०, ३४ कदमूलादिक भोगवे तो
अणा०, ३५ मूल वृन्तादिक भोगवे तो अणा०,

३६ सभ्यातरपिड भोगवे तो अणा०, ३७ फल दाडिमादि भोगवे तो अणा०, ३८ वीजतिलादि भोगवे तो अणा०, ३६ सचित्तलूण भोगवे तो अणा०, ४० सिधो लूण भोगवे तो अणा०, ४१ समुद्रनो लूण काचो भोगवे तो अणा०, ४२ आगरनो लूण काचो भोगवे तो अणा०,४३ खारी लूण काचो भोगवे तो अणा०, ४४ कालो लूण काचो भोगवे तो अणा०,४५ वस्त्रने धूप देवे तो अणा०, ४६ वमन करे तो अणा०, ४७ गला हेठला केश लेवे तो अणा०, ४८ विरेचन करे (खाय पीय कर उलटी करे) तो अणा०, ४६ आंखमें अजन घाले तो अणा०, ५० दांतण करे तो अणाचार, ५१ शरीरमे तेलादि चोपडे तो अणाचार, ५२ शरीरकी विभूषा करे तो अणाचार।

॥ इति चावन अणाचार सपूर्णम् ॥

॥ दसवीकाल अध्यायने ३ में जाणो ॥

---

७० गुण करण सित्तरीके ।

गाथा--पिड विसोही समिइ भावणा पढिमाय इन्द्रिय निराहो पड़िलेहणागुत्तीओ अभिग्गाहचव करणतु १ ।

पिडविशुद्धिके ४ भेद—१ आहार पाणी सुखड़ी मोपारी आदि फासुक निर्जीव विधियुक्त लेवे, २ वस्त्र सूत ऊनके सफेद रगके मानोपेत (साधुको ७२ हाथ और साध्वीको ९६ हाथ) निर्दोष ग्रहण करे, ३ काष्ट, तुम्बे प्रमुखका पात्र यथा विधि लेवे, ४ अठारे प्रकारके निदोष स्थानक मालिककी आज्ञासे लेवे यह चार शुद्धि साचवे ।

५ सुमति युक्त सदा रहे, १२ भावना भावे, १२ पड़िमा धारे, ५ इन्द्री वसमें करे, २५ पड़िलेहणा, ३ गुप्ती, ४ अभिग्रह

द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव सब मिलके ७० गुण करण सित्तरीके हुये ।

---

७० गुण चरण सित्तरीके ।

गाथा---वयसमण धम्मसंयम वेयावच्च च बंभ गुत्तीओ नाणाइ नीयतव कोहोनिग्गहाइं चरणमेय १ ।

५ महाव्रत १० प्रकारका साधु धर्म १७ सयम, १० वेयावच्चकरे, ६ वाड शुद्ध ब्रह्मचर्य पाले, ३ ज्ञान दर्शन चारित्र रत्नत्रयी आराधे, १२ भेदे तप करे, ४ कषाय निग्रह करे यह सर्व ७० चरण सित्तरीके गुण जाणना ।

॥ श्रीवीतरागाय नम ॥

अथ सामाईककी पाटीयाँ तथा अर्थ ।

॥ अथ श्री नवकार मत्र प्रारभ ॥

णमो अरिहताण, णमो सिद्धाण, णमो आयरियाण, णमो उवज्झायाण, णमो लोए सव्व साहूण। एसो पच णमुक्कारो, सव्व पावप्पणासणो मगलाण च सव्वेसि, पढम हवइ मगल ॥ इति नमस्कार ॥ १ ॥

अर्थ ---(अरिहताण) अरि एटले कर्मरूप शत्रु तेने हताण एटले हणनार, अर्थात् जेणे चार घनघाती कर्मरूप शत्रुनो नाश कर्यो अने जे चोत्रीश अतिशयोयें करी शोभित तथा वाणीना पात्रीस गुणोये करी विराजमान एहवा विहरमान श्रीअरिहतने

पाच प्रकारनो नमस्कार छे ते केहवो छे ? तो के (सव्वपाव) ज्ञानावरणादिक सर्व पाप तेहनो, (प्पणासणो) प्रकर्प करी विनाशनो करणहार छे, वली ते केहवो छे ? तो के (मगलाणाच सव्वेसि) सर्व मगलमाहे (पढ्‌म) प्रथम एटले मुख्य, (मगल) मगल (हवइ) छे ॥ १ ॥

॥ अथ तिक्खुत्तारी पाटी प्रारभ ॥

॥ श्री मुनिराजको वदना करनेका पाठ ॥



तिक्खुत्तो, आयाहिण, पयाहिण करेमी, वदामि, णमसामि, सक्कारेमि, सम्माणेमि, कल्लाण, मगल, देवय, चेइय पज्जुवासामि, मत्थएण वदामि ।

अर्थ—(तिक्खुत्तो) त्रण वार, (आयाहिण) आदक्षिणात, एटले बे हाथ जोडीने जीमणा·

पासा थकी प्रारंभीने, (पयाहिणं करेमी) प्रदक्षिणा प्रत्ये करु छुं, (वंदामि) वादु छुं, पगे लागुं छुं, (नमंसामि) मस्तक नमाडीने नमस्कार करु छुं, (सक्कारेमि) सत्कार देवुं छुं, (सम्माणेमि) सन्मान देउं छुं, (कल्याण) कल्याणकारी, (मंगल) मंगलकारी, (देवय) धर्मदेव समान, (चेइय) छकायका जीवने सुखदायक एवा ज्ञानवंत प्रत्ये, (पज्जुवासामि) पर्युपासुं छुं एटले मन वचन कायाए करीने सेवा करुं छुं, (मत्थएण वंदामि) मस्तकें करी वादु छुं ॥ २ ॥

॥ इति तिक्खुत्तारो अर्थ समाप्तम् ॥

सूचना—पूर्व तथा उत्तर दिशाकी तर्फ मुंह करके तिक्खुत्ताके पाठसे पचाग नमाय ३ वखत् विधियुक्त वंदना नमस्कार करके श्रीमहावीर स्वामीजीको तथा अपने धर्माचार्य (गुरुदेव) को तथा वरतपर जो कोई मुनिराज होवे उनके पाससे सामाइकका चोविसत्तव करनेकी आज्ञा लेना, फिर निम्नोक्त (नीचे लिखा) पाठ बोलना।

॥ अथ इरियावहीयानी पाटी प्रारभ ॥



इच्छाकारेण सदिस्सह भगवन्, इरियावहियं पडिक्कमामि, इच्छं, इच्छामि, पडिक्कमिउ, इरियावहियाए, विराहणाए, गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, श्रोसाउत्तिंग, पणग दग, मट्टीमक्कडा, सताणासंकमणे, जेमे जीवा, विराहिया, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया ठाणाउठाणं, संकामिया, जीवियाउ, विवरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ३ ॥

अर्थ—(इच्छाकारेण) तुमारी इच्छा पूर्वक, (सदिसह) आज्ञा करो तो, (भगवन्) हे महाभाग्य ज्ञानवंत ! (इरियावहिय) चालवानो जे मार्ग तेमांहे थइ एवी जे जीवबाधादिक

सपाप क्रिया ते थकी हु (पडिक्कमामि) पडिक्कमुं निवर्तुं ? इहां गुरु कहे, (पडिक्कमह) पडिक्कमो निवर्त्तो, पाप टालो, तेवारे शिष्य कहे, (इच्छं) प्रमाण छे, हुं पण (इच्छामि) इच्छुं छुं, (पडिक्कमिउं) पाप कर्मसुं निवर्तण वास्ते, (इरियावहियाए) गमन के प्रधान मुख्य जेमा एवो जे मार्ग तेने विषे थती एवी जे (विराहणाए) जंतुओनी विराधना ते थकी, (गमणागमणे) जातांने आवतां, (पाण) प्राणीने, (कमणे) पगे करी चांप्या थकी, (बीय) बीजने, (कमणे) पगे करी चांप्या थकी, (हरिय) नीलवर्णवाली वनस्पति तेने, (कमणे) पगे करी चांप्या थकी, (ओसा) ठार ओस एटले सूक्ष्म अपकाय आकाशथकी पडे ते, (उत्तिङ्ग) कीडीयोनां नागरां कहता कीडी नगरा (पणग) पाचवर्णी नीलण फूलण, (दग) पाणी, (मट्टी) काची माटी, (मक्कडा) मर्कट, एटले कोलिआवडाना (सताणा) सतान,

ए सर्पने (सक्रमणे) पगे करी पीड्याथकी अथवा मसल्याथकी, घणुं सु कहुं ? (जे) जे कोई. (मे) में (जीवा) जीवो, (विराहिया) विराध्या होय दुखमाहे पाड्या होय,(एगिदिया) जेहने शरीर रूप एकज इन्द्री होय ते, पृथ्वी, पाणी, अग्नि,वायु,वनस्पतिना जीव, (बेइन्द्रिया) शरीर तथा मुख ए दोय इन्द्रीवाला जे शंख, शीप,गडोला,अलसीया एहवा जेहने पग न होय ते बेन्द्रि, (तेइंदिया) तीन इन्द्रीवाला ते जेने शरीर, मुख, नाक होय ते, कुंथुवा, जु, लीख, माकड़, कीड़ी प्रमुख जेहना मुख ऊपरे शिंग होय ते, (चउरिंदिया) चार इन्द्रीवाला ते जेने शरीर, मुख, नाकने आंख होय ते, माखी, मच्छर, डास, वींछी, भमरी, टीडी जे उड़णेरा, जीव जेने आठ पग तथा मस्तके शिंग होय ते, (पंचिन्दिया) पांच इन्द्रीवाला जेने शरीर, मुख, नाक, आंख अने कान

होय ते जलचर, खेचर, ए सर्वतिर्यंच जाणवा तथा मनुष्य, देव, नारकी ए सर्व पचेन्द्रिय जीव कहिये, हवे ए सर्व जीवोने केवी रीते विराध्या होय? तेना प्रकार कहे छे, (अभिहया) सामा आवतां हण्या, (वत्तिया) एक ढिगले करया तथा धुलें करी ढाक्या, (लेसिया) भूमीमे घस्या तथा लगारेक मसल्या, (संघाइया) मांहोमांहे शरीरने मेलववे करी एकठा कीधा, (संघट्टिया) थोडो स्पर्श करवे करी दुहव्या (परियाविया) समस्त प्रकारे परिताप पमाड्या पाड्या, (किलामिया) गाढी किलामणा उपजावीने मारया नहीं, पण मृतप्राय कीधा, (उद्दविया) त्रास पमाडीने हाली चाली शके नहीं एहवा कीधा, (ठाणाओ) एक स्थानक थकी उपाड़ाने, (ठाण) बिजे ठेकाणे, (संकामिया) संक्रमाव्या मूक्या, (जीवियाओ) जीवित थकी, (विवरोविया) चूकाव्या, मार्या,

नाश कीधा. (तस्स) ते संबन्धी जे अतीचार लाग्या ते, (मिच्छामि) म्हारु मिथ्या पाप कहीये ते. (दुक्कड) दुष्कृत एटले निष्फल थाओ ॥ ३ ॥

॥ इति इरियावहियाकी पाटी समाप्तम् ॥

॥ अथ तस्सउत्तरीनी पाटी प्रारंभ ॥

तस्सउत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्ग, अन्नत्थ, ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचा-

लेहिं, एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्जमेकाउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, णमुक्कारेणं, नपारेमि, तावकाय, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ इति ॥ ४ ॥

अर्थ—(तस्स) ते पापनीज, (उत्तरीकरणेणं) वली विशेष करी शुद्ध करवुं अर्थात् जे अतिचारोनुं आलोयण प्रमुख पूर्वे कीधुं छे, तेनी वली विशेष शुद्धिने अर्थे कायोत्सर्ग करुं छुं, ते कायोत्सर्गनो (पायच्छित्त करणेणं) शुद्ध प्रायश्चित्त ते पापनी आलोयणा, करवा थकी, (विसोहीकरणेणं) विशुद्ध, निर्मलता करवामाटे, (विसल्लीकरणेणं) माया शल्य, नियाणा शल्य, मिथ्यात्व शल्य, ए तीन शल्य टालवा थकी (पावाणंकम्माणं) ससार हेतुरूप जे पाप कर्म तेने, (निग्घायणट्ठाए) निर्घातन एटले उच्छेदन करवाने अर्थे,

(ठामि) कायाने एक ठामे करू छू, (काउ-
स्सग्ग) कायाने हलाववी नहीं ने रूप काउ-
स्सग्गप्रत्ये करु छु हवे इहा काया हलाववी
नहीं, एवी प्रतिज्ञा करी छै, माटे शरीरनु
काइ पण हालवु थवाथी प्रतिज्ञानो भग थाय
तेथी कउस्सग्गमा वार आगार मोकला राख्या
छे, (अन्नत्थ) उच्छ्वासादिक जे आगारो
कहता अगार कहेसे, ते आगारो वर्जीने
बीजे स्थानके कायानं हलाववानो नियम करु
छु, तेना नाम कहे छे, (उससिएणा) ऊंचो
श्वास लेवाथी, (निससिएणा) नीचो श्वास
मूकवाथी, (खासिएणा) खासी आवे एटले
खोखलो आव्या थकी, (छीएण) छींक आया
थकी, (जभाइएणा) जाभली ते बगासू लेवा
थकी, (उड्डुएण) ओडकार आया थका,
(वायनिसग्गेण) वायु निकलता थका, (भम
लिए) भ्रमरी चक्री आववाथी, (पित्तमुच्छाए)

एकाग्र ध्यान नेगों करीने, (अप्पाणं) म्हारी काया ते प्रत्ये (वोसिरामि) हु तजुं छु।

॥ इति तस्सउत्तरीकी पाटी सम्पूर्णम् ॥

सूचना—इतना बोलके कायोत्सर्ग (काउसग) करणा, काउसगमे हाथ पैर मुह शरीर वगैरे हलन चलन करणा नहीं, अपने शरीरको स्थिर रखना काउस्सगमें इरियावहियाकी पाटी, लोगियाउ ववरोविया तक मनमे गुणना फिर नमोअरिहंताणं ऐसा प्रगट मुहसे बोलके काउस्सग पारणा, फिर निचेकी पाटीयां प्रगट बोलना।

अथ चार ध्यानकी पाटी।

काउस्सग्गमे आर्तध्यान, रुद्रध्यान ध्यायो होय, धर्मध्यान, शुक्लध्यान नहीं ध्यायो होय तथा काउस्सग्गमें मन चल्यो होय, वचन चल्यो होय काया चली होय तो तस्समिच्छामि दुकड ॥ इति ॥

अथ लोगस्सकी पाटी।



लोगस्सउज्जोयगरे, धम्मतित्थयरेजिणे, अरिहन्ते, कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली । १ । उसभ १ मजिय २ च वंदे, संभव ३ अभिनंदणं ४ च सुमइं च ५ । पउमप्पहं ६ सूपास ७ जिणंच चंदप्पहं ८ वंदे ।२। सुविहिंच ६ पुप्फदंत, सीयल १०, सिज्जंस ११, वासुपुज्जं च १२ । विमल १३ मणंतं १४, च जिण धम्म १५ संति १६ च वंदामि । ३ । कुंथुं १७ अर १८ च मल्लिं १६, वंदेमुणि सुव्वयं २० नमिजिणं च । २१ वंदामि रिट्ठनेमि २२, पासं तह २३ वद्धमाणं च २४ । ४ । एवं मए अभिथुआ विहुय रयमला, पहीण जरमरणा, चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा में पसीयंतु ।५ । कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा आरुग्ग बोहिलाभ समा-

हिंतर मुत्तम दितु । ६ । चंदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहिय पयासयरा सागरवर गभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु । ७ ।

अर्थ—(लोगस्स) पचास्तिकायात्मक लोकने विषे, (उज्जोयगरे) उद्योतना करणहार, (धम्म) धर्म (तित्थयरे) तीर्थना करनार, (जिण) रागद्वेषना जितनार एहवा, (अरिहंते) अरिहंतने, (कित्तइस्स) कीर्ति करु छुं, (चउवीसंपि) ऋषभादिक चोवीस परमेश्वर तथा अन्यनी. (केवली) केवलज्ञानी तीर्थंकरना नाम कहे छे, (उसभ) श्रीऋषभदेव स्वामी, (मजियंच) श्री अजितनाथ प्रत्ये, (वंदे) वांदु छु, (संभव) श्री संभवनाथ प्रत्ये, (मभिणंदणं) श्री अभिनंदन नाथ प्रत्ये, (च) वली, (सुमइ) श्री सुमतिनाथने, (च) वली (पउमप्पह) श्री पद्मप्रभू स्वामी प्रत्ये, (सुपासं) [illegible]पार्श्वनाथजीने, (जिण) रागद्वेषना

जितनार, (च) वली, (चदप्पहं) श्री चन्द्रप्रभजीने, (वंदे) वांदु छुं, (सुविहिं) श्री सुविधिनाथजीने, (च) वली, (पुप्फदंतं) श्री पुष्पदंतजी प्रत्ये, (सीयल) श्री शीतल नाथजीने, (सिज्ज स) श्री श्रेयांसनाथजीने, (वासुपुज्ज) श्री वासुपूज्य स्वामी प्रत्ये, (च) वली, (विमल) श्रीविमलनाथजीने, (मणंत) श्री अनंतनाथजीने, (च) वली, (जिणं) रागद्वेपना जीतनार, एहवा (धम्मं) श्री धर्मनाथजीने, (संति) श्री शांतिनाथजीने (च) वली, (वंदामि) वांदु छुं, (कुंथुं) श्री कुंथुनाथजीने, (अर) श्री अरनाथजीने, (च) वली, (मल्लि) श्री मल्लिनाथजीने, (वंदे) वांदु छुं, (मुणिसुव्वयं) श्री मुणीसुव्रतस्वामी प्रत्ये, (नमिजिणं) श्री नमिजिणने (च) वली, (वंदामि) [illegible] छुं (रिट्ठनेमिं) श्री अरिष्टनेमि[illegible]) श्री पार्श्व-

नाथस्वामी प्रत्ये, (तह) तथा, (वद्धमाण) श्री वद्धमान स्वामी प्रत्ये, हु वादु छु; (च) वली, (एव) ए प्रकारे, (मए) म्हारे जीने जे, (अभिथुआ) नामपूर्वकस्तव्या छे ते चोवीस,परमेश्वर कहवा छे ? तो के (विहुय) टाल्या छे, (रयमला) कर्मरूपी रज तथा मैल, (पहीन) अतिशय करीने, (जरमरणा) जरा तथा मरणने जेणे क्षय कर्या छे, (चउवीसपि) चोवीस तीर्थंकर तथा अन्य, (जिणवरा) जिनवर, (तित्थयरा) तथंकर ते, (मे), म्हारा उपर, (पसीयतु) प्रसन्न होवो, (कित्तिय) कीर्तित छे, (वदिय) वदित छे, (महिय) पुज्य छे, इन्द्रादिक पूजे छे एहवा, (जे) जे तीर्थंकर, (ए) ए प्रत्यक्ष (लोगस्स) लोकने विषे, (उत्तमा) उत्तम एहवा, (सिद्धा) सिद्ध भगवन्त। तमे मुझने, (आरुग्ग) द्रव्य भाव रोग रहित, (वोहिलाभ) श्री

जिनधर्मनी प्राप्तिनो लाभ थवाने अर्थे; (समाहिवर) प्रधान समाधि, उत्तम उत्कृष्ट ऊंची एहवी, (दितु) देवो, (चदेसु) चद्रमा थी अधिक, (निम्मलयरा) अत्यंत निर्मल, (आइचे सु) सूर्यसमुदाय थकी पण (अहियं) अधिक, (पयासयरा) प्रकाशना करणहार (सागरवर) प्रधान, छेल्लो स्वयंभुरमण नामा समुद्र तेनी परे (गभीरा) गुणे करी गमीर, (सिद्धा) एहवा जे सिद्धो ते, (सिद्धि) मुक्ति ते, (मम) मुझने. (दिसतु) देवो।

॥ इति लोगस्सकी पाटी सपूर्णम् ॥

सूचना — तिग्दुत्ताके पाठसे विधियुक्त वंदना करके गुरु महाराजके पाससे सामाईक पचख्खणकी आज्ञा मागना फेर निरेका पाठ बोलना।

॥ अथ सामायिक लेवानी पाटी प्रारंभ ॥

करेमि भंते सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं, *मोहुर्त, पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, तस्स भंते, पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ इति ॥ ६ ॥

अर्थ—(करेमि) हुं करूं छुं (भंते) हे पूज्य। (सामाइयं) समता परिणामरूप सामायिकने, (सावज्जं) सावद्य काम, पाप, तेने (जोगं) मन वचन कायाना योग, करी (पच्चक्खामि) हुं निषेध करूं छुं, (जाव) ज्यां सुधी, (नियमं) सामायिक व्रतना नियमने (पज्जुवासामि) हुं

---

* महुर्त्त जितना करना होवे उतना बोलना, १ महुर्त्त ४८ मिनिटका समजना जादा बैठे तो लाभ है, मगर ४८ मिनिटसे कमि तो सामयिक करना नहीं, कमि करनेसे समाइकमे दोष लगता है।

सेवुं, त्यांसुधी, (दुविह) दोय करनसु (तिविहेणं) तीन जोगसूं (नकरेमि) हुं करूं नहीं (नकारवेमि) हुं दुजापासें न करावुं, (मणसा) मने करी, (वयसा) वचने करी, (कायसा) कायाए करीने (तस्स) ते सावद्य व्यापाररूप पापने, (भंते) हे भगवंत। (पडिक्कमामि) निवर्तुं छुं, (निंदामि) हु आत्मानी साखे निंदुं छुं, (गरिहामि) गुरूनी साखे हुं विशेषें निंदु छुं, (अप्पाणं) म्हारी आत्माने, ते दुष्ट क्रिया थकी (वोसिरामि) वोसिरावुंछु विशेषे करीने तजु छुं।

सूचना—यहां डाबा गोडा ऊँचा रखके बैठना और दोनुं हाथ जोड़कर डाबे गोढेपर रखके नमुत्थुणका पाठ दो वक्त बोलना।

अथ श्री नमुत्थुणंनी पाटी प्रारंभः।



नमुत्थुणं, अरिहंताणं, भगवंताणं, आइगराणं, तित्थगराणं, सयंसंबुद्धाणं,

पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीयाण, पुरिसवरग ंधहत्थीण, लोगुत्तमाण. लोगनाहाण, लोगहियाण, लोगपईवाण, लोगपज्जोयगराण, अभयदयाण चक्खुदयाण, मग्गदयाण, सरणदयाण, जीवदयाण, बोहिदयाण, धम्मदयाण धम्मदेसियाण, धम्मनायगाण, धम्मसारहीण, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीण, दिवोत्ताण, सरणंगइपइट्ठाण, अप्पडिहय वरनाण दंसणधराण, विअट्टछउमाण जिणाण, जावयाण, तिन्नाण, तारयाण, बुद्धाण, बोहियाण, मुत्ताण मोयगाण, सव्वन्नूण, सव्वदरिसिण, सिव मयल मरुअ मणंत मक्खय मव्वाबाह मपुणरावित्ति, सिद्धिगइ नामधेय ठाण, संपत्ताण नमो जिणाण, जियभयाण ॥ १ ॥ इति ॥ ७ ॥

अर्थ —(नमुत्थुण) नमस्कार होनो, (अरिहंताणं) श्री अरिहंत देवने, (भगवं- भगवंतने, (आइ गराण) धर्मना

आदिना करनारने, (तित्थगराण) तीर्थना स्थापणार एटले साधु, साधवी, श्रावक, अने श्राविका, ए चार जातना तीर्थना स्थापनार, (सयसंबुद्धाण) पोते सम्यक प्रकारे तत्वना जाण थया, (पुरिसुत्तमाण) पुरुष माहे उत्तम, (पुरिससीहाण) पुरुष माहे सिंह समान, (पुरिसवरपुंडरीयाणं) पुरुष माहे पुंडरीक कमल समान, (पुरिस) पुरुष माहे, (वर) प्रधान, (गंधहत्थीणं) गन्ध हस्ती समान, (लोगुत्तमाण) लोक माहे उत्तम, (लोगनाहाण) लोकना नाथ, (लोगहियाण) लोकना हितकारी, (लोगपईवाणं) लोकने विषे दीपक समान, (लोगपज्जोयगराणं) लोकमाहे उद्योतना करणार (अभयदयाण) अभय दानना देणार, (चक्खुदयाणं) ज्ञानरूप चक्षुना देणार, (मग्गदयाण) मोक्ष मार्गना देणार, (सरणदयाणं) सरणना देणार,

पुरिससीहाण, पुरिसवरपुंडरीयाण, पुरिसवरगंधहत्थीण, लोगुत्तमाण, लोगनाहाण, लोगहियाण, लोगपईवाण, लोगपज्जोयगराण, अभयदयाण, चक्खुदयाण, मग्गदयाण, सरणदयाण, जीवदयाण, बोहिदयाणं, धम्मदयाणं धम्मदेसियाण, धम्मनायगाण, धम्मसारहीण, धम्मवरचाउरतचक्कवट्टीण, दिवोत्ताण सरणगइपइट्ठाण, अप्पडिहय वरनाण दंसणधराण, विअट्टछउमाण, जिणाण, जावयाण, तिन्नाण, तारयाण, बुद्धाण, बोहियाण, मुत्ताणं मोयगाण, सव्वन्नूण, सव्वदरिसिण, सिव मयल मरुअ मणंत मक्खय मव्वाबाह मपुणरावित्ति, सिद्धिगइ नामधेय ठाण, संपत्ताण, नमो जिणाण, जियभयाण ॥ १॥ इति ॥ ७॥

अर्थ —(नमुत्थुण) नमस्कार होजो, (अरिहंताणं) श्री अरिहंत देवने, (भगवंताण) भगवंतने, (आइ गराण) धर्मना

आदिना करनारने, (तित्थगराण) तीर्थना स्थापणार एटले साधु, साधवी, श्रावक, अने श्राविका, ए चार जातना तीर्थना स्थापनार, (सयसंबुद्धाण) पोते सम्यक प्रकारे तत्वना जाण थया, (पुरिसुत्तमाण) पुरुष मांहे उत्तम, (पुरिससीहाण) पुरुष माहे सिंह समान, (पुरिसवरपुंडरीयाणं) पुरुष माहे पुंडरीक कमल समान, (पुरिस) पुरुष माहे, (वर) प्रधान, (गंधहत्थीणं) गन्ध हस्ती समान, (लोगुत्तमाण) लोक माहे उत्तम, (लोगनाहाण,) लोकना नाथ, (लोगहियाण) लोकना हितकारी, (लोगपईवाणं) लोकने विषे दीपक समान, (लोगपज्जोयगराणं) लोकमाहे उद्योतना करणार (अभयदयाणं) अभय दानना देणार, (चक्खुदयाणं) ज्ञानरूप चक्षुना देणार, (मग्गदयाणं) मोक्ष मार्गना देणार, (सरणदयाणं) सरणना देणार

(जीवदयाण) संयम जितव-जिवतरना देणार, (बोहिदयाण) समकित रूप बोधना देणार, (धम्मदयाण) धर्मना देणार, (धम्मदेसियाण) धर्मना उपदेशना देणार, (धम्मनायगाण) धर्मना नायक, (धम्मसारहीण) धर्मरूप रथना सारथी, (धम्म) धर्मने विषे, (वर) प्रधान (चाउरत) चारगतिनो अंत करवा माटे, (चक्कवट्टीण) चक्रवर्ति समान, (दिवोत्ताण) ससार समुद्रमा द्वीप समान, दु खना निवारण करनार, (सरणगइपइट्ठाणं) सरण गतिना स्थानक भूत शरणागत वत्सल, (अप्पडिहय) नहीं हणाय एवु, (वर) प्रधान, (नाण) ज्ञान, (दसण) दर्शन (धराण) धरणार, (विअट्टछउमाण) छद्मस्तपण गयुं छे, एटले कर्मरूपी आवरण, क्षयकीधा (जिणाण) राग द्वेषने जीत्या छे, (जावियाण) बिजाने राग द्वेष थकी जिताव्या छे, (तिन्नाण)

ससाररूपी समुद्र तर्या छे, (तारयाणं) बिजाने ससार समुद्र थी तारे छे, (बुद्धाणं) पोते तत्व ज्ञानने समज्या, (बोहियाणं) बिजाने तत्वज्ञान समजावणार, (मुत्ताणं) पोते चातुर्गतिक विपाक विचित्र कर्मथकी मुकाणा तथा (मोयगाण) बीजा भव्य प्राणीने कर्म थकी मुकावणार छे, (सव्वन्नू ण) सर्व ज्ञानी छे, (सव्वदरिसिणं) सर्व पदार्थना देखणार छे, (सिव) सर्व उपद्रव रहित (मयल) अचल (मरुए) रोग रहित, (मणंत) अनंत ज्ञानादि चतुष्टये करी युक्त छे, मांटे अनंत छे, (मक्खय) सर्व काल निश्चल, (मव्वबाह) बाधा पीडारहित, (मपुणराविति) जे गति थकी फरी संसारने विषे अवतार लेवो नथी, एहवी (सिद्धिगई) सिद्ध गति छे, (नामधय) एवु नाम, (ठाण) एवुं स्थानक (सपत्ताणं) मोक्ष नगर प्रत्ये पाम्या छे, एहवा अरिहत

कित्तिय, आराहिय, आणाए अणुपालिय, न भवइ तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ १ ॥ इति ॥८॥

अर्थ —नवमा सामायक व्रतना, (पंच अइयारा) पाच अतीचार (जाणियव्वा) जाणवा, (नसमायरियव्वा) आचरवा नहीं, (तजहा) जेम छे तेम (ते आलोउ) ते कहु छु, मणदुप्पणिहाणे) मनमाठो वर्त्यु होय, (वयदुप्पणिहाणे) वचन माठु वर्त्यु होय, (कायदुप्पणिहाणे) काया माठी प्रवर्तावी होय, (सामाइयस्स) सामायकने (अकरणयाए) बराबर कीधीके नहीं तेनो बराबर खबर न रही होय, (सामाइयस्स) सामायकने (अणवुट्ठियस्सकरणयाए) पुरी थया विना पारी होय, तो (तस्स) तेनु (मि०) खोटो किधो ते निष्फल थावो (आहारसन्ना) खावानी इच्छा, (भ[illegible]) भय लागो होय, (मिहुणसन्ना) [illegible] करी होय, (परिग्गहसन्ना)

धन द्रव्यनी इच्छा करी होय, ए चार संज्ञा माहेली कोई संज्ञा करी होय; तो (मि०) ए खोटो कीधेलुं निष्फल थावो; (सामायिक समकाएणं) सामायक कायाए बरावर रीते, (फासियं) स्पर्श करियो, अगीकार करियो, (पालियं) तेवोज पाल्यो, (सोहियं) शुद्ध कर्यो, (तिरिय) पार उतारियो, (कित्तयं) कीर्ति कीधी, (आराहिय) आराधना किधी (आणाए) जिनराग देवनी आज्ञा ने, (अणुपालीयं) पाली, (नभवइ) न होय, (तस्स मिच्छामि दुक्कडं) खोटा कीधानुं फल निष्फल थावो, ईति सामायक सपूर्ण ॥

॥ पाठन्तर ॥

॥ सामायिककी विधि ॥

॥ प्रथम श्री सीमंधर स्वामीजीनी आज्ञा

लेईने एक नवकार गुणीने "इरियावहियानी" पाटी भणावी, पछी तस्स उत्तरीनी पाटी भणी ने काउस्सग्ग करवो, काउस्सग्गमांहि "इरियावहियाएथी मांडीने जीवियाऊ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कड" सुधीनो पाठ मनमां घालीने एक नवकार मनमा कहीने काउस्सग्ग पारवो, पछी प्रगट "लोगस्सकी" पाटी कहीने सामायिकनी आज्ञा लेईने "करेमि भंतेनी" पाटी "जावनियम" सुधी कहीने आगल मुहूर्त्त (घालणो हुवे तिके) घालणो, पछी "पज्जुवासामि" थकी "अप्पाण वोसिरामि" सुधी पाठ कहीने सामायिक पच्चक्खवो, पछी डावो गोडो उभो करीने दोयवार " नमुत्थुण " नी पाटी केहवी, दुजा नमुत्थुणंने छेहडे "ठाणं सपाविऊ कामस्स "नमो जिणाण" एम केहवु, अने [illegible]ायिक पारती वेला "इरियावहीया,तस्स [illegible] पाटी भणीने काउस्सग्ग करवो,

पछी काउस्सग्गमाहे इरियावहियानी पाटी कहिने एक नवकार गणीने काउस्सग्ग पारवो, पछी "लोगस्स" भणी "नमुत्थु णं" दोय वार ऊपर लिख्या मुजब कहीने नवमा सामायिक-व्रतनी पाटी "अणुपालियं न भवइ तस्स मिच्छामि दुक्कडं" सुधी कहीने तीन नवकार गणीने सामायिक पारवुं ।

❀ विशेष गुरु गम्यसे धारे ❀

॥ इति श्री सामायिक अर्थ विधि समाप्त ॥

नोट .—पूर्व तथा उत्तर दिशाकी तर्फ मुह करके सामायिक करे और श्री गुरु महाराजके पास बैठा होय तो मुह श्री गुरु महाराजकी तर्फ रखे श्री गुरु महाराजकी व्याख्याण (वखाण) वाणी सुणे श्री गुरु महाराज फरमावे उसमें उपयोग रखे और धारे ।

॥ अथ प्रश्नोत्तर वाक्य संग्रह ॥

प्रश्न	उत्तर
१ भणनो कांई?	गुरु पासे ज्ञान,

२ नजणो काई ? संसार कार्य,

३ सुणीये काई ? सदुपदेश,

४ पारनहीं पाय एसो काई ? स्त्री चरित्र, तृष्णा,

५ लघु छोटी काई ? याचना करणीसो,

६ निद्रा काई ? मूढ पणो,

७ चन्द्र तुल्य शीतल काई ? सुजनरो समागम,

८ सुख काई ? आत्म विरति, संतोष,

९ सत्य सार काई ? उपकार, सर्व प्राणीको हित करणोसो,

१० जीवने वल्लभ काई ? प्राण,

११ अनर्थ फलदायक काई ? चंचल मन,

१२ मरण काई ? अति मूर्खपणो,

१३ अमूल्य काई ? मोके काम आवे सो,

१४ सर्व गुणको मूल काई ? विनय,

धर्मको मूल काई ? दया,

१६ कलहरो मूल कांई ?	हास्ति,
१७ सर्व रोगरो मूल कांई ?	अजिर्ण,
१८ सर्व बंधणरो मूल कांई ?	स्नेह राग,
१९ सर्व पापरो मूल कांई ?	लोभ, परिग्रह,
२० पवित्र जन कोण ?	शुद्ध मनवालो,
२१ निन्द्रावान कोण ?	अविवेकी, शून्य चित्तजन,
२२ चोर कोण ?	पंचेन्द्रिका विषय,
२३ वैरी कोण ?	मान, अनुद्योग,
२४ घणो अन्धो कोण ?	संसार रागी,
२५ चतुर कोण ?	स्त्री चरित्रसे अखडित रहे सो,
२६ जाग्रण कोण ?	विवेकी जन,
२७ मित्र कोण ?	पापसे निवृत्तावेसो
२८ आंधो, बहेरो अने मूर्ख कोण ?	अकृतकार्य करनेवालो, हित वचन सुणने वालो अने समय अनुकूल न बोलने वालो,

(४) चौथो धारणा व्यवहार।

पूर्व परम्परासे चलता आता आचार गोचरादिकमे प्रवर्ते तथा गुरुवादिकसे धारणा कर रखी होवे उस मुजब प्रायश्चित देवे सो धारणा व्यवहार।

(५) पाचमो जीए व्यवहार।

द्रव्यक्षेत्र काल भावमें फरक पड़ा देख या सघयणादिककी हीणता देख आचार्य और चतुर्विध सघ मिलकर जो निर्नय मर्यादा बाधे उस मुजब प्रवर्त—चले सो जीए (जित) व्यवहार। इन पच प्रकारके व्यवहार मुजब प्रवर्तता हुवा भगवतकी आज्ञाका उल्लघन नहीं करता है।

॥ इति ॥

॥ शुभं भवन्तु ॥

ओछो अधिको आगो पाछो लिख्यो होय तो तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥

सेव भंते सेव भंते।



ॐनमस्सिद्ध

॥ श्रीवीतरागदेव ऋषभ जिनेश्वराय नमः ॥

श्री छत्तीस बोल संग्रह

द्वितीय भाग

॥ मङ्गलाचरण ॥

ओंकार उदार अगम्य अपार संसारमें सार पदारथ नामी। सिद्धि समृद्धि सरूप अनूप भयो सबही सिर भूप सुधामी ॥ मन्त्रमें यन्त्रमें ग्रन्थके पन्थमें जाकुं कियो धुर अन्तरजामी। पञ्चहि इष्ट बसे परमिष्ट सदा भ्रमसी करै ताहि सलामी ॥१॥

॥ दोहा ॥

बोल छतीस नाम है, कीना भवि उपकार।
गुरु मुखमे धारजो, द्वितीय भाग सुजाण ॥१॥
गुरु समीपे जायने, लीजो अर्थ विचार।
भणीगुणीने सिखजो, जिन आज्ञा अनुसार ॥२॥
मेरोदान अर्ज करे, मत कीजो कोई ताण।
सूत्रार्थ जाणू नहीं, केवली भाषित परमाण ॥३॥
बहु ग्रन्थ मच कीयो, अल्प बुद्धि अनुसार।
भूल चुक दृष्टि पड़े, लीजो विद्वान सुधार ॥४॥

॥ उपदेशी दोहा ॥

समझ ज्ञान अंकुर है, समझ टाले दोष।
समझ समझ समतारसे, गया अनंता मोक्ष ॥१॥
समझ सके पापसु, अण समझु हरखंत।
वह लुखा वह चिकणा, इण विध कर्मबंधन्त॥२॥
ज्ञानी, गरीब, गुरु वचन, नरम वचन निरदोष।

इतरा कदे न छोडिये, शरधा शील संतोष ॥३॥
खरो मारग वीतरागरा, सूक्षम जेहना भेद।
सेंठा होयकर शरधजो, मनमें राखी उमेद ॥४॥
जवर चुड़ेनो, जायफल, साधणीने सेंण।
इतरा तो भारी भला, थलेज मुखरा वैण ॥५॥
जलकी शोभा कमल है, दलकी शोभा पील।
धनकी शोभा धर्म है,ज्युं कुलकी शोभा शील॥६॥
साध साध सब नाम है, आप आपकी दोड़।
पांचु इन्द्री वस करे, तो माथेका मोड़ ॥७॥
कृपा करता साधजी, विचरे देश प्रदेश।
भवि जीवांने तारता, दे दे धर्म उपदेश ॥८॥
साधु बड़े परमारथी, मोटो जिनको मन।
भर भर मुट्टी देत है, धर्मरुपी यो धन ॥९॥
साधु सगत जब हुवे, जागे पुण्य अकुर।
काईक रसायण ऊपजे, तो जाय दलद्र दूर ॥१०॥
साधु सत्तका सुपड़ा सत्तहो सत्त भाषत।
छाड़ पछाड़े तुतड़ा कणही कण राखंत ॥११॥

साधु चन्दन बावना, शीतल जाको अंग ।
लेहर उतारे भुजकी, दे दे ज्ञानको रंग ॥१२॥
ढील न कीजे धर्मकी, तप जप लिजे लूट ।
जैसी शीशी काचकी, जाय पलकमें फूट ॥१३॥
जीणकी भवथती पकगई, तिणको लागे उपदेश ।
खरो मारग वीतरागरो, कुंड़ नहीं लवलेश ॥१४॥

॥ प्रथम बोल ॥



१ चेतना लक्षण करके सर्व जीव एक प्रकारका है—जैसे कीडी कुंजर सर्वमें चेतन्यता समान है ।

॥ दुजो बोल ॥



२ बंध दोय प्रकारे—रागबन्ध १ द्वेषबन्ध २ ।

२ दोय प्रकारसुं जीव ससारमें भव करे—आर-
भसुं १ परिग्रहसुं २ ।
२ जोतिषीके दो इन्द्र—चन्द्रमा १ सूर्य २ ।
२ दोय प्रकारे धर्म—यतिधर्म १ श्रावकधर्म २ ।
२ सर्वजीव दोय प्रकारे--सिद्धगामि१ ससारी २ ।
२ सर्व जीव दोय प्रकारे--आहारी१अणाहारी २ ।
२ सर्व जीव दोय प्रकारे--साता वेदी १ असाता
वेदी २ ।
२ दोय चन्द्रमा दोय सूर्य जबुद्वीपमें ।

॥ तीजो बोल ॥



३ तीन तत्व—देवतत्व१ गुरुतत्व२ धर्मतत्व३ ।
३ पल्योपम तीन भेदे—उद्धार पल्योपम १ अद्धा
पल्योपम २ क्षेत्र पल्योपम ३ ।
३ उद्धार पल्योपम केने कहिये ? उछेदां गुलेकरी

नेमने सुखकारी होवे, इसो मर्दन करे पीछे उनो शीतल सुगधी ए तीन पाणीसुं स्नान करावे, चौसठ तरकारी बत्तीस पकवान हाथे जीमावे, पीछे कांधे लेइने फिरे, तो पिण भगवंते कह्यो के मातापितासुं उरण न थावे, पर केवली परूप्या धर्मने प्रवर्त्तावे तिवारे उसरावण थावे १, बोले गुरुसें शिष्य उसरावण न थावे, अत्तर पिण जिका गुरा पासे शिष्यो हुवे, जिकांरो विनय करे घणी सेवा भक्ति करे उपगार मेटे नहीं। धर्मरे प्रभावे गुरारे प्रभाव मरो देवता हुवे घणी रिद्धि पामे एक प्रस्तावे तेहीज गुरु विहार करता अटवी उजाडमाहि भूल्याथका देवता आवीने वसतीमाहि मेले, पछे रोग कोढ आय उपनाथका दुखी छे, आपदा भोगवे छे, ते देवता आवीने रोग उपसमावे, सुखसाता करे तो पिण-गुरु तथा गुरुणीसु

उसरावण नही थावे, तिवारे गुरुरी तथा गुरु-णीरी धर्म ऊपरसुं आसता ऊतरी जाणीनें ते देवना हेतयुक्त करीने केवली परूप्या धर्ममें प्रवर्त्तावे तिवारे ते देवता गुरुसुं तथा गुरुणीसुं उसरावण थावे २, तीजे बोले वाणोतर (गुमास्ता) शेठसुं उसरावण नहीं थावे, शेठने आपदा पड़ी हुवे वाणोतररी पुण्याइ वधी छे, शेठरी पुण्याइ हीणी छे, तिवारे वाणोतर शेठसुं पाछो उपगार करे तो पिण उसरावण नहीं थावे, केवली परूप्या धर्ममें प्रवर्त्तावे तिवारे उसरावण थावे "शेठसुं वाणोतर" ३।

३ तीन गारव, इड्डिगारव कहता—रिद्धिरो गारव पाना, पुस्तक, शिष्य सोला, भंडोप-गरण, जेहनो अहकार करे ते इड्डिगारव १ बीजो रसगारव आहार सरस मिले तेहनो अभिमान करे एहवा सरस आहार हमने

मिले छे बीजाने मिले नहीं ते रसगारव २, तीजो सातागारव—सुखसातारो गारव अभिमान करे हमने सुखशाता छे इसी दूजा केहने नहीं ते सातागारव ३ ।

३ तीन शल्य—मायाशल्य १, नियाणाशल्य २, मिथ्यात्वदर्शणशल्य ३ ।

३ तीन विराधना—ज्ञान अकालने विषे भणे, ज्ञानरो विनय न करे, ज्ञानवतनी असातना करे, ज्ञान भणता गुणता आलस मोडे अडपला (छोटो) लेवे, जिणरे पासे ज्ञान भणीयो हुवे तेहनो उपगार मेटे तिणारा अवगुणवाद बोले ते नाणविराधना १, बीजी दर्शन विराधना, समक्त पर शका कखा आवे, समक्तीसु द्वेष करे, मिथ्यात्वीनी प्रशसा करे, साधुसु द्वेष करे, तेहनी निंदा करे, दर्शण विराधक सिजे नहीं, ते दर्शन-धना, २, तीजी चारित्रविराधना

उत्तरगुणनुं दोष लगावे शरीररी सुश्रूषा करे ते चारित्रविराधना ३।

॥ चौथो बोल ॥



४ केवलीने इन्द्रिनो विषय न होय केवलज्ञाने सर्व जाणे, सिद्ध केवलीने दश प्राण हुवे नहीं भाव प्राण च्यार होवे ते अनतो ज्ञान १, अनतो दर्शण २, अनंता सुख ३, अनंत शक्ति ४।

४ च्यारपात्र—अरिहंत १, साधू २, देशव्रती ३, सम्यगदृष्टी ४।

४ च्यार अजीर्ण—तपस्यारो अजीर्ण क्रोध १, भणीयेरो अजीर्ण अहकार २, कार्यरो अजीर्ण विकथा ३, लोकमें अन्नरो अजीर्ण वमन ४।

४ च्यार प्रकारे क्रोध उपजे—क्षेत्र निमित्त

क्रोध उपजे १, वस्त्र निमित्ते क्रोध उपजे २, शरीर निमित्ते क्रोध उपजे ३, उपगरण निमित्ते क्रोध उपज ४।

४ च्यार बोल जीपता (जीतणा) घणा दोहीला छे, व्रनमाही शीलव्रत पालनो दोहिलो १, आठ कर्ममाही मोहनी कर्म जीतणो दोहिलो २, पाच इन्द्रियमाहीं रसेन्द्रिय जीतणी दोहिली ३ तीनू योगामाही मनरो योग जीतणो दोहिलो ४।

४ च्यार बोल पावणा दोहिला छे, पाच ज्ञानमाही केवलज्ञान पावणो दोहिलो छे १. लेश्या छन माही शुक्ललेश्या पावणी दोहिली छे २, च्यार ध्यानमाही धर्मध्यान शुक्लध्यान पावणा दोहिला छे ३, भरयोवनमांही शील पालनो दोहिलो छे ४।

४ च्यार बोल करवा महादोहिला (दुर्लभ) ।नपने शील पालनो दोहिलो १, छता

भोग छांडीने दिक्षा लेवणी दोहिली २, क्षमाकरणी दोहिली ३, कृपणने दान देवणो दोहिलो ४ ।

४ च्यार वात अकलदारीकी, जागतां तो चोर नासे १, क्षमा करता कलह नासे २, उद्यम करता दारिद्र नासे ३, भगवन्तरी वाणी सुनता पाप नासे ४ ।

॥ अथ पांचमो बोल ॥

५ पांच बोल दुर्लभ—शास्त्रका अर्थ समझणा दुर्लभ १, भेदानुभेदकी शका निकालनी दुर्लभ २, तत्व सरदहणा दुर्लभ ३, परीसह सहणो दुर्लभ ४, चारित्र पालणो दुर्लभ ५ ।

५ पांच प्रकारके साधू अवदनीय---पासत्था १, उसन्ना २, कुशीलीया ३, ससता ४, अह-

च्छदा ५, ॥१॥ पासत्थाके दोय भेद (१) सर्वता पासत्था सो ज्ञान दर्शन चारित्रसे भ्रष्ट, फक्त वेश मात्र, (२) देशवृती पासत्था १०८ दोष युक्त आहारले, लोच नहीं करे, ॥२॥ उसन्नाके दोय भेद (१) सर्व उसन्ना साधुके निमित्त निपजाये हुये स्थानक पाट भोगवे (२) देश उसन्ना दो वरत प्रतिक्रमण पडिलेहण आदि न करे तथा अस्थान छोड़ घरोघर फिरता फिरे, अयोग्य ठिकाणे गृहस्थके घरमें विना कारण बैठे, ॥३॥ कुशिलियाके ३ भेद नाणकुशिलिया, (१) ज्ञानके आठ अतिचार, (२) दशणकुशिलीया सम्मक्तके ८ अतिचार, (३) चारित्र कुशिलीया चारित्र के ८ अतिचार यो २४ अतिचार लगावे, ॥४॥ ससता जैसे गायके वाटेमें अछा बुरा सब भेला कर देवे तैसे उसकी आत्मामें गुण अवगुण सड़बड़ होवे उसे अपणे गुण

अवगुणकी कुछ खबर नहीं, इसके दो भेद (१) संक्लिष्ट-क्लेशयुक्त, (२) असंक्लिष्ट क्लेश-रहित, ॥५॥ अहच्छदा (अपच्छंदा) गुरुकी, तीर्थंकरकी, शास्त्रकी आज्ञाका भंगकर अपनेही इच्छानुसार चले जैसे ऋद्धिका, रसका, साताका यह तीन ही का गर्व करे, उत्सूत्र मनमाना परुपे सो अपच्छंदा, यह पांच वंदनाके अयोग्य है।

५ पांच ठामे गुरुने वंदना दीजे—प्रसन्नचित्त गुरुको होय तो वंदना कीजे १, आसन बैठा होय तो वंदना कीजे २, उपशांत होय तो वंदना कीजे ३, उठता न होय तो वंदना कीजे ४, आज्ञा होय तो वंदना कीजे ५।

५ पांच प्रकारे सिज्झाय—वाचना १, पृच्छना २, परिअटना ३, अनुप्रेक्षा ४, धर्म कथा ५।

५ पांच प्रकारे अचित्त वायरो उपजे तिण करी सचित्त वायरो हणीजे, पहिले ढवके

ना कठे क्षमा करे-जठे २, धर्मरी वधोतरी कठे तपस्या करे, दान देवे जठे ३, धर्मरी पुष्टाइ कठे उपसर्ग ऊपजते-चढ़ता परिणाम राखे जठे ४, धर्मरो विनाश कठे क्रोध मान माया लोभ व्यापे जठे ५ ।

५ पाच पडिलेहणारी वेदका जाणवी, पहिली गोडारे ऊपरे हाथ राखीने पडिलेहण न करे १, बीजी गोडारे नीचे हाथ राखीने पडिलेहण न करे २, तीजे गोडारे पाखती हाथ राखीने पडिलेहण न करे ३, चौथे गोडारे विचे हाथ राखीने पडिलेहण न करे ४, पाचमी एक हाथ गोडारे विचाले अने एक हाथ गोडा ऊपरे इसी तरह पडिलेहण न करे ५ ।

५ पाच गुणरा धणीने भणवो आवे; विनीत हुवे ते भणे १, उद्यमवन्त भणे २, निर्मल बुद्धिरो धणी भणे ३, उपयोगवंत भणे ४, आजीविका हुवे तो भणे ५ ।

॥ छठो बोल ॥

६ संघेण छव धरनेवालोंकी गति---छेवट्ठा संघेणको धणी चौथा देवलोक उपरान्त न जावे १, कीलका सघेणवाला छट्ठा देवलोक तक जावे २, अर्द्धनाराच सघयणवाला आठमा देवलोक तक जावे ३, नाराच संघयणवाला दशमा देवलोक तक जावे ४, ऋषभनाराच संघयणवाला वारमा देवलोक तक जावे ५, वज्रऋषभनाराच संघयणवाला मुक्ति तक जावे ६ ।

६ छेवट्ठा संघयणवाला पहिली दूजी नारकी तक जावे १, कीलका संघयणवाला तीजी नारकी तक जावे २, अर्द्धनाराच संघयणवाला चौथी नारकी तक जावे ३, नाराच संघयणवाला पांचमी नारकी तक जावे ४, ऋषभ नाराच संघयणवाला छट्ठी नारकी

४, पहिलेसु पाचमो दसमेंसु चौदमो छोडकर ९ गुणठाणा सामायिक छेदोपस्थापनीय चारित्रमें पावे ५, पहिलेसु छठो नवमेंसुं चौदमो छोडकर २ गुणठाणा अप्रमादि हास्यादिक नोकषाईमें पावे ६।

६ छकायना जीव किहा घणा किहा थोड़ा ते कहे छे---पुढवीकायना जीव पूर्व दिसे घणा ते स्यां माटे ? गौतम द्वीप छे ते माटे १, अप्पकायना जीव उत्तर दिसे घणा ते स्या माटे ? मान सरोवर छे ते माटे २, तेऊकायना जीव पछिम घणा ते स्या माटे ? मनुष्य घणा छे ते माटे ३, वायुकायना जीव दखिण दिशि घणा ते स्या माटे ? तिहा पोलाड घणी छे ते माटे ४, वनस्पतिना जीव उत्तर घणा छे ते स्या माटे ? जेमा मानसरोवर मध्ये कमल छे ते माटे ५, मनुष्य उत्तर अने दखिणे थोड़ा छे तेहथकी

पूर्वे संख्यात गुणा अधिक तेह थी पश्चिममें पिण घणा ते स्यां माटे ? विजयकुडी मनुष्य घणा ते माटे ६।

६ छव बोल नटनेरा याने नेकारो करणेरा लक्षण—लीलड़में सल घाले १, आंख्या मीचले, आधो देखै २, उंचो देखै, निची दृष्टि घाले ३, पराय से बात करणे लग-जाय ४, मौन पकड़ले ५, काल विलंब करै ६, ॥ गाथा ॥ भिउड़े आधा लोचणं उँची परंमुहवयणं मौन कालविलंबो नाकारे छवी होय॥ १॥

६ छव प्रकाररा जबुद्वीवर्मे खेत्र, हेमवय १, एरणयवय २, हरिवास ३, रम्यकवास ४, देवकुरु ५, उत्तरकुरु ६।

६ छव पलिमथ ते विपरीत फल पावे, कुचेष्टा कुतुहल करे ते संयमरो पलिमंथ १, अलिक झूठ कहे ते सयमनो पलिमंथ २, आघो

पाछो दृष्टि देखे ते इर्यासुमतिरो पलिमथ ३, लणतणाट गोचरीने विषे करे तो एषणा-सुमतिनो पलिमथ ४, इच्छारो निरोधन करे तो निलोभीपणानो पलिमथ ५, तप करीने नियाणो करे तो मोक्षनो पलिमथ ६।

६ छव प्रकारे कुपडिलेहण करता जीव जन्म मरण वधारे, उतावली घणी करे १, अण पडिलेह्या उपरे वेसे २, पडिलेह्या अणपडि-लेह्या भेगा करे ३, वारवार झाटकने जोवे नहीं ४, पडिलेहणा करीने वस्त्र आदि विखेर राखे ५, वेदिका रहित पडिलेहणा करे ६।

६ छव प्रकारे पडिलेहणा करतो जीव जन्म मरण टाले (घटावे), पडिलेहणा करतो शरीर वस्त्र नचावे नहीं १, पडिलेह्या अणपडिलेह्या भेला न करे २, ऊंची छातसे लगावे नहीं, नीचो धरतीसु लगावे नहीं तिरछो भींतसु लगावे नहीं, मर्यादा सहित पडिलेहणा

करे ३, छव प्रकारनी कुपडिलेहणा कही ते न करे ४, नव अखोडा नव पखोडा करे ५, प्राणी जीवने देखे दयारे निमित्ते पडिलेहणा करे ६ ।

॥ सातमो बोल ॥

७ सात नारकीना नाम, गोत्र, आउखो विस्तार पणे कहे छे, पहली घमा---रत्नप्रभा पृथ्वी नारकीनो आउखो जघन्य १० हजार वर्षनो उत्कृष्टो १ सागर, दूजी वंशा---शर्कराप्रभा पृथ्वीनु आउखो जघन्य १ सागरोपम उत्कृष्टो ३ सागर, त्रिजी शेला---वालूका प्रभानो आउखो जघन्य ३ सागर उत्कृष्टो ७ सागर, चौथी अंजना—पङ्कप्रभा पृथ्वी नारकीनो आउखो जघन्य ७ सागर उत्कृष्टो १० सागर, पाचमी अरिष्टा (रिट्ठा)—धूमप्रभा

पृथ्वीना नारकीनो आउखो जघन्य १० सागरनो उत्कृष्टो २२ सागरोपम, छट्ठी मघा—तम प्रभा नारकीनो आऊखो जघन्य २२ सागर उत्कृष्टो २८ सागर, सातमी माघवती—तमतमानो आऊखो जघन्य २८ सागरोपम उत्कृष्टो ३३ सागरोपम।

॥ सात नारकीनो स्वरूप ॥



पहली रत्नप्रभा पृथ्वी—असंख्याता योजनना सहस्र लांबी पहुली (चौड़ी) असंख्याता योजननी सहस्रनी परिधि, एक लाख असीहजार योजन जाडपणै छै एक हजार योजन ऊपर मेलीजे एक हजार योजन हेठल मेलहीजे बाकी एक लाख अट्ठोत्तर हजार योजन बीच नारकी माहि भवनपतिना रहनाना ठाम छै तिहा, पाथडा

॥ शुद्धिपत्र ॥

नीचे लिखे मुजब शुद्ध जाणजो।

॥ नारकी रो आउखो ॥

पाचमी नारकी रो अउखो जघन्य १० सागरोपम उत्कृष्टो १७ सागरोपम।

छठी नारकी रो आउखो जघन्य १७ सागरोपम उत्कृष्टो २२ सागरोपम।

सातमी नारकी रो आउखो जघन्य २२ सागरोपम उत्कृष्टो ३३ सागरोपम।

सात नारकी रो स्वरूप पत्र २६ से ४५ तक

नारकी नीचे घणोदधि (घणो दधि कहता जम्यो होयो पाणी छे) घणो दधि नीचे घणवाय घणवाय नीचे तणवाय तणवाय नीचे असख्याता कोड़ान कोड योजन रो आकाश छै ऐसो कहणो पत्र २८ से ३६ तक।

पहली नारकीमे १३ पाथड़ा--पाथडे पाथड़े

आपतमे आंतरो ११५८३ योजन एक योजन रा तीन भाग तिकेरो १ भाग अधिक जाणीजो पत्र ४० ।

चोथी नारकीमे ७ पाथड़ा—आपतमें पाथड़े पाथड़े आनरो १६१६६ योजन रा ३ भाग तीकेरा २ भाग अधिक जाणीजो पत्र ४० ।

पत्र ३० ओली आठवी अवधि ज्ञान जघन्य २॥ गाउ "अवधि ज्ञान कहणो" पत्र ३५ ओली नवमी बेहु पासे छे तिको चहु पासे कहणो पत्र ३८ ।

ओली छठी तथा इग्यारमी मवे वभर छै तिको वज्जर कहणो ।

तीन गाऊ उत्कृष्टो साढा तीन गाऊ शर्कराप्रभा. हेठल वीस हजार योजननो घणोदधिनो पिंड छै ते हेठल असख्याता योजननो घणवात छै ते हेठल असख्याता योजननु तनुवातनु पिंड छै ए तीने लांबा पहुला शर्करा प्रभा प्रमाणे छै ते हेठल असख्याता योजननु आकाश छै इनि दूजी शर्कराप्रभा विचार २।

तीजी वालूका प्रभा पृथ्वी—असख्याता योजनना लावी पहुली असख्याता योजननी सहस्र परिधि; जाड पणे एक लाख अट्ठाईस सहस्र योजन प्रमाण छै तिहां पाथडा नव एक एक पाथडानो पिंड योजन सहस्र तीन, लांबीपहुली वालूका प्रमाण छै तिहां नव पाथडा पनरे लाख नरकावासा छै, केतला नरकावासा सख्याता योजनना छै संख्याता नारकी छै, केतलाएक

निनो लाबा पहुला रत्नप्रभाप्रमाणे छे ते हेठल असंख्याता योजननुं आकाश छे ए रत्नप्रभानो विचार कह्यो १ ।

दूजी शर्कराप्रभा पृथ्वी—असंख्याता योजनना सहस्र लाबी पहुली असंख्याता योजनना सहस्र परिधि, जाडपणे एक लाख बत्तीस सहस्र योजन प्रमाण छे, तिहां पाथडा इग्यारे एक एक पाथडानो पिंड जाडपणे तीन सहस्र योजन, लाबा पहुला शर्कराप्रभा प्रमाणे छे तिणे नरके इग्यारे पाथडे पचवीस लाख नरकावासा छे केटला एक नरकावासा संख्याता योजनना छे तिहा संख्याता नारकी छे केटला एक नरकावासा असंख्याता योजनना छे तिहा असंख्याता नारकी छे तेहनो शरीर उत्कृष्टो साढापनर धनुष, अंगुल १२ ते नारकी ने कापोत, लेश्या छे तिणे नरकावासे ऊष्ण छे ते नारकी ने, अवधि ज्ञान जघन्य

योजननी परिधि, जाडपणे एक लाख बीस हजार योजन प्रमाण छै तिहां पाथडा सात छै एक एक पाथडानो पिंड तीन हजार योजन, लांबा पहुला पकप्रभा प्रमाण छै तिणे नरके सातेइ पाथडाइ दश लाख नरकावासा छै केतला एक नरकावासा असंख्याता योजनना छै तिहा असख्याता नारकी छै केई-एक नरकावासा सख्याता योजनना छै तिहां सख्याता नारकी छै वेदना २ वेदै, शीतवेदना, ऊष्ण वेदना तिण माहीं ऊष्ण वेदना घणी छै शीत वेदना थोड़ी छै ते नारकीने अवधि ज्ञान जघन्य वे गाऊ उत्कृष्टो अढाई गाऊ, पकप्रभा हेठल बीस हजार योजननो घनोदधिनो पिंड छै ते हेठल असख्याता योजननो घनवातनो पिंड छै ते हेठल असख्याता योजननो तनु वातनो पिंड छै ए तीनु लांबा पहुला पकप्रभा प्रमाण छै ते

नरकावासा असंख्याता योजनना छे तिहा असंख्याता नारकी छे तेहनो शरीर उत्कृष्टो सवाएकतीस धनुष प्रमाणे छे तेहनो आउखो जघन्य तीन सागर उत्कृष्टो सात सागरोपम तिणे (उस) नरके लेश्या २ कापोत लेश्या, नील लेश्या छे कापोत लेश्याना धणी घणा नील लेश्याना धणी थोडा तिणे नरकावासे ऊपनेडना छे ते नारकी ने, अवधि जघन्य अढाईगाउ, वालूका प्रभा हेठल - वीस हजार योजननु घनोदधिनो पिंड छे ते हेठल असंख्याता योजननु घनवातनो पिंड छे ते हेठल असंख्याता योजननो तनु वातनो पिंड छे, ए तीनु लाग पहुला वालूका प्रभाप्रमाण छे ते हेठल असंख्याता योजननो आकाश छे-इति त्रीजी पृथ्वी ।

चौथी पंक प्रभा पृथ्वी—असंख्याता सहस्र लाबी पहुली असंख्याता

योजननो परिधि, जाडपणो एक लाख आठ हजार योजन प्रमाण छै तेमाहीं साढावावन हजार योजन ऊपर मूकीए, साढा वावन योजन हेठल मूकीए, विचालै एक पाथड़ो ते पाथड़ानु पिंड तीन हजार योजन जाड़ पणौ छै लांवा पहुला तमतमा प्रमाणे छै ते पाथड़े पाच नरका वासा छै काल १ महाकाल २, रूरू ३, महारूरू ४, अपैठान ५, चार नरकावासा वेहुपासै असरयाता योजनना छै तिणै असंख्याता नारकी छै तेहनो शरीर उत्कृष्टो पाचसो धनुप प्रमाणे छै तेहनुं आऊखो जघन्य वावीस सागरोपम उत्कृष्टो तेत्रीस सागरोपम अपैठाणै तेत्रीस सागरोपमनु आउखो ते नारकी कृष्णलेश्या छै तिणै नरका वासे शीत वेदना छै ते नारकी ने अवधि ज्ञान जघन्य अर्द्ध गाऊ उत्कृष्टो एक गाऊ, तमतमा हेठल वीस हजार

योजनरा छै तिहा सख्याता नारकी छै, कितना एक नरका वासा असख्याता योजनना छै, तिहा असख्याता नारकी छै, तेहनो शरीर उत्कृष्टो अढाइसौ धनुष प्रमाण छै तेहनो आउखो जघन्य सतरे सागरोपम उत्कृष्टो बावीस सागरोपम, तिहा कृष्णलेश्या छै, ते नरका वासे शीतवेदना छै ते नारकीने अवधिज्ञान जघन्य एक गाऊ उत्कृष्टो दोढ गाऊ, तम प्रभा हेठल वीस सहस्र योजननुं घनोदधिनु पिड छै ते हेठल असख्याता योजननु घनवात नो पिड छै ते हेठल असख्याता योजनन् तनुवातनो पिड छे ए तिनुं लाबा पहुला तम प्रभा प्रमाण छै ते हेठल असख्याता योजनन‍ु आकाश छै इति तम प्रभा ६।

सातमी तमतमा पृथ्वी—असख्याता सहस्र लाबी पहुली असख्याता

योजननी परिधि, जाडपणो एक लाख आठ हजार योजन प्रमाण छै तेमाहीं साढावावन हजार योजन ऊपर मूकीए, साडा बावन योजन हेठल मूकीए, विचाले एक पाथड़ो ते पाथड़ानुं पिड तीन हजार योजन जाड़ पणो छै लांवा पहुला तमतमा प्रमाणे छै ते पाथड़े पाच नरका वासा छै काल १ महाकाल २, रूरू ३, महारूरू ४, अपैठान ५, चार नरकावामा वेहुपासे असंख्याता योजनना छै तिणो असंख्याता नारकी छै तेहनो शरीर उत्कृष्टो पाचसो धनुष प्रमाणो छै तेहनु अऊखो जघन्य वावीस सागरोपम उत्कृष्टो तेत्रीस सागरोपम अपैठाणे तेत्रीस सागरोपमनुं आउखो ते नारकी कृष्णलेश्या छे तिणो नरका वासे शीत वेदना छै ते नारकी ने अवधि ज्ञान जघन्य अर्द्ध गाऊ उत्कृष्टो एक गाऊ, तमतमा हेठल वीस हजार

योजननु घणोदधिनु पिंड छे ते हेठल असंख्याता योजननु घनवातनु पिंड छे ते हेठल असंख्याता योजननु तण वातनुं पिंड छे ए तीन् लावा पहुला तमतमा प्रमाण छे ते हेठल असंख्याता योजननु आकाश छे, साते नरके शरीर जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग जाणवो, सात नरक पृथ्वी ए सम्यक दृष्टी मिथ्या दृष्टी, मिश्रदृष्टी, ए तीन दृष्टी छे रत्नप्रभा पृथ्वी थकी बारे योजने अलोक छे बारह योजन मांहि तीन वलया छे पहिलो वलय घणोदधिनु छव योजननु छे बीजो वलय घनवातनु साढा च्यार योजननु छे त्रीजो वलय तनुवातनु दोढ योजननु छे, दूजी शर्करा प्रभा ऐ बारह योजने दोढ भाग तीरछो अलोक छै तिण मध्ये त्रिण वलय पूर्वोक्त रीते कुळ २, तीजी वालूका प्रभाथी तेरहे

योजन एकभाग तीरछो अलोक छै ते मध्ये त्रिणवलय ३, चौथी पक-प्रभाथी चौदे योजन अलोक छै ते मध्ये त्रिण वलय छै ४, पांचमो धूम-प्रभाथी चौदे योजने दो भाग तीरछो अलोक छै ते मांहि त्रिण-वलय ५, छट्ठी तम प्रभा थी पन्द्रह योजने एकभाग तीरछो अलोक छै ते माहि त्रिण वलय ६, सातमी तमतमाथी सोले योजने तीरछो अलोक छै तिहा सोलै योजनमांहे आठ योजननु घनोदधिनु वलय छै छव योजननु घन वातनु वलय छै देढ़ योजन छव भाग तनुवातनु वलय छे ७।

नारकी नीचे घणो दधि समुद्र आवे घणोदधि नीचे जावे तो घणवाय आवे घणवाय नीचे तणवाय आवे तणवाय नीचे आकाश आवे आकाश थकी तीरछो आलोक छै ते मांहे तीन वला (वलय) छै ।

वला (वलय) कैसो छै ?

आडे लकड़े, लावे डोरेकी परे झालरीरे आकार छै ।

घणो दधि केने कहीजे ?

असख्याता योजन लाम्बी चौड़ो छे २० हजार योजन जाड पणे पाणी छे ते वभ्मर माँही वधाणो छे ।

घणवाय केने कहीजे ?

असख्याता योजन लावी चौड़ी छे असख्याता योजन जाड पणे न्ठ जाडो वायरो छै वायरो वभ्मर माही वधाणो छै ।

॥ विशेष विस्तार ॥

नारकी अलोक बीच आंतरा ।

वला (वलय)

नारकीसे अलोक	घणो दधि,	घणवाय,	तणवाय,
पहली नारकी १२ योजन २ भाग	६ योजन	४। योजन	१॥ योजन
दूजी ,, १२ ,, २ ,,	६ ,, २ भाग	४॥ ,,	१॥ ,, १ भाग
तीजी ,, १३ ,, १ ,,	६ ,, २ भाग	५ ,,	१॥ ,, २ भाग
चौथी ,, १४ ,,	७ ,,	५ ,, १ भाग	१॥ ,, ३ भाग
पांचमी ,, १४ ,, २ ,,	७ ,, १ भाग	५ ,, २ भाग	१॥ ,, ४ भाग
छठी ,, १५ ,, १ ,,	७ ,, २ भाग	५ ,, ३ भाग	१॥ ,, ५ भाग
सातमी ,, १६ ,,	८ ,,	६ ,,	१॥ ,, ६ भाग

पहली नारकीमें १३ पाथड़ा—पाथड़े पाथड़े आपतमें आतरो ११५८३ योजन ।

दूजी नारकीमें ११ पाथड़ा—आपतमें पाथड़े पाथड़े आतरो ९७०० योजन ।

तीजी नारकीमें ९ पाथड़ा—आपतमे पाथड़े पाथड़े १२३७५ योजनरो आतरो ।

चौथी नारकीमे ७ पाथड़ा—आपतमें पाथड़े पाथड़े आतरो १६१६६ योजनरो ।

पाचमी नारकीमे ५ पाथड़ा—आपतमें पाथड़े पाथड़े आतरो २५२५० योजनरो ।

छठी नारकीमे ३ पाथड़ा—आपतमें पाथड़े पाथड़े ५२॥ हजार योजनरो आतरो ।

सातमी नारकीमें एकसे दूजो पाथड़ो नहीं ते भणी आतरो नथी ।

पहली नारकीमें तीन कुड उसका नाम रक्त कुड (१) आउगोहल कुंड (उसभपाणी) (२) "क बहल कुड (उसभ कीचड़) (३) ।

सात नारकीमें ७ घणो दधि, ७ घणवाय, ७ तणवाय, ४६ पाथड़ा, ८४ लाख नरकवासा।

नारकी सासती छै जीव असासता छै।

(१) रत्नप्रभा नारकीमे रत्नकीसी प्रभा छै (भुंडी प्रभा छै) (२) शर्कराप्रभामें कांकरा छै (३) वालूप्रभामें वलवलती वालू छै (४) पंकप्रभामें कादो छै (५) धूमप्रभामे धुवों छै (६) तम प्रभामें अन्धारो छै (७) तमतमाप्रभामें माहा अन्धारो छै।

हिवे नारकीनी भूख तृषानी वेदना कहे छै, जितने जगतमें पुद्गल आहार का छै ते सर्व लेईने नारकीना मुख मांहि एकेवारे खेपे तो ही नारकीनी भूख वेदना उपशमें नहीं और सगला समुद्रना पाणी एकेवारे नारकीना मुख मांहि खेपे तो ही नारकीनी तृषा नहीं भाजे, नारकी उष्ण वेदना केहवी वेदे छे ते कहिये छ, जैसे यहां मनुष्य

लोकमे कोई लोहारनी कलाने विषे चतुर छै ते मासअर्द्ध लगे लोहनो गोलो घड़ी घड़ी तपाय तपाय मोटो करे ते गोलो ऊष्णकरी नरकावामा माहि मूके ते बलतो बलतो ते नारकी गली जाय एहवी ऊष्ण वेदना नारकीने तिहा वेदे छै, छट्ठी तथा सातमीमें एक शीत वेदना वेदे छै, एतलो विशेष जाणवो, इम किणही कीधा नहीं करस्ये नहीं, भगवत्त केवली भाव देख्या छै सातुही नारकी में पाच कोड अड़सट्ठि लाख निनाणु हजार पाचसौ चौरासी एतला रोग सात नारकीना जीवने सदाई शरीरे होवे छै वर्णकाला, कातिकाली, ए आदि देइने घणें करी गाढा पाड्या छै हिवे नारकी में गन्ध कहे छै जेहवा मनुष्यना मड़ा, गाय ना मड़ा, सर्पना मड़ा, खानना मड़ा (कलेवर), मजार ना मड़ा, महिशना मड़ा, चित्राना मड़ा,

मृ श्रा कुहिया विणठा घणा कालना सड्या क्रमी जालेकरी सहित देखतां दुर्गंध माहे महा पांडुश्रा, गणधर देवे प्रश्न कीधो, स्वामी केवली कह्यो ए गन्ध थकी पिण अनिष्ट पांडुश्रो गन्ध छै, हिवे फरस कहे छै जेहवी तिक्षण खड्गनी धारा, छुरीनी धारा, जेहवो त्रिशूलनो अग्र, जेहवो वाणनो अग्र शूलनो अग्रभाग, जेहवा किवचना रोम, जेहवो अग्निनो फरस एहथी अधिक वखाणया, गणधर देवे प्रश्न कीधा, भगवत देवे कह्या कौन कौन जीव, किसी किसी नारकी उपजै, असन्नि सरीसृप पखी पहली नरके तिर्यंच पंचेंद्री असन्नी आवी उपजै उपरान्त नहीं १, वीजै नारके सरीसृप कहता गोह, गिरोली, खिरोजी विसोरा, वंभणी, उदरा, नोलीयादिक आवी उपजै उपरान्त न उपजै, तीजी नारके पंखी उडणा जीव सिकरा, सांमली, सिचांण,

चिड़कला, मोर, बुगला, लाना कुर्हा, बाज, जुरग, आदि देई मास भक्षी उपजे. उपरान्त न उपजे ३, चौथे नरके गाय, भेंस, बाघ, सिंह, चित्ता, ससा, स्याल, रोज, रींच, हिरण, स्वान, सूअर, साभर, वलद, हाथी, घोडा, ऊ ठ, महिष, मजार, वेसरी आदि देई चोपदनी जाती पापी जीव उपजे ४; पाचमें नारके उरपरिसर्प आदि देई जे हीएचाले ते उपजे उपरान्त न उपजे ५, छट्टिनारके मनुष्यणी (स्त्री) अने माछली उपजे उपरान्त न उपजे ६, सातमी नारके मनुष्य अने माछला उपजे ७ ।

रत्नप्रभा नारकी सबसे छोटी छे तो पण घणी मोटी छे बाहरसु चोखुणी छे माहे गोल छे कुभीरे आकार छे गौतम स्वामीजी पूछ्यो कि देवता नारकीरो पार पामे कि नहीं? एक देवता चपल गतीरो चालणहार, नरकावासाको

पार पामें ? वले गौतम स्वामी वंदणा नमस्कार करीने पुछ्यो, हे भगवान पुज्य। ज्यो देवता छव महीना तांइ चाल्यां नरकावासारो पार पामें ? हे गौतम नो इठे समठे, (पार पमवां समर्थ नहीं) वले गौतम स्वामी वंदणा नमस्कार करके पूछ्यो तो स्वामी केतलो एक पारपाम्यो ? हे गौतम संख्याता योजनका नरकावासा जिणरो पारपाम्यो, असंख्याता योजनका नरकावासारो पार न पाम्यो।

गौतम स्वामी पुछ्यो हे भगवान पुज्य भवनपती देवता कठे रहे छै ? रत्नप्रभा नारकी मांहे १३ पाथड़ा छै १२ आंतरा छै तेमां एक पहलो एक छैलो=२ आंतरा खाली छै बीचे १० आंतरा छै तिहां भवणपतीरा भवण छै, जिहां दस प्रकार भवणपती देवता रहे छै।

ए साते नारकीनु स्वरूप कह्यौ।

७ सात ठामे गुरुवदणा निषेध—विग्रह चित्त होय १, उपराठा होय २, निद्रा आवती होय ३, निषेध (मना) करता होय ४, आहार करता होय ५, नीहार करता होय ६, कामकाज करता होय ७।

७ सात प्रकृति क्षय कीधा चायक सम्यक्त उपजै—अनतानु बन्धी क्रोध १, मान २, माया ३, लोभ ४, सम्यक्त मोहनी ५, मिथ्यात्व मोहनी ६, मिश्र मोहनी ७।

७ व्यवहारमें सात प्रकारे सोपकर्मी आउखो घटे (घणो आउखो बाध्यो छे पिण घट जावे) धसको खायने मरे १, कुवा, वावड़ी, तलावमें पड़कर तथा तरवार, कटारी, फासी सु मरे २, मत्रने जोगे आगलो मुठ वावे तथा डाकिनी साकिनीरे मत्रथकी (आघाते) मरे ३, आहाररे अजीर्णसु मरे ४, शूलादिक मोटी वेदना उपज्या मरे ५, सर्प, विछु इत्यादिक

स्पर्श डंक लाग्यां मरे ६, आपणा श्वासोश्वास रोकीने मरे ७ ।

७ सात भय, इहलोक भय, ते जातिसुं जातिने भय ऊपजे, मनुष्यसु मनुष्य डरे, देवतासु देवता डरे, तीर्यंचथी तिर्यंच डरे, नारकीथी नारकी डरे, आप आपरी जातिसुं डरे ते इहलोकभय १, परलोकभय, परजातिसु भय उपजे, देवतासु मनुष्यने भय उपजे अथवा तिर्यंचसु मनुष्यने भय उपजे अथवा परलोकना दु:ख सुणीने भय उपजे ते परलोकभय २, आदान भय ते परिग्रहथी भय उपजे ते धन राखवा निमित्ते चोरादिकनो भय उपजे ते आदानभय ३, अकस्मात् भय, अजाण गोली तोपनो शब्द सुणीने भय उपजे ते अकस्मात् भय ४, आजीविका भय ५, मरण भय ते आउखानो भय ६, अपयश भय ते अयश अकीर्त्तिरो भय ७ ।

७ सात प्रकारे साधुजीनी भाषा, थोडो बोले १, मोठो मधुरो बोले २, विचारीने बोले ३, कार्य पड्या बोले ४, निरवद्य वाणी बोले ५, मायारहित बोले ६, सूत्र सिद्धांतरे अनुसारे बोले ७।

७ सात प्रकारे धनने भय, राजारो भय १, चोररो भय २, कुटुंबरो भय ३, अग्निरो भय ४, पाणीरो भय ५, पृथ्वीमें नासण भागणरो भय ६, विनाशरो भय ७।

७ सात प्रकारसु ज्ञान घटे, आलस १, निद्रा २, क्लेश ३, शोक ४, सोच ५, रोग ६, कुटुम्बसु मोह करे तो ज्ञान घटे ७।

७ सात वैरी, मनवैरी १, शैतान २, भूख ३, धन ४, कटम्ब ५, निद्रा ६, काल ७।

॥ आठमो बोल ॥

८ सिद्धभगवानके आठगुण—ज्ञानावरनीय कर्मके क्षय होणेसे अनतज्ञानी हुये १, दर्शनावरणीय कर्मके क्षय होणेसे अनतदर्शणी हुये २, वेदनीय कर्मके क्षय होनेसे अव्याबाध, गुण, वेदना रहित हुये ३, मोहनीय कर्मके क्षय होणेसे क्षायकगुण प्रगटे ४, आयुष्य कर्मक्षय होणेसे अजरामरगुण अर्थात् वृद्धपणे और मृत्यु रहित हुये ५, नाम कर्मके क्षय होणेसे अमूर्त्ति निराकार हुये ६, गोत्र कर्मके क्षय होणेसे अगुरु लघुगुण प्रगटे ७, अतरायकर्मके क्षय होणेसे अनत शक्तिवत स्वामी रहित हुये ८।

८ पुन अष्टगुण अनेक वस्तु स्वभाव लिये हुवे सो आस्तित्व कहिये १, अनेक वस्तु स्वभाव सहित हुवे सो वस्तुत्व कहिये २,

अपनी मर्यादलिये हुवे सो प्रमेयत्व कहिये ३, न भारी और न हल्के होय सो अगुरु लघुत्व कहिये ४, अपणो गुणपर्याय लिये हुवे सो द्रव्य कहिये ५, अपनी सत्तामेंही रहे सो प्रदेशी कहिये ६, अपना चैतन्य स्वभाव ज्ञान लिये हावे सा चैतन्य कहिये ७, चैतन्य स्वभाव ज्ञान दर्शण सहित और पुद्गलके वर्ण, गध, रस, स्पर्श रहित होय सो अमूर्ति कहिये यह ८ गुण निर्मल है और चैतन्य द्रव्यके स्वभाविक है ८।

८ आठ जणाको शिक्षा लगे, थोड़ा हसे १, सदा दमितात्मा २, निरभीमानी ३, परमार्थगवेषी ४, देशसे और सर्वसे चारित्रकी विराधना नहीं करने वाला ५, रसनाका (-जीभ) अलोलूपी ६, क्षमावत ७, सत्यवादी ८।

८ आठबोल अचित भूमीके—राजपथ (रस्ता) की जमीन आगुल ५ अचित १, सेरीकी

पाशवण गेल जल सघान परिठावनिया सुमति) ५, मनगुप्ति ६, वचनगुप्ति ७, कायगुप्ति ८ ।

८ आठ आत्माका नाम—द्रव्यआत्मा १, ज्ञानआत्मा २, चारित्र आत्मा ३, योग आत्मा ४, कषाय आत्मा ५, उपयोग आत्मा ६, दर्शन आत्मा ७ वीर्य आत्मा ८ ।

८ आठ मदना नाम—कुलमद महावीरवत् १, वलमद दुर्योधनवत् २, जातिमद मेतार्यऋषीवत् ३, श्रुतमद थूलिभद्रवत् ४, ठकुराईमद राणारावणवत् ५, रूपमद सन्त् कुमारवत् ६, तपमद द्रुपदीवत् ७, लब्धिमद अषाढभूतवत् ८ ।

८ आठ योगरा नाम—यम १, नियम २, आसन ३, प्राणायाम ४, प्रत्याहार ५, धारणा ६, ध्यान ७, समाधि ८ ।

८ आठ गण नाम—मगण १, नगण २, भगण

३, सगण ४, यगण ५, रगण ६, तगण ७ जगण ८ ।

८ भरतना आठ पाट—आरीसाभवन माहे केवली हुआ आदित्यजसा १; अतिवल २, महाजस ३, वलभद्र ४, वलवीर्य ५, कीर्त्तिवीर्य ६, जलवीर्य ७, डडवीर्य ८ ।

८ श्री सिधरूपी नगरको आठ ओपमा—सम्यक्तरूपी नींव १, क्षमारूपी कोट २; ज्ञानसिज्झायरूपी भूजा ३, जयणारूपी कांगरा ४, ध्यानरूपी दरवाजो (पोल) ५, तपरूपी किवाड़ ६, सवररूपी भोगल ७, तीन गुप्तिरूपी खाई ८ ।

८ आठ वोल सीखामण—दान देवे दया पाले ते दानेश्वर १, धर्मरो आचार पाले ते ज्ञानी २; पापसे डरे ते पंडित ३, पांच इन्द्री दमे ते शूरवीर ४, कुलक्षण छोड़े ते चतुर ५, सत्तवचन बोले ते सिह ६; परउपकार करे ते

धनेश्वर ७, निर्धनसु नेह करे ते अखंडित (अपी) ८।

८ दयाधर्मने आठ ओपमा—पहिले डरताने सरणानो आधार तिम भव्यजीवने दयानो आधार १, बीजे चौपदने खुटानु आधार, तिम भव्यजीवने दयानो आधार २, तीजे पखीने आकाशनो आधार, तिम भव्यजीवने दयानो आधार ३, चौथे तरसीयाने (तृषातुरने) पाणीनो आधार, तिम भव्यजीवने दयानो आधार ४, पाचमे भूखाने अन्नरो आधार, तिम भव्य जीवने दयानो आधार ५, छट्ठे रोगीने औषधीनो आधार, तिम भव्यजीवने दयानो आधार ६, सातमे भूल्याने साथरो आधार, तिम भव्यजीवने दयानो आधार ७ आठमे डुबताने पाटीयानो आधार तिम भव्यजीवने दयानो आधार ८।

८ आठ प्रकाररी लोकरी स्थिति,—आकाश

प्रतिष्ठित वायु १, वायु प्रतिष्ठित उदही (पाणी) २, उदही प्रतिष्ठित पृथिवी ३, पृथिवी प्रतिष्ठित त्रस थावर प्राणी ४, अजीव प्रतिष्ठित जीव ५, कर्म प्रतिष्ठित जीव ६, अजीव जीव संग्रहीत ७, जीव कर्म संग्रहीत ८।

८ आठ बोले जीव धर्म नहीं पावे, घणो हंसे तिको धर्म नहीं पावे १, इन्द्री नोइन्द्री दमें नहीं तिको धर्म नहीं पावे २, मर्म मोसो बोले तिको धर्म नहीं पावे ३, श्रावकरा व्रत पच्चक्खाण निर्मला नहीं पाले तिको जीव धर्म नहीं पावे ४, साधुरा व्रत पच्चक्खाण निर्मल नहीं पाले तिको जीव धर्म नहीं पावे ५, रसरो लोलूपी हुवे तिको जीव धर्म नहीं पावे ६, क्रोधी हुवे तिको जीव धर्म नहीं पावे ७, झूठा बोलो हुवे तिको जीव धर्म नहीं पावे ८।

धनेश्वर ७, निर्धनसु नेह करे ते अखंडित (अग्गी) ८।

८ दयाधर्मने आठ ओपमा—पहिले डरताने सरणानो आधार तिम भव्यजीवने दयानो आधार १, बीजे चौपदने खुटानु आधार, तिम भव्यजीवने दयानो आधार २, तीजे पखीने आकाशनो आधार, तिम भव्यजीवने दयानो आधार ३, चौथे तरसीयाने (तृषातुरने) पाणीनो आधार, तिम भव्यजीवने दयानो आधार ४, पाचमे भूखाने अन्नरो आधार, तिम भव्य जीवने दयानो आधार ५, छट्ठे रोगीने औषधीनो आधार, तिम भव्यजीवने दयानो आधार ६, सातमे भूल्याने साथरो आधार, तिम भव्यजीवने दयानो आधार ७ आठमे डुबताने पाटीयानो आधार तिम भव्यजीवने दयानो आधार ८।

८ आठ प्रकाररी लोकरी स्थिति,—आकाश

प्रतिष्ठित वायु १, वायु प्रतिष्ठित उदही (पाणी) २, उदही प्रतिष्ठित पृथिवी ३, पृथिवी प्रतिष्ठित त्रस थावर प्राणी ४, अजीव प्रतिष्ठित जीव ५, कर्म प्रतिष्ठित जीव ६, अजीव जीव संग्रहीत ७, जीव कर्म संग्रहीत ८।

८ आठ बोले जीव धर्म नहीं पावे, घणों हसे तिको धर्म नहीं पावे १, इन्द्री नोइन्द्री दमें नहीं तिको धर्म नहीं पावे २, मर्म मोसो बोले तिको धर्म नहीं पावे ३, श्रावकरा व्रत पच्चक्खाण निर्मला नहीं पाले तिको जीव धर्म नहीं पावे ४, साधुरा व्रत पच्चक्खाण निर्मल नहीं पाले तिको जीव धर्म नहीं पावे ५, रसरो लोलूपी हुवे तिको जीव धर्म नहीं पावे ६, क्रोधी हुवे तिको जीव धर्म नहीं पावे ७, झूठा बोलो हुवे तिको जीव धर्म नहीं पावे ८।

८ आठारे विषे उद्यमरो करवो ते भलो छे—आगला पापकर्म खपावाने अर्थे उद्यम करे १, नवा पापकर्म नहीं उपार्जे एहवो उद्यम करे २, आगलो सूत्र भणीयो तेहने चितारवारो उद्यम करे ३, नया सूत्र भणावताने अर्थे उद्यम करे ४, नया शिष्य साधा करवाने अर्थे उद्यम करे ५, छठे आगला शिष्य साधा भणवाने अर्थे उद्यम करे ६, चतुर्विध संघनो कलह मेटवाने अर्थे उद्यम करे ७, तप संयमने विषे वीर्य फोरवाने अर्थे उद्यम करे ८ ।

८ क्रोध जैसो जहर नहीं १, मान जैसो वैरी नहीं २, माया जैसो भय नहीं ३, लोभ जैसो दुःख नहीं ४, संतोष जैसो सुख नहीं ५, पच्चक्खाण जैसो हेतु नहीं ६, दया जैसो अमृत नहीं ७, साच तथा शील जैसो शरणो नहीं ८ ।

८ आठ मित्र—जन्मका मित्र माता पिता १, घरमें मित्र धन तथा स्त्री २, देहका मित्र अन्न ३, आत्माका मित्र कर्म ४, रोगिका मित्र औषध ५, सग्राममें मित्र भुजा ६, परदेशमें मित्र विद्या ७, अतकाल जीवको मित्र श्री भगवान जिनेश्वरदेवरो धर्म ८।

८ आठ बोल श्रावकरा—थोड़ा बोले १, विचारी ने बोले अथवा काम पड्या बोले २, मीठा बोले ३, चतुराइसु बोले ४, मर्मकारी भाषा न बोले ५, अहकाररहित बोले ६, सूत्रके न्याय बोले ७, सर्व जीवने सतोषकारी बोले ८।

८ आठ बोल प्रस्तावीक, पापसु डरे सो पंडित १, दया पाले सो दानेश्वर २, कुलक्षण छोड़े सो चतुर ३, धर्म करे सो ज्ञानी ४, इन्द्री दमे सो सूरा ५, परउपकार करे सो पूरा ६, सत्य वचन बोले सो सिह समान ७, निर्धनसु नेह राखे सो धनवन्त ८।

८ आठ बोल सिखामणका—भगवन्तरो जाप जपीजे १, दया पालीजे २, सत्य वचन बोलीजे ३, शील पालीजे ४, संतोष राखीजे ५, क्षमा कीजे ६, परने ठगो न दीजे ७, गुरुके अंकुसमे रहीजे ८।

८ जीवरो अजीव करवा समर्थ नहीं १, अजीवरो जीव करवा समर्थ नहीं २, भव्यजीवको अभव्य करवा समर्थ नहीं ३ अभव्यी जीवको भव्यी करवा समर्थ नहीं ४, एक परमाणुका दो खड करवा समर्थ नहीं ५, उदय आया कर्म कोई टालवा समर्थ नहीं आपरा किया आपही भोगवे दूसरे ने वेदावा समर्थ नहीं ६, लोकरी वस्तु अलोकमें जावा समर्थ नहीं ७, एक समय दो क्रिया करवा समर्थ नहीं ८।

८ आठ बोल जीवने उद्यम करवा—भणवारो उद्यम करनो १, सिखो हुवो चितारनेरो

उद्यम करनो २, पाप कर्म खपावनेरो उद्यम करनो ३, पूर्वला कर्म काटनेरो उद्यम करनो ४, अबुझ जीवने प्रतिबोध देवारो उद्यम करनो ५, नव-दिक्षित साधने सिखावनेरो उद्यम करनो ६, तपस्वी बुढा गरडा ग्लानीरी वयांवच्च करनेरो उद्यम करनो ७, चतुर्विध संघमांही क्लेश पड्या मिटानेरो उद्यम करनो ८।

८ आठ बोल धर्मकी शिक्षा—पहले बोले हिंसा न करे, दूजे बोले मर्म छेदन न करे, तीजे बोले पांचो इन्द्रीयाने दमे, चौथे बोले मूल गुण पच्चखान मांही दोष न लगावे, पांचमे बोले उत्तरगुण पच्चखान मांहे दोष न लगावे, छठे बोले जीभरा रसरो लोलूपी न होवे, सातमे बोले क्रोध न करे, क्षमा करे, आठमे बोले सत्य वचन बोले झूठ न बोले।

८ आठ बोल श्रावकका—पहले बोले श्रावकजी खावे तो गम पीवे भगवंतरी वाणी, दूजे

बोले श्रावकजी मारे तो क्रोध, मेले मान, तीजे बोले श्रावक जी देवे तो दान, लेवे भगवंतरो नाम, चौथे बोले श्रावकजी पहरे तो शील, ओढे लज्जा, पाचमे बोले श्रावकजीने आवणो तो साधपणो, जावणो मोक्ष, छठे बोले श्रावकजी छोड़े तो मिथ्यात्व, आदरे सम्यक्त, सातमे बोले श्रावकजी छोड़े तो पाप, लेवे धर्म, आठमे बोले श्रावकजी जाने तो संसारनो स्वरूप आदरे सत्य गुरुरो मार्ग।

८ आठ प्रकारके श्रावक, अम्मापिइ समाणे—साधुओंके सर्वकार्य आहार पाणी वस्त्र पात्र औषधि प्रमुखकी चिंता रख साता उपजावे और कदाचित् प्रमादवश होकर साधु समाचारीसे चूक जाय तो आखोंसे देखकर भी, स्नेह रहित न होवे यथा उचित विनय सहित हित शिक्षण देवे सो माता पिता

समान श्रावक १, नाय समाणे—हृदयमें तो साधुओ पर बहुत स्नेह रखे परन्तु विनय भक्तिमें आलस करे और सकट समय यथा योग्य प्राण भोकके साहायता करे सो भाई समान श्रावक २, मित्र समाणे—कोई कारण सर साधुओसे रूस जावे परन्तु अपने स्वजनोसे भी साधुओको अधिक समझे सो मित्र समान श्रावक ३, सव्वति समाणे—अभिमानी, कठिण हृदयी, छिद्र गवेषि, कदास प्रमादवश साधु चूक जाय तो उस दोपको प्रगट करे सो शौक तुल्य श्रावक ४, आय समाणे—साधुओका प्रकाश्या सूत्रार्थ जिसके हृदयमें यथार्थवन्त होवे भूले नहीं सो आदर्श आरीसे कांच जैसा श्रावक ५, पडाग समाणे—साधुओके वचनका जिसको निश्चय भरोसा नहीं मूर्खों पापडियोके भरमानेसे जिसका चित्त पताकाकी (ध्वजा)

तरह फिर जावे सो पताका समान श्रावक ६, खाणु समाणे—साधुओंका सद्बोध श्रवण करके भी अपना असत्य आग्रह पकड़ी हुई बातका त्याग न करे सो खीला समान श्रावक ७, खरट समाणे—हितशिक्षा देनेवाले साधुओंकी निन्दा करे तथा अयोग्य शब्दोंसे अपमान करे कलंक चढावे सो अशुची विष्टा जैसा श्रावक इन ८ मे शौक समान और खरट समान श्रावक मिथ्या दृष्टि है परन्तु साधुके दर्शनको आते हैं इसलिये श्रावक कहे जाते हैं।

॥ इति आठ प्रकारके श्रावक ॥

८ बोल सर्व गुणरो मूल विनय १, सर्व रसरो मूल पाणी २, सर्व धर्मरो मूल दया ३, सर्व कलहरो मूल हासी ४, सर्व पापरो मूल लोभ ५, सर्व रोगरो मूल अजीर्ण ६, सर्व बधणरो मूल स्नेह राग ७, सर्व मरणरो मूल देह ८।

८ बोले वीतरागरो धर्म पामे मिथ्यात्व मोहनी पतलि पाड़े तो धर्म पामें १, पाच इन्द्री वस करे तो धर्म पामे २, कोईने मर्म मोसो न बोले तो धर्म पामें ३, देसथी व्रत न खडे तो धर्म पामें ४, सर्व थी व्रत न खडे तो धर्म पामें ५, रसरो लोलूपी न हुवे तो धर्म पामे ६, शत्रु मित्र ऊपर समता (सम) भाव राखे तो धम पामें ७, सत्य वचनको सूर वीर हुवे तो धर्म पामे ८।

८ बोले मुक्तिरी प्राप्ति हुवे वारवार सूत्र भणे तो १, भणियोड़ो भूले नहीं तो २, निरतिचार संजम पाले तो ३, आशा रहित तप करे तो ४, धर्मथी डिगताने थीर करे तो ५, नव-दिखितने क्रिया सिखावे तो ६, गरडा बुढारी व्यावच करे तो ७, अगिलाए पणे संघ विषे कलह उपसमावे तो ८।

॥ नवमो बोल ॥

९ नव ब्रह्मचर्यनी वाड़--स्त्री, पशु पिंडक(नपुसक) सहित थानक न भोगवे, जो भोगवे तो मुसा विल्लीको दृष्टात १, स्त्री कथा करे नहीं, करे तो नींवुको दृष्टात २, स्त्रीके आसण उपर वेसे नहीं, जो वेसे तो पेठने आटा काचरीको दृष्टात ३, स्त्रीना अगोपाग निरखे नहीं, जो निरखे तो सूर्य्यको दृष्टात ४, स्त्री पुरुष विषयादि करता होय उस भींत टाटीके पास नहीं रहे, जो रहे तो मोर गाजरो दृष्टात ५, पूर्वला काम भोग चितारे नहीं, जो चितारे तो बुढीयाकी छालको दृष्टात ६; रस प्रणीत पुष्ट आहार करे नहीं, जो करे तो सन्निपात रोगकु दूध मिसरीको दृष्टात ७, मर्यादाथी अधिको आहार करे नहीं, जो करे तो वोदिकोथलीको दृष्टात ८,

शरीरकी विभूषा करे नहीं, जो करे तो रांक हाथे रत्नको दृष्टांत ६।

९ नव प्रकारे रोग ऊपजे--घणो खावे तो रोग ऊपजे १, अजीर्ण ऊपरे खावे तो तथा घणो बैठे तो रोग ऊपजे २, घणो सूवे तो रोग ऊपजे ३, घणो जागे तो रोग ऊपजे ४, घणी वडीनीति बाधा रोके तो रोग ऊपजे ५, छोटीनीतिनी घणी बाधा रोके तो रोग उपजे ६, घणो चाले तो रोग ऊपजे ७, अणगमते आसणे बेसे तो रोग ऊपजे ८, वार वार विषय सेवे तो रोग उपजे ९।

९ बोल—कालरो जाण १, बलरो जाण २, खेदरो जाण ३, जातरा मातरारो जाण (यात्रा कहता---सयमरूपी जात्तरा, मातरा कहता--- आहार परमाण) ४, अवसररो जाण५, विनयरो जाण ६, स्वमतरो जाण ७, परमतरो जाण ८, अभिमतरो तथा अभिप्रायरो जाण ९।

६ बोल-- मेरुपर्वतसु मोटो अभयदान १, स्वयंभूरमणसमुद्रसु मोटो सत्यवचन २, मीसरीसु मीठो धर्म ३, चद्रमासु निर्मल तपस्या ४, पवनसु वत्तो मन ५, अग्निसु मोटी मोहनी ६, तरवारसु तीखो कडवो वचन ७, धनसुं मोटो सतोष ८, देवलोकसु मोटो मोक्ष ६ ।

६ बोल--रजपूतने क्रोध घणो १, क्षत्रीने मान घणु २, गणिकाने (वेश्याने) माया घणी ३, ब्राह्मणने लोभ घणो ४, मित्रने स्नेह राग तथा हेतु घणो ५, शौकने द्वेष घणो ६, जुवारीने शोक घणो ७, चोरनी माताने चिता घणी ८, कायरने भय घणो ६ ।

६ नव अनता सिद्धात माहे पहिले अनते अभव्य १, दूजे अनते पडिवत्तीया २, तीजे अनते सिद्धनाजीव ३, चौथे अनते बादर वनस्पती ४, पाचमें अनते सूक्ष्मवनस्पती ५ छठे अनते बादरनिगोद ६, सातमें अनते

सूक्ष्मनिगोद ७, आठमें अनते ससारी जीव ८, नवमें अनते सिद्धिसहित सर्व जीव कर्म ग्रंथे मतांतर प्ररूपणा छै ६।

॥ दशमो बोल ॥



१० दश जातरी नारकी क्षेत्रमे वेदना---अनंती-भूख १, अनंती तृषा २, अनंती शीत ३, अनंती गरमी ४, अनतो रोग (१६ प्रकार मोटा रोग ५, ६८, ६६, ५८४ छोटे रोग) ५, अनंतो शोग ६, अनंतो भय ७, अनंतो दाघ (दाह ज्वर) ८ अनती खाज ६, अनंतो परवशपणो १०।

१० दश ठिकाणे दश वाना पाईजे---क्रोध घणो दोय स्त्रीना भर्त्तारने गृह मध्ये १, मान घणो रजपूतरे २, माया घणी भेखधारीने ३, कपट घणो वेश्याने ४, लोभ घणो ब्राह्मणने ५,

शोक घणो जुवारीने ६, साच घणो चोररी मातारे ७, साच घणो सम्यग दृष्टिने ८, निद्रा घणी धमथानके ६, संतोष घणो साधुने १०।

१० दश प्रकारे बुद्धि वधे-- दीर्घ आउखो निर्मल बुद्धियो तेहनी बुद्धि वधे १, वीनीत पुरुषरी बुद्धिवधे २, उद्यमवंतरी बुद्धि वधे ३, इन्द्रियनो इन्द्रियरा दमणहाररी बुद्धि वधे ४, सूत्र ऊपर अंतरंग राग हुवे तेहनी बुद्धि वधे ५, सगरा कार्यमाहि सावधान थाये तेहनी बुद्धि वधे ६, शंकारहित हुवे तेहनी बुद्धि वधे ७ गुरुनी प्रशंसा करे तेहनी बुद्धि वधे ८, बालभावथी मुकावे तेहनी बुद्धि वधे ६, धर्मने ऊपरे दृढ़ रहे तेहनी बुद्धि वधे १०।

१० दश जणासु वाद नहीं कीजे---राजासे १, धनवन्तसे २, बलवन्तसे ३, पक्षपूरारे धणीसे

४, क्रोधीसे ५, नीचसे ६, तपस्वीसे, ७, कूडाबोलासे ८, माता पितासे ६, गुरु गुरुणी से १०।

१० दश प्रकाररा शस्त्र---अग्निरो शस्त्र १, वीसरो शस्त्र २, लूणरो शस्त्र ३, खटाईरो शस्त्र ४, चीगटरो शस्त्र ५, खाररो शस्त्र ६, मनरो शस्त्र ७, वचनरो शस्त्र ८, कायारो शस्त्र ६, अव्रतीरो शस्त्र १०।

१० दश प्रकारे आगे भवने विषे सातावेदनीय शुभ कर्म वाधे---सम्यक्त शुद्ध मन पाले ते साता शुभ कर्म वाधे १, मन वचन कायाना जोग रोके (रु धे) तो सातावेदनीय शुभकर्म वाधे २, इन्द्रियां दमे तो सातावेदनीय शुभकर्म वाधे ३, क्षमा करे तो सातावेदनीय शुभकर्म वाधे ४, धर्मध्यान शुक्लध्यान ध्यावे तो सातावेदनीय शुभकर्म वाधे ५, वेयावच्च करे तो सातावेदनीय शुभकर्म बांधे ६,

वैरागभाव आणे तो सातावेदनीय शुभकर्म बाधे ७, दान शील तप भावना भावे तो सातावेदनीय शुभकर्म बाधे ८, सिद्धांत साभले (सुने) तो सातावेदनीय शुभकर्म बाधे ६, समभाव प्रवर्त्ते तो सातावेदनीय शुभकर्म बाधे १०।

१० दश गुरु भक्ति---गुरु आया उभो थावे १, आसण आमंत्रे २, आसण विछाय देवे ३, कीर्त्ति गुणग्राम करे ४, हाथ जोड़के खड़ा रहे ५, सत्कार दे ६, सन्मान दे ७, आवतांकु लेणे जाय ८, रहियारी सेवा करे ६, जावे तो पोचावण जाय १०।

१० दस बोल प्रस्ताविक---एक बालके अग्रभाग माहि आकास्तिकायकी असख्याती श्रेणी छे १, एकेक श्रेणी मांहि असख्याती प्रतर २, एकेक प्रतर माहि असख्याता गोला ३, एकेक गोलामाहि असख्याता शरीर ४,

एकेक शरीरमांहि अनता जीव ५, एकेक जीवमांहि असख्याता प्रदेश ६, एकेक प्रदेश मांहि अनती कर्म वर्गणा ७, एकेक कर्म वर्गणामांहि अनता परमाणु ८, एकेक परमाणु मांहि अनती वर्ण गध रस फरसनी पर्याय ९, एकेक पुद्गल पर्यायमें अनती अनती केवल ज्ञानकी पर्याय १०।

१० दश बोल पावणा दुर्लभ—मनुष्य अवतार १, आर्यदेश २, उत्तमकुल ३, पांच इन्द्रिय सपूर्ण ४, निरोगीकाया ५, दीर्घआऊखो ६, साधु साधवीकी जोगवाइ ७, धर्मका सुणणा ८, धर्मकी श्रद्धा ९, उद्यमका करणा १०।

१० दशोंकी सगती वरजवी—पासत्थाकी १, उसनाकी २, कुसीलियाकी ३,ससताकी ४, आपच्छदाकी ५, नीन्नवकी ६, कदाग्रहीकी ७, अन्य मारगीकी ८, अनीतियाकी ९, वमनगाकी १०।

१० दश बोल महा पापीरा कहीजे -आपरे जीवरी घात करे सो महा पापी कहीजे १, विश्वास दे घात करे सो महा पापी कहीजे २, कीनोड़ा गुण विसरेसो म्हा पापी कहीजे ३, सुख लेने कुडी साख भरे सो महा पापी कहीजे ४, हिंसामें धर्म परुपे सो महा पापी कहीजे ५, भरी सभामें झुठ बोले सो महापापी कहीजे ६, रोहीमें दाव लगावे सो महा पापी कहीजे ७, वनस्पती काटे सो महा पापी कहीजे ८, तलावरी पाल काटे सो महा पापी कहीजे ९, गरभ पड़ावे सो महा पापी कहीजे, ए दश मोटा पाप छे १०।

१० दश बोल बद्धाया बधे घटाया घटे---क्रोध १, हास्य २, रमत ३, खुराक ४, शोग ५, बुध ६, भय ७, निद्रा ८, अहकार ९, पचेन्द्रि विषय सेवन १०।

१० सठाणके दश बोल भापानो सठाण वजा-

कार सरीखो १, ऊर्द्ध लोकको संठाण उभो मादल सरीखो २, त्रीछा लोकनो संठाण झालर सरीखो ३, नीचा लोकनो संठाण त्रापानो ४, आखे लोकनो सठाण नारेलनो ५, अढाई द्वीपनो सठाण कदम्ब वृक्षना फूलनो आकार ६, अढाई द्वीप माहि लातावडानो सठाण पाकी इटनो ७, बाहर लातावडानो संठाण सगडनो ऊर्द्ध भागनो ८, दिशिनो तथा विदिशिनो संठाण मोतीनी माला जैसो ९, रात्रिको संठाण मजुसनो १०।

१० दसे बोले देवतानो आऊखो बांधे---अल्प कषाय होवे १, विनाशभयाको सोग न करे २, सम्यक्त वत होवे ३, धर्मनो रागी होवे व्रतपाले ४, निश्चे दातार होवे ५, महा धर्मध्यानी होवे ६, बाल तपस्वी होवे ७, महा कष्ट करे ८, देवगुरुनी भक्तिवंत होवे ९, सदा धर्मवंत होवे १०।

इणोमें पंकज कमल ही माना है यह समय सच है ३, ठवाना सच्चे कहता—स्थापना सत्यका २ भेद है सत्यभाव थापना, असत्य-भाव थापना, सत्यभाव थापना चार भुजारी मूरती, चार भुजारो आकार हुवे जिसकी चार भुजा मूरती कहे असत्यभाव थापना गोलमाल पत्थरके तेल सिंदूर लगाय भेरु जी इत्यादि नाम रखे ४, नाम सच्चे कहता—नामादि करके वस्तु जाणनेमें आवे चाहे गुण नहीं हुवे जैसे नाम तो कुलवर्द्धन पर कुलरी वृद्धि करे नहीं ५, रूप सच्चे कहता—रूप है साधूरा पर गुण साधूरा नहीं ६, पाडुचीया सच्चे कहता—अनामीका आंगुलीकी अपेक्षा मध्यमा बड़ी, बेटेकी अपेक्षा बाप बड़ो बाप की अपेक्षा बेटा छोटा ७, व्यवहार सच्चे कहता—जैसे चूवे पाणी और कहे छत चूवे है गिरता है जल कहे पडनाल पड़ती है ८,

१० ज्ञानी पुरुषके १० लक्षण---क्रोध रहित १ वैराग्यवान् २, जितेंद्रिय ३, क्षमावान् ४ दयालु ५, सर्वका प्रिय ६, निर्लोभी ७ दातार ८, भय रहित ९ शोक चिंता रहित १०।

१० दर्शना वरणीय कर्मवधणके १० कारण - कुदेव १, कुगुरु २, कुधर्म ३, कुशास्त्रकी प्रशंसा करे ४, धर्म निमित्त हिंसा करे ५, मिथ्या बुद्धि रखे ६, चिन्ता अधिक करे ७, सम्यक्तमें दोष लगावें ८, मिथ्याचार धारण करे ९, जानकर अन्यायीकी रक्षा करे १०।

१० सत्य भाषा १० बोल, १ जणवय सच्चे कहता—जिस देशमें जैसी बोली है वोही सच्च है जैसे पाणीकु पय किसी देशमें कहे २, समये सच्चे कहता –अनेक शास्त्रोंमें आचार्योंने कही बात—जैसे कादे तथा जलसे उत्पन्न मेंडक सेवाल और कमल

कब तरुवर मुख बोलीयो, कब पत्र दियो जबाब।
वीर वखाणी ओपमा, अणुयोग द्वार मझार॥
अछतेने अछती उपमा घोड़ारा सिंग गधे सरीखा गधेरा सिंग घोड़े सरीखा।

१० मिश्र भाषारा दश बोल—उपनमिसीया कहता—आज सहरमें १० जन्म्या १; विघ्रमिसीया कहता—आज सहरमे दश मरया २, ऊपनविघ्रमिसीया कहता---आज सहरमें दश जन्म्या दश मरया ३, जीवमिसीया कहता---लाया तो जीव, उसमांहि अजीव है और कहे कि केवल जीवही जीव उठा भी लायो ४, अजीवमिसीया कहता---लाया तो अजीव उस माहि जीवभी है और कहे केवल अजीवही अजीव उठा लाया ५, जीवाजीव मिसिया कहता---लाया तो जीव अजीव दोनुंही उसमे एक ज्यादा वा कम है और कहे कि आधो आंध उठा लाया ६,

भाव सच्चे कहता—कोयल काली है सूवा हरा है बगुला सफेद है पर निश्चयमें वर्ण पांचही होता है ६, जोग सच्चे कहता—हाथीवाला, पखालवाला, सुमचेवाला इत्यादिक है १०, उपमा सच्चे कहता—उपमा सत्यके चार भेद छती वस्तुने छती उपमा (१), छतीने अछती उपमा (२), अछतीने छती उपमा (३), अछतीने अछती उपमा (४), जैसे पद्मनाभ भगवान्, महावीर, भगवान् सरीखा हुवेगा (१), छतेमे अछती उपमा जैसे नारकी देवतारा आउखा छते है उस तिणकु पल तथा सागरकी उपमा अछती है (२), अछतीने छती उपमा ॥ दोहा ॥
पान पड़तो इम कहे, सुण तरुवर वनराय।
अबके बीछड़े कब मिलेंगे, दूर पड़ेगा जाय ॥
तब तरुवर उत्तर दियो, सुन पत्र एक बात।
इस घर एही रीत है, एक आवत एक जात ॥

कब तरुवर मुख बोलीयो, कब पत्र दियो जवाब।
वीर वखाणी ओपमा, अणुयोग द्वार मझार॥
अछतेने अछती उपमा घोड़ारा सिंग गधे सरीखा गधेरा सिंग घोड़े सरीखा।

१० मिश्र भाषारा दश बोल—उपनमिसीया कहता—आज सहरमें १० जन्म्या १, विघ्नमिसीया कहता—आज सहरमें दश मरया २, ऊपनविघ्नमिसीया कहता---आज सहरमें दश जन्म्या दश मरया ३, जीवमिसीया कहता---लाया तो जीव, उसमांहे अजीव है और कहे कि केवल जीवही जीव उठा भी लाया ४, अजीवमिसीया कहता---लाया तो अजीव उस माहि जीवभी है और कहे केवल अजीवही अजीव उठा लाया ५, जीवाजीव मिसिया कहता---लाया तो जीव अजीव दोनुंही उसमे एक ज्यादा वा कम है और कहे कि आधो आध उठा लाया ६,

अतमिस्सिया कहता---लाया तो अंत उस माहि पडत भी है कहै कि केवल अतही अत उठा लाया ७, पडतमिसीया कहता---लाया तो पडत उस माहि अत भी है और कहै कि केवल पड़तही पडत उठा लाया ८, अधा कहता---दिन तो उग्योही है और कहै कि घड़ी दीन आया या दोय घड़ी दिन आया है सभा तो पड़ी है कहै कि दोय घड़ीरात आय गई है ९, अधधा कहता---दिन तो उग्योही है और कहै कि पहर दिन आया दो पहर दिन आया है सभा तो हुई है और कहै कि पहर रात या दो पहर रात आगई है १०।

० उत्तराध्ययन सूत्र २४ मां अध्ययनमें उच्चार पासवण खेल जल्ल परिठावणीया सुमतिका दश बोल कहते हैं--उच्चार पासवण कहता द्रव्यथकी जहा कोई आवे नहीं जावे नहीं

शुद्धि पत्र ॥ पाठान्तर ॥

परठाणीया सुमतिरा १० बोल।

१ कोई आवेड नहीं कोई देखेड नहीं उठे परठे।

२ आपरी आतमा परायेरी आतमा व्याघात नहीं पामे उठे परठे।

३ ऊंची, नीची, तिरछी, भोमकामें नहीं परठे।

४ पोली भोमिकामें नहीं परठे।

५ तुरंतरी अचित भोमकामें परठे।

६ च्यार अगुल उन्डी अचित भोमकामें परठे।

७ एक हाथ लम्बी एक चवड़ी अचित भोमकामे परठे।

८ उन्द्रादिकरा बिल हुवे उठे नहीं परठे।

९ शहरके नजीक गृहस्थोने दुगंछा आवे उठे नहीं परठे।

१० हरा अंकुरा वनास्पति, लीलण, फूलण विगेरह हुवे उठे नहीं परठे।

देखे नहीं वहां परठे १, अपनी आत्मा और दूजाकी आत्मा दुखे नही वहां परठे २, पोली जगामें परठे नहीं ३, उची नींची जगामें परठे नहीं ४, चार चार आंगुल अचित्त भूमिमें परठे नहीं ५, दो दो हाथ सम-भूमिमें परठे नहीं ६, ऊदरादिकका विल होवे वहां परठे नहीं ७, त्रस जीवकी उत्पत्ती होवे वहा परठे नहीं ८, हरि वनस्पती और हरा अंकुरा होवे वहा परठे नहीं ६, पांच प्रकाररी फूलण होवे वहा परठे नहीं १०।

१० उत्कृष्टा १७० तीर्थंकर होवे जिसमें पांच भरत पांच ऐरवत क्षेत्रमे तीर्थंकर १० होवे तिणके नाम---जम्बूद्वीपके भरत क्षेत्रमे श्री अजीतनाथजी १, ऐरवत क्षेत्रमें श्रीचन्द्र-नाथजी २, धातकं खडके पहिले भरत क्षेत्रमें श्रीसिद्धालनाथजी ३, ऐरवत क्षेत्रमें श्रीजय-

नाथजी ४, धानकी खंडके दूसरे भरत क्षेत्रमें श्रीकपठनाथजी ५, ऐरवत क्षेत्रमें श्रीपुष्पदतजी ६, पुष्करार्ध द्वीपके पहिले भरत क्षेत्रमें श्रीप्रभासनाथजी ७, ऐरवत क्षेत्रमें श्रीजयनाथजी ८, पुष्करार्ध द्वीपके दूसरे भरत क्षेत्रमें श्रीप्रभावकनाथजी ९, ऐरवत क्षेत्रमें श्रीबलभद्रस्वामीजी १० ।

१० बोल वैयावचका --आचार्यनी वैयावच १, उपाध्यायनी वैयावच २ स्थिवरनी वैयावच ३, तपस्वीनी वैयावच ४, शिष्यनी वैयावच ५, गीलाणनी वैयावच ६, कुलनी वैयावच ७, गणनी—समुदायनी वैयावच ८, चउविंध सिघनी वैयावच ९, साधर्मिनी वैयावच १० ।

१० दश बोल अढाई द्वीप बाहरे नहीं ते कहे छे--तिर्थंकर नहीं १, काल नहीं २, बादर अग्नि नहीं ३, गाज नहीं ४, विजली नहीं

५, मेह (मेघ) नहीं ६, नदी नहीं ७, सोना रूपारा आगर नहीं ८, नव निधान नहीं ९, चन्द्रमा सूर्यका ग्रहण नहीं १०।

१० दशविध यति धर्म, खंति कहता—क्षमा १, मुत्ति कहता---निर्लोभी, लोभका त्यागी २, अज्जव कहता—सरलता, कपटाइ रहित ३, मद्दव कहता—मानका त्याग ४, लाघव कहता---हलका ५, सच्च कहता---सत्य बोले ६, संयमे कहता—संयम पाले ७, तप कहता--तपस्याकरे ८, चइए कहता—द्रव्यका त्याग ९, बंभच कहता—ब्रह्मचर्य पाले १०।

१० दश बोल असत्य भाषाग—क्रोधरे वश बोले तो असत्य १, मानरे वश बोले तो असत्य २, मायारे वश बोले तो असत्य ३, लोभरे वश बोले तो असत्य ४, रागरे वश बोले तो असत्य ५, द्वेषरे वश बोले तो असत्य ६, हास्यरे वश बोले तो असत्य ७,

भयरे वश बोले तो असत्य ८, मुखरी वचन बोले तो असत्य ९, विकथाकारी वचन बोले तो असत्य १० ।

॥ इग्यारमा बोल ॥

११ मनुष्यका आयुष्य ११ बोले करी बांधे गुरुदेवनी भक्ति करे १, मिथ्यात कर्म न समाचरे २, चाडी चुगली न करे ३, कुकर्मनो उपदेश न देवे ४, जीवनो बधन न करे ५, दानवंत होवे ६, घणो आहर न करे ७, सूत्र सिद्धांत भणी भणावे ८, न्याय धर्मेकरी लक्ष्मी मेलवे ९, पर जीवने पीड़ा न करे १०, पर जीवने हित उपगार करे ११ ।

११ इग्यार बोल प्रस्तावीक, समकितरूपी मूल १, धीरजकद २, विनय वेदिका (चोकी)

॥ शुद्धि पत्र ॥

दृष्टान्त On Tree

॥ ११ बोल प्रस्तावीकका ॥

१ समकित रूपी – मुल ।
२ धीर्य रूपी – कद ।
३ विन्य रूपी – बेढका (चोकी) ।
४ जस (यस) रूपी – खध (पेड़) ।
५ पाच महाव्रत रूपी – डाला ।
६ भावना रूपी – तचा (छाल) ।
७ अनेक ज्ञान, ध्यान रूपी – कुपल पान ।
८ अनेक गुण रूपी – फुल ।
९ सील रूपी – सुगध ।
१० अनुना (आश्रव निरोधन) रूपी--फल ।
११ मोच रूपी – बीज ।

३, जस ४, खंद पांच महाव्रत ५, डाला भावना ६, त्वचा छाल ज्ञान ध्यान ७, कुपलपान अनेक गुण ८, फूल शील ९, सुगंध उपयोग १०, फल मोक्ष ११, बीज ।

११ इग्यार बोले करी ज्ञान वधे, उद्यम करता १, निद्रा तजे तो २, उणोदरी करे तो ३, अल्प बोले तो ४, पंडितरो संग करे तो ५, विनय करे तो ६, कपटरहित तप करे तो ७, संसार असार जाणे तो ८, चोलणा पचोलणा करे तो ९, ज्ञानवंतने पास भणे तो १०, इन्द्रियोना विषय त्यागे तो ज्ञान वधे ११ ।

॥ बारहमो बोल ॥

१२ बारे अङ्गका वर्णन, १ आचारांगजी—जिसके २ श्रुतस्कंध है, प्रथम श्रुतस्कंधरा आठमां

महा प्रज्ञा नामक अध्ययनका तो साफ विच्छेद हो गया है और बाकीके ८ अध्यायनें छव कायकी हिंसाके कारण और फल लोकका स्वरूप सम्यक्त्वका स्वरूप. साधुको परिसह सहन करनेका साहस वगैरा बहुत ही बातों का वर्णन विस्तारसे किया है दूसरे श्रुत-स्कंधमें साधुको आहार वस्त्र पात्र मकान इत्यादि, लेनेकी विधि बोलनेकी विधि इत्यादिक साधुका आचार तथा श्रीमान् महावीर स्वामीका जीवन चरित्र है आचारांगजीके तो १८०० पद थे पदस्वरूप यथा ३२ अक्षर का १ श्लोक १५०८८६८४० श्लोकका १ पद गिना जाता है अब तो मूलके २५०० श्लोक हैं; २ सूयगडांगजी—जिसके २ श्रुत-स्कंध हैं पहिले ... ६

श्रीऋषभदेव स्वामीके ९८ पुत्रको उपदेश साधूका आचार नरकके दुःख प्रभूके गुण वगैरा बहुत वातोका वर्णन है दूसरे श्रुतस्कंधके ७ अध्ययन हैं जिसमें पुष्करणीके कमल पुष्पके दृष्टांतसे मोक्ष ग्रहण करणेकी व्यारया साधूको आहार लेनेकी बोलनेकी रीति आर्द्रकुमार और गोशालेकी चर्चा गौतमस्वामी और उदक पेढाल पुत्रका सवाद इत्यादिक बाते है सूयगडांगजीके पहिले तो ३६००० पद थे अब तो २१०० श्लोकही रह गये हैं, ३ ठाणांगजी—जिसमें १ ही श्रुतस्कंध है और १० ठाणे अध्याय है पहिलेमें एकेक बोल श्रष्टीमें कौन कौनसे हैं और दूसरेमें दो दो यावत् दशमें ठाणेमे दश दश बोलकी व्यारया है, इसकी चौभंगियोको विद्वान जमाते हैं, तव बहुतही ज्ञानरस पैदा होता है ठाणागजीके पहिले तो ४२०००

पद थे जिसमेंसे अब सिर्फ ३७७० श्लोक रह गया है, ४ समवायागजी—जिसमें एक ही श्रुतस्कध है अध्याय नहीं है इसमें सलग थध अनुकर्मे एक दो यावत सख्याते असख्याते अनते बोलकी व्याख्या है और ५४ उत्तम पुरुष इत्यादिक अधिकार है १६४००० पदमेंसे अधुना सिर्फ १६६७ श्लोक विद्यमान है; ५ विवहापन्नती भगवतीजी—जिसमे १४० शतक है १००० उद्देशे है इसमें विविध प्रकारके श्रीगौतमस्वामीके पुछे हुवे ३६००० प्रश्न है श्रीगौतमस्वामी स्कधक सन्यासी ऋषभदत्त मुनि सुदर्शन सेठ शिवराज ऋषि गगीयाजी, गगदत्तजी, आनंदजी, कुशलजी, रोहाजी, सुनक्षत्रजी, सर्वानुभूतिजी, सिहामुनीजी, इत्यादि साधुयोका और देवानदाजी, जायवतीजी, सुदर्शनाजी इत्यादि साध्वीयों का, सखजी, पोखलजी, कार्तिकजी सेठ

इत्यादि श्रावकोका, रेवतीजी, सुलसाजी इत्यादि श्राविकायोका तामली गोशाला प्रमुख अन्यमतियोका और सूक्ष्म भगजाल जीव विचार लब्धि विचार इत्यादि वहुत वावतोका विवेचन है २२८८००० पदमेंसे अवतो फक्त १५७५६ श्लोक विद्यमान है, ६ ज्ञाताजी— जिसके दो श्रुतस्कंध है पहिले श्रुतस्कंधके १६ अध्ययन है जिसमे मेघकुमारका मोरके-इंडे का धनासार्थवाहका काछवेका कुंवडीका चन्द्रमाका अकिरण देशके घोड़ेका जिन-रक्षित जिनपालका थावच्चा पुत्रक खधक सन्यासीकी चर्चाका मल्लीनाथ भगवानके छव मित्रोका अरणक श्रावकका रोहिणीका वृक्षका द्रोपदीका कुंडरीक पुंडरीकका वगैरा दृष्टांतोसे दया सत्य शीलकी पुष्टीकी गई है, दूसरे श्रुतस्कधके २०६ अध्यायमे पुरुषा दाणी श्रीपार्श्वनाथजीकी २०६ पासच्छी

छोली साध्वीयोकी कथा है ५५५६००० पदमें साढ तीनक्रोड़ धर्म कथायो इस सूत्रमें पहले थी जिसमेसे अब तो फक्त ५५०० श्लोक विद्यमान है, ७ उपासक दशागजी—जिसका १ श्रुतस्कध और १० अध्ययन है इस सूत्रमें १० श्रावकोंका अधिकार है ये १० ही श्रावक श्रीमहावीरस्वामीके शिष्य थे २० वर्ष श्रावक धर्म पालकर जिसमें ५॥ वर्ष घर छोड़ पोषधशालामें श्रावककी ११ पडिमावही है वहा देवताका महाउपसर्ग सहा परतु धर्मसे चले नहीं प्रथम देवलोकके अरुण विमानमें ४ पल्योपमका आयुष्य भोगवकर एकभवकर मोक्ष पधारेंगे ।

नं०	श्रावक नाम	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१	आनंदजी	वाणीय ग्राम	शिवानंदा	१२ क्रोड़ सोनैया	४००००
२	कामदेवजी	चंपानगरी	भद्रा स्त्री	१८ क्रोड़ सोनैया	६००००
३	चुलणी पीया	बनारसी	सोमा स्त्री	२४ क्रोड़ ,,	८००००
४	सूरदेवजी	बनारसी	धन्ना स्त्री	१८ क्रोड़ ,,	६००००
५	चूलशतकजी	अलभीया	बहुला स्त्री	१८ क्रोड़ ,,	६००००
६	कुंडकोलिया	कंपीलपुरी	पुष्पा स्त्री	१८ क्रोड़ ,,	६००००
७	सकडालपुत्र	पोलासपुर	अग्गीमित्ता	३ क्रोड़ ,,	१००००
८	महाशतकजी	राजगृही	रेवती आदि १३	२४ क्रोड़ ,,	८००००
९	नंदनपीयाजी	सावत्थी	अश्विनी स्त्री	१२ क्रोड़ ,,	४००००
१०	तेतली पीया	सावत्थी	फाल्गुनी स्त्री	१९ क्रोड़ ,,	४००००

इसके प्रथम तो ११७०००० पद थे जिसमें से अब तो फक्त ८१२ श्लोक है, ८ अतग-टदशागजी—जिसका एक श्रुतस्कंध६ वर्गके ६० अध्ययन है, पहले वर्गके १० अध्ययनमें अधकविश्नुजीके १० पुत्रोंका अधिकार है, दूसरे ८ अध्ययनमें वासुदेवजी अक्षोभादिक ८ का अधिकार हैं, तीसरे वर्ग के १३ अध्ययनमें वासुदेवजीके गजसूकुमारजी प्रमुख ८ पुत्र पाच वासुदेवजीके पुत्रकायो १३ का अधिकार हे, चौथे वर्ग के १० अध्ययनमें वासुदेवजीके मयाली आदि ५ पुत्रोंका अधिकार है, ६ साव ७ प्रद्युम्न कृष्णजीके पुत्रोंका ८ प्रद्युम्नजीके अनुरूद्ध कुमारका और समुद्र विजयजीके ६ सत्यनेमी १० द्रढनेमी पुत्रका अधिकार है, ५ वे वर्गके १० अध्ययनमें कृष्णजीकी सत्यभामा रुक्मिणी प्रमुख ८१ पट्टराणियोका अधिकार है और

जवूकुमारकी मूलश्री मूलदत्ता राणीका अधिकार है, छट्ठे वर्ग के १६ अध्ययनमें मकाइ प्रमुख १३ गाथा पतीयोंका तथा अर्जुनमाली अतिमुक्त एवंता कुमारने गुणरत्न सवच्छर तप किया उनका और अलखराजा का अधिकार है, सातमें वर्ग के १३ अध्ययनमें श्रेणिक राजाकी नन्दाराणी प्रमुख तेरे पट्टराणियोका अधिकार है, आठमें वर्ग के १० अध्ययनमें श्रेणिक राजाकी कालीराणी ने रत्नावली तप किया, सुकाली राणीने कनकावली तप किया, महाकाली राणीने लघुसिंह क्रिडित तप किया, कृष्णराणीने वृद्धसिंह क्रीडित तप किया सुकृष्ण राणी इत्यादिक दश राणियोकी तपस्याका अधिकार है, यों अंतगड सूत्रमें सर्व ९० मोक्षगामी जीवोंका अधिकार है इसके पहिले तो तेइस लाख अट्ठावीस हजार पद थे, जिसमेंसे अब

तो सिर्फ ६०० श्लोक रह गये है ६ अनुत्त-रोववाइ जिसके तीन वर्ग है, पहले वर्ग के १० अध्ययनमें और दूसरे वर्ग के १३ अध्ययन में श्रेणिक राजाके जालियादिक तेवीस पुत्रोंका अधिकार है, तीसरे वर्गके १० अध्य-यनमे काकदी नगरीके धनाजी सेठने ३२ स्त्री और ३२ क्रोड सोनेयेका धन छोड़ दिक्षा ले अति दुकर तपस्या कर शरीरका दमन किया, ऐसे दश जीवोका अधिकार है यह तेतीस जणे अनुत्तर विमानमें गये एकभव करके मोक्ष पधारेंगे इस सूत्रके पहले तो चौराणुलक्ष चार हजार पद थे जिसमेंसे अब तो फक्त २९२ श्लोक ही रह गये हैं १० प्रश्न व्याकरणजी जिसके दो श्रुतस्कंध है, प्रथम श्रुतस्कधमे आश्रव द्वारमे पाच अध्ययनमे हिसा, झूठ, चौरी, मैथुन, परीग्रह ये पाच आश्रव निपजनेके कारण

और उनके फलका अधिकार है, दूसरे श्रुतस्कंधके सवर द्वारके ५ अध्ययनमें दयाके ६० नाम सत्य अदत्त ब्रह्मचर्य अममत्व इन पाचोके भेद और गुण बताये है इसके पहले तो ९३१६००० पद थे जिसमेंसे १२५० श्लोक ही रह गये हैं ११ विपाकजी जिसके दो श्रुतस्कध है---पहले श्रुतस्कंध दु ख विपाक जिसमे मृगालोढ़ा प्रमुख दश महापापी जीव पाप कर घोर दु.ख पाये जिसका अधिकार हे और दूसरा सुख विपाक जिसमे सुबाहू प्रमुख दश जीव दान, पुण्य, तप, सयम, कर आगे अत्यंत सुखपाये जिसका अधिकार है, इसके पहले तो एक क्रोड़ चौरासीलाख पद थे और एकसोदश अध्ययन थे अबतो १२१६ श्लोक ही है यह ११ सूत्र तो यत्किंचित भी विद्यमान है कितनेक ऐसा कहते हैं कि इग्यारे अंग

पहिले थ जितनेही अन्न है जिस जिस ठिकाए
जात शब्दसे अन्य शास्त्रोंकी भलामणदी है
वो समाम सब मिलावो तो बराबर हो जावे,
१२ दृष्टीवादजी जिसमें पाच बच्छु वस्तु
थी पहिली बच्छुके ८८ लाख पद थे दूसरीके
एक क्रोड़ ८१ लाख ५ हजार पद थे तीसरी
बच्छुमे चौदह पूर्वकी समावेस होता था,
सो चौदह पूर्वका ज्ञान १ उत्पाद पूर्व- -इसमे
पट् द्रव्यका ज्ञान था इसकी दश बच्छु और
११ लाख पद थे २ अगणीय पूर्व—इसमे
द्रव्यगुण पर्यायका वर्णन था इसकी चार
बच्छु और बाइस लाख पद थे, ३ वीर्यप्रवाद
पूर्व—इसमें सर्व जीवके बल वीर्य पुरुषाकार
पराक्रमका वर्णन था इसके आठ बच्छु और
चौवालीस लाख थे, ४ आस्ती नास्ती

॥ शुद्धि पत्र ॥

१४ पूर्वके ज्ञानकी पद संख्या लिखते ।

१ उत्पाद पूर्व १ कोड़ पद ।
२ अग्राणीय पूर्व ६६ लाख पद
३ वीर्य प्रवाद पूर्व ७० लाख पद
४ अस्ति नास्ति प्रवाद पूर्व ६० लाख पद
५ ज्ञान प्रवाद पूर्व १ क्रोड पदमें १ पद उणां ।
६ सत्य प्रवाद पूर्व १ कोड़ ६ पद ऊपर
७ आत्म प्रवाद पूर्व २६ क्रोड पद
८ कर्म प्रवाद पूर्व १ क्रोड ८० हजार पद
९ विद्या प्रवाद पूर्व १ क्रोड १५ हजार पद
१० प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व ८४ लाख पद
११ प्राण प्रवाद पूर्व १ क्रोड ५६ लाख पद
१२ अवस्माण (अवध्य) प्रवाद पूर्व २६ क्रोड पद ।
१३ क्रिया विशाल पूर्व ६ कोड पद

लाख पद थे, ५ ज्ञान प्रवाद पूर्व—इसमे ५ ज्ञानका वर्णन था इसकी बारह वच्छु और १ क्रोड़ छीअन्तर लाख पद थे, ६ सत्य-प्रवादपूर्व इसमें दश प्रकारके सत्यका वर्णन था इसकी बारह वच्छु और दो क्रोड़ बावन लाख पद थे, ७ आत्म प्रवाद पूर्व—इसमे आठ आत्माका वर्णन था इसकी सोलह वच्छु और तीन क्रोड़ चार लाख पद थे, ८ कर्म प्रवाद पूर्व—इसमे आठ कर्मोंका वर्णन था इसकी सोलह वच्छू और छव क्रोड़ आठ लाख पद थे, ९ प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व—इस दश पच्चखाणके नव क्रोड़ भेदका वर्णन था इसकी तीस वच्छू और बारह क्रोड़ सोलह लाख पद थे, १० विद्या प्रवाद पूर्व—इसमे रोहिणी प्रज्ञसी आदि विद्या मन्त्र जंत्र तन्त्रादिक विधि युक्त थे इसका चउदा वच्छू और पचीस क्रोड़ बीसलाख पद थे, ११ कल्याण

१२ लाक विंदुसार पूर्व १२ कोड ५० लाख पद।

आन्ठो अधिको आगो पाछो तत्व केवली गम्य।

लाख पद थे, ५ ज्ञान प्रवाद पूर्व—इसमें ५ ज्ञानका वर्णन था इसकी वारह वत्थु और १ क्रोड़ छीअन्तर लाख पद थे, ६ सत्य-प्रवादपूर्व इसमें दश प्रकारके सत्यका वर्णन था इसकी वारह वत्थु और दो क्रोड़ वावन लाख पद थे, ७ आत्म प्रवाद पूर्व—इसमें आठ आत्माका वर्णन था इसकी सोलह वत्थु और तीन क्रोड़ चार लाख पद थे, ८ कर्म प्रवाद पूर्व—इसमें आठ कर्मोंका वर्णन था इसकी सोलह वत्थू और छव क्रोड़ आठ लाख पद थे, ९ प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व---इस दश पच्चखाणके नव क्रोड़ भेदका वर्णन था इसकी तीस वत्थू और वारह क्रोड़ सोलह लाख पद थे, १० विद्या प्रवाद पूर्व—इसमें रोहिणी प्रज्ञसी आदि विद्या मंत्र जंत्र तंत्रा-दिक विधि युक्त थे इसका चउदा वत्थू और पचीस क्रोड़ वीसलाख पद थे, ११ कल्याण

प्रवाद पूर्व—इसमे आत्माके कल्याण होणेकी तप सयमकी बाते थी इसकी दश वच्छ् और अडतालीस क्रोड चौसठ लाख पद थे, १२ प्राण प्रवाद पूर्व---इसमे चारसे लगाकर दश प्राणके धरणहार प्राणियोंका वर्णन था इसकी दश वच्छ् और सत्ताणु क्रोड़ अठाइस लाख पद थे, १३ क्रियाविशाल पूर्व—इसमे साधु श्रावकका आचार तथा पच्चीस कियाका वर्णन है दश वच्छ् और एक कोड़ा कोड़ी और एक क्रोड पद थे, १४ लोकबिंदुसार पूर्व- -इसमें सर्व अक्षरोंका सन्नीपात उत्पत्ति और सर्व लोकके सार सार पदार्थोंका वर्णन था इसकी १० वच्छु और दो कोड़ा कोड तीन क्रोड़ दशलाख पद थे ऐसा कहा जाता है कि पहिला पूर्व एक हाथी डुबे जितनी स्पाईसे दूसरा दो हाथी डुबे जितनी स्पाईसे तीसरा चार हाथी डुबे

जितनी स्पाईसे यो दूणे करते करते चौदवां पूर्व ८१९२ हाथी डुबे जितनी स्पाईसे लिखा जाता था चौदह पूर्व का ज्ञान लिखने में १६३८३ हाथी डूबे जितनी स्पाई लगनी है दृष्टिवाढागकी चौथी वच्छूमे छव वाते हैं पहिली वातके ५ हजार पद और दूसरी, तीसरी, चौथी, पाचमी, और छट्टीके जुदे जुदे वीस क्रोड़ इठाणुलाख नव हजार दोसौ पद थे, दृष्टिवादकी पाचमी वच्छूको चुलका कहते हैं जिसके दशक्रोड़ उगणसठलाख छियालीस हजार पद थे, इतना वडा दृष्टिवाद अगका विच्छेद होनेसे जैन धर्ममें ज्ञानको वड़ा जवर धक्का लगा है, जिस वक्त ये वारे अग पूर्ण थे उस वक्त उपाध्यायजी इनके पुर्ण जाण होते थे अव इग्यारह अंग जितने रहे है उणके जाण हुवे उनको उपाध्यायजी कहना इति अंगविचार संपूर्णम्।

१२ साधूजीकी ओपमा, गाथा---

उरगगिरी जलनसागर नहतल तरुगण समोय जो होइ, भमरमिय धरणिजलरुह रविपवन समोय तोसमणो।

अर्थ —१ उरग कहता, सर्प जैसा साधू गृहस्थने अपने निमित निपजाया स्थानक, स्त्री, पशु, पिंडक रहित होवे उसमें मालिककी आज्ञासे रहे, २ गिरी कहता, पर्वत जैसे साधु हुवे जैसे पर्वत हवाकरके कपायमान न हुवे तैसे साधु परीसह उपसर्ग कपायमान न हुवे धूजे नहीं ३ जलण कहता, अग्नि जैसे साधु हावे जैसे अग्नि इन्धन तृण काष्ठादि करके तृप्त न हुवे तैसे साधु ज्ञानादि गुण ग्रहण करते तृप्त न हुवे, ४ सागर कहना, समुद्र जैसे साधु होवे समुद्र की तरह गभीर समुद्र मर्यादा उल्लंघे नहीं ऐसे साधु तीर्थंकरकी आज्ञा उल्लंघे नहीं, ५

नहतल कहता, आकाश जैसे साधु होवे आकाशकी तरह निर्मल है जैसे आकाश स्तंभादि आधार रहित तैसे साधु भी गृहस्थादिकका आश्रय रहित हुवे,६ तरुगण कहता, वृक्ष जैसे साधु होवे जैसे वृक्ष शीत तापादि दुःख सहकर आश्रितो (मनुष्य, पशु, पक्षी यादि) को शीतल छायासे आराम सुख देवे तैसे साधु छवकाय जीवको आश्रयभूत सद्बोधादिसे सुख दाता होवे, ७ भ्रमर जैसे साधु होवे जैसे भमरा रस ग्रहण करता हुवा फुलको पीड़ा दुःख न ऊपजावे तैसे साधु आहार आदि ग्रहण करते दातारको पीडा कष्ट न देवे, ८ मिय कहता हिरण जैसे साधु होवे जैसे हिरण सिंहसे डरे तैसे साधु पापसे डरे, ६ धरणी कहता, पृथ्वी जैसे साधु होवे जैसे पृथ्वी शीत ताप छेदन भेदनादि स्पर्श समभावसे सहे तैसे साधुजी परिसह उपसर्ग

समभावसे सहे १० जलरुह कहता, कमल पुष्प जैसे साधु होवे जैसे कमल कादवसे उत्पन्न हुवा और पाणी करके वृद्धिपाया परतु पुन उस लेपाय नहीं तैसे साधु काम करके उत्पन्न हुवे और भोग करके बड़े हुये, परतु पीछे काम भोगकर लेपाय नहीं, ११ रवि कहता सूर्य्य जैसे साधु हुवे जैसे सूर्य्य अपने तेज करके जगतके सब पदार्थोंको प्रकाशे, प्रगटकरे, तैसे साधु जीवादि नव पदार्थोंका यथार्थ स्वरूप भव्योके हृदयमें प्रकाश करे, १२ पवन कहता, हवा जैसे साधु होवे हवा माफिक सर्वस्थान गमन है और वायुकी गति खलायमान (खंडन) न होवे तैसे साधु सर्व स्थान विहार करे तथा स्वइच्छाचार निहार करे।

१२ श्रीअरिहनजीके १२ गुण—१ अनतज्ञान; २ अनत दर्शन, ३ अनत चारित्र, ४ अनत

तप, ५ अनंत बलवीर्य, ६ अनंत चायक सम्यक्त, ७ वज्र ऋषभ नाराच संघयण, ८ समचो रस सस्थान, ९ चौतीस अतिशय; १० पैंतीस वाणी गुण, ११ एक हजार आठ उत्तम लक्षण, १२ चौसठ इन्द्रके पूज्यनीक।

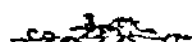
१२ उपयोग बारे कहां कहा पावे--उपयोग सिद्धा में पावे १, दोय उपयोग तेरमे चवदमें गुण ठाणे पावे २, तीन उपयोग पाच स्थावरमें पावे ३, चार उपयोग चोरेंद्री पर्याप्ता पावे ४, पाच उपयोग वेरेंद्री तेरेंद्रीमें पावे ५, छव उपयोग चोरेन्द्रीमें तथा श्रावकमें पावे ६; सात उपयोग सामायिक छेदोपस्थापनीय परिहार विशुद्ध सुदम सपराय चारित्रमे पावे ७, आठ उपयोग वाहेंवहता सिद्ध गतियामें नारकी जीवमें अथवा अचर्ममें पावे ८, नव उपयोग देवता यथाख्यात चारित्रमें पावे ९,

दश उपयोग छद्मस्थमें पावे १०, इग्यारे उपयोग सयतीरे अलद्धीयेमें पावे ११, बारे उपयोग समुच्चय जीवमें पावे १२ ।

१२ बोल बलरो प्रमाण—बारह पुरखारो बल एक गधामें १, दश बलदांरो बल एक घोड़ामें २, बारह घोड़ारो बल एक भैंसामें ३, पाचसो भैंसारो बल एक हाथीमें ४, पांचसो हाथीरो बल एक सिहमें ५, पांचसो सिहरो बल एक अष्टापदमें ६, दश अष्टापदरो बल एक बलदेवमें ७, दो बलदेवरो बल एक वासुदेवमें ८, दो वासुदेवरो बल एक चक्रवर्त्तीमें ९, एक करोड़ चक्रवर्तिरो बल, एक सामानिक देवतामें [illegible] एक कोरोड सामानिक [illegible] बल[illegible]

॥ अथ बारे भावना भाषामें कहते हैं ॥

पहेली अनित्य भावना ।



राजा राणा छत्रपति, हाथिनके असवार ।
मरना सबको एक दिन, अपनी अपनी बार ॥

ऐसा विचार करे कि इस जगतमें ग्राम, नगर, पुर, पैठाण, कोट, खाई, बाग, बगीचे निवांण, महेल, हवेली, दूकान, मनुष्य, कुटुंब, परिवार, न्याती, गोती, पशु, पक्षी, धन, धान्य, आभूषण, इत्यादिक सर्व वस्तु अनित्य असाश्वती हे, परन्तु हे जीव। तुं मुढपणेसे इसको नित्य साश्वती मान बैठा है, पर पुद्गलोंसे शरीरकी घरकी शोभा बनाके तु खुशी मानता है, सो यह शोभा कभी एकसी रहनेवाली नहीं है। (ऐसी अनित्य भावना, श्री भरतेश्वर चक्रवर्त्तीने भाइथी) ॥१॥

दूसरी अशरण भावना ।



दल बल देई देवता, मात पिता परिवार ।
मरती विरिया जीवको, कोइ न राखन हार ॥

ऐसा विचार करें कि, रे जीव ! इस जगत में तेरेको शरण (आधार) का देनेवाला कोई नहीं है, सब स्वजन स्वार्थके सगे हैं, जब तेरे अशुभ कर्म उदय होंगे तेरे पर दुःख आके पड़ेगा तब तुझको सहायकर्त्ता कोई भी नहीं होगा (ऐसी अशरण भावना, अनाथी निग्रंथ ने भाईथी) ॥२॥

तीसरी संसार भावना ।



दाम विना निर्धन दुखी, तृष्णावश धनवान ।
कहूँ न सुख संसार में, सब जग देख्यो छान ॥

ऐसा विचार करें कि, रे जीव! तुं अनंत जन्म मरण कर सर्व संसारमें फिरा, वालाग्र जितना भी ठिकाणा खाली नहीं रखा, सर्व जीवोंके साथ सगपण (संबध) कर चुका माता मरके स्त्री, और स्त्री मरके माता पिता के पुत्र, और पुत्रके पिता ऐसे आपसमें अनंत वखत सबंध हो गया, सर्व जगत्वासी जीव स्वजन है परन्तु शत्रु कोई नहीं है, इस लिये सबके साथ तु मित्रता रख (ऐसी ससार भावना मल्लिनाथजीके ६ मंत्रियोंने तथा धन्ना शाली-भद्रजीने भाई थी) ॥३॥

॥ चौथी एकत्व भावना ॥

आप अकेला अवतरे, मरे अकेला होय।
यो कबहूँ या जीव को, साथी सगा न कोय॥

ऐसा विचार करे कि रे जीव! इस जगतमें

कोई किसीका सोगती नही है, अकेला आया और अकेलाही जायगा, जो पाप करके तेने धन कुटुंबका समग्रह किया है, सो मरेगा जब धन धरतिमें, पशु घरमे रह जायगा, स्त्री दरवाजे तक, और कुटुंब श्मशान तक ही आयगा, अत्यत प्रिय यह शरीर चित्ता (अग्नि) में जलके भस्म हो जायगा, ऐसा जाण तुं एकातपणा धारण कर, (ऐसी एकातभावना, नमीराय ऋषिने भाई थी) ॥४॥

॥ पाचमी परपत्व भावना ॥

जहा देह अपनी नहीं, तहा न अपना कोय ।
घर सपति पर प्रकट ये, पर हैं परिजन लोय ॥

ऐसा विचार करे कि, रे जीव! इस जगतमें सब स्वार्थी (मुतलबी) है, उनका होना है, जहा तक, सब जी जी, खमा

खमा, करते है, हुकम उठाते (मानते) हैं, मुतलब पूरा हुवे बाद सब सज्जन दूर भग जाते हैं, परन्तु कोई किसीका नहीं होता है (ऐसी परपख भावना मृगापुत्रने भाई थी) ॥५॥

छट्ठी अशुची भावना।

दिपे चाम चादर मढ़ी, हाड़ पींजरा देह।
भीतर या सम जगतमें, और नहीं घिन गेह॥

ऐसा विचार करे कि, रे जीव! तूं तेरे शरीरको स्नान मज्जनादिकसे शुद्ध करनेको चाहता है, लेकिन यह शरीर कभी शुद्ध नहीं होगा, क्योंकि इसकी उत्पत्तिका जरा विचार करके देख कि अव्वल माताका रक्त और पिताका शुक्र (वीर्य) का आहार कर यह शरीर बना था, अशुची (विष्ठा) के स्थानमें

रहता है, वाचाल होता है, और इसको आकाशमें उड़ने के स्वप्न आते हैं इसे रजोगुणी कहते है ।

२ पित्त गरम, पतला, पीला, कड़वा, तीखा, दग्ध होनेसे खट्टा हो जाता है, यह पाच ठिकाणे रहके पाच गुण करता है, १ आसयमें तिल जितना अग्निरूप होकर रहता है यह अग्नि पाच प्रकारकी, १ मदाग्निसे कफ, २ तिक्ष्णाग्निसे पित्त, ३ विपमाग्निसे वात, ४ समाग्नि श्रेष्ट, ५ निगमाग्नि नेष्ट, २ त्वचासे रहकर काती करता है, ३ नेत्रमे रहकर वस्तुको देखाता है, ४ प्रकृतिमें रहकर वस्तुको पाचन कर खाये हुये का रस लोही बनाता है, ५ हृदयमें रह बुद्धि उत्पन्न करता है, इसके ५ नाम है—१ पाचक, २ भ्रजक, ३ रजक, ४ अलोचक, ५ साधक इसको प्रकृतिवालेके लक्षण जवानीमें श्वेत वाल होवे बुद्धिमान

होवे, पसीना वहुत आवे, क्रोधी होवे, और स्वप्नमें तेज देखे, इसे तमोगुण कहते हैं।

कफ चिक्कण, भारी, श्वेत, शीतल, मीठा होता है, दग्ध हुए खरा हो जाता है, इसके पाच स्थान —१ आसयमें, २ मस्तकमें, ३ कठमें, ४ हृदयमें, ५ सन्धीमे, यह पांच ठिकाने रह स्थिरता कोमलता करता है, इसके पान्च नाम —१ क्लेदन २ स्नेहन, ३ एसन, ४ अव लवन, ५ गुरुत्व, कफकी प्रकृतिवालेके लच्क्षण गभीर, मद वुद्धि होता है, शरीर चिकणा, केश वलवान, और स्वप्नमें पाणी देखे, इसे तमो गुण कहते हैं।

और भी इस शरीरमें मांस, हाड, मेद, इनको बांधनेवाली जो नसे है उनको स्नायु कहते हैं, यह शरीर हड्डीयोके आधारसे खडा है जिसको आधार इनका ही है, इस देहमें सबसे बड़ी सोलह नसे हे उनको करड कहते

संसार परिभ्रमण किया, इसका मुख्य हेतु आश्रव ही है, क्योंकि पाप तो इस जीवने अनंत वग्त छोड़ा, परन्तु आश्रव छोड़े बिन धर्म पूर्ण फल नहीं दे सकता । आश्रव २० प्रकारके हैं परन्तु यहां मुख्यमें अव्रतका अर्थात् उपभोग (जो एक वग्त भोगनेमें आवे आहार पाणी प्रमुख) परिभोग (एक वस्तु वारम्बार भोगनेमें आवे, वस्त्र भूषण प्रमुख) और भी धन, धान्य, भूमि इत्यादिककी मर्यादा नहीं करना, इच्छाका निरुधन नहीं करना, सोही आश्रव इस भवमें महा तृष्णा रूप सागरमें गोते खिलाता है, और आगे भी दुर्गतिमें अनंत काल विटवणा देनेवाला होता है, ऐसा जाण रे जीव! अब तो आश्रव छोड़ और व्रत अंगिकार जरूर कर, (यह आश्रव भावना समुद्रपालजी ने भाईथी) ॥ ७ ॥

॥ आठमी संवर भावना ॥



सतगुरु देव जगाय, मोह नींद जब उपशमे।
तब कुछ बने उपाय, कर्म चोर आवत रुके ॥



ऐसा विचार करे कि रे जीव। संसारमें रुलानेवाला आश्रव है, जिसको रोकनेका उपाय एक संवर ही है, इस लिये अब तो कायिक (काया) वाचित (वचन) मानसिक (मन) की इच्छाको रुधन कर एकान्त समता रूप धर्ममें लीन हो, अर्थात् जीवरूप तलावमें कर्मरूप नालेसे, अव्रत रूप पाणी आ रहा है, उसको संवर (व्रत) रूप पाल बांधके आश्रवको रोक ले (यह सवर भावना हरिकेशीजी महाऋषि ने भाई थी) ॥ ८ ॥

॥ नवमी निर्जरा भावना॥



ज्ञान दीप तप तेल भर, घर शोधै भ्रम छोर।
या विधि विन निकसे नहीं, पैठे पूरब चार॥
पञ्च महा व्रत सञ्चरण, समिति पञ्च परकार।
प्रबल पञ्च इन्द्रिय विजय, धार निर्जरा सार॥



ऐसा विचार करे कि रे जीव। सवरसे तो आते पापको रोक (बध कर) दिया, परन्तु पहले किये हुए पापको खपाने वाली तो एक निर्जरा (तपश्चर्या) ही है, छव बाह्य, छव अभ्यन्तर, बारह प्रकारका तप, इसलोक, परलोकके सुखके रूपकी या कीर्तिकी वाञ्छा रहित एकांत मोक्षार्थी हो कर करे तो तेरा कल्याण होवे अर्थात् जीवरूप कपड़ेको कर्म्मरूप मैल लगा हुवा है, इनको सवररूप साबुन लेकर तपरूप पाणीसे धो, सो तेरेको मोक्षरूप

अविचल सुखकी प्राप्ति हो जावे, (यह निर्जरा भावना अर्जुन माली ने भाई थी) ॥६॥

दसमी लोकसंठाण भावना।

चौदह राजु उतग नभ, लोक पुरुष संठान।
तामें जीव अनादितै, भरमत है बिन ज्ञान ॥

ऐसा विचार करे कि रे जीव! इस लोकका संठाण कैसा है, जिसका तु विचार करके देख तीन दीवे जैसा इस लोकका सठाण (आकार) है। जैसा कि एक दीवा उलटा जिसपर दूसरा दीवा सीधा। और उसपर तीसरा दीवा उलटा रखनेसे जैसा आकार होता है, तैसा इस लोकका आकार है, सर्व लोकका घनाकार ३४३ राजुका है, इस लोकके मध्य भागमें

(जैसा मकानके बीचमें एक पोकल स्थम होता है तैसा) एक राजुकी चौडी और १४ राजुकी लंबी एक ऐसी त्रस नाल है, उसके अदर त्रस और स्थावर जीव भेले भरे हुवे है, और इसके बाहिर बाकी सब लोकमें स्थावर जीव ही ठि-चोठिच भरे हुए हैं, तो रे जीव! तुं अनत बक्त् इस लोकके विषे त्रस थावरपणे, सूक्ष्म बादरपणे, सन्नी असन्नीपणे पर्याप्ता अप-र्याप्तापणे, नारकी तिर्यंचपणे मनुष्य देवतापणे, जन्म मरण करके सब लोक फरस लिया, ऐसी कोई जगह लोकके अन्दर नहीं रही कि जिस ठिकाणे तू जन्म मरण नहीं किया हो, अर्थात् (एक बालाग्र रखे उतनी जगा लोक मे खाली नहीं रखी) ऐसा जानकर रे जीव— अब तो ऐसी जगा देखनेकी इच्छा कर के जहां जन्म मरणादि कष्टकी उत्पत्ति न होवे, और पनर्पि संसारसागरमें परिभ्रमण करनेका काम

न पड़े, ऐसा स्थान (ठिकाणा) कहां है कि, लोकके अग्रभागके ऊपर अर्थात् स्वार्थसिद्ध विमानसे बारह योजन ऊपर ४५ लाख योजन की पूर्ण चंद्राकार समान गोल और छत्राकार, मध्यमें ८ योजनकी जाडी, और आखरी किनारे पर मक्खिके पखसे भी पतली, मक्खनवत् चीकनी, अर्जुन स्वर्णमय सफेद, ऐसी सिद्धसिला हैं। जहा एक कोसके छट्ठे भागके ऊपर अनते सिद्ध भगवत विराजते हैं, वहां कोई प्रकारका कष्ट नहीं है, इस लिये वहां जानेकी तु भी इच्छा कर, और ज्ञान दर्शन चारित्र तप अंगिकार करनेका उद्यम कर, तो वो मुक्ति स्थान तेरे को शीघ्र मिल जायगा, (यह लोक संठाणभावना शिवराजऋषिने भाईथी) ॥ १० ॥

(जैसा मकानके बीचमें एक पोकल स्थम होता है तैसा) एक राजुकी चौडी और १४ राजुकी लंबी एक ऐसी त्रस नाल है, उसके अंदर त्रस और स्थावर जीव भेले भरे हुवे है, और इसके बाहिर बाकी सब लोकमें स्थावर जीव ही खिचोखिच भरे हुए हैं. तो रे जीव। तु अनंत बावत् इस लोकके विषे त्रस थावरपणें, सूक्ष्म बादरपणे, सन्नी असन्नीपणे पर्याप्ता अपर्याप्तापणे, नारकी तिर्यंचपणे मनुष्य देवतापणें, जन्म मरण करके सब लोक फरस लिया, ऐसी कोई जगह लोकके अन्दर नहीं रही कि जिस ठिकाणे तूं जन्म मरण नहीं किया हो, अर्थात् (एक बालाग्र रखे उतनी जगा लोक में खाली नहीं रखी) ऐसा जानकर रे जीव— अब तो ऐसी जगा देखनेकी इच्छा कर के जहां जन्म मरणादि कष्टकी उत्पत्ति न होवे, और पुनर्पि संसारसागरमें परिभ्रमण करनेका काम

जैसे डोरा पोई हुई सुई कचरेमे खोई नहीं जाती है तैसे सम्यक्त्व पाया हुवा प्राणी ससार समुद्रमें वहुत परिभ्रमण नहीं करते हैं। ऐसा समझ कर रे जीव! तू बोधवीज सम्यक्त्वकी प्राप्ति कर, कि जिससे मोक्षकी प्राप्ति होवे (यह बोधवीज भावना, कृष्ण वासुदेव, श्रेणिक राजा, और ऋषभदेवजीके अठाणुं पुत्रोने भाईथी) ॥११॥

॥ बारमी धर्म भावना ॥

जाचे सुरतरु देय सुख, चिंतत चिंतारैन।
विन जाचे विन चिंतये, धर्म सकल सुखदैन॥

ऐसा विचारे कि रे जीव! यह नरभव है सो निर्वाण (मोक्ष) प्राप्ति करनेका कारण है, और मोक्ष धर्म करणीसे प्राप्ति होती है, यह

ग्यारहमी बोधबीज भावना ।

धन कन कचनराज सुख,सवहि सुलभ कर जान
दुर्लभ है संसार मे, एक यथारथ ज्ञान ॥



ऐसा विचार करे कि रे जीव । तेरा निस्तारा किस करणीसे होगा, इस जीवको मोक्ष देनेका मुख्य हेतु सम्यक्त्व है,सम्यक्त्व विन उत्कृष्ट करणी कर नवग्रीवेग तक जा आया, परन्तु कुछ कल्याण न हुवा तो अब सम्यक्त्व फरसनेका अवसर (मोका) आया है, सो अब प्रमादको मेट सम्यक्त्व रत्न प्राप्त कर, और देव अरिहन्त,गुरू निग्रन्थ, केवली परुप्यो दया धर्म यह तीन तत्व शुद्ध अंगिकार कर, और कुदेव, कुगुरु, कुधर्मको त्यागन कर श्री वीतराग प्रणित वाणी (वचनो) की आस्ता (श्रद्धा) पूर्ण रख सो—येही एक सम्यक्त्व है,

५, अजोयरे ६, सिझातरनो ७, सचित्त पाणीनी बुंद पड़े तो ८, खेताइ कंते ६, कालाइ कंते १०, मगाइ कंते ११, पमाणाइ कते १२।

१२ बारह सभोग—उपधि वस्त्र पात्रनो लेवो १, सूत्र सिद्धांत लेवो वाचणी लेवी देवी २, आहार पाणी लेवो ३, माहोमाहि नमस्कार नो करवो ४, शिष्यादिकनो देवो ५, निमन्त्रणा करवी ६, मांहामांहि खड़ा होणा ७, कीर्त्ति गुणग्राम करे ८, वैयावच्च करणी ६, एकठा मिलवो १०, एक आसण बेसवो ११, कथा प्रबंधनो कहिवो १२।

१२ बारे बोल करी भव्य जीवकुं पछतावणो पड़े—छती योगवाइ साधु साधवीको १४ प्रकारको दान नहीं देवे तो पछतावणो पड़े १, दान देइने पोमावे तो पछतावणो पड़े २, दान देता वर्जेतो पछतावणो पड़े ३, छती

जन्म धर्म करनेको ही पाया है, कारणकी मनुष्य जन्म सवाय धर्मकरणी वण नहीं सकती है, और धर्म विन मनुष्य पशुतुल्य है, इस लिये अवश्य धर्म कर, धर्म तो इस ससारमें बहोत प्रकारसे लोक मान बैठे हैं, परन्तु सचा धर्मका मर्म (स्वरूप) कुछ नहीं समझते हैं फक्त अपना अपना मत पच्च ताणते हैं, इस लिये सचा धर्म वोही है, की जिस धर्ममें किसी जीवको मन वचन काया करके विलकुल तकलीफ नहीं देते हैं, अर्थात् (अहिंसा परमो धर्म) इति वचनात् जहा दया है सो ही परम (उत्कृष्ट) धर्म है, इस लिये दया धर्म अगिकार कर, (यह धर्म भावना धर्मरुची मुनीने भाइथी) ॥१२॥

१२ बारह प्रकारनो आहार पाणी परिठवे पिण भोगवे नहीं—आधाकर्मि १, उद्देशिक २, सूतीकर्म ३, मिश्र ४, सचित्त अचित्त मिल्या

योगवाइ सामायक नित नेम सवर न करे तो पछतावणो पड़े ४, सामायक नित नेम करताने वर्जे तो पछतावणो पड़े ५, छती शक्ति १२ प्रकारकी तपस्या न करे तो पछतावणो पड़े ६, वारह प्रकारकी तपस्या करताने वर्जे तो पछतावणो पड़े ७, साधु साधवी आया तेहनी वखाण वाणी न सुणे तो पछतावणो पड़े ८, साधु साधवीकी निंदा करे तो पछतावणो पड़े ६, पांच महाव्रत धारी साधु साधवीको वंदणा नहीं करे तो पछतावणो पड़े १०, छती योगवाइ भणे गुणे नहीं तो पछतावणो पड़े ११, छती योगवाइ मकान (थान) पाट पाटला प्रमुख नहीं देवे तो पछतावणो पड़े १२।

॥ तेरमो बोल ॥

१३ तेरे काठीयांका नाम १, आलस काठीयो ते साधू समीपे आवतां धर्म साभलतां आलस ल्यावे २, मोह काठीयो ते सजन उपरा स्नेह राखे ३, प्रग्याकाठीयो ते एह क्या जाणे है इनसे हमही ज्यादा समझते है ४, मान काठीयो ते मुझ समान दूसरा कोई नहीं है ५, क्रोधकाठीयो ते गुरु हमसे तो बोलते ही नहीं ६, प्रमाद काठीयो ते रात दिन निन्द्रा सेवे गुरुवादिकरी वाणी नहीं सुणे ७, कृपण काठीयो ते व्याख्यानादि सुणया दानादिक देणो पडसी एमो वीचारे ८, भय काठीयो ते नारकीरा दुःख सुणावसी ९. शोक काठीयो ते धर्म समय शोकादिक अंतराय दे १०, अज्ञान काठीयो ते धर्म तत्व समझे नहीं ११, भ्रम काठीयो धर्मका फल होवेगा या नहीं

१२, कुतोहल काठायो ते कोतुक खेल तमासादिमें रहे १३, विषय काठीयो ते इन्द्रीयोके काम भोगमें मग्न रहे ए तेरह काठीया दूर करे तब धर्म पामे और आत्माका कल्याण करे ।

१३ तेरे क्रिया साधूने लागे यथा स्वभावे अथवा गिलाणादिकने काजे आहार असूझतो लेवो ते अर्थ क्रिया १, देवगुरु संघनो प्रत्यनीक तथा धर्मनो हिंसक ते सघाते बोलवुने हिंसकी क्रिया २, वस्तु पूंजी मूकता कोई जीवने विराधना हुवे ते अकस्मात् क्रिया ३, सापराध निपराध ममता मर्ण पामे ते दृष्टि विपर्यासि की क्रिया ४, कुडो बोलें ते मृस्वावादकी क्रिया ५, अणदीधे लेवे ते अदत्तादानकी क्रिया ६, हीयामें फोकट उच्याट धरै ते अधात्मकी क्रिया ७, कारण पाखें असूझतो लेवो ते अनर्थ की

अभिमान करे ते मानकी क्रिया ६, अल्प अपराध हुवै ने घणुं दंडे ते अभिन्नकी क्रिया १०,कुटिलपणोकरवु ने कुटिलकी क्रिया ११, कामादिकनो आसक्त थको ओरानें वधवधनादिक करवो ते लोभकी क्रिया १२, इर्यापथकी क्रियानो अणसद्दहवो ते इर्यापथकी क्रिया १३,

१३ तेरे बोल हुवे जिहां साधु च्यौमासो करे—बेन्द्रियादिक जीव थोड़ा होय १, कीचड़ कादो थोडो होय २, उच्चार पासवणकी जागा निरवद्य होय ३, थानक साताकारी होय ४, छाछ दहि दूध घृत घणो होय ५, वस्ती घणी होय ६, राजवैद्य होय ७, औषध दवा चाहिजे सो मिले ८, श्रावक कोठे धान घणो होय ९, गामरो ठाकुर धर्मरो रागी होय १०, पाखडीयोका जोर थोड़ा होय ११, आहार पाणीनी साता

होय १२. सिझाय करणेकी जागा जुदी होय १३ ।

१३ तेरे तिणगा जन्म रूपणी रुई मरण रूपीया-तिणगा १ सयोगरूपणी रुई वियोगरूपीया तिणगा २, साता रूपणी रुई असाता रुपीया तिणगा ३, सपदा रूपणी रुई आपदा रूपीया तिणगा ४, हरख रूपणी रुई सोच रूपया तिणगा ५, सिल रुपणी रुई कुसील रूपीया तिणगा ६ ज्ञानरूपी रुई अज्ञानरूपी तिणगा ७, सम्यक्त रुपी रुई मिथ्यात्व रूपी तिणगा ८, सयमरूपी रुई असयम रूपी तिणगा ९, तपस्यारूपी रुई क्रोधरूपी तिणगा १०, विवेकरूपी रुई अविवेकरूपी तिणगा ११ सनेहरूपी रुई मायारूपी तिणगा १२, स तोप रूपणी रुई लोभ रूपीया तिणगा १३ ।

॥ महानुभाव वन्दनाका १२ बोल ॥



धन्न श्री ऋषभदेवजी अनंत बल रा धणी काया ने कापसी धन वा पुरुषा ने वरसी तप चौविहार किया, हे जीव, छमछरीरो उपवास तु ही चौविहार कर थारे कायारी गरज सरसे, च्यार हजार साधारे परिवार सु दिक्षा लीधी, दश हजार साधारे परिवार सु छव दिनांरे सथारे सु मुक्ति पहुंता वाने म्हारी वंदणा नमस्कार होयजो ॥ १ ॥

धन श्री महावीर स्वामी अनत बलरा धणी कर्म काटया, धन उत्तम पुरुषां ने बाहरे मास तेरे पक्ष चौविहार किया, छव मासी चौविहार किया, पचमासी चौविहार किया, चौमासी चौविहार किया, तीमासी चौविहार किया, दो मासी, डेढ मासी चौविहार किया, वहोत्तर पक्ष चौविहार किया, २२९ बेला चौविहार किया,

लगावे, केई धूड़ फेंके केई कहे म्हारो वाप मार्यो, केई कहे म्हारी मा मारी, केई कहे म्हारी बेन (भगनी) मारी, केइ कहे म्हारो भाई मार्यो, केइ कहे म्हारी भार्या मारी, केइ कहे म्हारो धणी मार्यो, केइ कहे म्हारो बेटो मार्यो अर्जुन मालीजी मनमे चितावना करी, हे जीव ते घणा जीवारी जीव काया न्यारी न्यारी करी दीसे छे तने तो थोड़ा ही सतावे छे इसी क्षमा करीने वेले वेले पारणे छव महिना ताई फिर्या, राजग्रीह नगरीमें अहार पाणी कीण ही वेरायो नहीं छव महीना मे हीं कर्म खपावी पनरे दिनारो सथारो करीने मोक्ष पहुंता वांने म्हारी वंदणा नमस्कार हुइजो ॥ ६ ॥

धन श्री मेघकुमारजी भगवान समीपे आइने भगवानरी वाणी सुणीने दिक्षा लीनी, चउदे हजार मुनिराजारे परिवार सु रात ने सूता रातरा मुनिराज केइ तो मातरो परठण ने उठ्या

केई खेंखारो थुंकणने उठ्या, कंई नाकरो मेल परिठावणने उठ्या, ज्युं मेघकुमारजीरे ठोकरां री लागी, मेघकुमारजी मन में रातरा चिंतावना करी सदाइ तो हु भगवानरे समीपे आवतो जब भगवान मेघजी मेघजी कहकर बतलावता आज कीणहीं मने मेघलो कहकर बतलायो नहीं मे काइ भगवान रो खायो नहीं, पीयो नहीं, लीनो नहीं, दीयो नहीं, ओघो पातरा मुंहपत्ति देइने परभाते म्हारे घरे जासुं, मेघकुमारजी भगवान रे समोसरणमे आया जब भगवान मेघकुमारजी ने बतलावो आवो मेघ आओ मेघ रात तो तुम्हे दु:खे दु:खे काढी एक रात्रि छव महिना जीसी काढी, भगवान मेघकवररे पुर्वले भवरो वृतान्त बतायो, के तै हाथीरे भवमें ससियेरी दया पाली, श्रेणिक राजारे घरधिपर बेटो थयो, हे मेघकुमार तिर्यंचरे भवमें इतनी वेदना सही तीण आगे

वेदना तो कीतिक है, मेघकुमारजी मनमें चितवना करीके आज पीछे दोय नेत्र की सार करसु और शरीरकी सुश्रपा नहीं करु इसी क्षमा करीने विजय विमाने गया, वाने म्हारी वदणा नमस्कार होयजो ॥ ७ ॥

धन श्री सुबाहु स्वामी सात भवतो तिर्यंचरा किया, सात भव मनुष्य रा किया, सात भव नारकी रा किया सात भव देवताग करीने सुखे सुखे भोगवीने मुक्ति पधारसे वाने म्हारी वदणा नमस्कार होइजो ॥ ८ ॥

धन श्री खधकजी, जीणाने काया असासती जाणी, सासती जाणी नहीं, दुकर दुकर परिसह सहिने अच्यूल (बारमा) देवलोक पहु ता, चवीने मनुष्य होकर मुक्ति जासी, वाने म्हारी वदना नमस्कार होइजो ॥ ६ ॥

धन श्री गजसुकमालजी

आइने दीक्षा लेइने

काउसग्ग कियो सोमल ब्राह्मण (सुसरे) गज-सुकमालजीने देख पुर्वलो द्वेष जाग्यो, म्हारी बेटीने दु ख थासी सो हु इयरो वैर काढसु, भींनी माटी लेइने पाल बांधी शिर अगार धर्या, मुनि माथो धूण्यो नहीं नाके सल घाल्यो नहीं, सगपण दाख्यो नहीं, इसी समता करीने केवलज्ञान उपजाइने मुक्ति पहु ता वांने म्हारी वदणा नमस्कार होइजो ।१०।

धन श्री खधक कुमारजी दीक्षा लेइने विचर्या चेनोइरी नगरीमे गोचरी उठ्या, चेनोइ, खधकमुनीने देख काचर रे भवरो द्वेष जाग्यो, एडीसु लगाइने चोटी तांई खाल उतारी, मुनि सगपणदाख्यो नहीं, माथो धूण्यो नहीं, नाके सल घाल्यो नहीं, इसा दुक्कर दुक्कर परिसा सहिने केवल ज्ञान उपजाइने मुक्ति पहु ता वांने म्हारी वदणा नमस्कार होइजो ॥ ११ ॥

धन श्रीकृष्ण महाराजरी आठ अग्र

१३ तेरमो बोल जाणपणेका—धर्मका जाणपणो होय तो जीवदया पाले १, ज्ञानका बल होय तो थोड़ा बोले २, बुद्धिवन्त होय तो सभा जीते ३, साधुकी सगत होय तो सतोष ऊपजे ४, वैराग्य होय तो पाच इन्द्रि दमे ५, सूत्र सिद्धांत सुणाता रहे तो धर्म विषे प्रणाम चढता रहे ६, प्राणी जीवकी रक्षा करे तो निर्भयपणो पामे ७, मोह मछरपणो छांडे तो देवताको पूजनीक हुवे ८, न्याय-मार्गमे चाले तो शोभा पावे ९, सर्व जीवकुं खमत खामणा करे तो साता पावे १०, गुरुरी सेवा भगती करे, विनय करे तो ज्ञान पामे ११, विद्वानरो सगत करे, विनो करे तो बुद्धि वधे १२, भगवानकी आज्ञासहित किया करे तो मोक्ष पामें १३ ।

॥ चौदहमो बोल ॥

१४ श्रीनन्दजी सूत्रमे १४ प्रकारके श्रोता कहा है
१, चालणी जैसे—जैसे चालणी सार सार पदार्थ अनाजको छोड़ असार तुस ककर वगैरहको धारण करती है तैसे ही कितने ही श्रोता सद्बोधका सार गुण ग्रहणता छोड़ अवगुण ही धारण करते है २, मजार जैसे—जैसे बिल्ली पहले दूधको जमीन पर ढोल देती है और फिर चाट चाट कर पीती है तैसेही कितने ही श्रोता प्रथम वक्ताका मन दुखायके फिर उपदेश श्रवण करते हैं ३, बुगलै जैसे—जैसा बुगला ऊपरसे तो स्वेत अच्छा दिखता है और अन्दरमें दगा रखता है तैसे ही कितने ही श्रोता ऊपरसे तो बुगला भक्ति करते हैं परन्तु अन्तकरणमें मलीन होते हैं जिनसे ज्ञान ग्रहण किया

उनके साथही दगा करते हैं ४, पाषाण जैसे—जैसे पाषाण पर वृष्टी होनेसे ऊपरसे तो तरोतर भीज जाता है परन्तु अन्दर पाणी भेदता नहीं है तैसे कितनेक श्रोता सजोग सुणते तो बड़ाही वैराग्य भाव दरसाते हैं और अकृत करते बिलकुल ही डर नहीं लाते है ५, सर्प जैसे—जैसे सर्पकु पिलाया दूध जेहर होजाता है तैसे कितनेक श्रोता जिनके पास ज्ञान ग्रहण किया उनकी तथा उनके धर्मकी निन्दा उथापना करने लग जाते हैं जेसे भैंसा जैसे—पाणीमें पड़कर हंग मूत पाणीको गुदला देते हैं फिर आप पीता है तैसेही कितनेक श्रोता सभामें अनेक वीकथा कदाग्रह क्लेशकर गड़बड़ मचा देते हैं फिर सुणतें हैं ७, फूटेघट जैसे ज्यों फूटे घड़ेमे पाणी ठहरता नहीं है त्यो कितनेक श्रोता उपदेश सुन कर वहाहीं भूल

जाते हैं विलकुल याद रखते नहीं है ८, डांस जैसे—जैसे डाम डंश कर रक्त ग्रहण करता है तैसे कितनेक श्रोता ज्ञानीको कोचवाकर ज्ञान ग्रहण करते हैं ९, जलोक जैसे जोक निरोगी रक्तको छोड़ बिगड़े हुवे रक्त ग्रहण करती है त्यों कितनेक श्रोता सद्बोधको वो सद्बोधकके सद्गुणोका त्याग न कर दुर्गुणो को ग्रहण करे यह नव प्रकारके अधर्म पाप-चारी (खराव) श्रोता कहे जाते हैं १०, पृथ्वी जैसे, ज्यों पृथ्वीको ज्यादा खोदें त्यो त्यों ज्यादा कोमलता आवे और बीजकी ज्यादा उत्पत्ती हुवे त्यो कितनेक श्रोता बहुत परिश्रम देकर ज्ञान ग्रहण करे परन्तु फिर गुणवत हो ज्ञानादि गुणोका परिश्रम भी अच्छा करे ११, अंतर जैसे, ज्यो ज्यो अतर मसले त्यो त्यो ज्यादा सुगध देवे तैसे कितनेक श्रोता बहुत प्रेरणासे बहुत होसियार होवे

और जहां जावे वहा धर्मरूप सुगंध फैलावे यह टाय मन्य श्रोता १२, बकरी जना— जैसे बकरी नितरा निनरा अधर अधर पाणी पी लेवे परन्तु पाणीको गुदोले नहीं तैसे कित· नेक श्रोता वक्ता को बिलकुल ही तकलीफ न देवें और उनके अल्पज्ञाता रूप दुर्गुणके सन्मुख ही देखते गुण ही गुणको ग्रहण करके तृप्त होवे । १३ गौ जैसे—जैसे गाय निसार माल खाकर भी दूध जैसा उत्तम पदार्थ देवे तैसे कितनेक श्रोता थोड़ा भी ज्ञान ग्रहण कर ज्ञानदाताको आहार, वस्त्र पात्र शास्त्र औषध इत्यादि इच्छित दान दे सत्कार सन्मान कर बहुत शाता उपजावे १४ हंस जैसे—जैसे हंस पवित्र मुक्ताफल (मोती) को चुगलेते हैं तैसेही श्रोता शास्त्रके वचनोका ग्रहण कर सबको सुखदाता हुवे यह उत्तम श्रोता होता है ।

१४ जीवरा १४ भेद कहां कहां पावे ?—जीवरो भेद नारकी देवतारे प्रयासें में पावे १; जीवरा भेद सज्ञीपचेन्द्रिमें पावे २, जीवरा भेद समुच्चय नारकीमें देवतासे पावे ३, जीवरा भेद एकेन्द्रिमे पावे ४, जीवरा भेद भापकमे पावे ५, जीवरा भेद समदृष्टिमे पावे ६, जीवरा भेद यातामे पावे ७, जीवरा भेद अणाहारिकमें पावे ८, जीवरा भेद उदारीकरे मिश्रमें पावे ९, जीवरा भेदत्रसमे पावे १०, जीवरा भेद श्रुतइन्द्रिरे अलद्धीयेमें पावे ११, जीवरा भेद वादरमें पावे १२, जीवरा भेद सासता पावे १३, जीवरा भेद समुच्चय जीवमे पावे १४ ।

१४ गुणठाणा चौदह कठे कठे लाधे, १ गुणठाणो मिथ्यात्वीमें, २ गुणठा० विकलेन्द्रिमें ३ गुणठा० विनयवादीके समोसरणमें, ४ गुणठा० नारकीमें देवतामे, ५ गुणठा०

तिर्यंचमें, ६ गुणठा० तीन माठी लेश्यमें, ७ गुणठा० तेजुपद्मलेश्यमें, ८ गुणठा० छव हास्यादिकमें, ९ गुणठा० सज्जलरीत्रीकमें, १० गुणठा० संजलरेलोभमे, ११ गुणठा० मोहनीमें, १२ गुणठा० छदमस्थमें, १३ गुणठा० सयोगीमें, १४ गुणठा० समुच्चय जीवनें।

१४ पन्नो गुणठाणो वर्जीने, १३ गुणठाणा नियमाभव्यीमे २ गुणठाणा वर्जीने, १२ गुणठाणा नियमा छव पर्यायमें, मनयोगीमें, ३ गुणठाणा वर्जीने, ११ गुणठाणा चायक समक्तिमें, ४ गुणठाणा वर्जीनें, १० गुणठाण व्रतीमें, ५ गुणठाणा वर्जीने, ९ गुणठाणा संजतीमें ६ गुणठाणा वर्जीनें, ८ गुणठाणा अप्रमादीमें, ७ गुणठाणा वर्जीनें, ७ गुणठाणा शुक्ल ध्यानमे, ८ गुणठाणा वर्जीनें छव गुणठा० हास्यादिकरे अलद्धीयेमें,

६ गुणठाणा वर्जीने. ५ गुणठाणा अवेदीमें, १० दस गुणठाणा वर्जीनें, ४ गुणठाणा अकषाईमें, ११ गुणठाणा वर्जीनें, ३ गुणठाणा खिण वीतरागीमें, १२ गुणठाणा वर्जीनें, २ गुणठाणा केवलीमें १३ गुणठाणा वर्जीनें, १ गुणठाणो अजोगीमें ।

१४ प्रस्ताविक १४ बोल—धर्मरो परिवार कांई सम्यक्त १, धर्मरो बाप कांई जाण पणो २, धर्मरी माता कांई दया ३, धर्मरो भाई कांई सत ४, धर्मरी बेन कांई सुमती ५, धर्मरी स्त्री कांई क्षमा ६, धर्मरो बेटो कांइ संतोष ७, धर्मरी बेटी कांई सुबुद्धि ८, धर्मरी पोसाग कांई शील ६, धर्मरो गन्तो (गलनो) कांई तपस्या १०, धर्मरो खजानो कांई सूत्र ११, धर्मरो प्रकाशक कुण साधुजी १२, अमर कुण तीर्थंकरदेव १३, धर्मरो वासो कठे मोक्षमें १४।

१४ साता वेदनी बधणेके १४ कारण—दया १, दान २, क्षमा ३, सत्यव्रत ४, शील ५, इन्द्रिय दमन ६, सयम ७, ज्ञान ८, भक्ति ९, वदना १०, शास्त्र विचार ११, सद्बोध १२, अनुकपा १३, सत्य वचन १४ ।

१४ विद्याचवदे लोकोत्तर—गणितानुयोग १, करणानुयोग २, चरणानुयोग ३, द्रव्यानुयोग ४, शिक्षाकल्प ५, व्याकरण ६, छदविद्या ७, अलकार ८, ज्योतिष ९, निर्युक्ती १०, इतिहास ११, शास्त्र १२, मिमास १३, न्याय १४ ।

१४ लोकिक चवदह विद्या—ब्रह्म १, चातुरी २, बल ३, वाहन ४, देशना ५, बाहु ६, जल-तरण ७, रसायन ८, गायन ९, वाद्य १०, व्याकरण ११, वेद १२, ज्योतिष १३, वैद्यक १४ ।

१४ अवनीतके १४ बोल—बार बार क्रोध करे ते अवनीत १, प्रतिबधका क्रोध करे ते अव-

नीत २, मित्रकी मित्राई छाड़े तो अवनीत ३, सूत्र भणी मद करे तो अवनीत ४, आपके ओगुण पारके माथे देवे तो अवनीत ५, मित्र उपरी कोप करे तो अवनीत ६, मित्रकी पूठ पाछे निन्दा करे तो अवनीत ७, असमदकारी भाषा बोले तो अवनीत ८, द्रोही होय तो अवनीत ९, अहकारी होय तो अवनीत १०, सविभागी किसीकु नहीं हुवे तो अवनीत ११, अप्रितीकारीयो होय तो अवनीत १२, लोभी होयतो अवनीत १३, इन्द्रियो मोकली मेले-विषय लालची ते अवनीत १४।

१४ सातावेदनी १४ बोल करी बांधे—दयावन्त होय तो साता वेदनी बांधे १, हर्षसुं दान देवे तो साता वेदनी बांधे २, कषाय घटावे—क्षमा करे तो सातावेदनी बांधे ३, व्रत-पच्चखाण शुद्ध पाले तो सातावेदनी बांधे

६, अनेक शास्त्रवेत्ता गीतार्थ उपयोगी होय ७, अर्थने विस्तारी तथा सवरी जाणे ८, व्याकरणरहित छता कठनी भाषामें पिण अपशब्द न बोले ६, वचनसे सभाजनने हर्ष करे १०, प्रश्नार्थ ग्राहक ११, अभिमान रहित १२, धर्मवन्त १३, सतोषवन्त १४, ए चौदह बोलका जाणकार होय सो वक्ता जाणना ।

१४ श्रोताका १४ गुण—भक्तिवन्त १, मिठाबोला २, गर्व रहित ३, सांभलवा उपर रुचि ४, चंचलतारहित एकाग्रचित्त सुणे और धारे ५, जैसा सुणे वैसा प्रगट अन्तर कहे ६, प्रश्नका जाण ७, घणा शास्त्र सुणया तिणके रहस्य जाणे ८, धर्मके कार्य आलस्य न करे ६, धर्म सुणता निन्द्रा न लेवे १०, बुद्धिवन्त होय ११ दातार रूप गुण होय १२, जिसके पासे धर्म सुणे उसका पिछाडी गुण वर्णवे

आरंभ परिग्रह घटावे—पांच इन्द्रि वश करे तो सातावेदनी बाधे ५, छकायरी रक्षा करे तो सातावेदनी बाधे ६, शुद्ध मन शील पाले तो सातावेदनी बाधे ७, ज्ञानवन्त होय—ज्ञानरो उधम करे तो सातावेदनी बाधे ८, साधुको वदणा नमस्कार करे तो सातावेदनी बाधे ९, सूत्र सिद्धात भणे तो सातावेदनी बाधे १०, तिर्थंकरजीने वंदना नमस्कार करे तो सातावेदनी बाधे ११, अनुकपा करे तो सातावेदनी बाधे १२, धर्मोपदेश देवे तो सातावेदनी बाधे १३, सत्यवचन बोले तो सातावेदनी बांधे १४ ।

१४ वक्तना चौदह गुण लिख्यते है—प्रश्नव्याकरणोक्त शील बोलनो जाण पडित होय १, शास्त्रथी विचार जाणे २, वाणीमाही मिठाश होय ३, प्रस्तावअवसर ओलखे ४, सत्य बोले ५, साभलने वालाका सशय दूर करे

धावसे स्वयमेव दिक्षा ले सिद्ध होवे, ७ बुद्ध-बोधित सिद्धा आचार्यादिकके प्रतिबोधसे दिक्षा ले सिद्ध हुवे, ८ स्त्रीलिंग सिद्धा स्त्रीवेद वीकारका क्षय करे फक्त अवयवरुप स्त्रीलिंग रहे वो दिक्षा ले सिद्ध होवें, ९ पुरुषलिंग सिद्धा ऐसे ही पुरुष विषय वांछा त्याग दिक्षा ले सिद्ध होवे, १० नपुंसकलिंग सिद्धा ऐसे ही नपुंसक वेद क्षय हुवे फक्त लिंगरूप रहे सो दिक्षा ले सिद्ध होवे, ११ स्वलिंग सिद्धा जो रजोहरण मुहपति आदिक साधूका लिंग धार तुरंत प्रणामकी विशुद्धता होनेसे सिद्ध होवे, १२ अन्यलिंग सिद्धा अन्यमतमें किसीकूं अज्ञान तपसे विभंग ज्ञान उत्पन्न होवे उससे जैन साधुकी क्रिया देख अनुरागजगे जैनशैली आवे तब विभंग ज्ञान फिटी अवधि ज्ञान होवे ज्यों ज्यों प्रणामकी विशुद्धि होती जाय त्यों त्यों ज्ञानकी वृद्धि

१३, कोइनी निन्दा न करे किसीके साथ वाद विवाद न करे १४।

॥ पन्द्रहमों बोल ॥

१५ सिद्ध भगवान १५ भेदे होवे, १ तीर्थंकर की पदवी भोगकर सिद्ध हुवे, २ अतिर्थंकर सिद्धा सामान्य केवली सिद्ध हुवे, ३ तीर्थ सिद्धा तीर्थ साधु साधवी श्रावकश्राविकामेंसे सिद्ध होवे, ४ अतीर्थ सिद्धा तीर्थका विछेद होवे उस वक्त जाति स्मरणादि ज्ञानसे बोध पाकर सिद्ध होवे, ५ स्वयबुद्ध सिद्धा गुरु विना जाति स्मरणादि ज्ञानसे पूर्व भवका सरूप जाणके दिक्षा लेके सिद्ध होवे, ६ प्रत्येकबुद्ध सिद्धा वृषभ वृक्ष स्मशान वा दल वियोग रोग इत्यादि देखके अनित्यादि

रखे, ६ मित्रोसे हिल मिल चले, ७ ज्ञानका अभिमान न करे, ८ अपनेसे हुआ अपराध स्वीकार करे परन्तु दूसरेपर नहीं डाले ९, स्वधर्मीयोपर कोप नहीं करे, १० अप्रिय-कारीकेभी गुणानुवाद बोले ,११ रहस्य बात प्रगट नहीं करे, १२ विशेष आडम्बर नहीं करे, १३ नरवज्ञ, १४ जातिवंत, १५ लज्जावंत जितेंद्री।

१५ आसाता वेदनी वंधणके १५ कारण, १ जीव घात करे, २ छेदन करे, ३ भेदन करे, ४ परिताप करे, ५ चुगली करे, ६ परायेकुं दुःख देवे, ७ त्रास देवे, ८ आक्रंद करावे, ९ स्वतः दुःख शोक करे, १० द्रोह करे, ११ असत्य बोले, १२ विरोध करे, १३ क्रोध मान उपजावे, १४ युद्ध झगड़े करावे १५ पर निंदा करे।

१५ योग १५ कहां कहां पावे, १ योग वाटे वहेता जीवमें, २ योग तीन विकलेन्द्रि पर्यात्तामे,

होते होते परम अवधि ज्ञान पाय तुरंत घन-घाति कर्मखपाय केवली होय मोक्ष पधारे जो आयुष्य जास्ती होता तो लिंग भेष बदलते यह अन्य लिंग सिद्धा, १३ गृहलिंग सिद्धा गृहस्थी धर्म क्रिया करते प्रणाम की विशुद्धता हुवे तुरंत केवल ले मोक्ष पधारे आयुष्य थोड़के कारण भेषलिंग नहीं बदल सके सो गृहलिंग सिद्धा, १४ एक सिद्धा एक समय में एक ही सिद्ध होवे सो एक सिद्ध, १५ अनेक सिद्ध एक समयमे दो से लगाकर एक सो आठतक सिद्ध होवे सो अनेक सिद्ध ।

१५ वीनयवानके १५ लक्षण, १ गतिस्थानक भाषा और भाव इन चारो चपला रहित अर्थात् स्थिरस्वभावी, २ सरल, ३ अकुतुहली (अकुतोली), ४ किसीका अपमान व तिरस्कार नहीं करे, ५ विशेष काल क्रोध न

रखे, ६ मित्रोंसे हिल मिल चले, ७ ज्ञानका अभिमान न करे, ८ अपनेसे हुआ अपराध स्वीकार करे परन्तु दूसरेपर नहीं डाले ९, स्वधर्मीयोपर कोप नहीं करे, १० अप्रिय-कारीकेभी गुणानुवाद बोले, ११ रहस्य वार्त्त प्रगट नहीं करे, १२ विशेष आडम्बर नहीं करे, १३ तत्वज्ञ, १४ ज्ञातिवंत, १५ लज्जावंत जिते द्री।

१५ आसाता वेदनी वंधणके १५ कारण १ जीव घात करे, २ छेदन करे, ३ भेदन करे, ४ परिताप करे, ५ चुगली करे, ६ परायेकु दुःख देवे, ७ त्रास देवे, ८ आक्रंद करावे, ९ [illegible] दुःख शोक करे, १० द्रोह करे [illegible] पुरुष बोलै, १२ विरोध करे, १३ [illegible] मारकपी १४ युद्ध झगड़े करावे [illegible] तणाकपी

१५ योग १५ कहा [illegible] गो कलस जीवमे, २ [illegible] विकलेन्द्रि पर्याप्तामें, [illegible] गा कलस

३ योग चार थानरमें, ४ योग बादर वायुकायरे पर्यातामें, ५ योग एकेन्द्रिमे, ६ योग असन्नीमें, ७ योग तेरमें गुणगणामें, ८ आठ योग मून (मोन) वाली आर्यामें अथवा पंचेन्द्रिरे अलद्धीये आहारीकमें, ९ योग परिहार विशुध सुदम सपराय चारित्रमें, १० योग मिश्रदृष्टिमें—वेक्रिय, आहारीक शरीरमें, ११ (इग्यारह) योग नारकी देवता यथारयात चारित्रमें, १२ योग श्रावकमें, १३ योग स्त्री वेदमें, १४ योग सामायिक छेदोपस्थापनीय चारित्रमें, १५ योग समुचय जीवमें पावे।

१५ सुविनीतका १५ बोल—नीचाप्रवर्त्ते १, चपलपणा रहित २, मायारहित ३, कतुहलपणारहित ४, कर्कश वचनरहित ५, दीर्घ रोप (रीस) न करे ६, मित्रसु मित्राइपणो सेवे ७, सूत्र भणी मद न करे ८, आचार्यादिकरी निन्दा न करे ९, मित्रके उपर कोप

न करे १०. मित्रके पूठ पाछे गुण बोले ११, कलह ममतरहित १२, ज्ञानतत्व जाणे १३, अभिजात विनेवत १४, लज्यावंत गुप्तइन्द्रि।

१५ बोल १५ समुद्रनी उपमारा संस्मार वर्णव— पूज्य भगवान समुद्रमें पाणी छे, संसाररूपीये समुद्रमें कीसो पाणी छे? उतर—जन्म जरा मरणरूपीयो तथा मोहरूपीयो पाणी छे १, पूज्य भगवान समुद्रमें कादो छे, ससाररूपीये समुद्रमें कीसो कादो छे? उतर— कामभोग रूपीयो, राग द्वेष रूपीयो कादो छे २, पूज्य भगवान समुद्रमें तो फेन उठे छे, संसाररूपी समुद्रमें कीसा फेण उठे छे? उतर—अहकाररूपी फेण उठे छे ३, पूज्य भगवान समुद्रमें तो दरड़ा छे, संसाररूपी समुद्रमें कीसा दरड़ा छे? उतर--असणारूपी दरड़ा छे ४, पूज्य भगवान समुद्रमें तो कलस उबके छे, संसररूपी समुद्रमें कीसा कलस

उवके छे ? उतर—नारकी तीर्यंच मनुष्य देवतारूपी कलस उवके छे ५ पूज्य भगवान समुद्रमें मगरमच्छ छे संसाररूपी समुद्रमें किमा मगरमच्छ छे ? उतर--सवला निवला ने मारे छे ७. पूज्य भगवान समुद्रमें तो डुंगर छे, ससाररूपी समुद्रमें कीसा डुंगर छे ? उतर—आठ करमरूपीया डुंगर छे ८, पूज्य भगवान समुद्रमें तो भवरीया पड़े छे, ससाररूपी समुद्रमें कीसा भवरीया पड़े छे ? उतर—दगाबाजी कपटरूपी भवरीया पड़े छे ६, पूज्य भगवान समुद्रमें तो वायरों छे, संसार रूपी समद्रमें कीसो वायरो छे ? उतर—मिथ्यातरूपी वायरो छे १०, पूज्य भगवान समुद्रमे तो सींगोटीया छे, संसार-रूपी समुद्रमे कीसा सींगोटीया छे ? उतर—तीनसे तेसठ पाखडरूपीया सींगोटीया छे ११, पूज्य भगवान समुद्रमें तो

मोती नीकले छे, समाररूपी समुद्रमे कीसा मोती छे ? उतर—साधु साधवी श्रावक श्राविकारूपीया रत्न पदार्थ मोती छे १२, पृज्य भगवान समुद्रमें कल्लोला छे, ससाररूपी समुद्रमें कीसा कल्लोला छे ? उतर---लोभ-रूपी तथा स्नेहरूपी कल्लोला छे १३ पूज्य भगवान समुद्रमें तो अग्नि छे, ससाररूपी समुद्रमे कीसी अग्नि छे ? उतर---क्रोधरूपी अग्नि छे १४, पृज्य भगवान समुद्रमे काठो छे; संसाररूपी समुद्रमे कीसो काठो छे ? उतर---मोक्षरूपीयो काठो (कीनारो, छेड़ो) छे १५ ।

॥ सोलहमो बोल ॥

१६ भाषारो बोल—एक वखत भाषाबोले तव अनता पुद्गल खेरुकरे १, असख्यात समा

उवके छे ? उतर—नारकी तीर्यंच मनुष्य देवतारूपी कलस उवके छे ५, पूज्य भगवान समुद्रमें मगरमच्छ छे, संसाररूपी समुद्रमें किसा मगरमच्छ छे ? उतर—सबला निबला ने मारे छे ७, पूज्य भगवान समुद्रमें तो डुंगर छे, ससाररूपी समुद्रमें कीसा डुंगर छे ? उतर—आठ करमरूपीया डुगर छे ८, पूज्य भगवान समुद्रमें तो भवरीया पड़े छे, समाररूपी समुद्रमें कीसा भवरीया पड़े छे ? उतर—दगाबाजी कपटरूपी भवरीया पड़े छे ६, पूज्य भगवान समुद्रमें तो वायरो छे, ससार रूपी समद्रमें कीसो वायरो छे ? उतर—मिथ्यातरूपी वायरो छे १०, पूज्य भगवान समुद्रमे तो सींगोटीया छे, संसार-रूपी समुद्रमे कीसा सींगोटीया छे ? उतर—तीनसे तेसठ पाखडरूपीया सींगो-टीया छे ११, पूज्य भगवान समुद्रमें तो

होय ५, शुद्ध शील पाले तो देवताका पूजनीक होय ६, शुद्ध शील पाले तो रूपवत होय, सपदा पावे ७, शुद्ध शील पाले तो सर्प फूलां की माला होय ८, शुद्ध शील पाले तो अग्नि शीतल होय ९, शुद्ध शील पाले तो विष अमृत होय १०, शुद्ध शील पाले तो सिंह मृग होय ११, शुद्ध शील पाले तो गज बकरी होय १२, शुद्ध शील पाले तो आपदासुं सपदा पावे १३, शुद्ध शील पाले तो टुणां टुमण लागे नहीं १४, शुद्ध शील पाले तो समुद्र मार्ग देवे १५, शुद्ध शील पाले तो मेरू पर्वत टीवे सरीखो होवे १६,

---

॥ सतरहमो बोल ॥

१७ (सत्तदस) विहे मरणे पन्नते तजाह आवियमरणे कहता कल्लोलनीय परे मरण १, ओहि

मरणे अवधि मार्यादा पूरी करने मरे २, आतंतिक मरणे- नारकादिकना दुःख अत्यन्त भोगवीने मरे देवलोकना सुख अत्यत भोगवीने मरे ३, वलाय -मरण--व्रतभाजीने मरे ४, वसट्ट मरणे---इन्द्रिने परवसथको मरणपामें ५, अतोसल्ल मरणे---लज्जादिक आणी अणआलोया मरणपामे ६, तब्भव मरणे--जे भव माहि हुवे तेहिज भवनो आऊयो बाधी मरे ७, पडिय मरणे --सर्वविरती ज्ञानी-थको मरण पामें ८, बाल मरणे---अविर-तीनो अज्ञान मरण ९ बाल पडिय मरणे— देश विरती श्रावकनु मरण १०, छदमस्थ मरणे—केवल ज्ञान पाम्या विना मरण ११, केवली मरणे—केवल ज्ञान पामी मरे १२, विहायसि मरणे- आकासने विषेफासी प्रमुखे - (फासीलगाकर) मरण पामें १३ गिद्ध मरणे—मोटा कोई कलेवर मा प्रवेशकर पक्षी

तथा सियाल प्रमुख मरे १४, भत्त पच्चख्काण मरणे---भात (आहार) रा पच्च खाण करी मरण पांमे १५, इ गिणी मरणे—अगनी प्रमुखे वली मरे पाउवगाम मरणे—पादोप-गमन संथारो हाथ पग हलावै नहीं १७, एव सप्तदश प्रकारा ।

१७ सम्यक्त रत्नको सभालकर रखनेके लिये हित शिक्षाके उपदेशक वोल—१ भूत भविष्यत वर्तमान कालके सर्व तिर्थंकरोका एक यह ही उपदेश है कि सर्व प्राण (बेंद्री तेंद्री चोरिन्द्रि) भूत (वनास्पति) जीव (पचेंद्री) सत्व (पृथ्वी पाणी अग्नि वायु) इनकी किंचित मात्र ही हिसा नहीं होती हो किंचित ही दु:ख नहीं उपजाता हो येही सत्य सनातन पवित्र धर्म रागी त्यागी योगी और भोगी को एकसा अगीकार करने योग्य है, २ ऐसा धर्म ग्रहण कर प्रमादी (आलसी) नहीं

होना इसमें दिढ रहना ३ मिथ्यात्वीयोंके ठाठ पाट पाखड देखकर मोहित नहीं होना, ४ दुनियामें मिथ्यात्वियोंकी देखादेखी नहीं करनी, ५ जो देखादेखी नहीं करता है उससे कुमती दूर रहती है, ६ उपर कहे धर्मपर जिनकी श्रद्धा नहीं है उस जैसा कुमति कोई नहीं है उपरोक्त धर्म प्रभूजीने देखकर सुणकर जाणकर और अनुभव करके फरमाया है ८ ससारमें मिथ्यात्वमें फसे हुवे जीव अनंत ससार परिभ्रमण करे है, ९ तत्वदर्शी जीव सदा धर्ममें प्रमाद छोड कर सदा सावधान पणे विचरते है, १० जो कर्मबधके हेतु है वो सम्यक्तिको कर्म तोड़ने के हेतू वक्तपर हो जाते है, ११ जो कर्म तोड़नेके हेतु है सो मिथ्यात्वियोको कर्मवध के हेतु हो जाते है, १२ जितने कर्मके हेतु है उतने ही कर्म खपानेके हेतु भी जानना,

१७ घबराकर आये उसे हवा कर शांति करे १८ चोर के लाये हुये धन धान पशु प्रमुखको अपने घरमे बदोवस्तके साथ रखे जो चाहिये सो देवे यह १८ प्रकारसे चोरको साज (मदत) देनेसे चोर ही कहना यह अठारे काम करने वाला राज दरवारमे सजा पाता है और भी चोरको कहैं कि बैठे बैठे क्या करते हो बहुत दिन हुवे चोरी करने क्यों नहीं जाते हो जावो अब तो कुछ माल लावो हम सब तुम्हारा माल खपाय देवेंगे कुछ फिकर मत करो तथा अमुक ठिकाणे कल गये थे कुछ हाथ लगा की नहीं बताइये और भी कुदाली कुस प्रमुख उनको चाहिये सो शस्त्रका साज देवे इत्यादि सब काम करनेवालेको चोर ही कहना यह काम श्रावकको करने उचित नहीं है इस लाल-चसे विवेकवत अवश्य बचेंगे ॥ इति ॥

॥ उनैसमो बोल ॥



१६ ज्ञाता सूत्र का अध्ययन—१ मेघकुमारको, २ धना सार्थवाह अने विजय चोर को, ३ मोरड़ीके इंडेको, ४ काछवा (कुर्म काछवा) को, ५ शैलक राज ऋषिको (थावचापुत्रको) ६ तुंबड़ीको, ७ रोहणीको (सार्थवाह अने-च्यार वहुको) ८ मल्ली भगवती (मल्लीनाथ)को ९ जिनपाल जिनऋषिको, १० चन्द्रमाकी कलाको, ११ दावानलको, १२ जितशत्रु राजा अने सुबुद्धि प्रधानको, १३ नंद मणि-कारको, १४ तेतली पुत्र प्रधान अने पोटला सोनारके पुत्रको, १५ नदी वन फलको, १६ द्रौपदी (आवर ककानगरी) को, १७ काली द्वीप घोडे (समुद्र अश्व) को, १८ सुसमा दारिकाको, १९ पुंडरीक कुंडरीकको।

१९ काउसग्गरा १९ दोष---गोडे उपर पग

रात्रो भोजन भोगवे तो ३, आधाकर्म आहार भोगवे तो ४, राजपिड आहार भोग तो ५ उद्देशी १, कीय २, पामीचे ३, अछि ४ अणिसट्टेय ५, अभ्यारे ६, उदगमनरा छव दोष आहार भोगवे तो ६, वारवार पच्च क्खाण लेवे छोडे तो ७, छव महीनामाहीं नयो टोलो बदले तो ८, एक मासमे ३ नदीके पाणीरो लेप लगावे तो ९, एक मासमें ३ माया थानक सेवे तो १०, सिझ्मातरनो आहार भोगवे तो ११ जाणपूछने प्राणातिपात सेवे तो १२, जाणपुछ मृषावाद बोले तो १३, जाण पुछ अदत्तादान लवे तो १४, सचित्त उपरे ऊठै बैठै तो १५, सचित्त संनिग्ध माटी उपर ऊठै बैठै हले चले तो १६, इन्डा जाला सहित पाट पाटलाभोगवे तो १७, मूल १ कद २ खध ३ त्वचा पलव (प्रवाला) ६ फल

हरा पत्र १० ए दश प्रकारनी हरीकाय भोगवे तो १८, एक सालमें दस नदीरो लेप लगावे तो १६, एक वर्ष मध्ये दश माया थानक सेवे तो २०, सचित सेती हाथ पग खरड्या होय जिसके हाथसुं आहार पाणी वेंहरावे साधु लेवे तो सबलो दोष लागे २१।

२१ श्रावकना इकवीस गुण—अक्षुद्र १, जसवत २, सोम प्रकृति ३, लोकप्रिय ४, आकरो स्वभाव नहीं ५, पापसे डरे ६, श्रद्धावंत ७, सदलच ८, लज्यावत ६, दयावत १०, मध्यस्थ ११ गम्भीर १२, सोमदृष्टि १३, गुण रागी १४, धर्मकथी १५ साचो पक्ष करे १६ सुद्ध विचारी १७ बुद्धोंकी रीत चाले १८, विनयवन्त १६, किया गुण माने २०, परहितकारी २१।

२१ श्रावकके इक्कीस गुण—नवतत्वकी स्वरूप जाणे १, धर्म कारणमें सहाय (सहायता) वछे

रात्री भोजन भोगवे तो ३, आधाकर्मी आहार भोगवे तो ४, राजपिंड आहार भोगवे तो ५ उदेशी १, क्रीय २, पामीचे ३, अछिजे ४ अणिसट्ठे य ५, अभ्याये ६, उदगमनरा ए छव दोष आहार भोगवे तो ६, वारवार पच्चक्खाण लेवे छोडे तो ७, छव महीनामाहीं नयो टोलो बदले तो ८, एक मासमें ३ नदीके पाणीरो लेप लगावे तो ६, एक मासमें ३ माया थानक सेवे तो १०, सिज्झातरनो आहार भोगवे तो ११ जाणपूछने प्राणातिपात सेवे तो १२, जाणपुछ मृषावाद वोले तो १३, जाण पुछ अदत्तादान लवे तो १४, सचित्त उपरे ऊठै वैठै तो १५, सचित्त सनिग्ध माटी उपर ऊठै वैठै हले चले तो १६, इन्डा जाला सहित पाट पाटलाभोगवे तो १७, मूल १ कद २ ग्वध ३ त्वचा ४ शाखा ५ पलव (प्रवाला) ६ फूल ७ फल ८ वीज ६ •

१६, नया नया सूत्र सिद्धात सुणे १७, कोइ नयो आदमी धर्म पायो हुवे जिणने साज देवे ज्ञान सिखावे १८, दो वख्त कालोकाल पडिकमणो करे १९, सर्व जीवांसु हितपणो राखे वैरभाव राखे नहीं २०, छत्ती शक्ति तपस्या करे ज्ञान शिखणको उद्यम करे २१।

२१ बोल, श्रावकरा गुण २१---करुणावत हुवे १, दयावन्त हुवे २, लज्यावन्त हुवे ३, शिलवन्त हुवे ४, विरतवन्त हुवे ५, आपरी आत्मारो कार्य सारे ६, पराई आत्मारो वांक नहीं काढे ७, आई वेदना सर्व सहनकरे ८, पुन्य पापरो निर्णय करे ९, मिथ्याति परीसह देवे तो समभावे वेदे १०, बहु सूत्ररो जाणहुवे ११, सर्व जीवारो हितकारी हुवे १२, धर्ममें रातो रहे १३, पापसु डरतो रहे १४, निर्लोभी हुवे १५, निरस्वादि हुवे १६, निगरभी हुवे १७, आठ कर्मरा जाण हुवे १८, छती सक्ती

नहीं २, धर्मथकी चलाया किसीका चले नहीं ३, जिनधर्ममें शकादि आणे नहीं ४, जे सूत्ररो अर्थ ज्ञान धारे तिणरो निर्णय करे प्रमाद करे नहीं ५, श्रावकरा हाड और हाडगी मींजी धर्ममें रगायमान रहवे ६, म्हारो आउखो अथिर छे, जिनधर्म सार छे इसी चितवणा करे ७, श्रावकजी फटिकरत्न जैसा निर्मला होय कूड कपट राखे नहीं ८, श्रावक घरका द्वार सदा पोहर दिन चढे ताई दान सारु उघाड़ा राखे ६, श्रावक एक मासमें छव पोसा करे १०, श्रावक राजाके अंतेउर भंडार, शाहुकारकी दुकानमें जावे तो अप्रतीत ऊपजे ऐसे कार्यकरे नहीं ११, लिया व्रत पच्चक्खाण निर्मला पाले १२, चौदह प्रकारे दान सुभतो मुनिने देवे १३, धर्मको उपदेश देवे १४, तीन मनोरथ सदा चितवे १५, च्यार तीर्थरा गुणग्राम करे अन्याय करे नहीं

१६, नया नया सूत्र सिद्धात सुणे १७, कोइ नयो आदमी धर्म पायो हुवे जिणने साज देवे ज्ञान सिखावे १८, दो वख्त कालोकाल पडिक्कमणो करे १९, सर्व जीवासु हितपखो राखे वैरभाव राखे नहीं २०, छती शक्ति तपस्या करे ज्ञान शिखणको उद्यम करे २१।

२१ बोल, श्रावकरा गुण २१---करुणावत हुवे १, दयावन्त हुवे २, लज्यावन्त हुवे ३, शिलवन्त हुवे ४, विरतवन्त हुवे ५, आपरी आत्मारो कार्य सारे ६, पराई आत्मारो वांक नहीं काढ़े ७, आई वेदना सर्व सहनकरे ८, पुन्य पापरो निर्णय करे ९, मिथ्याति परीसह देवे तो समभावे वेदे १०, बहु सूत्ररो जाणहुवे ११, सर्व जीवांरो हितकारी हुवे १२, धर्ममें रातो रहे १३, पापसु डरतो रहे १४, निर्लोभी हुवे १५, निरस्वादि हुवे १६, निगरभी हुवे १७, आठ कर्मरा जाण हुवे १८, छती सक्ती

पोसेमें निंद्रा न लेवे १६, दृढधर्मी होवे २०, दूध पाणी जैसो न्याय करे २१ ।

२१ अथ इकवीस बोल टोटो पडनेरा--१ भणने गुणनेरो आलसकरे तो ज्ञानरो टोटो पड़े, २ साधु साधवी होयने मान करे तो सम्यक्तरो टोटो पड़े, ३ दोयवार शुद्धपट् आवश्यक न करे तो व्रत पच्चखाणरो टोटो पड़े, ४ आहार पाणीरो लोलपी होवे तो तपस्यारो टोटो पड़े, ५ विना उप्योग, अजयणासु चाले तो जीव दयारो टोटो पड़े ६ धन योवन रूपरो मद-करे तो आछी आरोग्य (निरोग) देहरो टोटो पड़े, ७ वडाना विनय न करे तो जिन आज्ञारो टोटो पड़े, [illegible] करे तथा निटयो कलह उ[illegible] परो टोटो पड़े, ६ पर्छाल [illegible] गरणा न करे [illegible] धर्म

कीर्त्तिनो टोटो पडे, ११ चिंता उच्चाट सोग, सकल्प विकल्प मन राखे तो अकल, बुद्धिको टोटो पड़े, १२ साधु साधवी ग्राम नगर विहार न करे तो धर्म कथारो टोटो पड़े, ज्ञान सीखे सिखावे नहीं तो जिन शासन तथा सिद्धातको टोटो पड़े, १४ कठिन, कुल्यभाव कठोर परणाम राखे तो शीतलता पणा, सरल पणाका टोटो पड़े, १५ स्त्रीरो लालची होय, स्त्री री अभीलापा वांच्छा करे, राग रागणीं सुणे तो शील व्रत ब्रह्मचर्यरो टोटो पड़े, १६ साधु साधवी श्रावक श्राविका च्यार तीर्थ माहो मांही हेत मिलाप न राखे तो जैनमार्गरो टोटो पड़े, १७ व्रत पच्चरकाणमें दोष लगावे, आलोवे नहीं, निंदे नहीं, प्रायच्छित्त लेवे नहीं, तपस्या करे नहीं, सलेपणा करे नहीं तो मोक्ष मार्गनो टोटो पड़े, १८ श्री अरिहंतजी रा तथा अरिहंत भाषा धर्मरा तथा

ऊंचे से परठे, परठीने तीन बार बोसरे बोसरे नहीं कहै सो दोष ।

१२ ससारकी चरचा, ससारको नातो करे तथा प्रमाद सेवे तो दोष ।

१३ परठीने आयकर तथा निद्रासे ऊठकर तथा पडिलेहणा कीये बाद चोविसस्तव (चोई-स्थवो) न करे सो दोष ।

१४ शरीरका मेल उतारे या पुजे विना खाज खुने निद्रा लेवे तो दोष ।

१५ विकथा या पर निंदा करे सो दोष ।

१६ कलह या मश्करी करे तो दोष ।

१७ अव्रतीको आदर देवे और आसनका आम-त्रण करे तो दोष ।

१८ भाषा सुमति रखे विना बोले खुले मुंढे बोले सो दोष ।

१९ दो घड़ी व्यतीत होनेके पेश्तर स्त्रीके आसन जगह स्त्री बैठी हो उस जगहपर)

-पुरुष और पुरुष के आसन पर स्त्री बैठे तो दोष,

२० पुरुष स्त्री को और स्त्री पुरुष को विषय दृष्टि से देखे तो दोष।

२१ अपनी मालकीयती (अपना रख्याहुया) पोषा -के उपकरण के सिवाय अन्य चीजें अव्रतीकी आज्ञा लिये बिना लेवे या अव्रती (खुले आद-मी) के पास कोई भी चीज मगवावे तो दोष।

श्रावकके २१ लक्षण---१ 'अल्प इच्छा'-थोड़ी इच्छा-विषय तृष्णा शब्द रुपादिकका विषय कमी करे,विषयमें अत्यत ग्रधी न होवे लुख वृत्ति रहे।

२ 'अल्पारभ' द्रव कायका अरभ वढावे नहीं, अनर्था दड सेवन करे नहीं, जितना-आरंभ घटता हो उतना घटानेका उद्यम करे।

३ 'अल्पपरिग्रही' धनकी तृष्णा थोडी, कुकर्म कुव्यापारकी इच्छा नहीं, जितना प्राप्त हुवा

है, उतनेही पर सतोष रक्खे, मर्यादा सकोचे ।

४ 'सुशील ब्रह्मचर्यव्रत तथा आचार गोचार प्रशनिय रक्खे ।

५ 'सुवृत्ति' व्रत प्रत्याख्यान शुद्ध निरतीचार चढत प्रणामसे पाले ।

६ 'धर्मिष्ठ' नित्यनियम प्रमाणे धर्म क्रिया करे ।

७ 'धर्म वृत्ति' मन वचन कायाके योग सदा धर्म मार्गमें प्रवृतता रहे ।

८ 'कल्प उग्रविहारी' जो जो श्रावकके कल्प (आचार) है उसमे उग्र विहार करनेवाले अर्थात् उपसर्ग उत्पन्न हुये भी स्थिर प्रणाम रक्खे ।

९ 'महासवेग विहारी' सदा निवृत्ति (निर्दोष) मार्गमें तल्लीन रहे ।

१० 'उदासी' ससारके कार्यमें सदा उदासीन व्रत्ति यूक्त रहे ।

वत' सदा आरभ परिग्रहसे निवर्तने

की अभीलाषा रक्खे ।

१२ एकांत आर्य' निष्कपटी-सरल- बाह्याभ्यतर एक सरीखे रहे ।

१३ 'सम्यग मार्गी' सम्यक ज्ञान दर्शन चरीता चरीते मे सदा प्रवृते ।

१४ 'सु साधु' धर्म मार्गमे नित्य वृद्धि करते आत्म साधन करे, प्रणामसे अवृत सर्वथा बंध करदी है, फक्त ससार व्यावहार साधने द्रव्यसे हिशा करनी पडती है ❋ इसलिये भाव श्रावकका लक्षण साधु जैसे ही हे ।

१५ 'सुपात्र' ज्ञानादि वस्तुका विनाश न होवे तथा दान फली भूत होवे ।

❋ हिशाकी चौभङ्गी—१ द्रवसे हिशा और भावसे हिशा, जो कषाइ आदिक जीवका बधकरे सो २ द्रव्यसे हिशा और भावसे अहिशा, जो हिशाके त्यागी मुनीराजको आहार विहार आदिकमे बिन उपयोग हिशा निपजे सो ३ भावसे हिशा और द्रवसे दया द्रव लिंगी तथा अभ-नी साधू करे, ४ और द्रवसे भावसे दोनोसे अहिशा जोके अप्रमादि तथा केवल ज्ञानी मुनिराज पालते है ।

१६ 'उत्तम' सम्यत्वी आदिकसे गुणाधिक श्रेष्ट हे ।

१७ 'क्रिया वादी' पुन्य पापके फलको माननेवाले शुद्ध क्रिया करनेवाले ।

१८ 'आस्तिस्य' दृढ श्रद्धावत जिनेश्वरके या साधुके वचनपर पूर्ण प्रतीतवंत आसतावंत ।

१६ 'आराधिक' जिन वचन अनुसार करणी करनेवाले, शुद्ध वृत्ति ।

२० 'जैन मार्ग प्रभावक' तन, मन, धन, करके धर्मकी उन्नती करे ।

२१ 'अर्हतके शिष्य' साधु जेष्ट शिष्य, और श्रावक लघु शिष्य, ऐसे अनेक उत्तमोत्तम गुणके धरण हार श्रावक होते है ।

ऐसे अनेक गुणके धारक [illegible]जी बारह व्रत ग्रहण कर अत्रन[illegible]

॥ बाइसमां बोल ॥

२२ परिसह —(१) "क्षुधा परिसह" क्षुधा उत्पन्न होनेसे मुनीश्वर भिक्षावृत्तीसे अपना निर्वाह करे, परन्तु जो कभी आहारका जोग न बने और मरणांत कष्ट आपड़े तो भी अन्न, हरीलीलोती प्रमुख सजीव पदार्थ लेवे नहीं, और पकानादिक क्रिया करके किंवा करायके ऐसा सदोष आहार भोगवनेकी इच्छा भी करे नहीं, (२) "पिवासा परिसह" प्यास लगे तो अचित जलकी याचना करे परन्तु जोग न मिलनेसे सचेत जलकी इच्छा भी करे नहीं, (३) "सीय परिसह" शीत निवर्तन करनेके लिये अग्निसे शरीर तपाने की, या मर्यादा उपरांत वस्त्र भोमवनेकी, या मर्यादा के अंदर भी सदोष-अकल्पनीय वस्त्र ग्रहण करनेकी इच्छा करे नहीं, (४)

अर्थात्-शरीरका सुखमालपणा छोड़कर सूर्यकी आतापना लेना, उणोदरी प्रमुख बारह प्रकारके तप करना, आहार कमी करता जाना, चुधा सहन करना, ऐसा करनेसे शब्दादिक काम भोग और उनसे उत्पन्न होनेवाले राग द्वेष दूर रहेगा और जिवको सुख मिलेगा, (६) 'चरिया (विहार) परिसह"—प्रेमफासमें नहीं फसनेके लिये साधूको ग्रामानुग्राम विचरना पड़ता है, नवकल्पी (८ महीनेके ८, और चौमासेका १, ऐसे ६ कल्पी) विहार करना पड़ता है, वृद्ध-थीवर-रोगी तपस्वी या उन्होंकी सेवा करनेवालेको तथा ज्ञाननिमित्त गुरुकी आज्ञासे एक ग्राम रहनेमें अटके नहीं, (१०) "निसीया परिसह" चलते चलते साधूको रास्तेमें विश्रामके लिये एक ठिकाने बैठना पड़े और वहा समविषम भूमिका

मिले तो राग द्वेष नहीं करे, (११) "सिज्जा परिसह"—कहीं एक रात्री और कहीं चातुर्मासादिक अधिक काल रहना पड़े और वहां मनोज्ञ सेज्जा (शय्या)-स्थान क रहनेका मकान) नहीं मिले—टूटाफूटा इत्यादि, उपद्रवकारी मकानका सयोग बने तो मनमे किलामना नहीं पावे (१२) "अक्रोस (रीस) परिसह ' ग्रामादिकमे रहते साधुका भेष—क्रिया प्रमुख देखकर कोई इर्षावंत या मताभिमानी मनुष्य कठोर वचन कहे-निंदा करे--अछतो आल देवे--ठग पाखडी वनावे तो भी साधू समभावसे सहे (१३) "वध परिसह' --कोई मनुष्य कोपात्र होकर ताड़न कर वैठे तो भी मुनी सम भावसे सहे, (१४) "याचना परिसह"—औषधादिक री जरूर पड़नेसे याचना करनी पड़े तो " मैं मोटे घरका होकर कैसे

मे। परिमान न लावे साधुका तो निर्वाह याचनाधर है, (१५) "अलाभ परिसह" याचना करने पर भी इच्छित वस्तु न मिले तो खेद नहीं लाना (१६) "रोग परिसह" शरीरमें कोई प्रकारका रोग उत्पन्न होनेसे "हाय, हाय। आह, आह।" ऐसा न करे, (१७) "तृण फास परिसह" रोगसे दुर्बल हुवा शरीर ताप शीत वगैरा स्पर्श सहन न होने तब कुछ गाली तकीए तो मारके कामका आवहीं नहीं शाल (चावल) इत्यादिकका नरम पराल (घास) का बिछाना उपर शयन करे जब उसका स्पर्श शरीरको कठिन (करड़ा) लगे तो गृहस्थावासको न सभाले, (१८) "जल मेल परिसह"—मेल और परसीनेसे घबराया हुवा साधु स्नानकी अभीलाषा न करे, (१९) "सत्कार परिसह"— साधुका सत्कार वदना नमस्कार न करे तो

इससे साधुको बुरा न मानना चाहिये, (२०) "पन्ना परिसह"—साधुके पास ज्ञान ज्यादा होनेसे वहोत जणे सूत्रकी वाचना लेनेको आवे, कितनेक प्रश्न पूछनेके लिये आवे, तव कोचवाकर (कन्टाल कर) घवराकर ऐसा न चिन्तवे कि मैं मूर्ख रहता तो ऐसी तकलीफ नहीं पडती, (२१) " अन्नाण परिसह" वहुत परिश्रम उठाने पर भी ज्ञान न मिले तो खेदित नहीं होना चाहिये, अकेले ज्ञानसे मोक्ष नहीं है, ज्ञान और क्रिया दोनोंकी जरूरत है, (२२) " दंशण परिसह"—ज्ञान थोडा होनेसे जिन वचनमें शका आदि उत्पन्न हुवे तो समकितको दूषण (अनाचार) लगावे नहीं, परन्तु शास्त्र वचनपर पूर्ण श्रद्धा रक्खे ।

२२ परीसह (परीषह) विचार—गाथा पन्ना अन्नाण परीसह नाणावरणम्मिहू ति दोचेव

एकाश्र अनराए अलाभ परीसहोचेन, १ अगइ अचल ईरयी निसहीया जायणाय उकोसा सकार परीसहे एए चरित्तमोहम्मिसत्तेव दसण मोहे दसण परीसहो नियम सो हवइ एको सेसा परीसाहा खलु एकारस वेय-णिज्जम्मि, २ वावीस परीसह चारकर्म थी उपजे ज्ञानावरणी थी घे परीसह उपजे, तेहना नाम प्रज्ञा १ अज्ञान २ परीसह, वेदनी थी ११ परीसह ते केहा (किसा) क्षुधा १, तृषा २, शीत ३, उष्ण ४, डास मसा ५, चर्या ६, शिज्जा ७, वध ८, रोग ६, तृण स्पर्श १०, मल ११, मोहनी थी ८ [illegible] उपजे दर्शन मोहनी [illegible] प [illegible]

२० परीसह वेदै शीत अथवा उष्ण चालवो अथवा वैसवो केवलीने इग्यार परीसह होय तिणने एकै समय ६ वेदै शीत अथवा उष्ण चालवो तथा वैसवो वीयराग सयमे एकै समय १२ परिसह वेदे द्वाविंश तिरपि परीपहा वादर संपराय नाम्नि गुणस्थानके कोऽर्थोऽनिवृत्ति वादर सपराये नवम गुण-स्थान यावत् सर्वेपि परीपहा भवति चतुर्दश सरया एव क्षुतिपपासा शीतोष्ण दशमसक चर्य्या शय्या वधा लाभ रोग तृण स्पर्शमल प्रज्ञा अज्ञान परीसहा सूक्ष्म सपराये उदय मासादयतीति तथा आठकर्मनो वंधतेहनि २२ परिसह वीस एकै समय व ध छव्विहवंध सराग छद्मस्थने १४ परीसह उदय १२ नौ एकविहवंधक वीतराग छद्मस्थने १४ उदय १२ नौ एकविह व धक सयोगीनें ११ परीसह अयोगिनें ११ परीसह उदये

६ हाइ पर्यन्त् युग्म परीसहाभाव इति २२ परीषहाधिकार ।

२२ वाद २२ जणासु वाद न कीजे—१ धनवन्त सेती वाद न कीजे, २ बलवन्त सेती वाद न कीजे, ३ घणे परिवाररे धणीसु वाद न कीजे, ४ तपस्वीसु वाद न कीजे, ५ नीचसु वाद न कीजे, ६ अहकारीसु वाद न कीजे, ७ गुरासु वाद न कीजे, ८ थिवरसु वाद न कीजे, ६ चोरसु वाद न कीजे, १० जुवारीसु वाद न कीजे, ११ रोगीसु वाद न कीजे, १२ क्रोधीसु वाद न कीजे, १३ झुठबोले जिणसुं वाद न कीजे, १४ कुसंगतीसु वाद न कीजे, १५ राजा सेती वाद न कीजे, १६ शीतल लेश्यारे धणीसु वाद न कीजे, १७ तेजु लेश्यारे धणीसु वाद न कीजे, १८ मुख मीठा पेटे दगो तिणसु वाद न कीजे, १६ दानेसरीसुं वाद न

वार चितारे ता जीव वेगो मोक्ष जावे, ८ साधु साधवीरी भक्तिभाव रावे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, ६ तीन योगसे जैसे करणो कराक्णो अनुमोदनो यह नव कोटी शुद्र पच्चरकाण करे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, १० धर्मको सवन्ध साचो जाणे (सर्दहे) तो जीव वेगो मोक्ष जावे, ११ कषायका त्याग करे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, १२ क्षमा करे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, १३ लाग्या दोप का प्रायश्चित लेवे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, १४ लीये हुवे व्रत पच्चरकाण निर्मला पाले तो जीव वेगा मोक्ष जावे, १५ शुद्ध प्रणामसुं शील पाले तो जीव वेगो मोक्ष जावे, १६ च्यार तीर्थने साताउपजावे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, १७ निरवद्य भाषा वोले तो जीव वेगो मोक्ष

°– ाजम लेकर अत तक शुद्ध पाले

तो जीव वेगो मोक्ष जावे, १९ धर्मध्यान शुक्ल ध्यान ध्यावे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, २० महीनेमें छन पोसा करे तो जीव वेगो मोक्ष जावे २१ पाछली रात्रीरी धर्म जागरणा करे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, २२ उभय टक कालो प्रतिक्रमण करे, सामाइक करे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, २३ आलोयणा लेइ संथारो करी पंडित मरण हुवे तो जीव वेगो मोक्ष जावे ।

॥ चौवीसमा बोल ॥

॥ वर्तमान चौवीसी ॥

२४ तिर्थंकरांका नाम---१ श्री ऋषभदेवजी, २ श्री अजितनाथजी, ३ श्री सभवनाथजी, ४ श्री अभिनदनजी, ५ श्री सुमतिनाथजी, ६ श्री पद्मप्रभुजी, ७ श्री सुपार्श्वनाथजी, ८

श्री चन्द्रप्रभुजी, ९ श्री सुविधिनाथजी, १० श्री शीतलनाथजी ११ श्री श्रेयासजी, १२ श्री वासपूज्यजी, १३ श्री विमलनाथजी, १४ श्री अनन्तनाथजी, १५ श्री धर्मनाथजी, १६ श्री शातिनाथजी, १७ श्री कुंथुनाथजी, १८ श्री अरनाथजी, १९ श्री मल्लीनाथजी, २० श्री मुनि सुव्रतजी, २१ श्री नमिनाथजी, २२ श्री रिष्टनेमिनाथजी, २३ श्री पार्श्वनाथजी, २४ श्री महावीर स्वामीजी ।

२४ भगवती सूत्र शतक १८ उद्दे से नवमें बोल

२४—मनुष्य तिर्यंचमें बैठा थका नारकीमे जाणेवाले कु भन द्रव्य नेरीया कहीजै १, भव द्रव्य नारकीयारी (नेरियारी) स्थिति जघन्य अन्तर्मुहुर्तकी उत्कृष्टी कोड पूर्वकी मनुष्य तिर्यंचमें बैठा — देवतारो आउखो बांधे तिके भ — — ति कुमारादि १

वैमानीकरी स्थिति जघन्य अतर्मुहुर्त उत्कृष्टी ३ पल्यकी मनुष्य तिर्यंच देवतामें बैठा थका पृथ्वी १, पांणी २, वनस्पतीमे जाणेवालेकी स्थिति जघन्य अतर्मुहुर्त उत्कृष्टी २ सागर झाझेरी मनुष्यमे तिर्यंचमे बैठा थकां तेऊ १ वायु १ तीन विकलेन्द्रिमे जाणेवालारी स्थिति जघन्य अतर्मुहुर्त उत्कृष्टी कोडपूर्वकी च्यारु गतीमें बेठा थकां मनुष्य १ तिर्यंचमे जाणेवालेकी स्थिति जघन्य अतर्मुहुर्त उत्कृष्टी ३३ सागरकी।

२४ दंडकका बोल—साधु आर्याजीमें १ दंडक पावे, सरावगमे २ दंडक पावे, विकलेन्द्रिमे ३ दंडक पावे, सत्तमहताप्रृथ्वीयादिकमें ४ दंडक पावे, एकेन्द्रिमे ५ दंडक पावे, घ्राणेन्द्रिके अलद्धियेमें ६, चक्षु इन्द्रिके अलद्धियेमे ७, असन्नीयेमे ८, तिर्यंचमें ९, भवन पतीमें १० नपुंसकमें ११ तीरछेलोकमे

श्री चन्द्रप्रभुजी, ६ श्री सुविधिनाथजी, १० श्री शीतलनाथजी, ११ श्री श्रेयांसजी, १२ श्री वासपूज्यजी, १३ श्री विमलनाथजी, १४ श्री अनन्तनाथजी, १५ श्री धर्मनाथजी, १६ श्री शांतिनाथजी, १७ श्री कुंथुनाथजी १८ श्री अरनाथजी, १६ श्री मल्लीनाथजी, २० श्री मुनि सुव्रतजी, २१ श्री नमिनाथजी, २२ श्री रिष्ठनेमिनाथजी, २३ श्री पार्श्वनाथजी, २४ श्री महावीर स्वामीजी ।

२४ भगवती सूत्र शतक १६ उद्देसे नवमे बोल २४—मनुष्य तिर्यंचमें वैठा थका नारकीमें जाणेवाले कु भव द्रव्य नेरीया कहीजे १, भव द्रव्य नारकीयारी (नेरियारी) स्थिति जघन्य अंतर्मुहुर्तकी उत्कृष्टी कोड पूर्वकी मनुष्य तिर्यचमें वैठा थका देवतारो आउखो बांधे तिके भव द्रव्य देवकी स्थिति असुर-कुमारादि १० भवनपती, वाणव्यतर, जोतषी,

जोग ६ द्रव्यशुद्धि-भडउपगरणनिरविकार, १० क्षेत्र शुद्धि-चित्रामादिकरो मकान नहीं होवे अथवा राजादिकरो कोई काम नहीं हुवे, १२ भाव शुद्धि-शुद्ध श्रद्धा, १३ सामान्य-सम-भाव, १४ विशेष च्यार भेद-सूत्र सामायिक समकित सामायिक देशवृति सामायिक सर्ववृत्ति सामायिक १५ नाम निक्षेपाकरी किसी जीव अजीवरो नाम सामयिक देवे १६ स्थापना निक्षेपाकरी अक्षर लिख दीया--"सामायिक" अथवा पुतली रख दीवी १७ द्रव्य निक्षेपाकरी-सुन्यचित्त १८ भावनिक्षेपा उपयोग सहित १६ नेगमनय सामायिकरा भाव हुआ, २० सग्रह नय सामायिकरा भंड उपगरणका सग्रह किया, २१ व्यवहार नय सावद्य योगका त्याग करे २२ ऋजुसूत्र नय बत्तीस दोष टाले २३ शब्द नय आत्मा और जीवने मित्र पणेमाने २४ समभिरूढ नय

१२, देवतामें १३, नोगर्भजरे मनयोगीमे १४, पुरुषवेदमे १५, पचेन्द्रिमें १६, वैक्रीये शरीरमें १७, तेजुलेश्यामें १८, त्रसकायेमे १९, सत्यरे अलद्धियेमे २०, नीचे लोकमे २१, माठीलेश्यामे २२, पृथ्वी पाणी तेईसरी आगतमे २३, सिद्धारे अलद्धियेमे दडक २४, पावे ।

॥ पचीसमो बोल ॥

२५ में बोले सामायिकरा २५ भेद—१ द्रव्यथकी निकट भवी, २ क्षेत्रथकी त्रसनाडी, ३ कालथकी देसउणो अर्द्धपुद्गलीक, ४ भावथकी क्षय उपशम, ५ पुन द्रव्यथकी ५ आश्रवगत्याग ६ खेत्रथकी आखेलोकमें, ७ कालथकी इतर आवत्, ८ भावथकी करण-

जोग ६ द्रव्यशुद्धि-भडउपगरणनिरविकार, १० चेत्र शुद्धि-चित्रामादिकरो मकान नहीं होवे अथवा राजादिकरो कोई काम नहीं हुवे, १२ भाव शुद्धि-शुद्ध श्रद्धा, १३ सामान्य-समभाव, १४ विशेष च्यार भेद-सूत्र सामायिक समकित सामायिक देशवृति सामायिक सर्ववृत्ति सामायिक १५ नाम निचेपाकरी किसी जीव अजीवरो नाम सामयिक देवे १६ स्थापना निचेपाकरी अचर लिख दीया--"सामायिक" अथवा पुतली रख दीवी १७ द्रव्य निचेपाकरी-सुन्यचित्त १८ भावनिचेपा उपयोग सहित १६ नेगमनय सामायिकरा भाव हुआ, २० सग्रह नय सामायिकरा भंड उपगरणका सग्रह किया, २१ व्यवहार नय सावद्य योगका त्याग करे २२ ऋजुसूत्र नय बत्तीस दोष टाले २३ शब्द नय आत्मा और जीवने मित्र पणेमाने २४ समभिरूढ नय

श्रद्धा उपर आरुढ हो गया २५ एवंभूत नय-निज आत्मरुपकु सामायिक माने अन्य नहीं (अन्यने नहीं माने),

२५ वक्ता उपदेशकके गुण—१ दृढ श्रद्धावंत होवे क्योंकि जो आप पक्के श्रद्धावंत होगे वोही श्रोताकी श्रद्धाको निशंकितसे दृढ कर सकेंगे, २ वाचनाकलावंत हुवे किसी भी प्रकार के शास्त्रको पढते हुये जरा भी अटके नहीं शुद्धता और सरलतासे शास्त्र सुणावे, ३ निश्चय व्यवहारके जाण होवे जिस वक्त जैसी परषदा और जैसा अवसर देखे वैसा ही सद्बोध करे की जो श्रोता गुणधारण करे उनकी आत्मामें रुचे, ४ जिनाज्ञा भंगका डर होवे यथार्त् एक देशके राजाकी आज्ञाका भंग करनेसे सजा मिलती है तो त्रिलोकी नाथ तिर्थंकर भगवानकी आज्ञाका भंग करेगा उसका क्या हाल होवेगा ऐसा जाण

आज्ञाविरुद्ध विपरीत परुपणा न करे, ५ क्षमा वंत हुवे क्योंकि क्रोधी होवेगा वो अपणे दुर्गुणसे डरता क्षमादि धर्मको यथातथ्य परुपणा नही कर सकेगा और वक्तपर क्रोध उत्पन्न होवेगा रगमे भंग कर देवेगा इस लिये वक्ता क्षमावन चाहिये, ६ निराभिमानी अर्थात् विनयवानकी बुद्धि प्रबल रहती है वो यथातथ्य उपदेश कर सकते है और जो अभिमानी होता है वो सत्यासत्यका विचार नहीं करते अपने खोटी बातको भी अनेक कुहेतु करके सिद्ध करेंगे और दुसरेकी बात को भी उत्थापन करेंगे, ७ निष्कपटी होवेगा जो सरल होवेगा सोही यथातथ्य बात प्रकाशेगा कपटी तो अपणी दुर्गुण ढकनेके लिये बातको पलटावेगा ८, निर्लोभी होवे सो बेपरवाइ रहते हैं वो राजा रंक सबको एक सा सत्य उपदेश कर सकते हैं और

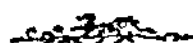
लोभी खुशामदी करनेवाले होते हैं वो श्रोताका मन दु खा जानके बातको फिरा देते है, ६ श्रोताके अभिप्रायका जाण होवे अर्थात् जो जो प्रश्न श्रोताके मनमें उठें उनकी मुखमुद्रासे जाण उनका आप ही समाधान कर देवे, १० धैर्यवत होए ,कोईभी बात धीरजसे श्रोताके समझमें आवे वैसी ही करै तथा प्रश्नका उत्तर श्रोताके समझमें बेठे ऐसा मधुरतासे थोड़ेमे देवे, ११ हटग्राही नहीं होने अर्थात् किसी प्रश्नका उत्तर आपको न आवो तो उसकी झुठी स्थापना नहीं करे नम्रतासे कहे कि मेरेको उत्तर नहीं आता हे मे किसी गुरुसे पूछकर निश्चय करूं गा १२ सद्गुणी-निद्यकर्मसे बचा हुवा होवे सो अर्थात् राजारी निश्वास-घात इत्यादि कर्म जिसने नहीं किये होवे वो के किसीसे दबना नहीं है, १३

कुलहीण नही होवे क्योंकि कुल हीणकी श्रोता मर्यादा नही रख सकते हैं, १४ अंग हीण न होवे क्योंकि अगहीण शोभता नहीं है १५ कुस्वरी न होए क्योंकि खोटे स्वरवाले का वचन सुहाता नहीं है १६ बुद्धिवंत होवे १७ मिष्टवचनी होवे, १८ कांतिवंत होवे, १६ समर्थ होवे उपदेश देता थके नहीं २० बहुत ग्रन्थ अवलोकन (देखे) हुए होय २१ अध्यात्म अर्थका जाण होवे, २२ शब्दका रहस्यका जाण होवे २३ अर्थ संकोचन विस्तार कर जाणे २४ अनेक युक्तियों, तर्कों का जाण होवे, २५ सर्वशुभ गुण युक्त होवे यह २५ गुण-युक्त होगा सोही असर कारक सद्उपदेश कर सकेंगे ।

में बोल—पाच महाव्रतकी पच्चीश भावना, पहिले महाव्रतकी पाच भावना---इर्याभावना १, मनभावना २, वचनभावना ३, एषणा-

भावना ४, अयाणभडमत निखेवणा भावना ५, दूजे महाव्रतरी पांच भावना, भुठ न बोले ६, क्रोध करी न बोले ७, लोभ करी न बोले ८, भय करी न बोले ६, हास करी न बोले १०, तीजे महा व्रतरी पाच भावना, अठारे प्रकारना थानक न भोगवे ११, तृण मात्र पण जाचीने लेवे १२, थानक घटारे मठारे नहीं १३, साधर्मीका वस्त्र आज्ञा विना लेवे नहीं १४, साधुरी वेयावच्च करे १५, चोथे महाव्रतरी पांच भावना, स्त्री पशु पिडगरहित थानक भोगवे १६, स्त्री की कथा न करे १७, स्त्रीका अंग उपाग न निरखे १८, पूर्वली क्रीडा भोग न सभारे (चितारे) १६, सरस आहार नित प्रते न करे २०, पाचमे महाव्रतरी पाच भावना, शब्द २१, रूप २२, गंध २३, रस २४, फरस २५, मनोगम उपर राग न करे अमनोगम उपरे द्वेष न करे ।

॥ २५॥ साढ़ा पचीस आर्य देश ॥



१ मगध देश राजगृहीनगरी १ कोड़ ६६ लाख ग्राम।

२ अग देश चपानगरी ५ लाख ग्राम।

३ वग देश तामलिप्तीनगरी १८ लाख ग्राम।

४ कलिग देश कचनपुर नगर २० लाख ग्राम।

५ काशी देश वाणारसी नगरी १ लाख ६० हजार ग्राम।

६ कोशल देश साकेत (अजोध्या) नगर ६६ हजार ग्राम।

७ कूरू देश गजपुर नगर (हथीणापुर) ८ लाख २३ हजार ४२५ ग्राम।

८ कूशार्त्त देश सौरीपुर नगर १ लाख ४३ हजार ग्राम।

९ पाचाल देश कपिलपुर नगर ३ लाख ६३ हजार ग्राम।

१० जंगल देश अहिच्छत्ता नगरी १ लाख ४५ हजार ग्राम।

११ सोरठ देश द्वारावती (द्वारका) नगरी ६ लाख ८० हजार ५२६ ग्राम।

१२ विदेह देश मिथिला नगरी ८ हजार ग्राम।

१३ वत्स (कच्छ) देश कोशंबी नगरी २८ हजार ग्राम।

१४ शाण्डिल्य देश नदीपुर नगरी २१ हजार ग्राम।

१५ मलय देश भाद्दिलपुर नगरी ७० हजार ग्राम।

१६ वच्छ देश वेराटपुरी (नगरी) २ लाख ८८ हजार ग्राम।

१७ वरण देश अच्छापुरी (नगरी) २४ हजार ग्राम।

१८ दशार्ण देश मृत्तिकावती नगरी १८ हजार ग्राम।

१९ चेदर्क (चेदी) देश शौक्तिकावती नगरी ४२ हजार ग्राम।

२० सिंधू देश वीतभय (पाटण) नगर ६ लाख ८० हजार ५०० ग्राम।

२१ सौवीर देश मथुरा नगरी ८ हजार ग्राम।

२२ सूरसेन देश पावा नगरी ३६ हजार ग्राम।

२३ भग देश मासपुरी नगरी ५२ हजार ४५० ग्राम।

२४ कुणाल देश सावत्थी नगरी ६३ हजार ग्राम।

२५ लाट देश कोटीवर्ष नगरी ७ लाख १३ हजार ग्राम।

२५॥ केकय (अर्द्ध केकेइ) अर्द्ध देश श्वेतविका नगरी १ लाख २८ हजार ग्राम आर्य्य
१ लाख २८ हजार ग्राम अनार्य्य
७ हजार ग्राम ख्यालसे।

ग्राम संख्या श्रीपनणाजी सुत्रके अर्थमे है।

॥ (साढापचीस) आर्य देश १, मगध देश राजगृह नगरी १ कोड ६६ लाख गाम २, अंगदेश चपानगरी ५, लाख गाम ३, वंग देश तामलीसी नगरी १८ लाख गाम ४, कलिग देश कचणपूर नगर २० लाख गाम ५, काशी देश वाणारसी नगरी १ लाख ६० हजार गाम ६, कोसल देश साकेत नगर (अयोध्या नगरी) ६६ हजार गाम ७, कुरू देश गजपुर नगर (हथीनापुर नगर) ८ लाख २३ तेवीस हजार ४२५ गाम ८, कुशार्त्त (कुशावर्त्त) देश सोरीपुरी नगर १ लाख ४३ हजार गाम ६, पचाल देश कपिलपुर नगर तीन लाख ६३ हजार गाम १०, जंगल देश अहिछत्ता नगरी ७ लाख ४५ हजार गाम ११, वत्थ (कछ) देश कोशंबी नगरी २८ हजार गाम १२, साडिल देश नंदीपुर नगरी २१ हजार गाम १३ मालय देश भद्दिलपुर

हजार पांचसो २६ गाम २५॥, कैकेई, अर्द्ध (केकेय) देश श्वेतविका नगरी १ लाख २६ हजार आर्य देश १ लाख २६ हजार अनार्य देश ७ हजार खालसे ।

॥ पाठन्तर ॥

अथ आर्य देश १ मगध देश राजगृही नगरी पूर्व देश प्रसिद्ध मुनिसुव्रत जन्म २ अगदेश चपा नगरी राजगृहीथकी पूर्वदेशे कोश ६० श्री वासुपूज्य पचकल्याणक वंगदेश तामलिप्ता नगरी सम्मेत शिखरथी दक्षिण दिशे उड़ीसा जगन्नाथपुरी पासे ४ कालिग देश कचणपुर नगरी हाजी पुर थी पूर्व दिशे ३० कोस, कोशलदेश अयोध्या नगरी खइरावादथी कोश ६० उत्तर दिशे इस समय आहिज प्रसिद्ध छे ६ कुरुदेश हस्तिनापुर नगर दिल्लीथी

नगरी ७० हजार गाम १४, वच्छ देश वेराट नगरी (वेराटदेश वच्छपुर) २ लाख ८८ हजार गाम १५, दशार्ण देश मृत्तिकावती नगरी १८ हजार गाम १६, वरण देश अत्थापुर नगरी चोवीस २४ हजार गाम १७, विदेह (वेदि) देश शौक्तिकावती नगरी ४२ हजार गाम १८, सिधू देश वीत भय पाटण (नगर) ६ लाख ८० हजार पाचसो गाम १६, सौवीर देश मथुरा नगरी ८ हजार गाम २०, विदेह देश मिथिल. नगरी ८ हजार गाम २१, सुरसेन देश पापा नगरी (पावापुरी) ३६ हजार गाम २२, भग देश मासपुर नगर ५२ हजार चार सो पचास गाम २३, लाट देश कोटोवर्ष नगरी (कादा वनी नगरी) ७० लाख १३ हजार गाम २४, कुणाल देश सावत्थी नगरी ६३ हजार गाम २५, सोरठ देश द्वारा नगरी ६८

हजार पांचसो २६ गाम २५॥, कैकेई, अर्द्ध (केकेय) देश श्वेतविका नगरी १ लाख २६ हजार आर्य देश १ लाख २६ हजार अनार्य देश ७ हजार ग्वालसे।

॥ पाठन्तर ॥

अथ आर्य देश १ मगध देश राजग्रही नगरी पूर्व देश प्रसिद्ध मुनिसुव्रत जन्म २ अंगदेश चंपा नगरी राजगृहीथकी पूर्वदेशे कोश ६० श्री वासुपूज्य पचकल्याणक वगदेश तामलिप्ता नगरी सम्मेत शिखरथी दक्षिण दिशे उड़ीसा जगन्नाथपुरी पासै ४ कालिंग देश कंचणपुर नगरी हाजी पुर थी पूर्व दिशे ३० कोस, कोशलदेश अयोध्या नगरी लखनऊथी कोश ६० उत्तर दिशे इस समय आहिज प्रसिद्ध छै ६ कुरुदेश हस्तिनापुर नगर दिल्ली,

कोस ४० इशानकुणें शाति कुंथु अरि जन्म कल्पाणक ७ कुशावर्त्त देश सोरीपुर नगर आगराहू ती कोश १८ अग्निकूणें नेमिजिन जन्मकल्पाणक ८ पचालदेश (पजाव) कांपिल्यपुर नगर आगराहू ती कोश ५० उत्तर दिशें श्री विमलनाथ जन्म ६ जगलदेश अहिछत्रा नगरी साभलि थकी कोस ४० उत्तर दिशी १० सोरठ देश द्वारिका नगरि गुजरात परे प्रसिद्ध ११ काशी देश वणारसी नगरी जुणपुरथी कोश १८ अग्निकुंणे १२ विदेह देश मिथिला नगरी हाजीपुरथी कोश ४० उत्तर दिशें गंगापार मल्लिनमि जन्म १३ वच्छ (वत्स) देश कोशबी नगरी जुणपुरथी कोस ५० पूर्व दिशें पद्म प्रभु जन्म १४ शांडिल्य देश नदिपुर झाड़ खड माहि १५ मलय देश भदिल पुर समेत शिखरथी कोश २५ उत्तर जन्म १६ वैराट देश वच्छपुर

सांभरपासे,१७ वरण देश अच्छापुर (अस्थापुर) १८ दशार्ण देश मृत्तिकावती नगरी गया थी २५ कोस १६ वेदीदेश श्रुक्ति नगरी हाजीपुरथी कोश ५० उत्तर दिसै २० सिंधु देश वीतभय पाटण जेसल मेरथी पश्चिम दिशे २१ सोवीर देश मथुरा, राजगृहो पासे २२ वगदेश पावापुरी राजगृही पासें २३ वर्त्त देश (भगदेश) मासपुर ४२ कुणाल देश सावथी नगरी खैरावादथी ६० कोस २५ लाट-देश कोडीवर्ष नगर उड़ीसा पासे २५॥ कैकेई देशार्द्ध श्वेतांविका नगरी चत्रीकुंडथी कोस ५० इति साडापच्चीस आर्य देश जाणना ॥

॥ छवीसमां बोल ॥

२६ प्रकारे दशाश्रुत स्कध, वृहत् कल्पने व्यवहारना अध्ययन—(१) दस दशाश्रुत

कधना, (२) छ बृहत् कल्पना, (३) दश व्यवहारना अध्ययन छे (१०—६—१०=२६)।

॥ सातावीसमां बोल ॥

० प्रकारे अणगारना गुण— (१) सर्व प्राणाति पातथी विराम, (निवर्ते) (२) सर्व मृषावाद थी विराम, (३) सर्व अदत्तादानथी विराम, (४) सर्व मैथुनथी विराम (५) सर्व परिग्रहथी विराम, (६) श्रोत्रेन्द्रिय निग्रह, (७) चक्षु र्येन्द्रिय निग्रह, (८) घ्राणेन्द्रिय निग्रह, (६) रसेन्द्रिय निग्रह, (१०) स्पर्शेन्द्रिय निग्रह, (११) क्रोध विजय, (१२) मान विजय, (१३) माया विजय, (१४) लोभविजय, (१५) भाव सत्य, (१६) करण सत्य, (१७) योग सत्य, (१८) वैराग्य (२०) मनसमा-

धारणता, (२१) वचन समाधारणता, (२२) काय समाधारणता, (२३) ज्ञान, (२४) दर्शन (२५) चारित्र, (२६) वेदना सहिष्णुता, (२७) मरण सहिष्णुता,

---

॥ पाठन्तर ॥

पंच महव्वय जुतो, पचिंद्रिय समरणो।
चउविह कषाय मुक्तो, तउसमाधारणीया ॥
तिउसच्च सपन्न तिउ, खती संवेगरउ।
वेयणामच्चु भयगय, साधुगुण सत्तवीस ॥

अर्थ—५ महाव्रत (पच्चीस भावना युक्त) शुद्ध निर्दोष पाले, ५ इन्द्रियो २३ विषयसे निवर्ते, ४ क्रोधादि कषायसे निवर्ते।
१५ 'मन समाधरणिया' पापसे मन निवर्ताके धर्म मार्गमें प्रवर्तावे, १६ 'वय समाधारणिया' निर्दोष कार्य उपने बोले १७ 'काय समाधर-

णिया' कायाकी चपलता रुंधे १८ 'भाव सच्चे' अंत करणके प्रणामकी धारा सदा निर्मल शुभ वर्धमान धर्मध्यान शुक्ल ध्यान युक्त रहे १६ 'करण सच्चे' करण सित्तरीके ७० गुण युक्त, तथा साधुको क्रिया करनेकी विधि शास्त्रमें फरमाइ है वैसी सदा योग्य वक्तमें करे, पिछलि प्रहर रात बाकी रहे तब जाग्रत होके आकाश दिशा प्रतिलेखे (देखे) कि किसी प्रकारकी असभाइ तो नहीं है ? जो निर्मल दिशा होय तो सास्त्रकी सज्झाय करे फिर असभाइकी (लाल दिशा) हो तब प्रतिकमण करे, सूर्योदय पीछे प्रतिलेहना करे, अर्थात् वस्त्रादिक सर्व उपकरणको देखें, फिर प्रहर दिन आवे वहा तक स्वाध्याय करे तथा श्रोतागणका योग्य होय तो धर्मो ... —व्याख्यान वाचे, फिर ध्यान करे अर्थकी चितावना करे, और जो

भिक्षाका काल हो तो गौचरी निमित्त जाकर शुद्ध आहार विधियुक्त लाकर आत्माको भाड़ा देवे, चौथे आरेमें तीसरा प्रहर भिक्षा के लिये जाते थे क्योंकि उस वक्त सबलोग एक ❋ ही वक्त भोजन करते थे और एक घर मे ३२ स्त्री और २८ पुरुष होते सो घर गिणतीमें था, इस लिये ६० मनुष्यका भोजन निपजाते सहज दो प्रहर, दिन आ जाता था. शास्त्रमें कहा है कि 'कालं काल समायरे,' अर्थात जिस क्षेत्रमें जो भिक्षा का काल होय, उस वक्त गौचरी जाय जो जलदी जाय अथवा देरसे जाय, तो बहुत घमना पड़े, इच्छित आहार न मिले, शरीर को किलामना उपजे, लोकोंमें निंदा होवे कि वक्त वे वक्त साधु क्यो फिरता है? तथा

❋ पहिले आरेमे ३ दिनके अंतरे, दूसरेमें २ दिनके अंतरे, तीसरेमें एक दिनके अंतरे, चौथेमे दिनमे एकवार होता थी।

स्वाध्याय ध्यानकी अंतराय पड़े इत्यादि दोष जाए कालोकाल भिक्षाके लिये जाय, फिर शास्त्रोक्त विधीसे आहार करे, फिर ध्यान करे, फिर चौथे प्रहर प्रति लेखन कर स्वाध्याय करे, असझाइकी वक्त देवसी प्रतिक्रमण करे असाझाइ निवर्तनेसे सझाय करे दूसरे प्रहर ध्यान करे, तिसरे प्रहर निद्रामुक्त होवे, ये दिनरात्रीकी साधूकी क्रिया श्री उत्तराध्ययन सूत्रके २६ वे अध्ययनमें कही है और भी अंतर विधि बहुत हे सो गुरू आम्नासे धारे)।

२० 'जोग सचे'—मन वचन कायाके योगकी सत्यता-सरलता रखे, योगाभ्यास-आत्म-साधन-सम दम उपसम इत्यादि, साधना की प्रति दिन वृद्धि करे।

'सपन्नतिउ'—साधु तीन वस्तु संपन्न है, नाण-दंशण सपन, चारित्र सपन्न।

२१ नाण संपन्न—मति, श्रुत, अंग उपांग पूर्वादिक जिस कालमें जितना ज्ञान हाजिर होवे, उतना उमग सहित अभ्यास करे, वांचना-पृच्छना-पर्यटना आदि करके, दृढ करे, अन्यको यथायोग्य ज्ञान दे वृद्धि करे।

२२ 'दंशण सपन्न'—१ कषाय, २ नोकषाय, ३ मोहनीय इत्यादि दोष रहित शुद्ध सम्यक्त्ववत होवे, देवादिक भी चलावे तो चले नहीं, शकादि दोष रहित निर्मल सम्यकत्व पाले।

२३ 'चारित्र संपन्न'—सामायिक-छेदोपस्थापनी-परिहार विशुद्ध सूक्ष्म समपराय-यथाख्यात ये पाच चरित्रयुक्त (इसकालमें पहिले ३ चारित्र हैं)।

२४ 'खती'—क्षमावन्त।

२५ 'संवेग'—सदा वैराग्यवन्त रहे।

कर जाय तथा पाडोसी जाग्रत होय तो मैथुन पचन खंडन पीसनादि अनेक क्रिया करे, १ रातको छाछ [मही] करना नहीं, २ लीपणा नही बुहारना (झाडना) नही भोजन (आहार) नहीं निपजाना ४ मार्गमे रातकुं (विनउपयोग) नहीं चलना ५ वस्त्र नहीं धोवना ६ स्नान नहीं करना ७ भोजन नही करना इतने काम रातको नहीं करना इनसे त्रस जीवकी घात और आत्महत्या होनेका कारण होता है ८ जगल, मैदान, खुली जागा मीलतां पायखानामे दिशा (टट्टी) नहीं जाना क्योंकि उसमें असरय छमोछम (चम्मुच्छन) मनुष्य पैदा होकर मरजाते हे ६ खाडेमाही फाटी जमीन ऊपर या तुस राखके ढगलेपर दिशा नहीं जाना उस में जीव मृत्यु पाते हैं, १० खुली जागा मीलता मोरीमें नालीमें पेशाब नहीं करना

श्लोक--'सरीर मनसीगन्तु, वेदना प्रभवाङ्क्वात्
स्वमे न्द्र जाल सङ्कल्पाद्धिति सवेग उच्यते॥

अर्थात् इस ससारमें शारीरिक और मानसिक वेदनासे अति ही पीडा हो रही है जिसको देखकर, और सर्व संयोग इन्द्रजाल और स्वप्नवत् जानकर, ससारमें डरना उसका नाम 'सवेग' है।

२६ 'वेदनी सम अहीया सणीयाए'—क्षुदादिक २२ परिसह उत्पन्न होवे तो सम प्रमाणसे सहन करे।

२७ 'मरणातिय सम- अहीया सणीयाये' मरणांतिक कष्टमें तथा मरणसे डरे नहीं परन्तु समाधि मरण करे ।

२७ सताइस बोलै करी त्रस कायकी हिसा टलै

१ प्रहर रात गये पीछे और दिनउगे पहिले जोरसे बोलना नहीं क्योंकि विसमरी जागकर मक्खी प्रमुख जीवोंका भक्षण

विना नही वापरना २० पाणीका जीवाणी जो जागाका पाणी होय उस जागाका पाणी सिवाय दूसरे सरोवरमें तथा विना पाणीके ठिकाणे नही नाखना २१ बने वहां तक हिंसक व्यापार जैसे दाणे धानका किराणेका मिल (गिरनी) विगेरह का नहीं करना २२ दूधका दहीका घीका तेलका रसका छाछका पांणी विगेरह पतले पदार्थ वस्तुके वर्त्तन खुला नहीं राखना २३ दीवा पिलसोट चूला खुला नहीं राखना २४ सडेहुये धानको पांणीमें धोणा नहीं २५ बोर भाजी भूट्टे प्रमुख जोजो त्रस जीवकी वस्तु नजर आवे सो नहीं खाना २६ गायादिकके वाडेमें तथा जिहां मच्छरादिके जीवोंकी उत्पत्ति होवे वहा धूवा नहीं करना २७ जूतेमें नाल खीले लगाना नहीं और पहले लगेहुये होवे वो नहीं पहरना उपयोग रखकर हिंसा टालना।

तथा स्नान नहीं करना ११ देखे बिना धोबीको कपड़ा धोणे नहीं देना १२ खाट पिलगको पाणीमें नहीं डुबाना तथा ऊपर गरम गरम पाणी नहीं डालना १३ दीवाली प्रमुख पर्वको जो घरमें खटमलादिक जीव होय तो लीपणा छापणा नहीं करना १४ सड़ा धान सड़ी हुई कोई भी वस्तुको धूप (तड़के) मे नहीं धरना, १५ आटा दाल शाग लकड़ी छाणा घड़ी ऊखल वर्तन इत्यादि कोई वस्तु देखे विना वापरनी नहीं १६ आटा दाल शाग गौबर वगैरे वहुत दिन तक संग्रह करके नहीं रखना १७ चोमासेके कालमे घरमे वरतनादि सुकमाल सणकी तथा ऊनकी पूजणीसे पूजे विन नहीं वापरना क्योंकि कुथूवादिक जीव वहुत पैदा होते हैं १८ चूना पलीन्दा घड़ी ऊखलादि चदरवा ( ) विन नहीं राखना १९ पाणी आंण

वीश दिवस, (२४) चार मासने पचीस दिवस (२५) पाच मास, ए पचीस उपघातिक छे, (२६) अनुघातिकरोपण, (२७) कृत्स्न (सपूर्ण) (२८) अकृत्स्न (असपूर्ण)।

॥ उनतीसमो बोल ॥

६ प्रकारे पापसूत्र—१ भूमिकप शास्त्र, (२) उत्पात शास्त्र, (३) स्वप्न शास्त्र, (४) अन्तरिक्ष शास्त्र, (जेमा आकाशना चिन्हो समाय छे), (५) अग फरकवानां शास्त्र, (६) स्वर शास्त्र, (७) व्यंजन शास्त्र, (मिसा, तिल वगेरे समाय छे) (८) लक्षण शास्त्र ए आठ सूत्रथी आठ वृत्तिथीने आठ वार्तिकथी कुल चौविश, (२५) विकथा अनुयोग, (२६) विधा अनुयोग, (२७) मत्र अनुयोग, (२८)

॥ अठाइसमो बोल ॥

२८ प्रकारे आचार कल्प—(१) मास प्रायश्चित (२) मासने पांच दिवस, (३) मासने दश दिवस, (४) मासने पन्नर दिवस, (५) मासने वीश दिवस, (६) मासने पचीस दिवस, (७) बे मास, (८) बे मासने पाच दिवस, (९) बे मासने दश दिवस, (१०) बे मासने पन्नर दिवस, (११) बे मासने वीश दिवस, (१२) बे मासने पचीस दिवस, (१३) त्रण मास, (१४) त्रण मासने पाच दिवस, (१५) त्रण मासने दश दिवस, (१६) त्रण मासने पन्नर दिवस, (१७) त्रण मासने वीश दिवस, (१८) त्रण मासने पचीस दिवस, (१९) चार मास, (२०) चार मासने पाच दिवस, (२१) चार मासने दश दिवस, (२२) चार मासने पन्नर दिवस, (२३) चार मासने

योग अनुयोग, (२६) अन्य तीर्थिक प्रवृत्त अनुयोग ।

॥ तीसमा बोल ॥

३० तीस बोल करी जीव महा मोहनी कर्म बाधे, त्रस जीवने पाणी माहि डबोयने मारे तो जीव महा मोहनी कर्म बाधे १, मुख भिंचीने (वाधी) गला घोटीने (सास रोकीने) मारे तो जीव महा मोहनी कर्म बाधे २, अग्निमें प्रज्वालि धुवामे घोटीने मारे तो जीव महा मोहनी कर्म बाधे ३, माथे घाव घालीने मारे तो जीव महा मोहनी कर्म बाधे ४, आला चावडासे बाधीने धुप तावडामे बेठाइने मारे तो जीव महा मोहनी कर्म बाधे ५, गेहला गूगाने मारीने हसे तो महा मोहनी कर्म बाधे ६, अणाचार सेवीने गोपवे तो महा मोहनी

कर्म बांधे ७, आपणो सेव्यो पाप पारके माथे डाले तो महा मोहनी कर्म बाधे ८, भरी पर्षदा में मिश्र भाषा बोले तो महा मोहनी कर्म वाधे ९, राजाका बुरा चिंतवे राजमे धन आवता रोके राजारी राणीने भोगवे तो महा मोहनी कर्म वाधे १०, वाल-ब्रह्मचारी नहीं वाल ब्रह्मचारी कहावे (कवावे) तो महा मोहनी कर्म वाधे ११, ब्रह्मचारी नहीं और ब्रह्मचारी कहावे तो महा मोहनी कर्म बाधे १२, गुमास्तो साह (सेठ) रो बुरो चिनवे सेठ रो धन उडावे, खडावे साहकी स्त्रीने भोगवेतो महा मोहनी कर्म बाधे १३, पचानु बुरा चितवे तो महा मोहनी कर्म बाधे १४, चाकर ठाकुरने, प्रधान राजाने, स्त्री भरतारने मारे सापण आपणे इन्डाने गले तो महा मोहनी कर्म बांधे १५, पृथ्वीपति राजाकी घात चितवे तो महा मोहनी कर्म बाधे

१६, एक देशरा राजा तथा साध साधवीकी घात चितवे तो महा मोहनी कर्म बांधे धर्मि पुरुपने धर्म करता डिगावे तो महा मोहनी कर्म बांधे १८, तिर्थंकर देवके अवगुण वाद बोले तो महा मोहनी कर्म बांधे १६, चतुर्विध सघका अवर्णवाद बोले तो महा मोहनी कर्म बांधे २०, आचार्य उपाध्यायजीका अवर्णवाद बोले तो महा मोहनी कर्म बांधे २१, आचार्य उपाध्याय-जीको सामनो करे तो महा मोहनी कर्म बांधे २२, बहु सूत्री नहीं अरु बहुसूत्री कहावे तो महा मोहनी कर्म बांधे २३, तपस्वी नहीं तपस्वी कहावे तो महा मोहनी कर्म [illegible] रोगी गीलाण [illegible] वेयाव[illegible]

कर्म बांधे २७ देवताके मनुपके अछते काम भोगकी यछा करे तो महा मोहनी कर्म बाधे २८, ब्रह्मचर्य पाली तपस्या करी आलोइ निन्दि देवता थया छे तेहनी जो निन्दा करे तो महा मोहनी कर्म बाधे २६, देवता आवे नही अरु कहे म्हारे पास देवता आवे छे इम कहे तो महा मोहनी कर्म बांधे ३०।-

---

पाठन्तर।

त्रीस प्रकारे मोहनीयना स्थानक—(१) स्त्री, पुरुष, नपुंसकने अथवा कोई त्रस प्राणीने जलमा पेसारीने जलरूप शस्त्र करीने मारे ते महामोहनीय कर्म बाधे।

२, हाथे करी प्राणीना मुख प्रमुख बांधी, श्वास रुंधी जीवने मारे तो महामोहनीय कर्म बाधे।

१६, एक देशरा राजा तथा साध साधवीकी घात चितवे तो महा मोहनी कर्म वाधे धर्मि पुरुपने धर्म करता डिगावे तो महा मोहनी कर्म वाधे १८, तिर्थंकर देवके अवगुण वाद बोले तो महा मोहनी कर्म वाधे १६, चतुर्विध सघका अवर्णवाद बोले तो महा मोहनी कर्म वाधे २०, आचार्य उपाध्यायजीका अवर्णवाद बोले तो महा मोहनी कर्म बाधे २१, आचार्य उपाध्याय-जीको सामनो करे तो महा मोहनी कर्म वांधे २२, बहु सूत्री नहीं अरु बहुसूत्री कहावे तो महा मोहनी कर्म वाधे २३, तपस्वी नहीं तपसी कहावे तो महा मोहनी कर्म वाधे २४, रोगी गीलाणकी छत्ती शकती वेयावच्च न करे तो महा मोहनी कर्म वाधे २५, टोला मांहि भेद पाडे तो महा मोहनी कर्म वाधे २६, हिंस्याकारी शास्त्र परुपे तो महा मोहनी

८, पोते अनेक चोरी बालघात (अन्याय) प्रमुख कर्म कीधां होय, ते दोष निर्दोषी पुरुष उपर नाखे, तथा यशस्वीनो यश घटाडवा माटे अछता आल आपे तो महामोहनीय कर्म बांधे।

९- परने रुडुं मनाववा माटे द्रव्य भाव थी झगड़ा (कलेश) वधारवा माटे, जाण तो थको सभा मध्ये सत्य मृषा (मिश्र) भाषा बोले, तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

१०, राजनो भंडारी प्रमुख ते, राजा 'प्रधान' तथा समर्थ कोई पुरुषनी लक्ष्मी प्रमुख लेवा चाहे, तथा तेनी स्त्री विणसाडे, तथा तेना रागी पुरुषोनां मन फेरवे, तथा राजने राज्य कर्तव्यथी बहार करे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

११, स्त्रीओने विषे गृद्ध थई परणया छतां कुमारपणानुं (हुं कुंवारो छुं) विरुद (नाम) धरावे तो महामोहनीय कर्म बांधे।

३, अग्नि प्रजली, वाडादिकमा प्राणी रोकी धूमाडे करी, आकुल व्याकुल करी मारे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

४, उत्तमाग जे मस्तक तेने खडगादिके करी भेदे छेदे-फाडे तो महामोहनीय कर्म बांधे।

५, चामडा प्रमुखनी वाधरीए करी मस्तकादिक शरीरने ताणी बांधी वारवार अशुभ परिणामे करी कदर्थना करे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

६ विश्वासकारी वेष करी-मार्ग प्रमुखने विषे जीवने हणे-ते लोकमा उपहास्य थाय तेवी रीते तथा पोते कर्तव्य करी आनद माने ते महामोहनीय कर्म बांधे ।

७, कपटे करी पोतानो दुष्ट आचार गोपवे तथा पोतानी मायाए करी अन्यने पण पाश (फास) मा नाखे, तथा शुद्ध सूत्रार्थ गोपवे ता

य कर्म बांधे ।

८, पोते अनेक चोरी बालघात (अन्याय) प्रमुख कर्म कीधा होय, ते दोष निर्दोषी पुरुष उपर नाखे, तथा यशस्वीनो यश पाडवा माटे अछता आल आपे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

९ परने रुडुं मनाववा माटे द्रव्य भाव थी झगड़ा (कलेश) वधारवा माटे, जाण तो थको सभा मध्ये सत्य मृषा (मिश्र) भाषा बोले, तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

१०, राजनो भंडारी प्रमुख ते, राजा 'प्रधान' तथा समर्थ कोई पुरुषनी लक्ष्मी प्रमुख लेवा चाहे, तथा तेनी स्त्री विणसाडे, तथा तेना रागी पुरुषोनां मन फेरवे, तथा राजने राज्य कर्तव्यथी वहार करे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

११, स्त्रीओने विषे गृद्ध थई परण्या छतां कुमारपणानुं (हुं कुंवारो छुं) विरुद (नाम) धरावे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

१२ गायोनी मध्ये गर्दभ माफिक स्त्रीना विषय विषे गृद्धथको आत्मानु अहित करनार मायामृषा बोले, अब्रह्मचारी छता ब्रह्मचारीनुं बिरुद धरावे तो महामोहनीय कर्म बांधे (लोकमा धर्मनो अविश्वास थाय, धर्मी उपर प्रतीत न रहे, ते माटे)।

१३, जेनी निश्राए आजुविका करे छे तेनी लक्ष्मीने विषे लुब्ध थई तेनी लक्ष्मी लूंटे तथा पर पासे लूंटावे तो महामोहनीय कर्म बांधे "चिलाती चोरवत्"।

१४, जेणे दारिद्र पणुं (निर्धनपणुं) मटाडी मापदार (होदादार) कर्यो, ते महर्द्धिकपणु पाम्या पछी, इर्ष्यादोषे करी, कलुषित चित्ते करी, ते उपकारी पुरुषने विपत्ति आपे तथा धन प्रमुख आववानी अंतराय पाडे तो महा मोहनीय कर्म बांधे।

१५ पोतानु भरणपोषण करनार राजा प्रधान प्रमुखने तथा ज्ञान प्रमुखना अभ्यास करावनार गुर्वादिने हणे तो महामोहनीय कर्म बांधे (सर्पणी जेम इंडाने हणे तेम)।

१६ देशनो राजा तथा वाणीयाना वृंदनो प्रवर्त्तावक (व्यवहारियो) तथा नगरशेठ ए त्रण घणा यशना धणी छे, तेने हणे तो महामोहनीय कर्म बांधे।

१७ जे घणा जणने आधारभूत (समुद्रमां द्वीप समान) छे तेमने हणे तो महामोहनीय कर्म बांधे।

१८; संयम लेवा सावधान थयो छे तेने, तथा संयम लीधेलो छे तेने, धर्मथी भ्रष्ट करे तो महामोहनीय कर्म बांधे।

१९, अनंत ज्ञानी तथा अनंतदर्शी ऐवा तीर्थंकर देवना अवर्णवाद बोले तो महामोहनीय कर्म बांधे।

२०, तीर्थंकर देवना प्ररुपित न्याय मार्गनो द्वेषी थई अवर्णवाद बोले, निंदा करे अने शुद्ध मार्ग थी लोकोना मन फेरवे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

२१, आचार्य उपाध्याय जे सूत्र प्रमुख शिखवे छे, भणावे छे तेवा पुरुषने हीले निंदे, खींसे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

२२, आचार्य उपाध्यायने साचे मने आराधे नहीं, तथा अहंकार थको भक्ति न करे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

२३, अवहुश्रुत (अल्पसूत्री) थको शास्त्रे-करी पोतानी श्लाघा करे तथा स्वाध्यायनो वाद करे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

२४, अतपस्वी थको तपस्वीनु बिरुध (नाम) धरावे (लोकोने छेतरवा माटे) तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

२५, उपकारने अर्थे गुर्वादिनो तथा स्थाविर ग्लान प्रमुखनो छती शक्तिये विनय वेयावच्च न करे (कहे जे म्हारी सेवा ऐणे पूर्वे करी नहोती ऐम ते धूर्त मायावी मलिन चित्तनो धणी पोताना बोध बीजनो नाश करनार अनुकंपारहित होय) तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

२६, चार तीर्थनो भेद करे ऐवी कथा वार्त्ता प्रमुख (कलेशरूप शास्त्रादिक) नो प्रयोग करे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

२७, पोतानी श्लाधा वधारवा तथा बीजा साथे मित्रता करवा अधर्मयोग ऐवा वशीकरण निमित्त मत्र प्रमुख प्रयोजे, तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

२८, जे कोई मनुष्य सबधी भोग तथा देव सबंधी भोगने अतृप्तपणे गाढे परिणामथी आशक्त थई आस्वादन करे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

२६, महर्द्धिक महाज्योतिवान् महायशस्वी देवोना बल वीर्य प्रमुखनो अवर्णवाद बोले तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

३०, अज्ञानी थको लोकमा पूजा (श्लाघा) नो अर्थी वैमानिक व्यंतर प्रमुख देवने नहीं देखनो थको कहे जे हुं देखुं छु, तेदुं कहे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

२७ बोल तपस्या फलका पचगुणो फल १ (एक) उपवासे एक (उपवास) नो फल २ (दोय) उपवासे पाच (उपवास) नो फल ३ (तेलानो) पचीसनो फल ४ (चोलानो) एकसो पचीस (उपवास) नो फल ५ (पाच) नो छव से पचवीसनो फल, ६ (छव) नो इकतीससें पचीसनो फल ७ (सात) नो बनरे सहस्र (हजार) छव से पचीसनो फल ८ (आठ) नो अट्ठोतर सहस्र एक सो पचीसनो फल ९ (नव) उपवासे तीन लाख नेव

॥ शुद्धि पत्र ॥

३० बोल तपस्याका फलका ।

१४ उपवासे १३२ क्रोड ७ लाख ३१२५ उपवासरो फल जाणजो ।

१७ उपवासे- १५ हजार क्रोड २५८ क्रोड ७८ लाख ६० हजार ६२५ उपवासरो फल जाणजो ।

१८ उपवासे ७६ हजार क्रोड २६३ क्रोड ६४ लाख ५३ हजार १२५ उपवासरो फल जाणजो ।

२० उपवासे—१६ लाख ७ हजार ३४८ क्रोड ६३ लाख २८ हजार १२५ उपवासरो फल जाणजो ।

२२ उपवासे---४ कोडाक्रोड ७६ लाख क्रोड ८३ हजार क्रोड ७१५ क्रोड ८२ लाख ३१२५ उपवासरो फल जाणजो ।

२४ उपवासे---११६ कोडाकोड २० लाख

उनतीस बोल सह द्वितीय भाग । (२३८ B)

क्रोड ६२ हजार क्रोड ८६५ क्रोड ५० लाख ७८ हजार १२५ उपवासरो फल जाणजो ।

२८ उपवासे—७४ हजार क्रोडाक्रोड ५०५ क्रोडाक्रोड ८० लाख क्रोड ५६ हजार क्रोड ६६२ क्रोड ३८ लाख २८ हजार १२५ उपवासरा फल जाणजो ।

३० उपवासे (यानें मास ग्यामणरी तपस्या)--१८ लाख क्रोडाक्रोड ६२ हजार क्रोडाक्रोड ६४५ क्रोडाक्रोड १४ लाख क्रोड ६२ हजार क्रोड ३०६ क्रोड़ ६७ लाख ३ हजार १२५ (१८६२६४५१४६२३०६६७३१२५) उपवासरो फल जाणजो ।

पचीस नो फल १० (दश) उपवासे उग-
णीस लाख त्रे पन सहस्र एकसो पचवीसनो
फल ११ (इग्यारे) उपवासे सताणुं लाख
पैसट्ठ सहस्र छवसें पचवीसनो फल १२
(वारे) उपवासे चार कोड अठासी लाख
अठावीस सहस्र एकसो पचीसनो फल
१३ (तेरे) उपवासे चोवीसक्रोड एकतालीस
लाख चालीस सहस्र छवसे पचवीसनो फल
१४ (चवदे) उपवासे एकसो वावीस कोड
सतरे लाख इकतीससो पचीस नो फल १५
(पनरे) उपवासे छवसो दश कोड पैत्रीस
लाख पनरे सहस्र छवसो पचवीसनो फल
१६ (सोले) उपवासे त्रिण सहस्र कोड
एकावन कोडि पचोहत्तर लाख ७८ हजार
१२५ नो फल १७ (सतरे) उपवासे पनरे
सहस्र कोड वे सें कोड अट्ठावन कोड ७८
लाख ६० हजार छवसेंनो फल १८ (अट्ठारे)

उपवासे ल्योयतर सहस्र कोड दोयसो कोड त्रिण कोड चोणाणु लाख त्रेपन हजार एक सो पचवीसनो फल १६ (उगणीस) उपवासे तीन लाख कोड इग्यासी सहस्र कोड चार सें कोड गुणतरकोड बहोतर लाख पैसट्ट सहस्र छवसें पचवीसनो फल २० (वीस) उपवास उगणसट्ठ लाप सात सहस्र त्रिणसें अडतालीस कोडि तेसट्ठ लाख अठावीस सहस्र एकसो पचवीसनो फल २१ (इकवीस) उपवास पचाणु लाख कोडि छतीस सहस्र कोडि सात से कोडि तयालीस कोड सोले लाख चालीस हजार (सहस्र) छव सें पचीसनो फल २२ (बावीस) उपवासे चार कोडाकोड बहोतर लाख कोड त्रयासी सहस्र कोड सातसें कोड पनरे कोड चयासी लाप एकतीससें पचवीस चास (उपवास) नो फल २० [illegible] उपवासे

तेवीसे कोडाकोड चोरासी लाख कोड अट्ठारे सहस्र कोड पाचसे कोड उगणयासी कोड दश लाख पन्नरे सहस्र ऋवसे पचवीसनो फल २४ (चोवीस) उपवासे एक सो उगणीस कोडाकोड वीस लाख कोड बाणुसहस्र कोड आट्ठसे कोड पचाणु कोड पचीस लाप अट्ठोतर सहस्र एकसो पचवीसनो फल २५ (पचीस) उपवास पाच सो त्रिन्नु कोडाकोड चार लाख चोसठ सहस्र कोड च्यारसे कोड सतोतर कोड त्रे पन लाख नेउ सहस्र ऋसे पचवीसनो फल २६ (छावीस) उपवासे गुणत्रीतसें असीकोडाकोड नेवीस लाप कोड बावीस सहस्र कोड त्रिणसें कोडि सत्यासी कोड उगणोत्तर लाख त्रे पन सहस्र एकसो पचवीसनो फल २७ (सतावीस) उपवासे चवदे सहस्र नवसे एक कोडा कोड सोले लाप कोड इग्यारे सहस्र कोड नवसे कोट अड्तीस

कोट सेंतालीस लाख पैसट्ठ सहस्त्र छवसें पचवीसनो फल २८ (अट्ठाइस) उपवासे बहोत्तर सहस्त्र पाच सें पाच कोडाकोड असी लाख कोड उगणसट्ठ सहस्त्र कोड छव कोड बाणुकोड अड़तीस लाख अट्ठावीस सहस्त्र एकसो पचवीसनोफल २६ (उगणतीस) उपवासे तीन लाख बहोतर हजार पाचसें उगणतीस कोडाकोड दोय लाख कोड अट्ठाए सहस्त्र कोड च्यारसें कोड इकसट्ठ कोड एकाए लाख चालीस हजार छवसें पचवीसनो फल ३० (तीस) उपवासे अट्ठारे लाख कोडाको बासट्ठ सहस्त्र कोडाकोड छवसें कोडाको पैतालीस कोडाकोड चउदे लाख कोड बाणु सहस्त्र कोड तीनसें कोड सतानु लाख तीन सहस्त्र एकसो पचवीसनो फल । इति तपस्या पचगुणा फल

॥ एकतीसमो बोल ॥

३१ प्रकारे सिद्धना आदि गुण—आठ कर्मनी एकत्रिश प्रकृतिनो विजय ते एकत्रिश गुण, ते एकत्रिश प्रकृति नीचे मुजब.—

१ ज्ञानावरणीय कर्मनी पांच प्रकृति—१ मति ज्ञानावरनीय, २ श्रुत ज्ञानावरनीय, ३ अवधि ज्ञानावरनीय, ४ मन.पर्यव ज्ञानावरनीय, ५ केवल ज्ञानावरनीय ।

२ दर्शनावरनीय कर्मनी नव प्रकृति—१ निद्रा, २ निद्रानिद्रा, ३ प्रचला, ४ प्रचला प्रचला, ५ थीणद्धी (स्त्यानर्द्धि), ६ चक्षू दर्शनावरनीय, ७ अचक्षु दर्शनावरनीय, ८ अवधि दर्शनावरनीय, ९ केवल दर्शनावरनीय ।

३ वेदनीय कर्मनी बे प्रकृति—१ शाता वेदनीय, २ अशाता वेदनीय ।

४ मोहनीय कर्मनी बे प्रकृति—१ दर्शन मो-

हनीय, २ चारित्र मोहनीय ।

५ आयुष्य कर्मनी चार प्रकृति—१ नरक आयुष्य, २ तिर्यंच आयुष्य, ३ मनुष्य आयुष्य, ४ देव आयुष्य ।

६ नाम कर्मनी बे प्रकृति—१ शुभ नाम, २ अशुभ नाम ।

७ गोत्र कर्मनी बे प्रकृति—१ उच्च गोत्र, २ नीच गोत्र ।

८ अन्तराय कर्मनी पाच प्रकृति—१ दानातराय २-लाभातराय, ३ भोगातराय, ४ उपभोगातराय ५ वीर्यांतराय ।

॥ बत्तीसमो बोल ॥

साधुजीकी ३२ ओपमा।

३२—१ "कासी पत्र इव "-जैसे कांसीके कटोरेमे पाणी भेदाय नहीं, तैसे मुनी मोह

मायासे भेदाय नही, २ 'शख इव' जैसे श
रंगाय नही, त्यो मुनी स्नेहसे रंगाय नहं
३ 'जीव गई इव' जैसे जीव परभवमें जा
उसकी गतिका कोई भंग कर सके नही, तै
मुनी अप्रतिवध विहारी होते हैं, ४ 'सुवर्ण इ
जैसे सोनेको काट (कीट) लगे नही, तैसे साधु
पाप रूप काट लगे नहीं, ५ 'भिंग इव' जै
आरीसे (काच) मे रूप देखाय, तैसे सा
ज्ञान करके निज आत्मरूप देखे, ६ 'कुम्भ
(काछवा) इव' जैसे किसी वनके सरोवर
वहुत काछवे रहते थे, वो आहार करनेको बाहिर
आते तव वनवासी वहुत जम्बुक (सियाल)
उनको भक्ष करने आते थे तव कितनेक काछवे
तो ढाल नीचे अपने पाच ही अंग (चार पग
पाचमा सिर) दवा लेते थे, जो होशियार थे वो
सर्व रात्रि अपनी ढालके नीचे स्थिर रहते
थे, और कितनेक पाच अंगमें एक बाहिर

निकालके देखने को जबुक गये थया ? उतनेमें ही वो छिपे हुवे पापी सियाल उसका अंग तोड़ उसे मार खा जाते थे, और जो स्थिर रहते वो दिन उदय भये सियाल गये पीछे, अपने ठिकाणे—सरोवरमें जाकर सुखी होते थे इसी तरह साधु पाच इंद्रीको ज्ञान रूपी ढाल नीचे, जीवे वहा तक ढाब रखे, शब्दादि भोगरूप सियालके तानेमें नहीं पडे, और आयुष्य पूर्ण करके मोक्ष रूप सरोवर प्राप्त करे, ७ 'पद्मकमल इव' जैसे पद्म कमल कीचड़में उत्पन्न हो, जलमें वृद्धि पाकर पीछा पाणीसे लेपाय नहीं, तैसे साधु संसारमें पैदा होते हैं परन्तु संसारके भोगोका त्याग किये पीछे संसारके भोगमें लिपाय नहीं, ८ 'गगणइव' जैसे आकाशको स्थभ नहीं, निराधार ठेहरा है, तैसे साधु किसीका आश्रय इच्छे नहीं, ९ 'वायुइव' हवा एक ठिकाणे रहे नहीं, फिरती रहती है तैसे साधु

भी सदा फिरते रहे, १० 'चन्द्रइव' चन्द्रमा जैसे सदा निर्मल हृदयके धरणहार और शीतल स्वभावी होवे ११ 'आइचइव' जैसे सूर्य्य अन्धकारका नाश करे तैसे साधु मिथ्याधकारका नाश करे, १२ 'समुद्रइव' जैसे समुद्रमें अनेक नदियोंका पाणी जाता है तोभी झलकता नहीं है, तैसे साधु, सबके शुभाशुभ वचन सहे, परन्तु कोप नहीं करे, १३ 'भारन्ड इव' भारन्ड पक्षीके दो मुख और तीन पग होते हैं, वो सदा आकाशमें रहता है, फक्त आहार निमित्त पृथ्वीपर आता है, तब पांखा फैलाकर बैठता है, और एक मुखसे चारोंही तरफ देखता है, कि कही मुझे किसी तरफसे उपसर्ग न हो जाय। और दूसरे मुखसे आहार करता है थोड़ी भी शका पड़नेसे तत्काल उड जाता है, तैसेही साधु सदा सयममें रहे, फक्त आहार प्रमुख निमित्त गृहस्थके घरको जावे,

नव द्रव्य दृष्टी तो आहारके सन्मुख रखे, और अन्तर दृष्टीसे अवलोकन करता रहे कि, मुझे किसी प्रकारका दोष न लग जाय, जो किञ्चित् ही दोष लगने जैसा देखे तो तत्क्षण वहासे चले जावे, १४ 'मदरइव' जैसे मेरूपर्वत हवासे कपायमान न होवे तैसे साधु परिसह उपसर्गसे चलायमान न होवे, १५ 'तोय इव' जैसे शरद ऋतुका पाणी निर्मल रहे तैसे साधुका हृदय सदा निर्मल रहे, १६ 'खडगीहत्थि इव' जैसे गेंडा हाथीके (गेन्डेके) एकही सिंग रहता है. उससे वो सबका पराजय कर सक्ता है, तैसे साधु एक निश्चय नयमें स्थिर हो कर सर्व कर्म शत्रुओंको पराजय करते हैं, १७ 'गंधहत्थि इव' जैसे गध हस्तीको संग्राममें ज्यों ज्यो भालेका प्रहार लगता है, त्यो त्यो जास्ती जास्ती सूरा हो कर शत्रु को पराजय करता है, तैसे साधु पर ज्यो ज्यो परिसह पड़े, त्यों त्यों ज्यादा

जादा सूरा होकर कर्म शत्रु का पराजय करे, १८ 'वृषभ इव' जैसे मारवाडका धोरी बल, लिया हुवा भार प्राण जाते भी बीचमें डाले नही तैसे साधु पांच महाव्रत रूप महा भार प्राण जाते भी जीव वहा तक फेके नहीं १६ 'सिह इव' जैसे केशरी सिंह किसी पशुका डराया डरे नहीं, तैसे साधु किसी पापडियोसे चलायमान होवे नहीं, २० 'पृथ्वी इव' जैसे पृथ्वी शीत, उष्ण, अच्छा बुरा सब समभाव सहन करे तथा पूजनेवाले और खोदनेवालेकी तर्फ समभाव रखे, तसे साधु शत्रु मित्र पर समभाव रखे निंदक वंदनीकको एकसा उपदेश करके तारे, २१ 'वन्ही इव' घृतके सींचनेसे अग्नि जैसे दिप्त होती है. तैसे साधु ज्ञानादि गुण करके दिप्त होवे, २२ 'गोशीष चदन इव' जैसे चन्दन काटे तथा जलावे उसको जास्ती सुगंध देवे, तैसे साधु परिसह

अखूट होता है, तसे साधु भी अखूट ज्ञानके धारक (धरणहार) होते हैं, २४ 'खिल्लीइव' जैसे खुटा ठोकने एकही दिशामें प्रवेश करे, तैसे साधु एकांत मोक्ष मार्गके सन्मुख होकर प्रवर्ते, २५ 'शून्यगृहइव' जेसे गृहस्थ शून्य (सुने) घरकी सभाल नही करे, तैसे साधु शरीरकी संभाल नही करे, २६ 'दीवेइव' जैसे समुद्रमे पड़े हुये प्राणीको द्वीप का आधार होता है, तैसेही ससार समुद्रमे पडे हुये प्राणीको त्रस-स्थावर सब जीवोका साधु आधारभूत अनाथो के नाथ होते हैं, २७ 'शस्त्रधारइव' जैसे पाछणे (शस्त्र)की धार एकही दिशा विघ्न निवारके आगे चढती है, तैसे साधु कर्म शत्रु का निकदन करने एकात आत्मकल्याणके मार्गमें चलते हैं, २८ 'सर्पइव' जेसे सर्प कांटेसे डरे, तैसे साधु कर्मबधके कारणसे डरे, २९ 'सकूणइव' जैसे पन्नी रातको वासी न रखे, तैसे साधू चार

उपसर्ग उपजाणेवालेको अपना कर्म काटने-वाला जाण समभाव उपसर्ग सहन करे फिर उसको ही उपदेश देकर तारे, २३ 'दह द्र' द्रह चार प्रकारके—१ केशरी प्रमुख वर्षधर पर्वतकी द्रहमेंसे पाणी निकलता है परन्तु बाहिरका पाणी उसमें आता नहीं है, तैसे कोई साधु दूसरेको ज्ञान सिखाते हैं, परन्तु आप दूसरेके पास सीखते नहीं हैं, २ समुद्रमें पाणी आता है, परन्तु निकलता नहीं है, तैसे कितनेक साधु दूसरेके पास ज्ञान सीखते है, परन्तु सिखाते नहीं है, ३ गगा प्रपात कूट प्रमुखमे पाणी आता भी है और जाता भी है, तैसे कितनेक साधु ज्ञान पढ़ते हैं और पढाते भी है, ४ अढाइ द्वीपके बाहिरके समुद्रमे पाणी आता भी नहीं है, और निकलता भी नहीं है, तैसे कितनेक साधु पढ़ने भी नहीं है, और पढ़ाते भी नही है तथा जैसे द्रहका पाणी

सिद्ध करे, जैसे बिन छिद्र (छेद) की भाझमें जो बैठे उसको वो पार पहु चाती है, तैसे साधु कनक कातारूप छिद्र करके रहित है वो, उनके आश्रितोको, ससार समुद्रके पार करते हैं, जैसे फलित भाडको पत्थर मारनेसें वो फल देता है, तैसे साधू अपकारियो पर ही उपकार करते हैं, इत्यादि अनेक ओपमा दी जाती है, इत्यादि अनेक शुभ उपमा युक्त, आत्मार्थी, सुखवर्ती, महा पडित, धर्म मडित, सुर-वीर-धीर सम—दम—यम—उपसमवत, अनेक तपके करनहार, अनेक आसनके साधणहार, ससार को पीठ देकर मोक्षके सन्मुख हुवे सर्व जीवो के हितार्थी, अनेका अनेक गुणके धारी, साधुजी महाराजको मेरा त्रिकाल त्रिकरण शुद्ध नमस्कार हो जो।

बत्रिश प्रकारे योग सग्रह—(१) जे कांई पाप लाग्यु होय तेनुं प्रायश्चित लेवानो सग्रह

ही आहार रातको पास न रखे, ३० 'मिगइव' जैसे मृग नित्य नये स्थान भोगवे, शंकाके ठिकाणे विश्वास न करे, तैसे साधू नित्य विहारी रहे, और शंकाके ठिकाणे दोष लगने के स्थान किंचित ही विश्वास नहीं करे, ३१ 'कटइव' जैसे लकड, काटनेवालेको और पूजने वालेको दोनोको एक माफक (सम) जाने तैसे साधु शत्रु मित्रको सम (एक सरपा) जाणे, ३२ 'स्फटिक रयणइव' जैसे स्फटिक रत्न बाहिर भीतर एकसा निर्मल तैसे साधू बाह्य अभ्यंतर सरीखी वृत्ति रखे, कपट क्रिया न करे, ऐसी और भी अनेक उत्तम पदार्थोंकी ओपमा साधुको दी जाती है, जैसे पारशमणि, चिंतामणी, काम कुंभ, कल्पवृक्ष, चित्रवेली, (चित्रवेल) इत्यादि पदार्थ जिसके पास होय, उसका मनोरथ सिद्ध करे, तैसे साधूजी भी भव्यजीवो को ज्ञानादि गुण देकर उनके मनोरथ

राखवानो संग्रह करवो, (१९) सुविधि-सारा अनुष्ठानने संग्रह करवो, (२०) आश्रव रोकवानो संग्रह करवो, (२१) आत्माना दोष टालवानो संग्रह करवो (२२) सर्व विषयथी विमुख रहेवानो संग्रह करवो, (२३) प्रत्याख्यान करवानो संग्रह करवो, (२४) द्रव्यथी उपाधि त्याग, भावथी गर्वादिकनो त्याग करवो (२५) अप्रमादी थवा संग्रह करवो (२६) काले काले क्रिया करवानो संग्रह करवो, (२७) धर्मध्याननो संग्रह करवो, (२८) संवर योग नो संग्रह करवो (२९) मरण आतक (रोग) उपज्ये मनने क्षोभ न करवानो संग्रह करवो, (३०) स्वजनादिकनो त्याग करवानो संग्रह करवो, (३१) प्रायश्चित लीधुं होय ते करवानो संग्रह करवो, (३२) आराधिक पंडितनुं मृत्यु थाय तेम आराधना करवानो संग्रह करवो।

करवो (२) जे कोई प्रायश्चित ले तो बीजने नहि कहेवानो संग्रह करवो, (३) विपत्ति आवे धर्मविषे दृढ रहेवानो संग्रह करवो (४) निश्रा रहित तप करवानो संग्रह करवो, (५) सूत्रार्थ ग्रहण करवानो संग्रह करवो (६) शुश्रूषा टोलवानो संग्रह करवो, (७) अज्ञात कुळनी गोचरी करवानो संग्रह करवो, (८) निर्लोभी थवानो संग्रह करवो, (९) बावीस परिसह सहवानो संग्रह करवो, (१०) सरल निरालस स्वभाव राखवानो संग्रह करवो, (११) सत्य संयम राखवानो संग्रह करवो, (१२) सम्यकत्व निर्मल राखवानो संग्रह करवो, (१३) समाधिथी रहेवानो संग्रह करवो (१४) पंच आचार पालवानो संग्रह करवो, (१५) विनय करवानो संग्रह करवो, (१६) धृति राखवानो संग्रह करवो, (१७) वैराग्य राखवानो संग्रह करवो, (१८) शरीरने स्थिर

(आत्मदमन) करता रहे, १२ समकित (शुद्ध श्रद्धा) युक्त रहे, १३ चित्तको स्थिर रखे, १४ ज्ञानाचार—दर्शनाचार—चारित्राचार--तपाचार --विर्याचार, इन पंचाचारमे प्रवर्ते, १५ विनय (नम्रता) सहित प्रवर्ते, तप--जप--क्रियानुष्टान में सदा वीर्य--पराक्रम फोड़ता रहे, १७ सदा वैराग्य सहित रहे, १८ आत्मगुण (ज्ञानदर्शन चारित्र) को निध्यान (द्रव्यके खजाना) जैसा बंदोबस्त करके रक्खे १९ पासथ्था (ढिला-- शिथिल) के परिणाम न लावे, सदा वर्धमान परिणामी रहे, २० उपदेश द्वारा सदा सम्बर की पुष्टी करे, २१ अपनीआत्माके जो जो दुर्गुण दृष्टि आवे उनको टालने (निकालने) का उपाय करता रहे, २२ काम (शब्द—रूप) भोग (गध--रस- स्पर्श) का संजोग मिले लुब्ध न होवे, २३ नित्य यथाशक्ति नियम अभिग्रह त्याग वैराग्यकी वृद्धि करते रहे, २४ उपधी

पाठान्तर।

१ जो दोप लगा होय सो तुर्त गुरुके आगे कहदे, २ शिष्यका दोप गुरु दूसरेके आगे प्रका-शे नहीं, ३ कष्ट पड़े धर्ममें दृढ़ रहे, ४ तपस्या करके इस लोकके (यश महिमादिक) और परलोकके (देवपद राज्यपदादिक) सुखकी वाञ्छा करे नहीं, ५ असेवन (ज्ञानाभ्यास सबन्धी) ग्रहना (आचार गोचार संबन्धी) शिक्षा (शिखामण) कोई देवे तो हितकारी माने, ६ शरीरकी शोभा विभूषा नहीं करे, ७ गुप्त तप करे (ग्रहस्थको मालम न पड़ने देवे) तथा लोभ नहीं करे, ८ जिन जिन कुलमें भिक्षा लेनेकी भगवानकी आज्ञा है उन सब कुलोंमें गोचरी (भिक्षा लेने) जावे, ९ परिसह उत्पन्न हुए चढ़ते प्रणामसे सहन करे, क्रोध न करे, १० सदा सरल-निष्कपटपणे प्रवर्ते ११ सयम

संथारो करे, आहार और शरीरका त्याग कर समाधि भावसे देहोत्सर्ग करे,

३२ दोष टालीने गुरु महाराजने वंदणा करणी ते दोष कहे छे '—

"१ उकडुं बेठो वांदे तो दोष २ नाच तो वांदे तो दोष ३ सघलाने एकठा वादे तो दोष ४ रजो हरणो अकुंस जिम राखे वादे तो दोष ५ अही कपड़ा उंचा करीने वादे तो दोष ६ चपल पणे वांदे तो दोष ७ माछलानी परे उलट पलट होयने वादे तो दोष ८ मनमे गुण छांडी अवगुणी होय वादे तो दोष ६ कपटपणो सुं वादे तो दोष १० डर तो वांदे तो दोष ११ अे मुझने अमुको मान देसे यह कारण वांदे तो दोष १२ साख करी वांदे तो दोष १३ गर्व करी वादे तो दोष १४ इह लोकने हितकारी वादे तो दोष १५ चोरनी परे वादे तो दोष १६ प्रतग्या हेते वादे तो दोष १७ ॥

(वस्त्र—पात्र—सूत्र—शिष्य इत्यादिकका) अहकार—अभिमान नहीं, २५ पांच प्रमाद १ मद (जातिमदादि आठ मद) २ विषय (पाच इद्रीका २३ विषय २४० या २५२ विकार) ३ कषाय (क्रोधादि कषायके ५२०० भागे) ४ निद्रा नीद कमी लेवे, ५ विकथा (स्त्रीकी—राजाकी—देशकी-भोजनकी ए ४ प्रकारकी कथा नहीं करे) यह पाच ही प्रमादको सदा वर्जे, २६ थोड़ा बोले और कालोकाल क्रिया करे, २७ आर्त ध्यान और रौद्र ध्यान वर्जकर, धर्म ध्यान और शुक्ल ध्यान ध्यावे, २८ मन—वचन—काया सदा शुभ काममें प्रवर्तावे, २६ मरणातिक वेदना प्राप्त हुए भी प्रणाम स्थिर रखे, ३० ससारसु विरक्ति भाव आये सर्व स्वजनादिक का त्यागन करे, ३१ सदा आलोयणा—निद्—णा (गुरु आगे गुप्त पाप प्रकाशके अपनी निदा करे, ३२ अत —अवसर- जाण-

॥ तेंत्रीसवां बोल ॥

३३ प्रकारे आशातना—(१) शिष्य, रत्नाधिक (वड़ा) गुरुनी आगल अविनयपणे चाले ते आशातना, (२) शिष्य वड़ानी (गुरुनी) बराबर चाले ते आशातना, (३) शिष्य वड़ानी पाछल अविनयपणे चालेतेआशातना, (४) (५) (६) ए प्रमाणे वड़ानी आगल, बराबर ने पाछल अविनयपणे ऊभो रहे ते आशातना, (७) (८) (९) ए प्रमाणे वड़ानी आगल बराबर ने पाछल अविनयपणे बेसे ते आशातना, (१०) शिष्य वड़ानी साथे बाहिर भूमि जाय ने वड़ा पहेलां शुचि थई आगल आवे ते आशातना (११) वडा साथे बहिर (बाहिर) भूमि जई आवी, इरियापथिका पहेलां प्रतिक्रमे ते, आशातना (१२) कोई पुरुष आवे ते वड़ाने बोलाववा योग्य छे तेवु जाणीने पहेलां पोते

सासता वादताही जाय (वे रीतीसे) तो दोष १८ विश्वास उपजावा हेते(अर्थे) वादे तो दोष १६ वचन हिल तो वादे तो दोष २० विकथा करतो वादे तो दोष २१ दृष्टी तिरछी राखतो वादे तो दोष २२ कोइ साधु देखे कोइ न देखे वादे तो दोष २३ स्या करिये वादिया विना छुटतानथी एसी जाण कर वादे तो दोष २४ एकने घाट वादे एकने जादारीतसु वादे तो दोष २५ गुरु तो नीचे आसण अने वदणा करणे वालो उचे, आसण बेठो वादे तो दोष २६ बेठो बेठो वादे तो दोष २७ हस्तो हस्तो वादे तो दोष २८ रजोहरण आगो पाछो कर तो वादे तो दोष २६ असमाधीयो होयने वादे तो दोष ३० गुरुनेकाधस्सग्गमें बेठाने वादे तो दोष ३१ पेली समाधी साना पूछे पछे वादे तो दोष ३२ गुरु महाराजने रसने चालता उभा राखी वादे तो दोष ॥

आसने के बराबर आसने बेसवुं, उभा रहेवुं, मूत्रु वगेरे करे ते आशातना, यह ३ गुरु आसातना जाणीजे।

पाठन्तर।



२३ गुरुकी आशातना—तीन चालणेकी—गुरुके आगे चाले १, गुरुके बरोबर चाले २, गुरुके पाछे अडतो चाले ३, ऐसी तीन आशातना खडे रहणेकी ६, ऐसी तीन बेसणकी ६, दिशा गए गुरुसु पहला हाथ धोवे तो आशातना १०, बडासाथ, बाहारली भूमीका जायकर आया, गुरुके पहली इरियावही पडिकमे तो आशातना ११, गुरु प्रश्न करता होय विचमे बोले तो आशातना १२, गुरुके पास सुना होय गुरु बोलावे जागता न बोले, तो आ-

छे? ऐसे कहे ते आशातना, (२६) वडा धर्म व्याख्या कहेतां शिष्य कहे के तमो भूली गया छो ते आशातना, (२७) वडा धर्म व्याख्या आपता शिष्य पोते सारु न जाणी खुश न रहे ते आशातना (२८) वडा धर्म व्याख्या आपता सभामा भेद थाय तेम अवाज करी बोली उठे के वखत थई गयो छे, आहारादि लेवा जवानु छे विगेरे, कही भग करे ते आशातना, (२९) वडा धर्म व्याख्या आपता श्रोताओना मनने नाखुशी उत्पन्न करे ते आशातना (३०) वडानु धर्म व्याख्यान बध थयु न होय तेटलामा शिष्य पोते व्याख्यान शरु करे ते आशातना (३१) वडानी शय्या-पथारीने पगे करी घसे, हाथे करी आस्फालन करे ते आशातना, (३२) वडानी शय्या, पथारी उपर ऊभो रहे, बेसे, ते आशातना, (३३) वडाथी उच्च

परे, ६ खरे धर्मनी आस्ता राखे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे वर्ण नामे नटनी परे, १० चरचा वारता करीने सरदहणा सुद्ध करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे केसीमुनी, गौतमस्वामीनी परे ११ दुखी देखीने करुणा करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे मेघरथ राजा मेघ कुमाररे पाछले हाथीरे भवनी परे १२ खरे वचनरी आसता राखे तो जीवरो परम कल्यान होवे किणनी परे आणदजी कामदेव श्रावकनी परे, १३ अदत्तादान त्यागे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे अमरजीरे सातसे शिष्यनी परे, १४ शुद्ध मन सील पाले तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे सुदरशण शेठनी परे, १५ ममता छोडीने समता आदरे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे कपील

किणनी परे तामलीतापसनी परे, २ समकित नीरमल पाले तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे श्रेणिक राजानी परे, ३ मन वचन कायानो योग शुभ प्रवरतावे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे गजसुकमालनी परे, ४ छत्ती सक्ती क्षमा करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे परदेशी राजानी परे, ५ पाच महाव्रत निरमला पाले तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे गौतमस्वामीनी परे, ६ कायरपणो छोड़ सुरपणो आदरे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे सेलक मुनीराजनी परे, ७ पाच इन्द्रियोने वस करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे हरिकेसी मुनिराजनी परे, ८ माया कपटाई छाड़े (छोडे) तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे मल्लीनाथजीना छए मित्रनी

परे, ६ खरे धर्मनी आस्ता राखे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे वर्ण नामे नटनी परे, १० चरचा वारता करीने सरदहणा सुद्ध करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे केसीमुनी, गौतमस्वामीनी परे ११ दुखी देखीने करुणा करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे मेघरथ राजा मेघ कुमाररे पाछले हाथीरे भवनी परे १२ खरे वचनरी आसता राखे तो जीवरो परम कल्यान होवे किणनी परे आणदजी कामदेव श्रावकनी परे, १३, अदत्तादान त्यागे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे अमरजीरे सातसे शिष्यनी परे, १४ शुद्ध मन सील पाले तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे सुदरशण शेठनी परे, १५ ममता छोडीने समता आदरे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे कपील

किणनी परे तामलीतापसनी परे, २ समकित नीरमल पाले तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे श्रेणिक राजानी परे, ३ मन वचन कायानो योग शुभ प्रवरतावे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे गजसुकमालनी परे, ४ छत्ती सक्ती क्षमा करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे परदेशी राजानी परे, ५ पाच महाव्रत निरमला पाले तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे गौतमस्वामीनी परे, ६ कायरपणो छोड़े सुरपणो आदरे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे सेलक मुनीराजनी परे, ७ पाच इन्द्रियोने वस करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे हरिकेसी मुनिराजनी परे, ८ माया कपटाई छाड़े (छोडे) तो जीवरो परम कल्याण होवे ... परे मल्लीनाथजीना छए मित्रनी

परे, ६ खरे धर्मनी आस्ता राखे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे वर्ण नामे नटनी परे, १० चर्चा वारता करीने सरदहणा सुद्ध करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे केसीमुनी, गौतमस्वामीनी परे ११ दुखी देखीने करुणा करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे मेघरथ राजा मेघ कुमाररे पाछले हाथीरे भवनी परे १२ खरे वचनरी आसना राखे तो जीवरो परम कल्यान होवे किणनी परे आणदजी कामदेव श्रावकनी परे, १३, अदत्तादान त्यागे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे अमरजीरे सातसे शिष्यनी परे, १४ शुद्ध मन सील पाले तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे सुदरशण शेठनी परे, १५ ममता छोडीने समता आदरे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे कपिल

ब्राह्मण (कपिल मुनि) नी परे, १६ सुपात्रने दान देवे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे रेवतीजी गाथापतणीनी परे, १७ चलीय चितने थिर करावे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे राजिमतीनी परे, १८ उत्कृष्टो तप करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे धनाजी अणगारनी परे, १६ उत्कृष्टो वैयावच करे तो जीवरो परम कल्याण होने कीणनी परे पथकजीनी परे, २० अनित्य भावना भावे तो जीवरो परम कल्याण हुवे किणनी परे भर्त्तेश्वर चक्रवर्त्तीनी परे, २१ उत्कृष्टो क्षमा करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे अरजनमालीनी परे, २२ जिन धर्मरी आशता राखे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे अरणीकजीनी परे, २३ चार तीर्थने साता उपजावे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे

तीजे देवलोकरे इन्द्ररे पाछले भवनी परे, २४ उत्कृष्टो वीनो करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे बाहुबलजीनी परे, २५ उत्कृष्टि दलाली करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे कृष्ण महाराजनी परे, २६ उत्कृष्टो अभिग्रह करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे ढढण मुनिराजनी परे, २७ शत्रु मित्र उपर सरिषा भाव राखे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे उदाइ राजानी परे, २८ अनर्थरो हेतु जाणीने दया पाले तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे धर्मरुची अणगारनी परे, २९ कष्ट पड्या शीलमें दृढ रहे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे चन्दनबाला वा उणकी मातानी परे, ३० रोग आया हायञोह न करे तो आत्मारो परम कल्याण होवे किणनी परे अनाथिजीनी

परे, ३१ आश्रवमें सवर निपजावे तो आत्मारो परम कल्याण होवे किणनी परे सजती राजानी परे, ३२ परिसह आया समभाव वर्ते तो आत्मारो परम कल्याण होवे किणनी परे मेतार्यजीनी परे, ३३ चलिये चीत्तने थीर करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे रिट्ठनेमिजीनी परे ।

॥ चौतीसमां बोल ॥

३४ असभ्कायरो सवैयो, तारो टुटे, रातिदिशा, अकाले मेह गाजे, बीज, कडके अपार, और भुमी कपा भारी है, बालचन्द्र, जखचेन, आकाशे अगनकाय, काली धोली धुध, और रजुघात न्यारी है, हाड, मास, लोही, राध, ठडले मसाण बले, चद्र, सूर्य ग्रहण, और

राज्य मृत्यु टाली है, थानकमे मरयो पड्यो पंचेन्द्री कलेवर, ए बीस बोल टाल कर ज्ञानी आज्ञा पाली है, असाढ, भाद्रु, आसु, काती, चेती, पुनम जाण। इणथी लगती टालीये, पडुवा पांच वखाण॥ पडवा पांच वखाण सांज सवेर मध्य न भणीये, आधी रात दोप हर, सर्व मिल चौतीस गिणिये॥ चौतीस असभाइ टालके सूत्र भणसी सोय। ऋषि लालचद इणपरि कहे ताके विघन न व्यापे कोय ३४।

३४ असभाईके नाम १ उकावाय कहता तारा तुटे तो एक पोहर असभाई २दिशादाहा कहता फजर और शामको दिशा लाल रगकी रहे वहा तककी असभाई ३ गजिया कहता गर्जना होवे तो एक मुहूर्तकी असभाई ४ विज्जुए कहता विजली होनेसे दोय पोहर (प्रहर) असभाई परन्तु गाज और विजलीकी

परे, ३१ आश्रवमें सवर निपजावे तो आत्मारो परम कल्याण होवे किणनी परे सजती राजानी परे, ३२ परिसह आया समभाव वर्ते तो आत्मारो परम कल्याण होवे किणनी परे मेतार्यजीनी परे, ३३ चलिये चीत्तने थीर करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे रिट्ठनेमिजीनी परे ।

॥ चौतीसमा बोल ॥

३४ असझायरो सवैयो, तारो टुटे, रातिदिशा, अकाले मेह गाजे, वीज, कडके अपार, और भुमी कपा भारी है, बालचन्द्र, जखचेन, आकाशे अगनकाय, काली धोली धुध, और रजुघात न्यारी है, हाड, मास, लोही, राध, ठंडले मसाण वले, चद्र, सूर्य ग्रहण, और

भिंत्ता दृष्टिमें आवे वहांतक असझाई १५ सुसाण कहता श्मशानके चारो तरफ १०० १०० हाथ असभाई १६ राय मरणे कहता राजाके मृत्युकी दूसरो राजा बैसे उटेतक हड़ताल रहें वहांतक असझाई १७ रायवुगय कहता राजाओका युद्ध होवे वहांतक असझाई १८ चदवरागे कहता चद्रग्रहण होय तो जगन ४ उत्कृष्टी ८ प्रहर खग्रास होनेसे १२ प्रहर थोडा ग्रहण होनेसे कमी काल समझना १९ सुरोवरागे कहता सूर्य्य ग्रहण होय तो १२ प्रहर २० उवलंतो कहता पंचें-द्रियका कलेवर निर्जीव देह पड़ा होवे तो चारो तरफ १००-१०० हाथ असझाई २१ आश्विन सुदि पूर्णीमा असझाइ २२ कार्तिक वदी प्रतिपदा (प्रथमा) असझाइ २३ कार्तिक सुदि पूर्णिमा असझाई २४ मृगशीर्ष प्रतिपदा असझाइ २५ चैत्र सुदी पूर्णीमा

आद्रा नक्षत्रसे स्वाति नक्षत्र तक असज्झाई नगिणना और सदा गिणना ५ निग्घाए कहता कड़केतो आठ प्रहर की असज्झाई ६ जुवे कहता वालचद्र शुक्ल पक्षकी पडिवा द्वितीया त्रितीया ए तीन रातमें चद्रमा रहे वहातककी असज्झाई ७ जरकाले कहता आकाशमें मनुष्य पशु पिशाचादिक के चिन्ह दिखे वहातक असज्झाई ८ धुम्मीए कहता काली धूहर पड़े वहातक असज्झाई ९ महिये कहता श्वेत धूवर (मेगरवा) पड़े वहातक असज्झाई १० उधाए कहता आकाशमें धूलका गोटा (ढोटा) चढ़ा हुवा दिखे वहातक असज्झाई ११ मस० कहता मास दृष्टिमें आवे वहातक असज्झाई १२ सोणी कहता रक्त (लोही) दृष्टिमें आवे वहातक असज्झाई १३ अठी कहता अस्थी (हडी) दृष्टिमें आवे वहातक असज्झाई १४ उचार कहता

भिद्या दृष्टिमें आवे वहांतक असझाई १५ सुसाण कहता श्मशानके चारो तरफ १०० १०० हाथ असझाई १६ राय मरणे कहता राजाके मृत्युकी दूसरो राजा बैसे उठेतक हड़ताल रहें वहांतक असझाई १७ रायवुगय कहता राजाओका युद्ध होवे वहांतक असझाई १८ चंदवरागे कहता चन्द्रग्रहण होय तो जघन ४ उत्कृष्टी ८ प्रहर खग्रास होनेसे १२ प्रहर थोड़ा ग्रहण होनेसे कमी काल समझना १९ सुरोवरागे कहता सूर्य्य ग्रहण होय तो १२ प्रहर २० उवस्संतो कहता पंचें-द्रियका कलेवर निर्जीव देह पडा होवे तो चारो तरफ १००-१०० हाथ असझाई २१ आश्विन सुदि पूर्णीमा असझाइ २२ कार्तिक वदी प्रतिपदा (प्रथमा) असझाइ २३ कार्तिक सुदि पूर्णिमा असझाई २४ मृगशीर्ष प्रतिपदा असझाइ २५ चैत्र सुदी पूर्णीमा

अपेक्षा वचन कहे; एक वचनकी अपेक्षासे दूसरा वचन कहे, और जो फरमावे वो श्रोताके हृदयमें ठसता जावे, ३२ अर्थ—पद-वर्ण-वाक्य सर्व जुदे जुदे फरमावे, ३३ सात्विक वचन प्रकाशे इन्द्रादिक वड तेजस्वी प्रतापी आ जावे तो भी डरे नहीं, ३४ जो अर्थ फरमाते हैं, उसकी सिद्धी जहातक न होवे वहातक दूसरा अर्थ निकाले नहीं, एक बात दृढ़ करके दूसरी बात पकड़े, ३५ चाहे कितना लंबा समय उपदेशमें चला जावे तो भी थके नहीं, उत्साह बढ़ता ही रहे ।

॥ छत्तीशमा बोल ॥

३६ आचार्यके छत्तीस गुण—पांच महाव्रत पाले ५, पांच इन्द्रि जिते १०, च्यार कपाय निवारे

१४, पांच आचार पाले १६, आठ प्रवचन माताको आराधे २७, नव वाड़ि ब्रह्मचर्य पाले एवं ३६ ।

३६ गुण छत्तीस आचार्य—१ जाइ सपन्ने कहता जाति (माताका पक्ष) निर्मल कलंकरहित, २ कुलसपन्ने कहता पिताका पक्ष निर्मल, ३ बलसंपन्ने कहता कालप्रमाणे उत्तम संघेण पराक्रमके धणी, ४ रुपसपन्ने कहता समच तुर्सादि उत्तम सस्थान शरीरका आकारके धणी, ५, विनय संपन्ने कहता अति कोमलता नम्रता वन्त, ६ नाणसंपन्ने कहता मती श्रुति आदि निर्मल ज्ञानवन्त पटमतके जाण, ७ दसण संपन्ने कहता शुद्ध श्रधावत ८ चारित्र सपन्ने कहता निर्मल चारित्र वंत, ९ लज्जा संपन्ने कहता अपवाद निन्दासे डरे, १० लाघव सपन्ने कहता लाघव (हलका

पण) दो प्रकारका, १ द्रव्यसे तो उपधी-भड उपगरण थाडी रखे और भावे कषाय कम करे, ११ उयसी कहता उपसर्ग उत्पन्न हुये धीर्य धरे, १२ तेयस कहता महातेजस्वी १३ वर्चसी कहता चतुराइसे बोले किसीके छलमे आवे नही, १४ जससी कहता यश-वन्त आचार्यके यह च्यार बोल स्वभाविक पाते है, १५ जिये कोहे, १६ जिय माणे, १७ जीये माये,-१८ जिये लोहे, १९ जिये इन्द्रिय अर्थात् क्रोधमान माया लोभ और श्रोतोदिक पाच इन्द्रिय रुप महासत्रुओको जीतते है, २० जिये निदा कहता दूसरेकी निदा करनेसे निवर्त्तते है पापको निदे परतु पापीको नहीं तथा निद्रा अल्प, २१ जिये परिसह कहता क्षुधादिक परिसह उत-पन्न हुवे चलायमान न होवे, २२ जीनिय आसमरणभय,

यहुतकाल

जीणेकी आश नहीं और मरनेका डर नहीं, २३ वयपहाणे महा व्रतादि वृत करके प्रधान होवे, २४ गुणपहाणे कहता ज्ञाती आदि गुण करके प्रधान होवे, २५ कारण पहाणे कहता क्रियावन्तके ७० गुण करके प्रधान होवे, २६ चरण पहाणे कहता चारित्रके ७० गुण करके प्रधान होवे, २७ निग्गह पहाणे कहता अनाचारका निषेध करनेमे प्रधान होवे, अखलित जिनकी आज्ञा प्रवर्ते, २८ निच्छय पहाणे कहता पट् द्रव्यादिकका निश्चय करनेमे प्रधान होवे, राजादिक की सभामे क्षोभ न पामे, २९ विद्या पहाणे कहता रोहिणी प्रमुख विद्यामें प्रधान होवे, ३० मंत पहाणे कहता विष परिहार व्याधी निवार व्यत्रोप सर्ग नाशक इत्यादि मंत्रमें प्रधान होवे, ३१ वेय पहाणे कहता, यजुरादिक चारही वेदके जाण होवे, ३२ वभ पहाणे

कहता ब्रह्मचर्यमे प्रधान होवे, ३३ णय-पहाणे कहता नेगमादि सातनय स्थापनेमें प्रधान होवे, ३४ नियम पहाणे कहता अभिग्रहादि नियम तथा प्रायश्चित विधि जाणने में प्रधान होवे, ३५ सच्च पहाणे कहता महा-सत्यवन्त, ३६ सोय पहाणे कहता शुची दोय प्रकारकी १ द्रव्यतो लोकमें अपवाद होय ऐसा वस्त्रादि न पहरे और भावे पाप मैल से न खरडाय ।

॥ दोहा ॥

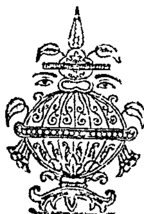
वारवार कर जोरिकें, गुणवंतसुं अरदास ।
अल्पबुद्धि मोहि जाणके, मति कीज्यो कोई हास्य ॥
बोल लिखी ऐसे करू, पडित सुं अरदास ।
अधिक हीण जो मैं, कह्यो सुध भांति प्रकाश ॥

॥ ओछो अधिको आगो पाछो लिख्यो होय तेनो मिच्छामि दुक्कड ॥

॥ सेव भते सेव भते ॥

॥ तेमव सच्चम् ॥

शान्ति । शान्ति ॥ शान्ति ॥।





॥ श्री सर्वज्ञाय नम ॥

अर्हंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्व साधूभ्योनम.

॥ दोहा ॥

पर द्रव्यन ते प्रीति, है ससार अबोध।
ताको फलगति चारिमे, भ्रमण कह्यो श्रुतबोध ॥
निर्मल है निज आत्मा, देह अपावन गेह।
जानि भव्य निज भावकु, यासु तजो सनेह ॥
धर्म करत संसार सुख, धर्म करत निर्वान।
धर्म पथ साधे विना, नर तिर्यंच समान ॥
धर्म विना सुण जीवड़ा तुं भम्यो भव्य अनंत।
मुढ पणे भव्य ते किया, इम बोले भगवंत ॥

॥ अथ ११ गणधरोंके नाम ॥

१ श्री इन्द्रभूतिजी
२ श्री आग्नभूतिजी
(श्री अग्निभूतिजी)
३ श्री वायभूतिजी
४ श्री विगतस्वामीजी
५ श्री सुधर्मास्वामीजी
६ श्री मंडी पुत्रजी
७ श्री मोरीपुत्रजी
८ श्री अकम्पितजी
६ श्री अचलभूतीजी
१० श्री मेतारजजी
११ श्री प्रभासजी

॥ अथ १६ सतियोंके नाम ॥

१ श्री ब्राह्मीजी
२ श्री सुंदरीजी
३ श्री कौशल्याजी
४ श्री सीताजी
श्री कुंतीजी
६ श्री द्रोपदीजी
७ श्री राजमतिजी
८ श्री चंदनबालाजी
६ श्री सुभद्राजी
१० श्री चेलणाजी

११ श्री शिवाजी (सेवाजी) १४ श्री सुलसाजी
१२ श्री पद्मावतीजी १५ श्री दमयंतीजी
१३ श्री मृगावतीजी १६ श्री प्रभावतीजी

इति ११ गणधर।

१६ सतीयोंके नाम समाप्तम्।

यह ११ गणधर, १६ सतीयों उत्तम पुरुषों को हमारी त्रिकाल वारम्वार वंदणा नमस्कार होजो॥

॥ नीतिके दोहा ॥

जो तोकूँ काँटा वोवे ताहि वोइ तू फूल।
ताको फूलके फूल है, वाको है तिरसूल॥
दुरवलको न सताइये, जाकी मोटी हाय।
मुई खालके स्वास में, सार भसम हो जाय॥
ऐसी वानी वोलिये, मनका आपा खोय।
औरनको शीतल करे, आपहु शीतल होय॥

जहाँ दया तहँ धर्म है जहाँ लोभ तहँ पाप ।
जहा क्रोध तहँ काल है, जहाँ क्षमा तहँ आप ॥
साँच बराबर तप नहीं, झूठ बरोबर पाप ।
जाके हृदय साँच है, ताके हृदय आप ॥
झूठ कबहूँ नहि बोलिये, झूठ पाप को मूल ।
झूठेकी कोउ जगतमें, करप्रतीति न भूल ॥
सगति कीजे साधु की, हरे और की व्याधि ।
ओछी सगति क्रूर की, आठो पहर उपाधि ॥
बुरा जो देखन मे चला, बुरा न दीखे कोय ।
जो दिल खोजो आपना, मुझसा बुरा न कोय।
दुखमें सुमिरन सब करें सुखमें करे न कोय ।
सुखमें जो सुमिरन करे, दुख काहेको होय ॥
सचय करिबो है भलो, सो आवे बहु काम ।
पाप न सचय कीजिये, जो अपयश को धाम ।
बुरो माँगिबो जगत में, जाते हो अपमान ।
क्षमा माँगिबो ईश ते, भलो यही कर ज्ञान ।
से विद्या पाइये, श्रम ही से धन होइ ।

श्रम ही से सुख होत है, श्रम बिन लहे न कोइ ॥
आलस कबहुँ न कीजिये,आलस अरि सम जान
आलससे विद्या घटे, सुख संपति की हान ॥
लोभ सरिस अवगुन नहीं, तप नहिँ सत्य समान।
तीरथ नहि मन शुद्धि सम, विद्या सम धन आन॥
जामे गुन अवलोकिये, करिय ताहि स्वीकार ।
बाल-वचन हूँ करिय जो, होय नीति अनुसार॥
बिना विचारे जो करे, सो पाछे पछताय ।
काम बिगाड़े आपनो, जगमें होत हसाय ॥
लाख मूर्ख तजि राखिये, इक पण्डित बुधि धाम।
सर शोभा इक हससो, लाख काक किहि काम॥
धन ते विद्या धन बड़ो, रहत पास सब काल ।
देय जितो बाढे तितो, छोर न लेइ नृपाल ॥
सब परतिय जिहि मातु सम,
सब पर-धन जिहि धूर ।
सब जीवन निज सम लखे, सो पण्डित भरपूर ॥
सत संगतमे बास सो, अवगुन हूँ छिपि जात ।

अहिर धाम मदिरा पिवै, दूध जानिये तात ॥
असन संगके वास सों, गुन अवगुन है जात ।
दूध पिवै कलवार घर, मदिरा सबहिं बुझात ॥
क्रियारम्भहि चाहिए पहिले धर्म विचार ।
तामों दोउ लोक को, सधत शुद्ध व्यवहार ॥
प्रातहि उठिके नित्त नित, करिये प्रभुको ध्यान ।
जाते जगमें होय सुख, अरु उपजे सतज्ञान ॥
काहू तें कड़वो वचन, कहौ न कबहूँ जान ।
तुरत मनुजके हृदयमें, छेदत है जिमि बान ॥
पढ़िवे में कबहूँ नहीं, नागा करिये चूक ।
कुपढ़ लोग माँगत फिरहिं, सहहिं निरादर मूक ॥
मीठी बोली बोलिए, करके सब सों प्रीति ।
करें प्रेम तासों सकल, लखि शुक सारिक रीति ॥
सुनिके दुर्जनके वचन, हो रहिये चुपचाप ।
करें जो समता तासुकी, नीच कहावै आप ॥
होय शुद्ध मिटि कलुषता, सतसंगतिको पाय ।
पारसको परस, लोह कनक है जाय ॥

अपनी पहुँच विचारिके, करतब करिये दौर।
तेते पाँव पसारियें, जेती लाँबी सौर॥
देवो अवसर को भलो, जासो सुधरे काज।
खेती सूखे बरसिवो घनको कौने काम॥
प्रकृति मिले मन मिलत है, अनमिलते न मिलाय
दूध दही ते जमत है, काँजी ते फटि जाय॥
जो समझै जिहि बातको, सो तिहि कहे विचार।
रोग न जाने ज्योतिषी, वैद्य ग्रहनकी चार॥
मूरख को पोथी दई, बाचन को गुन गाथ।
जैसे निर्मल आरसी, दई अंध के हाथ॥
बुरे लगत सिखके बचन, हिये विचारो आप।
कड़वी भेषज बिन पिये, मिटे न तनकी ताप॥
करै बुराई सुख चहै, कैसे पावै कोय।
रोपै बिरवा आक को, आम कहा ते होय॥
"रे मन" रहिबो वा भलो, जौ लौं शील सभूच।
शील ढील जब देखिए, तुरत कीजिए कूच॥
॥ संग्रहकर्त्ता उदेकर्ण सेठिया॥

प्रेम भाव परकासीया, सब कुछ गया बगोय ॥
भक्ति प्रान से होत है, मन दे कीजे भाव।
परमारथ परतीति से, यह तन जाय तो जाव ॥
साहेब को घर दूर है, जैसी लम्बी खजूर।
चढ़े तो चाखे प्रेम रस गिरे तो चकना चूर ॥
पढ़ पढ़ के कितने मये, पण्डित भया न कोय।
ढाई अच्छर प्रेम का, पढ़े सो पण्डित होय ॥
जब लगे मरने से डरे, तब लग प्रेमी नाँहि।
बड़ी दूर है प्रेम घर, समझ लो मन माँहि ॥
पानी मिले न आपको, औरन बगसत खीर।
आपन मन निश्चय नहीं औरन नधावत धीर ॥
गजल—जगदीश गुण गाया नहीं,
गायक हुआ तो क्या हुआ।
पितु मात मन भाया नहीं
लायक हुया तो क्या हुआ ॥
खाकर नमक निज सेठ का,
सेवा से जो मुँह फेरता।

॥ दोहा ॥



फल कारन सेवा करे, तजे न मनसे काम।
कहे कबीर सेवक नहीं, छे चौगुना दाम॥
सेवक सेवा में रहे, अन्न कहीं न जाय।
दुख सुख सिर ऊपर सहे, कहें कबीर समझाय॥
सेवक सेवा में रहे, सेवक कहिये सोय।
कहे कबीर सेवा विना सेवक कभीन होय॥
मेरा मुझ पर कुछ नहीं, जो कुछ है सब तोर।
तेरा तुझ का सौंपने, क्या लागेगा मोर॥
दुख सुख एक समान कर, हर्ष शोक नही व्याप
परोपकारी नहीं कामता, उपजे शोक न ताप॥
प्रेम भाव इक चाहिये, भेष अनेक बनाय।
चाहे घर मे वास कर, चाहे वन में जाय॥
जोगी जगम सेवड़ा, सन्यासी दरवेश।
विना प्रेम पहुचे नहीं, दुर्लभ सतगुरु देश॥
जहां वाज वासा करे, पक्षी रहे न कोय।

प्रेम भाव परकासीया, सब कुछ गया बगोय ॥
भक्ति प्रान से होत है, मन दै कीजे भाव।
परमारथ परतीति से, यह तन जाय तो जाव ॥
साहेब को घर दूर है, जेसी लंबी खजूर।
चढ़े तो चाखे प्रेम रस, गिरे तो चकना चूर ॥
पढ पढ़के कितने मुये, पण्डित भया न कोय।
ढाई अक्षर प्रेमका, पढ़े सो पण्डित होय ॥
जब लगे मरने से डरे, तब लग प्रेमी नाँहि।
बडी दूर है प्रेम घर, समझ लो मन माँहि ॥
पानी मिले न आपको, औरन बकसत खीर।
आपन मन निश्चल नहीं औरन बधावन धीर ॥
गजल—जगदीश गुण गाया नहीं,
गायक हुआ तो क्याहुआ।
पितु मात मन भाया नहीं,
लायक हुया तो क्या हुआ ॥
खाकर नमक निज सेठ का,
सेवा से जो मुँह फेरता।

चाकर नहीं वह चोर है,
खाया नमक तो क्या हुआ ॥
मात पिता की जीते जी,
जो सेवा कुछ न बन पड़ी ।
तब मूझे के पीछे,
श्राद्ध औ तर्पण किया तो क्या हुआ ॥

दोहा—जिस जोबन के कारणे,
इतना करे गरूर ।
वह जीवन पल मात्र है,
अन्त धूर की धूर ॥
अन्याई राजा मिला,
जैसे पेड खजूर ।
प्रजाको छाया नहीं,
फल लागे अति दूर ॥
सुख दानी जग तारनी,
जापर होत सहाय ।
भड़ भागा वह जन बसे,

भवसागर तर जाय ॥
कहना था सो कह चुके
अब कुछ कहा न जाय ।
एक रहा दूजा गया,
दरिया लहर समान ॥
॥ संग्रह किया ॥
॥ जुगराज सेठिया बाल अवस्थामे ॥

॥ ३६ बोल मूर्खरा ॥



१ बिना भूख खाय सो मूरख ।

२ अजीर्णथकां खाय सो मूरख ।

३ कर्जा करके वे मुतलबी चीज खरीदे ते मूर्ख ।

४ लाभके समय आलस तथा कलहादि करे ते मूर्ख ।

२१ आपणा घरका छिद्र परके अगाड़ी कहे अथवा पराया अवगुण प्रकाशे ते मूर्ख ।

२२ सत पुरुष त्यागी साधुकी सगत पायके त्याग पच्चखाण सेवा भक्ति न करे ते मूर्ख ।

२३ सुपात्रका योग मिलने पर दान नहीं देवे ते मूर्ख ।

२४ पोते कुकर्म करके दुजेके उपर दोप डाले ते मूर्ख ।

२५ स्वार्थी मनुष्यसे प्रीतिकी इच्छा रखे ते मूर्ख ।

२६ स्त्रीके भयसे याचक कु वर्जे ते मूर्ख ।

२७ कृपणता वश अपयश उपार्जे ते मूर्ख ।

२८ धन उधार देके पाछो नहीं मागे ते मूर्ख ।

२९ आमदानीसे अधिक खरच करे ते मूर्ख ।

३० अपणे घरका हिसाब आमदानी खरचा ते मूर्ख ।

३१ हिंसा करी धर्म माने ते मूर्ख ।

३२ रोगी होय कुपथ्य करे ते मूर्ख ।

३३ निर्धन और कर्जदार इनकी परीक्षा किये विगर विश्वास करे ते मूर्ख ।

३४ लौकिक व्यवहार न जाणे ते मूर्ख ।

३५ द्रव्य कमती होयके वडोकी वरावरी करे ते मूर्ख ।

३६ पिता, सेठ काम करे याने काम करता थका बेटा, गुमास्ता बेठा देखे और उनकी मर्जी माफक कामकी मदद न देवे, उनकी भक्ति विनय न करे, आला टाला करे लुकता छिपता फिरे तो मूर्ख, ऐसाही वड़ेके आगे छोटा और सासुके आगे वहु जाणना ।

॥ १७ बोल प्रस्ताविकका ॥

१ जो तुमकु दुःखोका भय होय और

सुखकी अभिलाषा होय तो धर्मरूपी कल्पवृक्ष सेवो।

२ धर्मकी जड़ विनय और पापकी जड व्यसन (कुव्यसन) है, यह कोड ग्रंथका सार है।

३ जिसके पास नित्य क्षमारूपी खड्ग है, उसका क्रोधरूपी वेरी कुछ नहीं कर सक्ता।

४ शोकरूपी वैरीकु ज्यादा पास रखोगे तो तुम्हारी बुद्धि, हिम्मत और धर्म ए तीनोका जड़से नाश हो जावेगा।

५ जैसे पुत्र बिगर पालणो और बींद बिगर (बिना) जान शोभती नहीं तेमे ही धर्म बिगर आत्मा शोभती नहीं।

६ जिके (जो जो) मनुष्य परस्त्रीकु माता तथा बहनके सदृश (समान) समझता है और सर्व जीवोंकु अपणी आत्मा समान गिणता है वह नहीं होता यह बात शास्त्र द्वारा सिद्ध है।

७ शास्त्रका श्रवण श्मशान (मशान) भूमि और रोग पीडा ए तीन स्थान वैराग्य उपजणका मुख्य कारण है।

८ बेसमजका अर्थ करनेवालेकुं शास्त्र भी शस्त्रकी तरह हो जाता है।

९ बुद्धि चढ़नेका और नया तर्क उत्पन्न होणेका मुख्य कारण मनकी शुद्धि है।

१० तुमको दुःख पडे उस वक्त चिंता त्याग कर धैर्य राखो क्युंकि चिना कुत्र दुःख हरणेकी दवाई नहीं है। चिंतासे चतुराई घटेगी और चतुराईके अभावे (नही रहनेसे) तप जप और नियम किसके आधार रहेंगे सम दम और समाधि किसकु अवलम्बन करेंगे वास्ते उस वक्त धैर्य राखकर धर्म सेवण करना एहीज उत्तम है।

११ जो तुमको सब दुनियाको वशकरणा होय तो पराया औगुणमे प्रवेश न कर गुण

ग्रहण करो मीठा और हितकारी वचन बोलो और उदारता गुणकी वृद्धि करो।

१२ अपणे हसते हसते कहते है कि क्या तुम्हारा हाथ टूट गया? क्या तुं अंधा हो गया? ऐसे ऐसे कटु (कड़वा) वाक्य कहकर चीकणे कर्म बाधते है वो जब कर्म उदय आवेंगे तब रोय रोय कर भी छूटना मुश्किल हो जायगा वास्ते वचन निकालती वक्त खूब शोच कर बोलना क्युंकि छुरीका तथा तरवारादि शस्त्रका घाव दवाइमें अच्छा होय जावे परन्तु वचनका घाव मिलना कठिन है सो हरेक वक्त विचार पूर्वक बोलना।

१३ सामायिक करती वखत जिनका प्रणाम स्वजनोके उपर और परजनोके उपर और निंदा तथा प्रशसामें समभाव रखेगे उसी ही का सामायिक मोक्षदायक होवेगा।

१४ जैसे राजाकी आज्ञाका भंग करणेसे

इस लोकमें मनुष्यको धन वगैरेका दंड होता है तैसें ही सर्वज्ञ भगवानकी आज्ञा भंग करनेसे जीवको परभवमें अनंता भवभ्रमणरूप दंड (डंड) होता है।

१५ जो तुम, तुमारे प्रिय मित्र और सगा तथा संबंधीके साथ प्रेम रखणा चाहते हो तो जिस वखत वह क्रोध करे तब तुम क्षमा धारण करो।

१६ जो तुमको धर्मकी उन्नति करणी होय तो शास्त्रका बहुमान करो और अच्छा आचरण राखो।

१७ कडवा वचन कुमती कुसंगता और कुटिल स्वभाव इत्यादि दुर्गुण त्यागोगे तब ही निश्चय धर्मकी प्राप्ति होवेगी।

॥ नं० १ ॥

॥ बोल शिखावणारा ॥



१ माता पिता गुरु तथा मोटा पुरुषनो विनय करवुं ।

२ क्लेशने थानके मौनपणुं धारण करवुं ।

३ इन्द्रियो सर्वथा वश राखवी ।

४ एक अक्षर शीखाडनारने पण गुरु करी मानवुं ।

५ पोताना अवगुण शोधी काढवुं ।

६ महोटा पुरुष घेर (घर) आवे तो उभा थइ सन्मान देवु ।

७ दोस्तदारी मित्राचारी पण्डितो साथे राखवी ।

८ नवांनवां शास्त्र वांचवानो अभ्यास रा- खवुं ।

९ जे आपणी सगी थती नथी तेनी साथे

॥ न० ३ ॥

॥ बोल शिखावणरा ॥

१ आवसग्ग करे तो पच्चक्खाण उपयोग हुवे।

२ मनमे सदेह होय सो पूंछने टाले।

३ साधर्मिकुं दोष लाग्या हुवे तो एकात सिखामण दे।

४ साज सवेरे व्रत पचाखाण चितारे (सभाले)।

५ जेसा प्राच्छित्त लाग्या होय तेसा दड लेवे।

६ साधर्मिसु चरचा करतां विचमे वाद न करे।

७ भगवतका मार्गमे खेंचाताण नकरे।

८ पक्की (पखी) चोमासी नफो टोटो विचारे।

९ विनय [illegible] अनर पढे तथा पढावे।

॥ न० २ ॥

॥ बोल शिखावणरा ॥

१ रुप क्राध ऊफ अंध न वहीजे ।
२ भाग तमाखु अमल तजीजे ।
३ बुरीगार री सग न कीजे
४ वेर बुराई कदे न लीजे ।
५ न्यात जातमें फद न पाड़ीजे ।
६ सात कुव्यसनसु अलगा रहीजे ।
७ चोरी जारीझूठ तजीजे ।
८ खोटा दगा रा वणज न कीजे ।
९ मोह मायामें निपट न कलिजे ।
१० अथिर ससार सु विरक्त रहीजे ।
११ ग्रहस्थ धर्म बारे व्रत धारीजे ।
१२ हकर्मे चाल खरो जस लीजे ।
१३ निरलोभी निग्र थ गुरु कीजे ।
१४ साचा सुख मोक्षरा लीजे ।

---

४ हिंसाकारक वचन छाना या उघाडा नहीं बोले।

५ दुर्वचन नहीं बोले।

६ मूंडा वचन नहीं बोले।

७ तूंकारा देकर नहीं बोले।

८ अणसुहातो (अणगमतो) नही बोले।

९ मारकूट पड़े क्रोध नही करे शुभ मन वर्तावे।

१० दुर्वचन बोले तो क्रोध न करे।

११ कोलाहल शब्द ऊपर क्रोध न करे।

१२ गुरुकी आज्ञामें चले आपरे छंदे नहीं चाले।

१३, गुरुरी सेवा करतो थको गुरुरे पास रहे

१४ गुरुरी सेवा करे तेने भली प्रकारो घणी भलो तपस्वी शूरवीर कहीये।

१५ पांच इंद्रियोंके विषयपर तथा आरंभ विषे गृद्धी नहीं आणे।

१० तीर्थंकरनी आज्ञा सहित कोई सिखा-वण देवे तो सत्य माने ।

११ धर्मके ठिकाणे आयके संसारकी बात न करे ।

१२ धर्मी धर्मी आपसमें कलह राड़ न करे।

१३ धर्मी धर्मके ठिकाणे छोड़के और ठिकाणे जाय नहीं ।

१४ साधर्मीकु डिगतेकु थिर करे ।

१५ रोगी गिलाणीकी वेयावच्च करे ।

॥ न० ४ ॥

॥ बाल शिखावणरा ॥

॥ धर्मी पुरुषके योग्य ॥

१ वडोके बीचमे न वोले ।
२ मर्मको वचन नहीं वोले ।
३ माया कपटाईरा वचन नहीं वोले ।

१२ कार्य तथा सत्कार विगर किसीके घर जाणो नहीं।

१३ माता पितानी आज्ञा लोपणी नहीं।

१४ सगा साथे कदापि विरोध रखणो नहीं।

१५ कपटीके आडम्बरको विश्वास न करणो।

१६ अति कष्ट पड्या थकां भी आत्मघात करणी नहीं।

१७ हांसी करतां किसी पर क्रोध करणो नहीं।

१८ कोई क्रोधरे वश हो कर कड़वा वचन आय कर कहे तो भी न्यायमार्ग छोडणो नहीं।

१९ माता पिता गुरु सेठ स्वामी और राजा इणाका अवगुण बोलणा नही।

२० स्नेहराग समान दुसरो उत्कृष्टो बधन नहीं और प्राणीकी हिंसा समान मोटा पापनहीं।

२१ माता बहन और पुत्री साथे एक आसण बेठणो नहीं।

॥ न० ५ ॥

॥ बोल शिखावनरा ॥

१ मित्रसे कपट रखणो नहीं।

२ स्नेहवान स्त्रीको भी विश्वास न करनो।

३ अन्याय मार्गसे द्रव्य पैदा न करणो।

४ बड़ोंके साथे वैर करणो नहीं।

५ नीच पुरुषके संग विवाद करणो नहीं।

६ वेरीके उपर पण निर्दयी न होणो।

७ समर्थ होकर दूसरेकी आशा भंग नहीं करणो।

८ किसीकु झुठो कलंक न देनो,

६ किसीकुं खराब मालूम होय ऐसा वर्त्ताव नही रखणो।

१० जिस ठिकाणे दुश्मन ज्यादा होय वहां नही जाणो।

११ चोरीकी चीज मोल लेणी नही।

१२ कार्य तथा सत्कार विगर किसीके घर जाणो नहीं।

१३ माता पितानी आज्ञा लोपणी नहीं।

१४ सगा साथे कदापि विरोध रखणो नहीं।

१५ कपटीके आडम्बरको विश्वास न करणो।

१६ अति कष्ट पड्या थका भी आत्मघात करणी नहीं।

१७ हांसी करतां किसी पर क्रोध करणो नहीं।

१८ कोई क्रोधरे वश हो कर कड़वा वचन आय कर कहे तो भी न्यायमार्ग छोडणो नहीं।

१९ माता पिता गुरु सेठ स्वामी और राजा इणाका अवगुण बोलणा नही।

२० स्नेहराग समान दुसरो उत्कृष्टो बधन नही और प्राणीकी हिंसा समान मोटा पापनहीं।

२१ माता बहन और पुत्री साथे एक आसण बेठणो नहीं।

२२ क्रोधी कृपण आलसी और व्यसनीकं सगत करणी नहीं ।

२३ धनसे बहोत प्यार होय तो भी अन्याय सु उपार्जन करणो नही कारण सोनेरं छुरी कोइ पेटमें मारे नहीं ।

२४ कदापी सत्य छोडना नहीं ।

॥ नं० ६ ॥

॥ बोल शिखावणरा ॥

१ अपने किसी दूसरे पुरुषपर उपकार किं हुवे तो अपणे मुखसे उसको कभी दरसाणा नं वदलेमे पीछी कोई प्रकारकी ईछा न रखनी ।

२ किसी पुरुषमें कोई औगुण देखके निं त्याग (छोड़) जहां तक हो उसका गुण ही ग्रह

३ पर स्त्री एकली एकांतमें होय तो वहां न बैठना।

४ अजाण वस्तु जिसका नाम व गुण नहीं जाणे ऐसी न खाना न खिलाना।

५ कोई गुप्त वात अपनी या अपने ईष्ट मित्रकी या जिसको दुसरेने विश्वास जाण कर कही होवे सो कदापि जाहिर न करना।

६ कोइ भी मनमें चिंतवी वात ओछा मनुष्यकुं मूर्खकुं स्त्रीकु पागलकुं न कहणी।

७ सकट आनेपर धर्म धैर्य तथा सत्य न छोडना।

८ जिस स्थानपर क्लेश तथा पापका कारण होवे त्याग करना या वहांपर मौन रखना।

९ जिस द्रव्य उपार्जनमें जीवकी जोखम धर्मकी हानि और इज्जतका भय होवे ऐसा कृत्य न करना।

१० कृतघ्नी, कपटी, निर्दयी, अतिलोभी, निर्लज्ज, कुव्यसनी और मूर्ख इनके साथ प्रीति न करना ।

११ अपनी इन्द्रिया विषय रागसे हर समय वश रखणी ।

१२ अपनी शक्ति तथा लक्ष्मी बुद्धि वल विचारके कार्य करना जिसमें दूसरोकी सहायता न लेणी पड़े ।

१३ छते (थकां) द्रव्य कर्जा नहीं करणा ।

१४ निर्धनता अर्थात् दरिद्रतामें भी अकार्य तथा अनर्थसे धनकी इच्छा नहीं करणी ।

१५ अपने सज्जन तथा मित्रपर संकट पड़े तो अवश्य सहायता करनी ।

१६ व्रत पचखान लेके निर्मला पालणा ।

१७ अग्नीका ऊंडे जलका शस्त्रका सींग तथा नखवाले जानवरका विषका जोगीका स्त्रीका विश्वास करना नहीं इणके

नजीक रहना नहीं प्रयोजन होवे तो मध्य भावे रहणा ।

१८ दान देनेमे गुणजनकी सेवा भक्ति करनेमें विद्या सीखनेमे धर्मकृत्य करनेमें परोपकार करनेमें आलस्य प्रमाद और कृपणता रखनी नहीं ।

१९ दुष्ट कलकी निर्दयी लापर कुव्यसनी निर्लज्ज इत्यादिक मनुष्यके साथ मित्रता गुमास्तगीरी पातिदारी तथा लेण देण वगेरहका व्यवहार करना नहीं ।

२० राजा, गुरु, माता, पिता, पंच, पंडित, इनके सामने कपट झूठ गैर अदबी करना नहीं सरलपणे सच्ची बात करना ।

२१ वल्लभ सगा से मित्र से कुटुम्बी से लेण देणका व्यवहार करना नहीं सुख दुःखमें सिरीहोणा भोजन, वस्त्र, आभूषणका सन्मान करणा व धर्मका उपदेश देना व सुणना ।

१० कृतघ्नी, कपटी, निर्दयी, अतिलोभी, निर्लज्ज, कुव्यसनी और मूर्ख इनके साथ प्रीति न करना ।

११ अपनी इन्द्रिया विषय रागसे हर समय वश रखणी ।

१२ अपनी शक्ति तथा लक्ष्मी बुद्धि बल विचारके कार्य करना जिसमें दूसरोंकी सहायता न लेणी पड़े ।

१३ छतें (थका) द्रव्य कर्जा नहीं करणा ।

१४ निर्धनता अर्थात् दरिद्रतामें भी अकार्य तथा अनर्थसे धनकी इच्छा नहीं करणी ।

१५ अपने सज्जन तथा मित्रपर संकट पड़े तो अवश्य सहायता करनी ।

१६ व्रत पच्चखान लेके निर्मला पालणा ।

१७ अग्नीका ऊंडे जलका शस्त्रका सींग तथा नखवाले जानवरका विषका जोगीका स्त्रीका विश्वास करना नहीं इणके

४ जिस स्थानमें (ग्राममे) चिता दुख उपजतो होवे तथा मोह जागतो होवे उस ग्रामको छोड देना चाहिये, ज्ञान वृद्धिके स्थान (धर्म स्थान) जाइजे।

५ न्याय मार्ग सुत्र सिद्धान्त अनुसार चले उसको मामला, मुकदमा कभी लग नहीं सकता यह वडोका कहना है मो सत्य है।

६ पीठ पीछे कीणहीरी निन्दा न करणी जो सुणेतो वैर वधे।

७ क्रोधीने छेडनो नहीं।

८ आपरा घररा छिद्र तथा सुख दुख किणही सु न कहणो।

९ वडासु तथा मित्रसु विद्वानसु हेत वधाणो।

१० पारका औगुण जाणतो हुवे तो भी किणही आगे कहना नहीं।

३२ अपनी आत्माको ससारके सयोग वियोग जन्म मरणके दु खसे छुडानेके वास्ते मोक्ष मार्गकी खोजना करणेकी खप अवश्य करणी चाहिये ।

॥ नं० ७ ॥

॥ बोल शिखावणरा ॥

१ खोटी सलाहदे ऐसे वकीलके पास मत जावो ।

२ खोटी पक्ष मत खेंचो ।

३ मामले, मुकदमेके मार्ग मत पडो, जिद को छोड न्यायको पकड़ो जटी मोहके उदय कषाय वश काम पड़ जाय तो पच डाल कर आपस करलो (मिटायलो) विना हैरानीसे बचो अटरनि (Attorney) के पास मत जावो, तो खरचा देती वखत पछताना पड़ेगा ।

४ जिस स्थानमें (ग्रामसे) चिंता दुख उपजतो होवे तथा मोह जागतो होवे उस ग्रामको छोड देना चाहिये, ज्ञान वृद्धिके स्थान (धर्म स्थान) जाइजे।

५ न्याय मार्ग सुत्र सिद्धान्त अनुसार चले उसको मामला, मुकद्मा कभी लग नही सकता यह वडोका कहना है सो सत्य है।

६ पीठ पीछे कीणहीरी निन्दा न करणी जो सुणेतो वैर वंधे।

७ क्रोधीने छेडनो नही।

८ आपरा घररा छिद्र तथा सुख दुख किसही सुं न कहणो।

६ वडांसु तथा मित्रसु विद्वानसु हेत वधाणो।

१० पारका ओगुण जाणतो हुवे तो भी किणही आगे कहना नहीं।

११ नीच पुरुषने छेड़नो नहीं छेड़तो रेकारा तुकारा बोले ।

१२ अजाया तथा उघाड़े डील (सरीर) नगन नागा न सूईजे ।

१३ तीनकाल अशुभ बात न कीजे ।

१४ ससाररा कार्य उतावलसु न कीजे अवसर देखीजे ।

१५ सूनता सागारी अण सण कीजे ।

१६ बिमारी रोगचालो चलतो होवे जठे न रहीजे ।

१७ टाबरारे वास्ते न लड़ीजे ।

१८ बिन छाणया पाणी न पीजे ।

१९ सुल्या धान न खाईजे ।

२० रसका भाजन तथा चराक दीवा प्रमुख उघाड़ा न राखीजे ।

२१ घट्टी, ऊखल चूल्हा देखकर जतनासे ...जे ।

२२ कर्जा देती वखत या कर्जादिया पेहला ईतनी बात जरूर विचारने योग हे, हैसीयत सपदा-धन, पुजी वेपार, नफा टोटा, चेत्र, राजका कानून, चाल चलण, सगत साख सोभा सपत, परवार काम करता, प्रकृति, पच्च नियत इत्यादिक ।

२३ कुमार्ग धन खरचके न गमाईजे ।

२४ मारगमें तरुण (जवान) लुगाई रो साथ न कीजै ।

२५ बाहरे नीकलेतो गाफिल न रहीजै चोकी पेहरो दीजै ।

२६ तृषा थका घणो पाणी न पीजै ।

२७ उकड़ो घणो नही वैसीजै ।

२८ दिनरी घणी निन्द्रा न लीजै ।

२९ घरमे बावल रूख न उगाईजै ।

३० आंवलीरी छाया न वैसीजै ।

३१ पाणीरो आसगो न कीजै ।

३२ रीस करके टावर रे माथेमें न दीजे ।
३३ पर द्रव्यको अयोग इच्छा नहीं कीजे ।
३४ अनीतिसे धन भेला नहीं कीजे ।
३५ गुरु गमके विना सुत्रका उपदेश देनेका तत्पर नहीं रहीजे ।
३६ सुता उठ सामायिक कीजे ।
३७ निग्र थ साधुरो दरसण कीजे ।
३८ धर्मरी दलाली चित्तसु कीजे ।
३६ माय वाप सासु ने दुख नहीं दीजे ।
४० वडोसे विनय राखीजै ।
४१ पापरे काममें आगे मन धरीजे ।
४२ धर्मरे काममें आलस न कीजे ।
४३ उपगारी हुइजे, सभोसे भलाइ कीजे ।
४४ अण परखीयारा विश्वास न कीजै ।
४५ परने पीड़ा उपजे ते न वोलीजै ।
४६ इर्या जोया विना न चालीजे ।
सुत्र सिद्धांतरो संग्रह कीजे ।

४८ निश्चय व्यवहार दोनु मानीजै ।

४९ नवां नवा शास्त्र वाचणे पढणेरो अभ्यास उद्यम राखीजे ।

५० वालकने छोटे पणेसे भली विद्या धर्म तत्व शिखाईजे ।

५१ दुःखी होवे तिणरो उपगार कीजे, उपगार करता ढील न करीजे ।

५२ रूठा ने मनाईजे ।

५३ थलीरा गावमे वसीजे तो अग्निरो जतन कीजे ।

५४ लेखो चोखो करता ज्ञानरी वात वाचता लिखणो करता वीचमे कांइ चीज देनी नही काइ वात वोलणी नहीं यदी वोले ध्यान चुकावै तो काम करता होवे उसको अणगमती लागे भूल पडे गलती आवे फेर जैसो अवसर देखे वैसो करे ।

५५ गुरु, वडाके वीचमे नही वोलणो ।

३२ रीस करके टावर रे माथेमें न दीजे ।
३३ पर द्रव्यकी अयोग इन्छा नहीं कीजै ।
३४ अनीतिसे धन भेला नहीं कीजै ।
३५ गुरु गमके विना सुत्रका उपदेश देनेको तत्पर नहीं रहीजे ।
३६ सुता उठ सामायिक कीजे ।
३७ निग्र थ साधुरो दरसण कीजै ।
३८ धर्मरी दलाली चित्तसु कीजै ।
३९ माय वाप सासु ने दुख नहीं दीजै ।
४० वडोसे विनय राखीजै ।
४१ पापरे काममे आगे मत धसीजे ।
४२ धर्मरे काममें आलस न कीजे ।
४३ उपगारी हुइजै, सभोसे भलाइ कीजै ।
४४ अण परखीयारा विश्वास न कीजै ।
४५ परने पीड़ा उपजे ते न वोलीजै ।
४६ इर्या जोया विना न चालीजे ।
सुत्र सिद्धातरो संग्रह कीजै ।

४८ निश्चय व्यवहार दोनु मानीजे ।

४९ नवा नवा शास्त्र वाचणे पढणेरो अभ्यास उद्यम राखीजे ।

५० बालकने छोटे पणेसे भली विद्या धर्म तत्व शिखाईजे ।

५१ दुःखी होवे तिणरो उपगार कीजे, उपगार करता ढील न करीजे ।

५२ रूठा ने मनाईजे ।

५३ थलीरा गावमे वसीजे तो अग्निरो जतन कीजे ।

५४ लेखो चोखो करता ज्ञानरी ज्ञान वांचता लिखणो करता बीचमे काइ चीज देणी नही काइ बात बोलणी नही यदी और ध्यान चुकावै तो काम करता होवे उसका आगमती लागे भूल पडे गलती आवे फेर अवसर देखे वैसो करे ।

५५ गुरु, वडाके बीचमे

५६ क्रोधकी वात, चिंताकी वात, दुखकी वात, अपणे स्वार्थकी अणागमती वात, घरका झगड़ा विगेरह भोजनकी बाबत या भोजन करतेको न कहणा चाहिये ।

५७ ज्ञानके उद्यम करणे वासते थोडी भी टैम निकाल लेनी ।

५८ नित्य नेम मर्यादा विधि सहित शुद्ध उपयोगसे करना ।

५६ साधु, साध्वीने निर्दोष आहार चढते भावसे वेहराना ।

६० किसीका दिल मत दुखावो ।

६१ क्रोधकी वखत चुपरहणा क्षमा करणी ।

६२ अपने उपर कोई अपराध करे तब क्षमा करके अन्त करणसे माफी देना ।

६३ जल्दी उठ कर नित्य नेम करे सो पुनवान जाणीजे, मोड़ो उठे तो भूंडो दीशे आवे ।

६४ चिना से रोगऊपजे, विनाकाम गपॅा सपॅा मारनी नहीं, फजूल टैम खोनी नहीं।

६५ सब जीवका कल्याण होवे ऐसी शुभ भावना भाणी।

॥ सवैया ॥

राजा चंचल होय भोम पराई तके।
पण्डित चंचल होय सभामें अमृत भखे॥
हाथी चंचल होय सूंड फौजा में सोहे।
घोड़ा चंचल होय मन असवारा मोहे॥

॥ दोहा ॥

एता तो चंचल भला राजा पंडित गज तुरि।
कवि गंघ कहे सुणो राय हर निश्चय चंचल नार बुरि॥

॥ सवैया ॥

फूल घणा पण सुगद नहीं कोण जावे उस वाड़ी मे ।
थोरकी लकड़ी जीव घणा कोण लेवे उस भारीको ॥
रंग घणा पण पोत नहीं कोण लेवे उस साड़ीको ।
भरतार के कहणामें नहीं चाले धरकार है उस नारिको ॥

॥ दोहा ॥

मीठा सबसे बोलिये सुख उपजे चहुं ओर ।
वशी करण इक मन्त्र है तजो बोल कठोर ॥

छपाता--गनपाल सेठिया,
कलकत्ता ।
विक्रम सम्वत १९७, बैशाख सुदी ३

॥ कुण्डलिया ॥

लीलोती छोडी परी लोभ छोड़ीयो नाय ।
दूना तीना चोगुणा माड्या बहियां माय ॥
मांड्या बहियां माय तोलता घटतो तोले ।
पसेरीमें पाव मेल दे अगूठा रे ओले ॥
लेता देता दामकी सो सा सोगन खाय ।
लीलोती छोड़ी परी लोभ छोड़ीयो नाय ॥
सुन साहाजी जीवण कहे हे ऊको उत्तेर ।
लेता देता पाव को लें घाल्यो किस विध फेर॥
घाल्यो किस विध फेर कसर राखी नही कोई ।
तोवा बार हजार इसी तूं करे कमाई ॥
साहेव लेखो मागसी देसी ऊधो टेर ।
सुण साहाजी सग्राम कहे है ऊको उत्तेर ॥

॥ सवैया ॥

फूल घणां पण सुगंद नहीं कोण जावे उस वाड़ी मे ।
थोरकी लकड़ी जीव घणा कोण लेवे उस भारीको ॥
रंग घणा पण पोत नहीं कोण लेवे उस साडीको ।
भरतार के कहणमें नहीं चाले धरकार है उस नारिको ॥

॥ दोहा ॥

मीठा सबसे बोलिये सुख उपजे कछु ओर ।
वशी करण इक मंत्र है तजो बोल कठोर ॥

छपाता--गेनपाल सेठिया,
कलकत्ता ।
विक्रम सम्वत १९७६ बैशाख सुदी ३

॥ कुण्डलिया ॥

सीलोती छोडी परी लोभ छोड़ीयो नाय ।
दूना तीना चौगुणा मांड्या बहियां माय ॥
मांड्या बेहियां मांय तोलता घटतो तोले ।
पसेरीमे पाव मेल दे अगूठा रे ओले ॥
लेता देता दामकी मो सा मोगन खाय ।
सीलोती छोड़ी परी लोभ छोडीयो नाय ॥
सुन साहजी जीवण कहे है ऊको उत्तेर ।
लेता देता पाव को तें घाल्यो किस विध फेर ॥
घाल्यो किस विध फेर कसर राखी नहीं कोई ।
सोवा चार हजार इसी तूं करे कमाई ॥
साहेब लेखो मागसी देसी ऊंधो टेर ।
सुण साहजी सग्राम कहे है ऊको उत्तर ॥

॥ कविता ॥



रती विन रिद्ध रती विन सिद्ध रती विन
जोग सधै न जती को ।
रती विन राज रती विन पाट रती विन
मानुप लागे फीको ॥
रती विन भाई कह्यो नहीं माने रती विन नार
गिणे ना पतीको ।
कवी गंग कहै सुण शाह अकबर एक
रती विन पाव रतीको ॥
वातन से देवी और देवता प्रसन्न होत ।
वातन से सिद्ध और साध पति कहलात हैं ॥
वातन से खान सुलतान नरेश माने ।
वातन से सेठ लोक लाखो ही कमाते हैं ॥
भूत और भुजंग सब वसि होत वातन से ।
वातन से पुण्य और पाप वढ़ि जात हैं ॥
अपकीरती होती सब वातन से ।

कल्पवृक्ष न पारस की परवा चिंतामणीको हम ना करिये ।

नहीं चाह हमें पट भूषणकी रस कूप मिले तो का करिये ॥

सुनि लीजिये सज्जन या जग में अपनी अपनी मत पाकर हैं ।

परवा नहीं पल हमाउ की हम चाह की आंख के चाकर हैं ॥

तू कुछ और विचारत है नर तेरो विचार धर्यो ही रहगो ।

कोटि उपाय करे धन के हित भाग लिखो इतनो ही लहेगो ॥

भोरकी साझ धरि पल माझ सु काल अचानक आन गहेगो ।

राम भज्यो न कीयो कुछ सुकृत पीछे नर रहेगो ॥

जो दम बीस पचास भये सत होय हजार तो लाख मगेगी ।
कोटि अरब खरब असंख्य धरापति होनेकी चाह जगेगी ।
स्वर्ग पतालको राज करो तृष्णा अधकी अति आग लगेगी ।
सुन्दर एक सन्तोष विना सठ तेरी तो भूख कभीना भगेगी ।
सुरज छीपे नहीं अटरी बदरीमे चंद छीपे नहीं बादल छाया ।
रण चढ़ीयो रजपूत छिपे नहीं प्रीत छिपे नहीं पीठ दिखाया ॥
चचल नारी का नैन छीपे नहीं दातार छिपे नहीं घर मगन आया ।
जोगी का भेप अनेक करो कर्म छिपे नहीं भभूत लगाया ॥
चूक जात भवरी (जौहरी) जवहार के परखवेमे

चूक जात चितारा कलम काम नहीं करती ॥
चूक जात बजाज नाप कपड़ेके फाड़बेमें ।
होनी बलवान अजा सिंह से न मरती है ॥
जोतिष पुरान बेद चूक जात उचारबेमें ।
मल्लाह हुसियार नाव जलहू से भरती है ॥
झूठि ना कहे उस्ताद मजा रोसके मारबेमें ।
सोच करे मूर्ख होनी हो तब टारि नाय टरती है ॥



कर्मविपाक कथाका कितनेक सामान्य कर्म वध फलका बोल ।

संग्रह करके लिखते है ।

प्रश्नोत्तर ।

१ कहो पूज्य इण जीवरे सरीरमें घणा जीवारी उत्पत्ति होवै सो कीसे पापरे उदे (उदय) सु ?

उत्तर—सुण सिष्य पूरवले भवमें घणा कछ मच्छरो आहार कीनो तिण पापरे उदेसु।

२ कहो पूज्य इण जीवने भणनो गुणनो नहीं आवे सो किण पापरे उदेसुं ?

उत्तर—पूर्वले भव आप भणीयो नहीं पेलेने (दूसरेने) भणाता अंतराय दीवी तिण पापरे उदेसं ।

३ कहो पूज्य जीव कालो कुदरसण अशुभ वर्ण पामे सो किण पापरे उदेसुं ?

उत्तर—पूर्वले भव रूपरो अहकार मद कीनो तिण पापरे उदेसु।

४ कहो पूज्य इण जीवने कुडो कलक (आल) आवे सो किण पापरे उदेसुं ?

उत्तर—पूर्व भवे वारंवार कलह करे अठारमो पाप स्थानक वारवार सेवे तिण पापरे उदेसु ?

५ कहो पूज्य इण जीवरो बोलीयो चालीयो सुहावे नही सो किण पापरे उदेसुं ?

उत्तर—पूर्वले भव आपरो कियो थापीयो पेलेरो कियो उथापियो तिण पापरे उदेसुं।

६ कहो पूज्य इण जीवने शाबाशी जस मीले नहीं सो किण पापरे उदेसुं ?

उत्तर—पूर्व भव जातरो अहकार किनो पापरे उदेस।

७ कहो पूज्य इण जीवने घणो क्रोध आवे सो किण पापरे उदेसु ?

उत्तर—पूर्वले भव घणो लोभ कीनो तिण पापरे उदेसु ।

८ कहो पूज्य इण जीवरे संसार भ्रमण मिट्यो नही सो किण पापरे उदैसु ?

उत्तर—पूर्व भवे पोसा प्रतिकमणोमें विराधना कीनी तिण पापरे उदैसु ।

९ कहो पज्य इण जीवने देश परदेश जावे पिण लाभ हुवे नहीं सो किण पापरे उदैसु ?

उत्तर—पूर्वले भव पोते दान दियो नहीं, पेलेने देता अंतराय दीनी तिण पापरे उदेसु ।

१० कहो पूज्य इण जीव पांचे इन्द्री हीण पाइ सो किसे पापरे उदैसु ?

उत्तर—पूर्वले भव गाजर मूला कादा जमिकदरो आहार कीनो तिण पापरे उदैसु ।

११ कहो पूज्य इण जीव पाच इंद्रि
वियोग पायो सो किण पापरे उदेसु ?
उत्तर—पूर्व भवे वनस्पतिनों छेदन भेद
घणी कीनी तिण पापरे उदेसु ।
१२ कहो पुज्य इण जीवने घणी नि
आवे सो किण पापरे उदेसु ?
उत्तर—पूर्व भवे दारु भागरो नसो घण
कीनो तीव्र भावे अति मदिरा पान पीया ति
पापरे उदेसु ।
१३ कहो पुज्य इण जीवरो शरीर निरो
नहीं रहे सो किण पापरे उदेसु ?
उत्तर—पूर्व भवे घणा जीव मोसीया तिण
पापरे उदेसु ।
१४ कहो पुज्य आ
होवे सो कीसे पापरे उदेसु
उत्तर—पूर्वले भव जीवा
कुटीया पीटीया तिण

१५ कहो पूज्य इण जीवने रोज घणां आवे सो किसे पापरे उदसु ?

उत्तर—पूर्वले भव काची कुंपलां तोडी तिण पापरे उदेसु ।

१६ कहो पूज्य इण जीवसुं तपस्या होवै नहीं सो किण पापरे उदै सुं ?

उत्तर—पूर्वले भव आप तपस्या किधी नहीं अने पेलेने (दुसरेने) करताने अंतराय दीनी तप जपरो मद कीनो तिण पापरे उदैसुं ।

१७ कहो पूज्य इण जीवने लुगाइ बेटा घर सुहावे नहीं सो किण पापरे उदैसुं ?

उत्तर—पूर्वले भव दान शील तप भावना भावी नहीं तिण पापरे उदै सु ।

१८ कहो पूज्य इण जीवने सीख सीखावण वाहाली (अच्छी) लागे नहीं सो किण पापरे उदै सुं ?

उत्तर---पूर्व भवे आर्त्त ध्यान रुद्र ध्यान ध्यायो तिण पापरे उदै सु ।

१६ कहो पूज्य इण जीवने भरजोवनमे दयापणो आवे नही सो किण पापरे उदै सु ।

उत्तर--पूर्व भवे घणा मैला मंत्र कीना तिण पापरे उदै सु ।

२० कहो पूज्य इण जीवने भरजोबनपणा (जवान अवस्था) में रडापो आवे सो कीण पापरे उदय (उदै) सु ?

उत्तर—पूर्व भवे जड़ासु रुंख उपाड़ीया तिण पापरे उदयसु ।

२१ कहो पूज्य इण जीवने कुटम्ब घरमें सुख देवे नहीं सो किण पापरे उदै सु ?

उत्तर- पूर्व भवे टोगड़ा टोगड़ीने दुध छोडीयो नहीं अने अतराय दीनी तिण पापरे उदै सु ।

२२ कहो पूज्य आ जीव काणो हुवो सो किसे पापरे उदै सुं ?

उत्तर—पूर्व भवे बोरकाचर फल फूल सूईसे विधीया अने माला किनी तिण पापरे उदै सुं।

२३ कहो पूज्य जीव आंधो हुवे सो किण पापरे उदै सुं?

उत्तर—पूर्वले भव टीसता जीव धानमें पीसे स्थावर क्षुद्र जीवोंको पाणीमें डवोयके मारे मच्छरको आग लगाय कर धूवा देकर मारे तिण पापरे उदै सुं।

२४ कहो पूज्य ओ जीव दुःखीयो हुयो सो किण पापरे उदै सुं?

उत्तर—पूर्वले भव घणी बुराई कीनी अणदिट्ठी अणसुणी वालो कीनी तिण पापरे उदै सं।

॥ बोल कर्मविपाकरा ॥

सामान्य कर्मबंध फल कहते हैं ।
बोल प्रश्नोत्तर ।

१ प्रश्न—प्राणी निर्द्धन किस कर्मसें होवे ?
उत्तर—पराया धन हरणेसे ।

२ प्रश्न—प्राणी दरिद्री किस कर्मसें होवे ?
उत्तर—दान देतेको वर्जनेसे, दान सुपात्रने न देणेसें दया न पालनेसे ।

३ प्रश्न—प्राणी धन तो पावे परन्तु भोग नही सके किस कर्मसे ?
उत्तर—दान देके पछतावनेसें ।

४ प्रश्न—प्राणी अकुली-निपूतियो (अर्थात् जिस पुरुषके पुत्र पुत्री न होय) किस कर्मसे ?
उत्तर—जो वृक्ष रस्तेके ऊपर हो जिनसें अनेक पशु और मनुष्य फल फूल खावे

और छाया करके सुख पावे ऐसे वृक्षोको कटावे तो।

५ प्रश्न—प्राणी वन्ध्या (स्त्री वाझडी) किस कर्मसे होवे?

उत्तर—गर्भ गलावे तथा गर्भ गलानेकी औषधि देवे तथा गर्भवती मुर्गीको (Hen) वध करे और कृतका अन्तर कढ़ावे तो।

६ प्रश्न—प्राणी मृत वध्या (वाझड़ी) किस कर्मसे होवे?

उत्तर—बेगण आदिका भूरथो करे तथा होले करे तथा कदमूल खाय तथा मुर्गी आदिकके अडे बच्चे मार खाय और उगती वनस्पति कुपला तोड़े तो।

७ प्रश्न—प्राणी अधूरे गर्भ गल गल जावे सो किस कर्मसे?

उत्तर—पत्थर मार, मारके वृक्षके कच्चे फल फूल पत्ते तोडे तथा पंखीयोके माले तोड़े

तथा मकड़ीके जाले उतारे तो।

८ प्रश्न—प्राणी गर्भमेंही मर मर जाय तथा योनिद्वारमें आ के मरे किस कर्मसे ?

उत्तर—महा आरभ जीव हिंसा करे मोटा झूठ बोले, साधुको असूझतो आहार, पानी देवे तो।

९ प्रश्न—प्राणी गूंगा किस कर्मसें होय ?

उत्तर—देवधर्मकी निंदा करे तथा निर्ग्रंथ गुरुकी निंदा करे तथा गुरुके पुठे मुह मचकोड के छिद्र देखे तो।

१० प्रश्न—प्राणी बहरा किस कर्मसे होय ?

उत्तर—पराया भेद लेनेका लुक छिपके बात सुनने तथा निन्दा सुणनेका स्वभाव होय तो।

११ प्रश्न—प्राणी रोगी किस कर्मसें होय

उत्तर—गूलर आदि फल खाय तथा चू पकड़नेके पिंजरे बेचे तो।

१२ प्रश्न – प्राणी बहुत मोटी स्थूल देह पावे किस कर्मसे ?

उत्तर – शाह होके चोरी करे तथा शाहका धन चुरावे तो।

१३ प्रश्न – प्राणी कोढ़ी (कोढ़िया) किस कर्मसे होय ?

उत्तर – वनमें आग लगावे तथा सर्पको मारे तो।

१४ प्रश्न – प्राणीरे दाह ज्वर किस कर्मसें होय ?

उत्तर – ऊट बैल गये घोड़के ऊपर ज्यादा बोझ लादे तथा शीत वा गर्मीमें राखे तो।

१५ प्रश्न – प्राणी सिरसाम अर्थात् चित-भ्रम किस कर्मसें होय ?

उत्तर – ऊंची जाति व गोत्रका मान करे तथा छाने छाने अनाचार मद्यमांसादि भक्षण करके मुकरे (नटै) तो।

तथा मकड़ीके जाले उतारे तो।

८ प्रश्न—प्राणी गर्भमेंही मर मर जाय तथा योनिद्वारमें आ के मरे किस कर्मसे ?

उत्तर – महा आरभ जीव हिंसा करे मोटा झूठ बोले, साधुको असूझतो आहार, पानी देवे तो।

९ प्रश्न – प्राणी गूंगा किस कर्मसें होय ?

उत्तर – देवधर्मकी निंदा करे तथा निर्ग्रंथ गुरुकी निंदा करे तथा गुरुके पुठे मुह मचकोड के छिद्र देखे तो।

१० प्रश्न – प्राणी बहरा किस कर्मसे होय ?

उत्तर – पराया भेद लेनेका लुक छिपके बात सुनने तथा निन्दा सुणनेका स्वभाव होय तो।

११ प्रश्न – प्राणी रोगी किस कर्मसें होय ?

उत्तर – गूलर आदि फल खाय तथा चूहे पकड़नेके पिंजरे बेचे तो।

शिष्य कहे---खोज्यो (खोजो) होयते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे---जे पूर्व भवे वेदगिरीका काम कीधा तेना प्रतापे,

शिष्य कहे---जसकरतां अपजस पायते किसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे---जे पूर्वभवे सच्चीत द्रव्यादिकना ओखद वेखद घणा किना तेना प्रतापे,

शिष्य कहे—शरीरने विषे भगदर रोग उपजे ते किसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे—जे पूर्वे स्वहाते करी पचेंद्रि जीवोने हणीया तेना प्रतापे,

शिष्य कहे—कठमाला रोग होय ते किसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे---जे पूर्वे घणा माळला मारिया तेना प्रतापे।

शिष्य कहे—शरिरनें विषे, पाथरी (पथरी)

उत्तर – परोपकार करे तथा षडेकी टहल करे तो ।

२५ प्रश्न-प्राणी रूपवान किस कर्मसे होय ?

उत्तर – तपस्या करे तो ।

२६ प्रश्न – प्राणी स्वर्गमें किस कर्मसे जाय ?

उत्तर – क्षमा दया तप सयम करे तो ।

॥ कर्म विपाक धर्म कथारा बोल ॥

शिष्य कहे- कोई जीव आखे जलमलो देखे ते किण कारण थी होय ?

गुरू कहे---जे पूर्वे घणा कुभावथी रूप निररया तेना प्रतापे,

शिष्य कहे--कुबड़ो थाय ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे—जे पूर्वे एकेंद्री जीवनो चूर्ण (घात) कीधो तेना प्रतापे॥

शिष्य कहे---खोज्यो (खोजो) होयते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे---जे पूर्व भवे वेदगिरीका काम कीधा तेना प्रतापे,

शिष्य कहे---जसकरता अपजस पायते किसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे---जे पूर्वभवे सञ्चीत द्रव्यादिकना ओखद वेखद घणा किना तेना प्रतापे,

शिष्य कहे---शरीरने विषे भगदर रोग उपजे ते किसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे---जे पूर्वे स्वहाते करी पचेंद्रि जीवोने हणीया तेना प्रतापे,

शिष्य कहे---कठमाला रोग होय ते किसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे---जे पूर्वे घणा माछला मारिया तेना प्रतापे।

शिष्य कहे---शरीरने विषे, पाथरी (पथरी)

रोग होय ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे-- जे पूर्व भवे मैथुन घणा सेवीया तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे- हर्ष राग होय ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे—जे पूर्व धूणी घाली घणा जीवाने सताविया तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे—सजोगना बीजोग थाय ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरु कहे—जे पूर्व माया, कपटाई तथा मित्र कपटाई कृतघ्नता कीधी तेना प्रतापे ॥

शिष्य कहे--शरीरने विषे, ग्वाज फटणी ते कीसा करमने उदे ?

कहे --जे घणा जीव ऊपर क्रोध

गुरु कहे---जे पूर्व भव वचनकलानो अहंकार कीधो तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे—आपणे अण कीधा अपजस अपकीर्त्त वधे ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरु कहे-- जे पूर्वे स्त्री हती तेवारे सासु नणंद भोजाई देराणी जेठाणीना इरषा कीधा तेना प्रतापे ॥

शिष्य कहे---पुरुषलींग छेदी स्त्रीलींग पामे ते किसा कर्मने उदे ?

गुरु कहे--जे पूर्वे भव सतरमो पाप स्थानक माया मोसो सेवीयो तेना प्रतापे ॥

शिष्य कहे--मन वछित वस्तु जीव न पामे ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरु कहे---जे पूर्वे भव पचेंद्री जीवना संयोगना वीयोग कीधा तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे---शरीर बलहीन पामे ते किस कर्मने उदे ?

गुरु कहे---जे पूर्व भव वचनकलानो अहंकार कीधो तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे—आपणा अण कीधा अपजस अपकीरत वधे ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरु कहे-- जे पूर्वे स्त्री हती तेवारे सासु नणद भोजाई देराणी जेठाणीना डरपा कीधा तेना प्रतापे ॥

शिष्य कहे---पुरुषलींग छेदी स्त्रीलींग पामे ते किसा कर्मने उदे ?

गुरु कहे--जे पूर्वे भव सतरमो पाप स्थानरु माया मोसो सेवीयो तेना प्रतापे ॥

शिष्य कहे--मन वछित वस्तु जीव न पामे ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरु कहे---जे पूर्वे भव पचेंद्री जीवना सयोगना वीयोग कीधा तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे---शरीर वलहीन पामे ते किसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे—जे पूर्वे भव कुकड़ा ना आहार कीधा तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे—कोई जीवने घणो हासो आवे ते किसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे- -जे पूर्वे भव असन्नी (असंज्ञी) पंचेद्री जीव हणीया हणावीया तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे—कोई जीव साचो बोले अने-राने प्रतीत न ऊपजे ते किसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे—जे पूर्वे भव कूड़ी साख भरी तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे—कोई जीवने माता भाई बहन भाणेज पुत्र कुटम्बनो वियोग थाय ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे—जे पूर्वे भव कुगरु, कुदेव सेवीयो हिंसामें धर्म परूपीयो तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे---मनुष्य अवतार पामे अने

हात पगनी आंगलीयां छेदन पांमे ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे – जे पूर्व भव झाड रूँख आदि काटीया तेना प्रतापे।

शिष्य कहे – मीर्गी झोलो आवे ते किसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे – जे पूर्व भव लुहारनी धुँमण धुमाइ तेना प्रतापे।

शिष्य कहे – घणा मनुष्य सहित पाणी मांहे नाव जहाज डुबे घणा मनुष्य एकठा डुबी मरे ते किसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे – जे पूर्व भव पेसाव माहे पेसाव कीधो तथा घणा दिन राखीने ढोलीयो तथा ताजखाना (पायखाना) माहे उच्चारपासवन एकठा कीधा समुधानी कर्म कीधा तेना प्रतापे।

शिष्य कहे – मनुष्य मरी प्रथ्वीकाया मांहे

थोड़े आउखे ऊपजे दु:खराहे ते कीसा कर्म
उदे ?

गुरु कहे — जे पूर्वे भव झूठ घणा वोलिय
तेना प्रतापे

शिष्य कहे — तरुणपणे दात पड़े माथारा
केस धोला थाय ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे — जे पूर्वे भव कवली वनस्पती
हाते करी चुटी चुटावी कुटी कुटावी तेना
प्रतापे ।

शिष्य कहे — शरीरने विषे घणा गुमड़ा थाय
भरीया नींगल होय ते कीसा करमने उदे ?

गुरू कहे — जे पूर्वे भव आखा फल चीरीने
लुणासु भरीया तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे — हासपणो पामे ते कीसा

शिष्य कहे—नासुर रोग थाय ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे—जे पूर्वे भव कसाईना कर्म कीधा तेना प्रतापे।

शिष्य कहे—कोई जीव गर्भ माहे ऊपजे पीछे जन्मतो वेला आडो आवे तेहने कापीने काढे ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे—जे पूर्वे भव कसाईना हातसुँ दान लीधा होय तेना प्रतापे।

शिष्य कहे—कोई जीव गर्भ मांहे ऊपजे पछे गल तो जाय ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे—जे पूर्वे भव साधुने कूड़ो आल दीधो, असूझतो आहार दीधो तेना प्रतापे।

शिष्य कहे—कोई स्त्रीने बारह बरसरो छेडो (छोड़) रहे ते कीसा कर्मने उदे।

गुरू कहे—जे पूर्वे भव घणा पेसाव एकठा

थोडे आउखे ऊपजे दुःखसहे ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरु कहे – जे पूर्वे भव झूठ घणा बोलिया तेना प्रतापे

शिष्य कहे – तरुणपणे दात पडे माथारा केस धोला थाय ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरु कहे – जे पूर्वे भव कवली वनस्पती हाते करी चुटी चुटावी कुटी कुटावी तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे – शरीरने विषे घणा गुमड़ा थाय भरीया नींगल होय ते कीसा करमने उदे ?

गुरु कहे – जे पूर्वे भव आवा फल चीरीने लुणसु भरीया तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे – दासपणो पामे ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरु कहे – जे पूर्वे माखण (लुणी) एकठो करी घणा दिनासु तपावीयो तेन

शिष्य कहे--पुरुष एक अने स्त्रीयां घणी सर्व स्त्रीयां वांझ (वाध्या) होय ते किसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे – जे पूर्वे भव घणी वनस्पतिनो रस करावीयो तेना प्रतापे।

शिष्य कहे – कोई जीव चोरी करे पाकेट मारे गांठ खोले ते किसा कर्मने उदे ?

गुरु कहे – जे पूर्वे भव घणा हलालखोरना काम कीधा तेना प्रतापे।

शिष्य कहे – कोई जीव जन्मतेपाण माता पितानो वियोगपामे ते किसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे – जेणे पूर्वे कवली वनस्पतिना अकुर छेदीया तथा छेदन वालाने साजदीनो तथा घणा जीवारा वियोग पाडीया तेना प्रतापे ?

शिष्य कहे--कोई जीव समदृष्टी हातसु करीने साधु मुनिराजने प्रतिलाभवानो मनोर्थ करे पिण प्रतिलाभे सके नही ते कीसा कर्मने उदे ?

कीधा घणा काल गखीने ढोलीया जीव मरावीया तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे – कोई स्त्री ने तेहीज गर्भ चवीने फेर तेहीज छेडो (छोड़) माहे ऊपजे पछे चावीस वर्ष लगे रहे ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे – जे पूर्वभव घणा मैथुन सेवीया तीव्र भावे अने सेवन वालाने साज दीनो साधारण कर्म कीधा तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे – कोईरे डीलरे तप रोग थाय तथा सगलो डील वलूँ वलूँ करे ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे – जे पूर्व भव फल फूलना पाक, मरदन करावीया तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे – स्त्री वाभ (वाध्या) हुवे तेकीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे – जे पूर्वे भव फूलना अतर करावीया तेना प्रतापे ।

रत्नावलि के दोहे।



जो जाको गुन जानही, सो तिहि आदर देत।
कोकिल अम्बहि लेत है, काग निमोली लेत॥
विद्या धन उद्यम बिना, कहो जु पावै कौन।
बिना डुलाये ना मिलै, ज्यों पखे की पौन॥
ओछे नर की प्रीति की, दीन्ही रीति बताय।
जैसे छीलर ताल जल, घटत घटत घटि जाय॥
रहे समीप बडेन के, होत बड़ो हित मेल।
सब ही जानत बढ़त है, वृक्ष बराबर बेल॥
मधुर वचन से मिटत है उत्तम जनअभिमान।
तनक शीत जल से मिटै, जैसे दूध उफान॥
समय समुझि जो कीजिये,काम वही अभिराम।
सिन्धव माग्यो जीमने, घोडे को कह काम॥
स्वारथ के सबही सगे, बिन स्वारथ कोई नाहिं
सेवै पछी सरस तरु, निरस भये उड़ि जाहिं॥
पर घर कबहुँ न जाइये, गये घटत है जोत।

गुरू कहे – जे पूर्वे रोमकारी कर्कश कारी मर्मकारी भाषा बोली छानी वात प्रगट किनी घणाजीवाने दाना अंतराय किनी तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे-- कोई जीव भलोजात कुलमे जन्म पामें, पचेन्द्रीयाना योग संयोग पुरा पड़े अने अणकिधो अणजाणीयो माथे कुड़ो आल आवे पच्छी राजा पकड़ावीने चोरगीयो करावे पछे राज सभा माहे वाहालो लागे जे बोले ते मानीलेने ते किमा कर्म उदे ?

गुरु कहे---जे पूर्वे घणी अनन्तीकाय, कंद; मुल कटावीया चुरण किधा तथा गर्भ पाड़ी छानो राग्यो तथा नारकी तथा त्रियच भव मांहे अकाम निर्जरा कीधी तेना प्रतापे ।

॥ इति कर्म कथाना बोल समास ॥

कहिये बात प्रमाण की, जासो सुधरें काज।
फीको थोड़े लवणसे, अधिकहि खारो नाज॥
कहै रसीली बात सो, बिगड़ी लेत सुधार।
सरस लवणकी दालमें, ज्यो नींबूरस डार॥
बुद्धि विना विद्या कहो, कहा सिखावे कोय।
प्रथम गाम ही नाहि तो, सीव कहा से होय॥
जाकी जेती पहुँच सो, उतनी करत प्रकाश।
रविज्यो कैसे करि सके, दीपक तम को नाश॥
कारज ताही को सरे, करै जो समय निहार।
कबहुँ न हारे खेल जो, खेले दाव विचार॥
सब देखै गुण आपने, ऐव न देखे कोय।
करे उजालो दीप पर तले अँधेरो होय॥
को सुख को दुख देत है, देत करम झकझोर।
उरझै सुरझै आपही, धजा पवन के जोर॥
भली करत लागे विलंब, विलब न बुरे विचार।
भवन बनावत दिन लगै, ढाहत लगत न वार॥
विनसत वार न लागही, ओछे नर की प्रीत।

रविमण्डलमें जात शशि, हीन कला छवि होत॥
एक दशा निवहै नहीं, जनि पछितावहु कोय।
रवि हू की इक दिवस मे, तीन अवस्था होय॥
होय बुराई से बुरो, यह कीन्हो निरधार।
खाड़ खनेगो और को, ताको कूप तयार॥
बहुन निबल मिलि बल करें करें जु चाहे सोय।
तृनगण की डोरी करें, हस्ति हू बन्धन होय॥
साच झूठ निरणय करें, नीतिनिपुण जो होय।
राजहस बिन को करे, न्नीर नीर को दोय॥
कारज धीरे होत हैं, काहे होत अधीर।
समय पाय तरुवर फलै, केतक सींचहु नीर॥
जो पहिले कीजे यतन, सो पाछे फलदाय।
आग लगे खोदे कुआ, कैसे आगबु झाय॥
क्यो किजे ऐसो यतन, जासो काज न होय।
परवत पे खोदे कुआ, कैसे निकसै तोय॥
उद्यम से सब मिलत हैं, बिन उद्यम न मिलाहिं।
सीधी अगुली घी जम्यो, कबहूं निकसत नाहिं॥

उत्तम विद्या लीजिये, जदपि नीच पँ होय ।
पड्यो अपावन ठौर में, कञ्चन तजत न कोय ॥
धन अरु यौवन को गरब, कबहूँ करिये नाहि ।
देखत ही मिट जात हे, ज्यो वादर की छाहि ॥
वड़े वड़े को विपति में, निश्चय लेत उवार ।
ज्यों हाथी को कीच से, हाथी लेत निकार ॥
सेवक सोई जानिये, रहे विपति में सग ।
तन छाया ज्यो धूप मे, रहे साथ इकरंग ॥
वहुत द्रव्य सचय जहा, चोर राजभय होय ।
कासे ऊपर वीजुली, परत कहत सव कोय ॥
ओछे नर के पेट में, रहै न मोटी वात ।
आधसेर के पात्र में, कैसे सेर समात ॥
काहू को हँसियै नही, हँसी कलह को मूल ।
हांसि हँसे दोऊ भये, कौरव पाण्डु निमूल ॥
प्रापति के दिन होत है, प्रापति वारंवार ।
लाभ होत व्यापार में, आमन्त्रण अधिकार ॥
अप्रापति के दिनन मे, खर्च होइ अविचार ।

अम्बर डम्बर माझ है, ज्यों बालू की भीत॥
आपहि कहा बखानिये, भली बुरी के जोग।
बूटे धन की बात को, कहै बटाऊ लोग॥
जो कहिये सो कीजिये, पहिले करि निरधार।
पानी पी घर पूँछनो, नाहिन भलो बिचार॥
पीछे कारज कीजिये, पहिले यतन विचार।
बड़े कहत हैं बांधिये पानी पहिले बार॥
भले वश सन्तति भली, कबहूँ नीच न होय।
ज्यों कञ्चन की खान में, कांच न उपजे कोय॥
शूर बीर के वश में, शूर बीर सुत होय।
ज्यों सिंहिनि के गर्भ में, हिरन न उपजे कोय॥
हीन जानि न विरोधिये वही होत दुखदाय।
रज हू ठोकर मारिये, चढ़े सीस पर आय॥
दोष लगावत गुनिन को, जाको हृदय मलीन।
धर्मी का दम्भी कहै, क्षमाशील बलहीन॥
खाय न खरचे सूम धन, चोर सबै ले जाय।
पीछे ज्यों मधुमक्षिका, हाथ घिसे प[illegible]

मेरा मेरा क्या करै, तेरा है नहि कोय।
चिदानन्द परिवार का, मेला है दिन दोय॥
धर्म बधाये धन बधै, धन बध मन बधि जात।
मन बध सबही बधत है, बधत बधत बधि जात॥
धर्म घटाये धन घटै, धन घट मन घटि जात।
मन घट सब ही घटत है,
घटत घटत घटि जात॥
यह जोवन थिर ना रहै, दिन दिन छीजत जात।
चार दिन की चादनी, फेर अँधेरी रात॥
क्रोधी लोभी कृपण नर, मानी अरु मदअन्ध।
चोर जुवारी चुगुल नर, आठौ दीखत अन्ध॥
शील रतन सब से बड़ो, सब रतनन की खान।
तीन लोक की सम्पदा, रही शील मे आन॥
ओछी सगति स्वान की, दोनूं बातें दुक्ख।
रूठो पकड़े पांव कूँ, तूठो चाटै मुक्ख॥
सतजन मन में ना धरैं, दुरजन जन के बोल।
पथरा मारत आम को, तउ फल देत अमोल,

घर आवत हैं पाहुने वणिज न लाभ लिगार ॥
कहे वचन पलटैं नहीं, जे सतपुरुष सधीर।
कहत सबे हरिचन्द्र नृर, भर्यो नीच घर नीर ॥
प्यारी अनप्यारी लगे, समय पाय सब बात।
धूप सुहावत शीत में, ग्रीषम नाहि सुहात ॥
जूवा खेले होत है, सुख सम्पति को नास।
राजकाज नल ते छुट्यो, पाण्डव किय वनवास ॥
देखा देखी करत सब, नाहिन तत्वविचार।
याको यह उनमान है, भेड़ चाल ससार ॥
एक एक अन्तर पढ़े, जानैं ग्रन्थ विचार।
पैंड पैंड हू चलत जो, पहुँचे कोस हजार ॥
वह सम्पति किहि काम की, जनि काहू के होय।
जाहि कमावे कष्ट करि, बिलसे औरहि कोय ॥
बिन कपास कपड़ो नहीं, दया बिना नहि धर्म।
पाप नहीं हिंसा बिना, बूझो एहिज मर्म ॥
धन बञ्छे इक अधम नर, उत्तम बञ्छै मान।
ते थानक सह छडिये, जिंह लहिये अपमान ॥

॥ बोल ॥

प्रश्न—पापरो बाप काई, उत्तर लोभ,
पापरी माता काई, ,, हींसा,
पापरो भाई काई, ,, क्रोध
पापरी बहन काई, ,, माया (कपटाई),
पापरो बेटो काई, ,, मान
पापरी स्त्री काई, ,, कुमति

॥ दोहा ॥

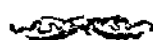
राजा रानी छत्र पती,
हाथिनके असवार ।
मरना सबको एक दिन,
अपनी अपनी बार ॥
दल [illegible] देई देवता,
[illegible]ता परिवार ।

शुभतिय से ससार सुख, सुगति सुगुरु से जाण।
शुचि मन्त्री से राज नित, सुधरै सदा सुजाण॥
प्राय पर की भूल को, देखे सब ससार।
पण न विचारे निजतणी, होय जु भूल हजार॥
गुण बिन रूप न काम को, जिम रोईड़ा फूल।
दीसता रलियामणा, पण नहिं पामे मूल॥
सुख पीछे दुख आत है, दुख पीछे सुख आत
आवत जावत अनुक्रमे, ज्यूं जग में दिनरात॥
दुष्ट व्यसन दुखद सदा, कदी न करवो सग।
धन जीवन यश धर्म नो, तुरत करे छे भग॥
जो मति पीछे ऊपजे, सो मति पहिले होय।
काज न बिगड़े आपनो, जग में हँसे न कोय॥



सङ्गसे काठके लोहतरे,
तनको सत सङ्ग ही पार लगावे।
सङ्गसे सन्तको स्वर्ग मिले,
अरु सङ्ग कुसङ्गसे नरकमें जावे॥

॥ अथ श्रावकजीरा २१ गुण ॥



१ पहले गुणे श्रावकजी धर्म करणीरे नव तत्व पचीस क्रियारा जाणकार हुवे।

२ दूजे गुणे श्रावकजी धर्म करणीरे वीषे कोईको भी साहाय्य वछे नहीं।

३ तीजे गुणे श्रावकजी देवता मनुष्य तीर्यंचरा उपसर्ग आयासु धर्म थकी डीगे नहीं।

४ चौथे गुणे श्रावकजी अनतिथी मिथ्या-सेवत करे नहीं और अनतीर्थीरो कष्ट

मरती विरिया जीवको,
कोई न राखन हार ॥
दान बिना निर्धन दुःखी,
तृष्णा वश धनवान ।
कहुँ न सुख संसारमें
सब जग देख्या छान ॥
आलस नींद कृशाणने खोवे,
चोरने खोवे खासी ।
आनो व्याज बोरेने खावे,
त्रियाने खोवे हासी ॥

॥ कविता ॥

सङ्गसे पुष्प को चन्द्र मिले,
अरु संगसे लोहा स्वर्ण कहावे ।
सङ्गसे पण्डित मूर्ख बने,
अरु सङ्गसे शूद्र अमरपद पावे ॥

फटीक रतनजीसो निर्मल हुवे कूड कपट केलवे नहीं दगा ठगा कर नहो ।

९ नवमे गुणे घरराबारणा खुला राखे दान देवणमे कृपण मूजी कंजूस नहीं हुवे चित्त उदार होवे ।

१० दशमे गुणे महीनेमे ६ (छव) पोसा करे ।

११ इगारहमें गुणे श्रावकजी अन्तेवरमें राजारे भडारमे तथा सेठरी दुकानमें सेठरी हवेलीमे जावे जठे प्रतीत कारीया हुवे जठे अप्रतीत हुवे उठे पाउडो भी देवे नहीं।

१२ वारमें गुणे श्रावकजी लीधा व्रत पचखाण नीधानरी परे जापतासु पाले (राखे) दोष अतीचार लगावे नहो ।

१३ तेरमे गुणे श्रावकजी मुनीराजने उलट (चढ़ते) भावसु उदार चित्तसु दान देवै मूजी पणो राखे नहीं कजूस पणो राखे नहीं उदार चित्त राखे ।

देखन उणरा गुणग्राम करे नही- अनतीर्थीरी प्रशसा करे नहीं ।

५ पाचमे गुणे श्रावकजी लधी अठा गरही अठा पुछीअठा वीनछी अठा भणीया गुणीया ज्ञानको वार वार नीरणो करे आलस प्रमाद करे नहीं ।

६ छठे गुणे श्रावकजीरा हृदय धर्ममे रगायमान जीण तरह तीलमाहे तेल दुधमाहे घृत पाषाणमाहे धातु लोलीभूत हुवे जीणतरह श्रावकजीरी हाडनेहाडरी मीजी धर्ममे रगायमान हुवे

७ सातमें गुणे श्रावकजी कुटम्ब परिवारे पचायतीमे वैठे जठे यही वात कहे :के श्री वीतराग केवली भगवानरो धर्म सार है, नित्य है, सुखकारी पदार्थ है, बाकी सर्व ससार देह भोग असार है अनित्य है, दु ख सहित है, आगामी भी दु खरो कारण है ।

८ आठमेगुणे श्रावकजी रो हृदय

१७ सतरमें गुणे श्रावकजी धर्म रो उपदेश
सार ताथंग गुण ग्राम बोले ।
१८ अठारमे गुणे श्रावकजी छती शक्ति
गा करे गोपवे नहीं ।
१९ उगनीसमे गुणे श्रावकजी दो बखत
लो काल प्रतिक्रमणे करे ।
२० वीसमे गुणे श्रावकजी कोईसु खारा
ले नहीं नणमात्र कोईसु भी वैर राखे नहीं ।
२१ इकवीसमे गुणे श्रावकजी रे सम्यक्तमे
गुणरत्नामें कोई भी अतिक्रमादिक दोष लागे
नांणो तुरन तुरत आलोवणा करे अने शुद्ध होवे
अन्त समय आया फेरु आलोवणा नीन्दणाकर
ने पण्डित मरण करे आराधक हुवे ।
इनि श्रावकजीरा २१ गुणामें जो जिन
वचनासु अधिको ओछो वीपरीत
लिख्यो हुवे तोंणरो मिच्छामी
दुकड ।

॥ श्लोक ॥

धन्या भारतवर्ष सभव जना
येऽद्यापि काले कलौ,
निस्तीर्थेश-नि केवले निरवधौ
नश्यत्मन पर्यवे ।
नोद्यत्सूत्र-विशेष सपदि भव
दौर्गत्य दु:खापदि,
श्री जैनेन्द्र वचोनुराग वशत
कुर्वंति धर्मायिम ॥

॥ स्वकुलप्रकाश ॥

धर्मचन्दजी तत्पुत्र प्रतापचन्द अगरचन्द भैरोदान हजारीमल चिरू जेठमल पानमल लहरचन्द उदेकरण जुगराज गनपाल चिरंजीव कुनणमल सेठीया ॥ श्रीकल्याणमस्तु ॥

॥ श्री ॥

॥ दोहा ॥



बोल समह नाम है, कीना भवि उपकार ।
गुरु मुखसे धारजो, द्वितीय भाग सुजाण ॥
गुरु समीपे जायके, लीजो अर्थ विचार ।
भणी गुणीने सिखजो, सूत्र सिद्धान्त अनुसार ॥
भेरोदान अर्ज करे, मत कीजो कोई ताण ।
सूत्र अर्थ जाणु नहीं, जिन आज्ञा परमाण ॥
वहु ग्रंथे सचे कीयो, अल्प बुद्धि अनुसार ।
भूल चूक दृष्टि पड़े, लीजो सज्जन सुधार ॥
निवासी बीकानेर का, जैन श्वेताम्बर जाण ।
ओस वशमें सेठिया, श्रावक भैरोदान ॥
शत उनिस गुणआशि शुक्र पक्ष वैशाख मास ।
कलकत्ते माहे छपा, सबहुके हित काज ॥

नोदकमपि पातव्य. रात्रावत्र युधिष्ठिर ॥
तपस्विना विशेषेण, गृहिणा ज्ञानसम्पदाम् ॥३॥

अर्थात्—चार कार्य नरक के द्वार रूप हैं प्रथम-रात्रि मे भोजन करना, दूसरा-पर-स्त्री में गमन करना, तीसरा-संधाना (आचार) खाना और चौथा-अनन्त काय अर्थात् अनन्त जीव-वाले कन्द मूल आदि वस्तुओ का खाना ॥१॥

जो बुद्धिमान् पुरुष एक महीनेतक निरन्तर रात्रिभोजनका त्याग करते हैं उनको एक पक्ष के उपवासका फल प्राप्त होता है ॥२॥

इस लिये हे युधिष्ठिर ! ज्ञानी गृहस्थको और विशेष कर तपस्वी को रात्रि में पानी भी नही पीना चाहिये ॥ ३ ॥

इसी प्रकारसे सब शास्त्रोंमें रात्रिभोजनका निषेध किया है परन्तु ग्रन्थके विस्तारके भयसे अब विशेष प्रमाणोंको नही लिखते हैं, इस लिये बुद्धिमानोको उचित है कि—सब प्रकारके

खाने पीनेके पदार्थो का कभी भी रात्रिमे उपयोग न करें यदि कभी वैद्य कठिन रोगादि से भी कोई दवा या खुराकको रात्रिमें उपयोग के लिये बतलावे तो भी यथा शक्य उसे रात्रिमे नहीं लेना चाहिये किन्तु सूर्य्य अस्त होनेके पहले ही ले लेना चाहिये, क्योंकि धन्य पुरुष वे ही हैं जो कि सूर्यकी साक्षीसे ही खान पान करके अपने व्रत का निर्वाह करते हैं ।



॥ चेत्य, चेइ शब्दके १०८ नाम ॥



चेत्यप्रसादं विज्ञेय १ चेत्यहरिरुच्यते २ चेत्यं चेतनानामस्यात् ३ चेइसुधास्मृता ४ चेतज्ञानं समाख्यातं ५ चेइ मानस्यमानवं ६ चेत्य-यतिरुत्तमस्यात् ७ चेइमग्रउच्यते ८ चेत्यजीव-मवाप्नोति ६ चेइ भोगस्य रमन १० चेत्यभोग मिवृतस्य ११ चेइ विनतनीचयो १२ चेत्य पूर्णिमाचन्द्र १३ चेइ गृहस्यारंभन १४ चेत्य गृहमवाल्हि १५ चेइ गृहस्यछादन १६ चेत्य गृहस्थर्भचापि १७ चेइच वनस्पती १८ चेत्य पर्वतेवृक्ष १६ चेइ वृक्षस्थूलयो २० चेत्य वृक्ष-सारश्च २१ चेइ चतुकोणस्तथा २२ चेत्य विज्ञान पुरुषो २३ चेइ देहस्यउच्यते २४ चेत्य गुणज्ञोज्ञेय २५ चेइच शिवशासनं २६ चेत्य मस्तकपूर्णं २७ चेइ अंगहीनयो २८ चेत्य अश्वामवाप्नोति २६ चेइ खर उच्यते ३० चेत्य

खाने पीनेके पदार्थो का कभी भी रात्रिमें उपयोग न करे यदि कभी वैद्य कठिन रोगादि मे भी कोई दवा या खुराकको रात्रिमें उपयोग के लिये बतलावें तो भी यथा शक्य उसे रात्रिमें नहीं लेना चाहिये किन्तु सूर्य अस्त होनेके पहले ही ले लेना चाहिये, क्योंकि धन्य पुरुष वे ही हैं जो कि सूर्यकी साक्षीमें ही खान पान करके अपने व्रत का निर्वाह करते हैं।



॥ चैत्य, चेइ शब्दके १०८ नाम ॥



चैत्यप्रमाद जिने य १ चेरहरिन्च्यते २ चैत्यं चैतनानामस्यात् ३ चेइमुधास्मृतौ ४ चेतंज्ञानं ममाख्यानं ५ चेट मानस्यमानव ६ चैत्यचनिक्लमस्यात् ७ चेइमनउच्यते ८ चेत्यंजीवमवानीति ९ चेइ भोगन्य रमन १० चेत्यभोग निवृत्तस्य ११ चेइ विनतर्नाचपो १२ चेत्य पूर्णिमाचन्द्र १३ चेड गृहस्यारभेन १४ चेत्य गृहमवाछाई १५ चेइ गृहस्यछादनं १६ चेत्य ... त्यर्न [illegible] च पनस्तनी १८ चेत्य पर्वतेवृक्ष [illegible] चूलगो २० चेत्य वृक्ष-

हस्तीविज्ञेय ३१ चेइ द्रुमुखीविदू ३२ चेइच
शिवापुन ३४ चेत्यरभानामोक्त ३५ चेइ
मृदगपुन ३६ चेत्य सार्दूल नामस्यात् ३७
चेइच इ ब्रवारणी ३८ चेत्य पुरंदर ३९ चेइ
चेतनस्मृत ४० चेइ उग्रराज ४१ चेइ शास्त्र-
धारणा ४२ चेत्य क्लेशहारीच ४३ चेइ
गधर्वाश्रिय ४४ चेत्य तपस्वीनारी ४५ चेइ
पाश्रस्यनिर्णय ४६ चेत्य शुकनादिवार्त्ता ४७
चेइ कुमारिकाविदू ४८ चेत्य वक्तारागस्य ४९
चेइ धातुरकुठित ५० चेइ शातवाणीच ५१ चेइ
छुद्धानरांगणा ५२ चेत्य ब्रह्मांडमाणं ५३ चेइ
मयूरप्रोच्यते ५४ चेत्य मगलवार्त्ता च ५५ चेइ
काकणीपुन ५६ चेत्य पुत्रवतीनारी ५७ चेइ च
मीनमेवच ५८ चेत्य नरेन्द्र नारी च ५९ चेइ
च मृगवानरं ६० चेत्य गुणवती नारी ६[illegible]
च स्मरमन्दिर ६२ चेत्य वर [illegible]
चेइच तरुणीस्तनो ६४

६५ चेइच मुकुट सागर ६६ चेत्य सुवर्ण वर्णः जटि ६७ चोइच अन्य धातुषु ६८ चेत्य चक्रवर्ती राजा ६९ चेइच तस्यस्त्रिय ७० चेत्य व्याख्यात पुरुष ७१ चेइ पुष्पवती स्त्रिय ७२ चेइ राजमन्दिर ७३ चेत्यवराह मृगश्च ७४ चेइचयति धूर्तयो ७५ चेत्य गरुड़पक्षी च ७६ चेइच पद्मनागणी ७७ चेत्य रक्त नेत्रस्य ७८ चेइ हीन चक्षुषि ७९ चेत्य योवन पुरुषश्च ८० चेत्य वासुकी नाग ८१ चेइ पुष्प प्रोच्यते ८२ चेत्य भाव सुधस्यात् ८३ चेइ क्षुद्र कटिका ८४ चेत्यद्रव्यमवाप्नोति ८५ चेइ प्रतिमास्तथा ८६ चेत्य सुभटयोर्द्धच ८७ चेइ द्विविधा क्षुधा ८८ चेत्य पूरुषोत्तमश्च ८९ चेइच हारमेवच ९० चेत्य नरेंद्राभर्ण ९१ चेइ जटाजूटधारक ९२ चेत्य धर्मवार्ताच ९३ चेइ विकथापुनः ९४ चेइ चक्रवर्ती सूर्य्य ९५ चेइच श्रद्धाश्रद्धा ९६ चेत्य राज्ञी सजनस्थान ९७ चेइ रामस्य गर्भता ९-

चेत्य शुभवार्तात्र ६६ चेड इन्द्रजालकं १०० चेत्यत्यासनं प्रोक्तं १०१ चेड पापमेवच १०२ चेड रविरुदयकाल १०३ चेत्यंच रजनीपुन १०४ चेत्यचन्द्र द्वितीयास्यात् १०५ चेड लोकपालके १०६ चेत्य रत्न अमोलक्यं १०७ चेडुच अनौपधिपुन १०८ एव सर्व चेतनानाम १०८ छे ।

इति श्री अलंकररोदीर्घ ब्रह्मारडे चेत्य चेड् शब्द सूरेश्वर वार्तिक वेदान्त प्रोक्त ।



ॐ

शान्ति । शान्ति ॥ शान्ति ॥।

सेवभते सेवभते गौतम बोले सही, श्री महावीरके वचनमें कुछ सन्देह नहीं। जैसा लिखा हुआ देख्या, वांच्या या सुण्या वैसा ही अल्प बुद्धिके अनुसार लिखा है, तत्व केवली गम्य अक्षर, पद, ह्रस्व, दीर्घ, कानो, मात, मिडी, ओछो अधिको, आगो पाछो, अशुद्ध पणे लिख्यो होय अथवा कोई तरहकी छपानेमें ज्ञानादिक की विराधना कीनी होय, जाणते अजाणते कोई दोष लाग्यो होय तो सकल श्री सघके साखसें मन वचन काया करी मिच्छामि दुक्कड ।

❀ इति छतीसबोल सग्रह द्वितीय भाग समाप्तम ❀

पुस्तक मिलनेका पता—

बीकानेर

भैरोदान सेठिया

शाप-आफिस—

कोटके दरवाजेके बाहर

पब्लिक पार्क बड़ी सड़क।

बीकानेर—राजपूताना



B. SETHIA & SONS

MERCHANTS

Office—

[illegible] *Commercial House*

[illegible] Edward Memorial Road,

[illegible] *Public Park Main Road,*

BIKANER (Rajputana)

पत्र व्यवहार नीचे लिखे हुये पतेसे करे
और पता नागरी व अंग्रेजीमें साफ
हरफोंमें पूरा लिखे ।

पुस्तक मिलनेका पता—

बीकानेर

श्री जैन भाइयोंकी विद्यालय,

मोहल्ला—मरोटियोंका
पाठशाला अगरचन्द भैरोदान सेठियाकी कोटड़ामें
बीकानेर राजपुताना ।
(जोधपुर-बीकानेर रेलवे)



The Jain National Seminary
SCHOOL
SETHIA BUILDINGS
MOHALLA MAROTIAN
Bikaner Rajputana (J B Ry)

पुसतक मिलनेका पता—

कलकत्ता

पानमल उदैकर्ण सेठिया ।

मुंगा दाना, मुक्ता, मोती जापानी माल

आफिस नं० १०८ पुराना चीनाबाजार ष्ट्रीट

कलकत्ता ।

चिट्ठीका पता—पोष्ट बक्स नं० २५५ कलकत्ता ।

तारका पता— 'सेठिया' कलकत्ता ।

Panmull Oodeycurn Sethia

Coral Pearl & Glass Beads Merchants

Office—108 Old China Bazar Street Calcutta
Letter address—Post Box 255 Calcutta
Tele „ "SETHIA" Calcutta